
यात्रा-विशेषांक
• मई' ९५
मासिक प्रकाशन
कादम्बिनी
भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका
भारत का सौंदर्य देख लिया, समझिए दुनिया देख ली
११ रुपए
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हो, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **योजित**— क. निर्दिष्ट, ख. निर्देशित, ग. बनाया हुआ, घ. कल्पित।

२. **मरणांतक**— क. मरा हुआ, ख. मृतक-तुल्य, ग. जिसका अंत मौत हो, घ. जानलेवा।

३. **मरीचिका**— क. हिरण-संबंधी, ख. मृगतृष्णा, ग. धोखा, घ. जालसाजी।

४. **भावांतर**— क. मन की अवस्था बदल जाना, ख. अर्थ बदल जाना, ग. स्वभाव में बदलाव, घ. व्यवहार में परिवर्तन।

५. **भाषांतर**— क. दूसरे शब्दों में कहना, ख. अनुवाद, ग. अर्थ उलटकर कहना, घ. दूसरी बात कहना।

६. **बहुज्ञ**— क. बहुत जाननेवाला, ख. विद्वान, ग. बहुत बोलनेवाला, घ. बड़भागी।

७. **संशयालु**— क. जिसमें शंका हो, ख. संदेहपूर्ण, ग. संदेहशील, घ. धोखे की बात।

८. **वाच्यावाच्य**— क. किंवदंती, ख. कथन-योग्य, ग. उद्धरण, घ. कहने न कहने योग्य।

९. **लोकांतर**— क. परलोक, ख. दूसरी दुनिया, ग. विपरीत स्थिति, घ. अन्य समाज।

१०. **रुद्धकंठ**— क. गूंगा, ख. जिसका गला घोंटा गया हो, ग. जिसका गला रुंध गया हो, घ. फांसी पर चढ़ाया हुआ।

११. **संशयोच्छेदी**— क. संदेह पैदा करनेवाला, ख. शंकालु, ग. अस्पष्ट, घ. संशय दूर करनेवाला।

१२. **लुब्ध**— क. आकर्षित, ख. ललचाया हुआ, ग. मोहित, घ. चिकना।

१३. **ममत्व**—क. अपनापन, ख. स्नेह, ग. मुग्धता, घ. स्वार्थ।

उत्तर

१. ग. बनाया हुआ, रचित। यह व्यवस्था भली प्रकार से **योजित** है। (व्युत्. -युज्)

२. ग. जिसका अंत मौत हो। घ. जानलेवा। दुस्साहसिक कार्य **मरणांतक** हो सकता है। मरण (व्युत्. –मृ.), अंतक (व्युत्. –अम्+तन्)

३. ख. मृगतृष्णा, मिथ्या प्रतीति। रातोंरात धनाढ्य होने की कामना **मरीचिका** सिद्ध होती है। (व्युत्. –मृ+कन्)

४. क. मन की अवस्था बदल जाना। किस अनुभूति ने उसमें यह **भावांतर** पैदा कर दिया? ख. अर्थ बदल जाना। कविता का यह **भावांतर** है। (भाव+अंतर)

५. ख. अनुवाद, उल्था। सर्वोत्तम भारतीय कृतियों का विदेशी **भाषांतर** होना चाहिए। (भाषा+अंतर)

६. क. बहुत जाननेवाला। ख. विद्वान। **बहुज्ञ**

व्यक्ति की प्रतिभा सर्वमान्य होती है ।
(बहु+ज्ञ)
७. ग. संदेहशील, शंकालु । **संशयालु** व्यक्ति किसी को विश्वासपात्र नहीं बना पाता ।
(व्युत्. –सम्+शी)
८. घ. कहने-न-कहने योग्य । **वाच्यावाच्य** का ध्यान रखकर किसी से वार्ता करनी चाहिए ।
वाच्य+अवाच्य (व्युत्. –वच्)
९. क. परलोक । **लोकांतर**-गमन जीव की दूसरी अवस्था ही है । (लोक–अंतर)
१०. ग. जिसका गला रुंध गया हो । रोते-रोते वह **रुद्धकंठ** हो गया । रुद्ध
(व्युत्. –रुध्) +कंठ ।
११. घ. संशय दूर करनेवाला । ज्ञानी मनुष्य **संशयोच्छेदी** होता है । संशय
(व्युत्. –सम्+शी), अच्छेसी
(व्युत्. –उद्+छिद्)
१२. ग. मोहित, लुभाया हुआ । कलात्मक वस्तुओं पर कौन **लुब्ध** नहीं होता ।
(व्युत्. –लुभ्)
१३. क. अपनापन, ममता । ख. स्नेह । शिशु के प्रति माता-पिता का ममत्व होता है ।
(मम+त्व)

पारिभाषिक शब्द

Plan	= योजना
Planning Commission	= योजना-आयोग
Election Commissicn	= निर्वाचन-आयोग
Multipurpose	= बहूद्देशीय
Identity-Card	= परिचय-पत्र
In camera	= गुप्त बैठक
Multistoreyed	= बहुमंजिला

ज्ञान-गंगा

***चित्तेऽन्तर्ग्रन्थगहने बहिर्निर्ग्रन्थता वृथा ।
त्यागात्कंचुकमात्रस्य, भुजगो न हि निर्विषः ॥***

(ज्ञानसार २५/४)

यदि चित्त अंतरंग परिग्रह से व्याकुल हो, तो बाह्य निर्ग्रंथता बेकार है । केंचुली छोड़ने से सर्प विषरहित नहीं होता ।

रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ।

(नीतिशतक ९७)

पहले के किये हुए पुण्य, संकटों में मनुष्य की रक्षा करते हैं ।

***फलमायतौ सुचिरवर्तिकल्पयत् भवति,
श्रमोऽपि हि सुखाय देहिताम् ।***

(साहित्य-रत्नाकर ४/२२)

देहधारी का श्रम भी उसके चिरस्थायी फल को देखकर सुखकर होता है ।

निक्कारणा दुल्लभा अज्ज मित्ता ।

(सुत्तनिपात १/३/४१)

आजकल निःस्वार्थ मित्र दुर्लभ हैं ।

कर्मणि व्यज्यते प्रज्ञा ।

(हितोपदेश ३/१२९)

कर्म में ही मनुष्यों की प्रज्ञा की अभिव्यक्ति होती है ।

यद् वै शिवं शान्तं तत्पावकम् ।

(शतपथब्राह्मण ९/१२/३०)

जो शिव और शांत है, वही पवित्र, पावन है ।

(प्रस्तुतिः महर्षि कुमार पांडेय)

आस्था के आयाम

समीकरणों के खिलाड़ी : श्री निवास रामानुजम

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक, 'भारत एक खोज' में श्री निवास रामानुजम को इस युग का सबसे बड़ा गणित शास्त्री बताया है । श्री नेहरू ने इस पुस्तक में लिखा है, 'रामानुजम अपने खाली समय में संख्याओं और समीकरणों से खेला करते थे । लेकिन गरीब होने तथा केवल ३३ वर्ष की आयु में मृत्यु हो जाने के कारण, रामानुजम को हमारे देश के इस प्राचीन विज्ञान की सेवा का अच्छा अवसर न मिल सका ।'

श्री निवास रामानुजम का जन्म २२ दिसम्बर, १८८७ को मद्रास के तंजोर जिले में कुंबकोनम के पास हुआ था । उनके पिता कुंबकोनम में एक कपड़ा व्यापारी के कार्यालय में क्लर्क थे । उनके सभी सगे-संबंधी बहुत ऊंचे परिवार के थे, लेकिन थे गरीब । उनकी माता बड़ी प्रतिभाशाली महिला थीं । वह ईरोड के एक ब्राह्मण परिवार की थीं । बताते हैं कि उनकी शादी के कई वर्ष बाद तक उनकी कोई संतान नहीं हुई । उनके पिता ने प्रसिद्ध देवी नामगिरि की पूजा की और मनौती की कि उनकी पुत्री के संतान हो । नामक्कल की देवी प्रसन्न हुईं और इस ब्राह्मण परिवार में सबसे बड़े बालक रामानुजम का जन्म हुआ ।

रामानुजम ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कुंबकोनम हाई स्कूल में प्राप्त की । अपनी कक्षाओं में वह सदैव सर्वप्रथम रहे । रामानुजम शांत स्वभाव के थे और उनकी स्मरण शक्ति विलक्षण थी । बारह वर्ष की आयु में ही उनको बाल-विद्वान घोषित कर दिया गया था । रामानुजम को गणित के सवालों से इतना प्रेम था कि वह अपने दोस्तों का मनोरंजन गणित के सूत्रों से किया करते थे । चौथे दरजे में ही उन्होंने ट्रिगनोमेट्री का अध्ययन किया । १९०३ में जब छठी कक्षा में थे, तब उनके एक मित्र ने उन्हें विशुद्ध गणित की प्रसिद्ध पुस्तक दी । रामानुजम ने इस पुस्तक को रात-दिन पढ़ा और इससे उन्हें प्रेरणा मिली । उनकी प्रतिभा जागृत हुई । उन्होंने इस पुस्तक के हर प्रश्न को एक अनुसंधान सिद्धांत के रूप में हल किया और इनसे अपने ही सूत्र निकाले ।

रामानुजम कहा करते थे कि नामक्कल की देवी उनको स्वप्नों में गणित के सूत्र बताती थीं । यह भी बड़ी अजीब बात थी कि रामानुजम बिस्तर से उठते ही गणित की समस्याओं को लिखते थे और उनकी जांच-पड़ताल करते थे

दिसम्बर, १९०३ में रामानुजम ने हाईस्कूल परीक्षा पास की । उस समय उनकी आयु १६ वर्ष की थी । जून, १९०४ में वह जूनियर प्रथम-आर्ट्स (प्रथम वर्ष इंटरमीडिएट) में कुंबकोनम के गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिल हुए वहां उन्होंने अंगरेजी और गणित में सुब्रह्मण्यम

छात्रवृत्ति प्राप्त की । लेकिन वह गणित के सवालों में ही उलझे रहते थे, जिसके फलस्वरूप अन्य विषयों में वह फेल हो गये । उनकी छात्रवृत्ति भी जाती रही । १९०६ में वह मद्रास के एक कॉलेज में दाखिल हुए, लेकिन बीमार होने के कारण कुंबकोनम लौट आये । वह दिसम्बर, १९०७ में इंटरमीडिएट परीक्षा में प्राइवेट छात्र के रूप में बैठे लेकिन पास नहीं हो सके ।

१९०९ में रामानुजम का विवाह हुआ और उनके लिए तब यह आवश्यक हो गया कि वह कोई नौकरी या धंधा करें । लेकिन उनकी कॉलेज की पढ़ाई अच्छी न होने के कारण कहीं काम मिलना मुश्किल था । फिर भी रामानुजम ने नौकरी की तलाश की । एक दिन उनकी भेंट दीवान रामचन्द्रराव से हो गयी । दीवान साहब नैलोर के कलेक्टर थे और गणित-शास्त्र से उनका विशेष प्रेम था । रामानुजम से अपनी प्रथम भेंट का वर्णन उन्होंने इन शब्दों से किया—

'कुछ साल पूर्व मेरा भतीजा मुझसे कहा करता था कि वह एक ऐसे लड़के को जानता है जो हर समय गणित की ही बात किया करता है । मेरा भतीजा स्वयं गणित में कुछ नहीं जानता था । मुझे गणित-शास्त्र से बहुत प्रेम था, इसलिए मैंने रामानुजम को मिलने के लिए बुलाया । मेरे सामने एक नाटे कद का, दुबला-पतला तथा कुछ गंदी-सी सूरत लिए एक लड़का खड़ा था ।

उसने अपनी कापी खोल ली और कुछ सूत्र समझाने लगा । मुझे लगा कि ये सूत्र नये हैं, लेकिन मेरा ज्ञान इतना नहीं था कि मैं उन्हें समझ सकता ।'

उनकी गणित की खोजों के संबंध में प्रो. हार्डी का कहना है—

'अनेक व्यक्तियों ने मुझसे प्रश्न किया कि क्या रामानुजम कोई जादू जानते हैं ? क्या उनका तरीका अन्य गणित शास्त्रियों से भिन्न है । मेरे पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है । लेकिन मेरा विश्वास है कि गहन अध्ययन करनेवाले सभी व्यक्ति एक ही तरह से सोचते हैं । रामानुजम संख्याओं के साथ खिलवाड़ करते थे । मुझे अच्छी तरह याद है कि डॉ. लिटिलवुड ने एक बार रामानुजम के बारे में कहा था, 'उनको हर संख्या की असाधारण जानकारी थी । एक बार रामानुजम अस्पताल में थे । मैं उनको देखने गया । मैं जिस टैक्सी से गया, उसका नंबर था १७२९ । मैंने रामानुजम से कहा कि यह संख्या अच्छी नहीं है क्योंकि इसमें १३ का भाग दिया जा सकता है । रामानुजम ने एकदम उत्तर दिया और बोले— "यह एक आश्चर्यजनक संख्या है ।"

१९२६ में कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने रामानुजम के अनुसंधान पत्रों को प्रकाशित किया । इनका संपादन प्रो. हार्डी ने स्वयं किया ।

प्रो. हार्डी ने कहा, "कुंबकोनम के कॉलेज ने जब एक महान व्यक्ति को लेने से इनकार कर दिया, तब कॉलेज का कोई लाभ नहीं हुआ । रामानुजम की परंपरा को आगे बढ़ाने का काम भारत की वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों पर आ पडा है ।"

—भंवर लाल हर्ष

प्रतिक्रियाएं



पुरस्कृत पत्र

फागुनी मौसम में 'प्रेम' का संदेश लेकर कादम्बिनी का अंक मिला।
भारतीय संस्कृति में वसंत ऋतु स्वयंमेव ही एक महोत्सव है। वस्तुतः वसंत हमारे यहां ऋतुराज ही नहीं है, आनंद कंद परमात्मा की विभूति भी है।

मासानां मार्ग शीर्षोऽहमृतनां कुसुमाकरः
(महीनों में मैं मार्ग शीर्ष हूं और ऋतुओं में वसंत ऋतु)। फाल्गुन तथा चैत्र वसंत ऋतु का समय है। किंतु उसके राजकीय आगमन की घोषणा उसके दस दिन पूर्व माघ शुक्ल पक्ष पंचमी को ही हो जाती है, ताकि जड़ चेतन सभी उसके स्वागत के लिए तैयार रहें। **औरै रस, औरै रीति, औरै रंग, औरै राग, औरै तन, औरै मन औरै बन ह्वै गवो।**

रवीन्द्रनाथ ने वसंत को प्रेम, सौंदर्य और आनंद का मंजरित काव्य कहा है। सगर्भा आम्र एवं महुए की डालियां वासंती मलय पवन के ताल पर थिरक उठती है। नव-वय लतिकाएं अपने नव पल्लव के सनेहिल आकर्षण से रसिक मधुपों एवं कोयलों का मन मोह लेती हैं **'जब अमवा की डरिया पै बोले रे कोयलिया'** तब परदेशी का मन मचल उठता है और कह पड़ता है **'चला चली देसवा की ओर'** कोयल की कूक उसके हृदय में एक हूक पैदा करती है और प्राणप्रिया का स्मरण एक बेचैनी। फागुन में **'जेठ बड़े रसिया'** या **'फागुन में बाबा देबर लागैं'** और जुबान पर होता है—

झाल बाजै उफ बाजै और बाजै शहनाई
तेरे कारन हे गोरी मैं दर-दर ठोकर खाई
फागुन मस्त महीना गोरी का तुमको समझाई
मानौ बात हमारी खेलौ होली रंग उठाई
फिर देख चली जा सा रा रा रा

वसंतोत्सव को आज की होली का पूर्व संस्करण माना जाता है। वसंतोत्सव का ही एक नाम मदनोत्सव है। पुराणों के अनुसार फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन ढूंढ़ा राक्षसी को गांव से भगाने हेतु रंगोत्सव तथा हास्य विनोद का पर्व मनाने की परंपरा थी। उन्मुक्त हास परिहास, गाली-गलौज भी उसमें सम्मिलित थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने फाल्गुन के सूर्य की उष्मा को 'प्रयालिंगन मधु-माधुर्य स्पर्श से संबोधित किया है—

आदिम वसंतप्राते, उठोंइलो मेथितो सागरे
डान होते सुधापात्र
विष भांड लये वाम करे

— श्रीकांत कुलश्रेष्ठ
केंद्रीय विद्यालय कोलीवाड़ा
बंबई-३७

मार्च अंक (फागुनिया विशेषांक) में यूं तो सभी रचनाएं सामयिक थीं, लेकिन इन सबके मध्य **मरुस्थल में बदल रहा है नंदनवन'** पढ़कर ऐसा लगा-जैसे अब पर्वतारोहियों ने एवरेस्ट या अन्य ऊंची चोटियों पर जाना एक फैशन समझ लिया है ? एक समय था जब २९ मई, १९५३ के दिन पहली बार दो इंसानों ने एवरेस्ट पर अपनी विजय पताका फहरायी थी । इन दो इंसानों में एक थे न्यूजीलैंड के 'एडमंड हिलेरी' और दूसरे थे भारत के 'तेनसिंह' ।

उसके बाद लगभग ४० बरस तक पर्वतारोहियों की पर्वतों पर चढ़ने की प्रवृत्ति खामोश रही, लेकिन अब आधुनिक तकनीक के ईजाद हो जाने और कुछ ज्यादा ही दु'स्साहस बताने की प्रवृत्ति ने एवरेस्ट और अन्य चोटियों पर जाने के लिए भीड़ बढ़ने लगी ? इसका परिणाम यह हुआ कि ऊंची चोटियों पर अब 'मेले' खाने लगे, जो धीरे-धीरे 'मैला' (कचरा) में परिवर्तित होने लगे । आज हालत यह है कि सर्वोच्च चोटियों पर ५० टन कचरा जमा है ? वह दिन दूर नहीं, जब इन चोटियों पर से कचरा हटाने के लिए भी पर्वतारोहियों के दल भेजने पड़ेंगे ?

— अविनाश वावीकर
सेंधवा (प. निमाड़) (म.प्र.)

पूर्वाग्रह से ग्रसित कविता

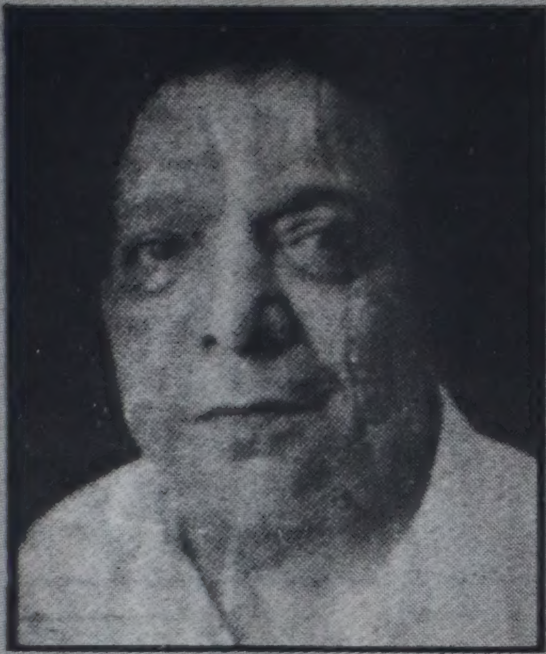
मैं कादम्बिनी का पुराना पाठक हूं । लेकिन पत्र पहली बार लिख रहा हूं । वास्तव में कादम्बिनी हिंदी साहित्य की एक स्तरीय पत्रिका है । मुझे हास्य-व्यंग्य (फागुनिया, सबरस) विशेषांक बेहद पसंद है । मार्च, '९५ के 'प्रवेश' स्तंभ के 'पुरुष' शीर्षक के अंतर्गत सुश्री वर्षा सोम की कविता पढ़ी । ऐसा लगता है कि वह कविता उन्होंने पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर लिखी है । 'पुरुष-स्त्री' संबंधों पर उन्होंने एक पक्षक्षीय विचार प्रस्तुत किये हैं । हो सकता है कि वर्तमान परिवेश को देखते हुए उनका कहना सही हो, परंतु पूर्णतया नहीं ।

— नवीन माहेश्वरी
मुरादाबाद (उ.प्र.)

इन पाठकों ने भी अपनी प्रतिक्रियाएं भेजी हैं : प्रदीप शर्मा; महेश्वर (म. प्र.), एम. के. शाह; नयी दिल्ली, दिलीप कुमार वर्मा 'प्रेम'; बलरामपुर, गोंडा (उ. प्र.), राधेश्याम पाठक 'उत्तम'; उज्जैन (म.प्र.), डॉ. जगदीश सहाय; बुरहानपुर (म.प्र.), नीरजकुमार गोयनका; सीतामढ़ी (बिहार), बी. एल. नागर रावतभाटा; कोटा (राज.), संजय कुमार; पूर्वी चंपारण (बिहार), रमेश शंकर सक्सेना; टीकमगढ़ (म. प्र.), बीरेंद्र सिंह; भरकारी, इलाहाबाद, मनोज कुमार उप्रेती; हल्द्वानी (उ.प्र.), अरबिंद त्रिवेदी; तेलियरगंज इलाहाबाद, शिताब सिंह चौधरी; यमुनानगर (हरियाणा), ललितकुमार शर्मा; भोपाल, डॉ. शकुन चंद गुप्त आर्य; रायबरेली (उ.प्र.), मुकुंदलाल साहू; जांजगीर (म.प्र.), रवीन्द्र दीक्षित; चौखंडी इलाहाबाद, रामकुमार शर्मा; रोहतक (हरियाणा) ।

कालचिंतन जीवन चिंतन है

फागुनिया अंक माह मार्च, '९५ में काल-चिंतन पढ़ा । प्रेम शब्दातीत है, प्रेम को प्रमाण नहीं चाहिए, प्रेम को प्यास दीजिए, प्यास से ही प्रेम उदित हुआ था' भाव-भरे विचारों को आपने अपनी लेखनी से उद्धृत कर अंतरमन की गहराई को स्पर्श कर दिया । प्रत्येक अंक को संजोकर रखता हूं । माह के प्रारंभ से कादम्बिनी



श्री खंडेलिया नहीं रहे !

द हिंदुस्तान टाइम्स लि. के निदेशक एवं बिड़ला ग्रुप शुगर फैक्टरीज के सलाहकार श्री मोहन लाल खंडेलिया का ११ अप्रैल को प्रातः मद्रास के अपोलो अस्पताल में हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया । वह ६६ वर्ष के थे ।

विनम्र एवं मृदुभाषी श्री खंडेलिया के.के. बिड़ला उद्योग समूह से चार दशकों से अधिक समय तक जुड़े रहे । १९९० में बिड़ला ग्रुप ऑव शुगर फैक्टरीज के सलाहकार बनने से पूर्व वह अपर गंगेज शुगर एंड इंडस्ट्रीज के कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे । चीनी उद्योग समूह एवं अनेक संगठनों की समितियों के भी वह सदस्य रहे । कादम्बिनी परिवार की ओर से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि ।

की प्रतीक्षा में रहता हूं । ज्ञानवर्धन के लिए पत्रिका बहुत ही उपयोगी है ।

— ज्वालाप्रसाद तिवारी
मालथौन, जि. सागर (म.प्र.)

विगत १० वर्षों से मेरा सबसे प्रिय स्तंभ 'काल चिंतन' मेरे युवामन को उद्वेलित करता रहा है । प्रत्येक महीने इस स्तंभ को सर्वप्रथम पढ़ता हूं और अपने मन में एक असीम शांति अनुभव करता हूं । ऐसे स्तंभ का प्रकाशन एक स्थापित पत्रिका द्वारा ही किया जा सकता है ।

— संजय कुमार
बेगूसराय

कालचिंतन की प्रशंसा में हमें इन पाठकों के भी पत्र मिले : डॉ. रजनीकांत; शिमला, रामदास शर्मा कौशिक; बैतूल (म.प्र.), अमरेश कुमार शर्मा; गोपालगंज (बिहार), विजय कुमार कर्ण; औरंगाबाद (बिहार), आनंद साहू; पिपरिया (म.प्र.), मधुर शास्त्री; नयी दिल्ली, श्रीकांत तरसोलिया; जालौन (उ.प्र.), कुमार रवि प्रिय; पटना, उदयवीर सिंह उपाध्याय; अलीगढ़ (उ.प्र.), नारायण सिंह महदेले; पन्ना (म.प्र.), अन्तेश कुमार; पटना ।

कविताएं पसंद आयीं

कादम्बिनी मार्च अंक की कविताएं एवं रचनाएं देवेंद्र इंद्रेश की बसंत की सरकार, राधाकृष्ण प्रसाद की तुम्हीं छको देश के भावी नेताओं, सुरेश नीरव की रेशमी दिल्ली, मधुप पांडे की अंगूठा बहादुर, दिनेश शुक्ल की फागुन लिखे कपोल पर, डॉ. रेखा व्यास की अनुभूति का संसार पसंद आयीं ।

— माधव राज दुबे
बालपुर, गोंडा (उ.प्र.)

फागुनिया अंक की इन पाठकों ने भी प्रशंसा की है, राजकुमार धर द्विवेदी; सतना (म.प्र.), निर्दोष कुमार केसरी; समस्तीपुर (बिहार), महेश पलड़िया; नैनीताल (उ. प्र.), अमित चांडक 'संत'; दिल्ली, राजेश नाथ तिवारी; रांची (बिहार), जगदीश प्रसाद छत्रवाल; जयपुर (राज.), कैलाश जोशी; बरेली (उ.प्र.), संजीव कुमार शर्मा; मधुबनी, जयप्रकाश मिश्र; शिवहर (बिहार), रामनरेश सिंह मंजुल; हरैया (बस्ती), शैलेंद्र भार्गव; खंडवा, रमेश प्रसाद द्विवेदी; सीधी

तंत्र विशेष... संपादक

पाठकों के विशेष आग्रह पर कादम्बिनी का जून '९५ का अंक— तंत्र विशेषांक

(म.प्र.), मनोज कुमार वाजपेयी; रायबरेली (उ.प्र.), बासुदेव मिश्र महीप; सुल्तानपुर (उ.प्र.), दरियाब सिंह राजपूत 'ब्रजकण'; मोदीनगर (उ.प्र.), रामाजी राउत; कूचबिहार (प. बं.), दिल्दार अहमद; प्रतापगढ़ (उ.प्र.), घनश्याम तिवारी; बस्ती (उ. प्र.), नीरज लोनी; पिपरिया , शिवेंद्र गर्ग 'सुमन'; जयपुर (राज.), भूपेंद्र वर्मा; रायपुर (म.प्र.), शिवस्वरूप; परेड, कानपुर, आशुतोष कुमार पोद्दार; खगड़िया (बिहार) ।

कादम्बिनी ज्ञानवर्धक

'कादम्बिनी' ज्ञानवर्धक पत्रिका है । इसके लिए हम आपके आभारी हैं कि 'शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए' जैसे स्तंभ देकर आप हमारे शब्द-ज्ञान का विकास करते हैं ।

— डॉ. कल्पना मसीह
रायपुर (म.प्र.)

प्रेरणा मिलती है

मार्च महीने की कादम्बिनी में स्थायी लेख 'कालचिंतन' और 'आखिर कब तक' बहुत अच्छा था । 'कालचिंतन' में भूख, प्यास, प्रेम, वासना का अर्थ एवं परिभ्राषा बतायी गयीं । जो सभी के लिए प्रेरणादायी थी । 'आखिर कब तक' । बहुत ही रोचक था जिसमें विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख किया गया । यह सब तो संपादकजी की महानता है कि हमें 'कादम्बिनी' द्वारा अच्छी प्रेरणा प्रदान करते हैं ।

— कुमारी पूनम पांडेय
खडवा (म.प्र.)

नया पैगाम

मैं कादम्बिनी का बहुत पुराना पाठक हूं । इससे पूर्व मैंने कभी पत्र नहीं लिखा; किंतु इस बार कादम्बिनी का फागुनिया विशेषांक बहुत अच्छा लगा । यह अंक कविताएं ज्ञानवर्धन, मनोरंजन सामग्री से भरपूर, प्रत्येक माह ग्राहकों (पाठकों) के लिए नया पैगाम लाता है ।

— एम. एस. रघुवंशी
सावली रोड सीकर (राज.)

रस और रंग से भरी

कादम्बिनी का नवीनतम अंक मिला । मैं नहीं जानती कि कादम्बिनी की पाठिका मैं कब से हूं । शायद पूर्वजन्म से । इस समय मेरी आयु २२ वर्ष है । हमारे हॉकर को सख्त निर्देश है कि कादम्बिनी का नया अंक सर्वप्रथम वह मुझे दे । कादम्बिनी के हर अंग-प्रत्यंग से होली के रस और रंग बरस रहे थे ।

— मधु
मेरठ (उ. प्र.)

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

विशेषांक की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय

वर्ष ३५, अंक ७, मई १९९५

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

स्थायी स्तंभ

कार्यकारी अध्यक्ष

नरेश मोहन

संपादक

राजेन्द्र अवस्थी

कहानियां एवं व्यंग्य

कविताएं

संपादकीय परिवार

सह-संपादक : **दुर्गाप्रसाद शुक्ल,**
मुख्य उप-संपादक : **भगवती प्रसाद डोभाल,**
वरिष्ठ उप-संपादक : **प्रभा भारद्वाज,**
उप-संपादक : **डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह,**
प्रूफ-रीडर : **प्रदीप कुमार,**
कला विभाग-प्रमुख : **सुकुमार चटर्जी**

संपादकीय पता : **'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।**
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

मूल्य : **अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये; द्विवार्षिक : २२५ रुपये;** विदेशों में : **पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान; अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)** अन्य सभी देशों के लिए : **अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०) ।**

शुल्क भेजने का पता :
प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ ।

पारदर्शी (आवरण) : प्रेमकपूर एवं एस. एन. **चोपड़ा ।**

काल-चिंतन

□ *वही होता है जो हम चाहते हैं !*

—नहीं; होता वह है जो हम नहीं चाहते !

—चाहने या न चाहने से क्या है, होना वही है, जो होना है ।

—नहीं होने देंगे ऐसा हम, जो हमारी क्रियाशीलता को चुनौती दे !

—चुनौती नहीं है यह, क्रियाशीलता बनी रहेगी तब न ?

□

—न जाने कितने प्रश्न एक के बाद एक उभरकर सामने आ रहे हैं और हमसे उत्तर चाहते हैं ।

—उत्तर न दे सकें ऐसी टूटन अभी आयी तो नहीं है ।

□

—महानगर की झुग्गियों में टिमटिमाते दीपक जल रहे हैं ।

—कहीं झोपड़ियों के बाहर मशालें भी हैं ।

—पहुंचकर पूछता हूं उनसे इन झुग्गियों में क्यों रहते हो ?

—एक : कहां जाएं हम ?

—दूसरा : यहां रहना सबसे बड़ा सौदा है । मेरे पास एक दूसरी झुग्गी थी । सरकार के समझदार अफसरों ने उसे तोड़ दिया और एक मजबूत बना-बनाया मकान हमें दे दिया ।

—तीसरा : मूर्ख बन जाता यह, यदि मैं सलाह न देता ।

—चौथा : कैसे ?

—तीसरा : जैसे तुम बने ! और और बने ! मैंने सरकारी मकान देखा ही नहीं, एक आया और एक लाख दे गया । इस क्रम में यह मेरी तीसरी झुग्गी है ।

□

—विस्फारित और हतप्रभ ! चरित्र यही है ? जीवन-यापन के प्रतिमानों का सत्य खंडहरों के नीचे छिपे तलघर की तरह, यहां भी छिपा है !

—सदियों से समर्पित 'महाराजाओं' के स्वर उनके अनुचरों में समाहित होकर

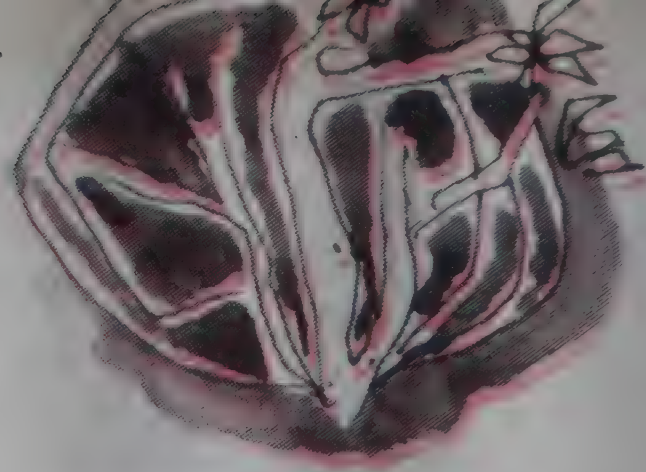


उसी परंपरा का निर्वाह एक सच्चे सेवक की तरह नहीं कर रहे, ये सब ?
—कर रहे हैं, हां, पूरी तरह !
—बिके हुए मस्तिष्क की प्रतिच्छाया प्रेतों की तरह सदियों गूंजती रहती हैं : 'आनेवाला आयेगा !'
—आने की यह प्रतीक्षा कितनी सुखद और सौम्य है !
—सुखद और सौम्य है क्योंकि कोई विषधारी या विषपायी यहां आकर अभंग नहीं रह सकता !
—भले ही वह एक क्षण हो, लेकिन यदि एक क्षण सुखद क्षणों के अनगिनत आयाम छोड़ जाए तो वह मूल्यवान है ।
—क्षणजीवी कीड़े और मकोड़े ही नहीं होते, हम सब क्षणजीवी हैं । वातायन के निलय में बिखरे टिमटिमाते तारे सभी क्षणजीवी हैं ! पृथ्वी का प्रांतर क्षण-जीवी है ।
—क्षण की आत्मा भी क्षण जीवी है ।
—समस्त चर-अचर विश्व के बाह्य, अवगाहन, समझ और न समझ के द्वार सभी कुछ जहां क्षणजीवीं हों, वहां अमरता की बात सोचना अपने को महानदी की तीव्रगामी धारा में वहन की ओर छोड़कर आश्वस्त हो जाना है कि हम अपने पराक्रम से नदी को पार कर रहे हैं !

□

—एक दृष्टि उन पर जो अमर हैं :

- सरयूतट पर आश्रय लेते अचानक आत्मघात
- महाबली का बहेलिये के हाथों पराभव
- शांति के उपदेशक का सड़ांध से विलय
- अमरत्व के पूर्व कीलों से ठोककर एक-एक अंग का समर्पण और उसका निरंतर अंतिम स्वर तक दर्द सहना
- अपने ही विश्वस्त व्यक्तियों द्वारा मृत्यु के द्वार तक पहुंचने की विवशता
- जीवन-पर्यंत संघर्षरत जीवन-गाथाएं लिखते हुए अंततः दर्द के दीये की



बाती को जलाना और उसकी ज्योति में अपने को समर्पण कर देना

□

—बहुत दुखद है, दोस्त, सदियों के इतिहास के पृष्ठ लौटाकर देखना

—जीवनभर यातनाएं सहकर जीवनोद्धार के बाद वरण का संस्कार केंद्र बनना, क्या यही नियति है जीव-भाषा की; कि आदर दें तो हम शव को, जीवन को बना दें, कुत्सित चित्र शव का !

—यही है वह, यही है लक्ष्मण रेखा जो हरण का कांड आरंभ करने में सहायक होती है । तब भले हैं वे जो हथेलियों में जिंदगी को लेकर चलते हैं । उनके लिए रोग-शोक अनासक्त है । परंपरा उनका अवगाहक बनेगी; अपना रास्ता स्वयं खोज लेंगे वे ।

—जाने के बाद इतिहास लिखा जाएगा, प्रस्तर प्रतिमाएं लगेंगी, गौरवगाथाओं का गान होगा और उनके नाम पर अपने लिए महल खड़ा करनेवालों का समुदाय एकजुट होकर जयगान के स्वरों से धरती और वातायन तक की दूरी इस तरह भर देगा कि सहवर्ती, सहयात्री और सहायक-भूमिका के नायक अपने विस्फारित गले का इलाज करते हुए अनजाने और अनचीन्हें चले जाएंगे यहां से ।

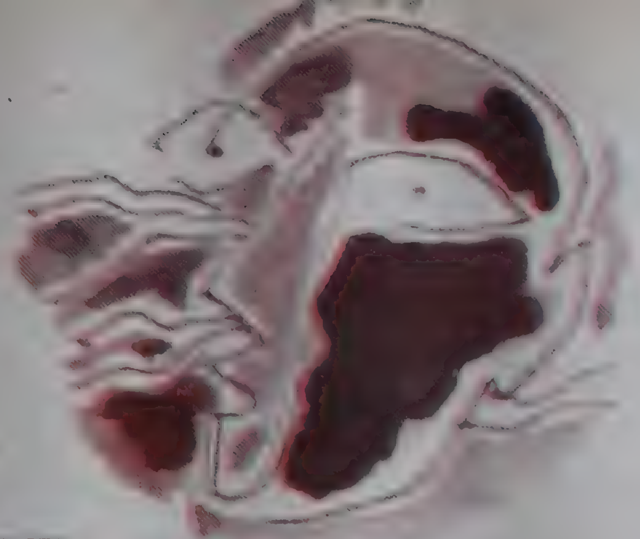
—दोस्त, धरती का कतरा-कतरा विषव्यापी है ।

—धरती पर उगनेवाले पेड़ और पौधे भी अपने साथ अनंत जीवों को, सुरक्षा सैनिकों की तरह, लेकर आते हैं ।

—फल वे भले देते हों और आश्वस्त हों, हम कि इन फलों से हमारी धमनियों में रक्त-संचार होगा; मिथ्या है सब क्योंकि रक्त-संचार की प्रक्रिया कालातीत नहीं है । फलों के साथ पलते कुचक्र के सौदागर अपना हिसाब-किताब पूरा कर अपनी थाती विरासत में अपने सहभागी को देकर चले जाएंगे ।

□

—कहने को कम है ? शब्द भंडार अक्षय हैं, क्षय होता है भंडारक का :



कि सर्प की पूंछ पर
पांव रखनेवालो
निश्चिंत न रहो कि
विषपायी का गरल गले में है,
सोच के क्षण हताहत होंगे
कि सोचा भी नहीं
कि विषपायी सर्प ने
करवट ले ली है !

□

—जीवन का हर क्षण हंता है

—जीवन का हर क्षण नियंता है

—हर क्षण का जीवन अपने आप में अस्तित्व का संरक्षक नहीं है !

—सब कुछ होता है जाने के बाद, इसीलिए इतिहास की पुस्तकें सबसे अधिक मूल्यवान हैं ।

—इतिहास अपने आप में मूल्यवान है क्योंकि उसमें सामर्थ्य है कि हर बदलते हुए क्षण का वह भक्षण कर सकता है ।

—शेष रहता है कुछ पलों के लिए तो वह वर्तमान है; कुछ पलों के लिए ही तो ..... !

□

—छोड़ दीजिए सोचना होता क्या है, क्या नहीं होता, कब तक है, कब तक नहीं, कसकर बांधिए मुट्ठी को वर्तमान के साधक-असाधक क्षणों को, यह समझते हुए कि मुट्ठी के बीच की दरारें भी दलालों के हाथ बिकी हुई हैं ।

राजेन्द्र अवस्थी



लालू प्रसाद यादव : हमारी शुभकामनाएं

आखिर बिहार में लालू प्रसाद यादव ने अपना झंडा फिर से गाड़ ही लिया । लालू भाई को इस विजय के लिए बधाई ।

आश्चर्य यह है कि बिहार से जितने लोग आते थे, कहा करते थे कि 'अब लालू वे नहीं और उनका आना संदिग्ध है ।' बहुत से अखबार अपने हिसाब-किताब और गणित में फेल हो गये । लालू भाई ने यह सिद्ध कर दिया कि इस देश का 'मीडिया' कितने नीचे गिर गया है और अखबारों के बल पर न कोई चुनाव जीत सकता है और न हार सकता है । लालू यादव ने पहलवानी के अखाड़े में जिस तरह कांग्रेस से लेकर सभी पार्टियों को पछाड़ा है, वह अपने आप में एक मिसाल है । आश्चर्य तो तब हुआ जब मिथिला-जैसे अंचल से लालू के दल को विजय मिली । मिथिला सवर्णों और विशेषकर ब्राह्मणों का गढ़ है । तो यह मानना चाहिए कि सवर्णों ने भी लालू भाई को वोट दिये । जो हो, हम आशा करेंगे कि लालू प्रसाद यादव अब एक जिम्मेदार राजनेता की तरह कार्य कर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देंगे । मैं नहीं जानता कि समाचारपत्रों में जो छपा है, कहां तक सही है । लेकिन जो मैंने पढ़ा है, उससे मुझे संतोष मिला कि लालू भाई का नेतृत्व बदला हुआ होगा । जीतने के बाद उन्होंने कहा है, "मैं गरीबों और पिछड़े वर्गों की पूरी सेवा करूंगा और उन्हें आगे बढ़ाने के प्रयत्न करता रहूंगा । इसके साथ ही सवर्णों को मैं विश्वास दिलाता हूं कि वे भी बिहार राज्य के नागरिक हैं, इसलिए उनकी रक्षा की जिम्मेदारी भी मेरी है । उन्हें डरना नहीं चाहिए ।" यह सद्बुद्धि बनी रहेगी, इस विश्वास के साथ लालू प्रसाद यादव को मेरी ढेर-सी शुभकामनाएं ।

नित्यानंद स्वामी की गरिमा

कुछ दिन पहले देहरादून में मेरी भेंट स्वामी नित्यानंदजी से हुई । उसी भेंट में उन्होंने दूसरे दिन सुबह अपने घर में नाश्ते का आमंत्रण मुझे दिया । नित्यानंदजी के परिवार के सभी सदस्यों के साथ मैंने नाश्ता किया । मेरे साथ एम. के. पी. (पी.जी.) कॉलेज की प्रधानाचार्या डॉ. सुधा पाण्डेय भी थीं । दोनों अच्छे दोस्त हैं ।

तीसरा मैं शामिल हो गया और पहली बार में ही नित्यानंद स्वामी ने अपार अपनत्व देकर जीत हासिल कर ली।

स्वामी नित्यानंद उत्तर प्रदेश विधान परिषद के कार्यकारी सभापति हैं। वे कांग्रेसी हैं इसलिए सत्ता पक्ष के साथ उनका संघर्ष चलता ही रहता है। कुछ दिन पहले तो अजीब घटना हो गयी जो अखबारों में चर्चा का विषय बनी। विधान परिषद में सत्ता पक्ष ने लगातार तीन दिन तक कार्यवाही नहीं चलने दी, तब उन्होंने कठोर निर्णय लेकर सबको चौंका दिया। इस विषय पर अखबारों में बहुत कुछ लिखा जा चुका है इसलिए मैं उसे दोहराऊंगा नहीं, इतना जरूर कहना चाहूंगा कि नित्यानंद स्वामी बहुत पढ़े-लिखे और समझदार व्यक्ति हैं। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने भाग लिया है और १८ बार जेल गये हैं। सीनियर एडवोकेट के रूप में भी उन्होंने अच्छी सफलता पायी। स्वभाव से अत्यंत मिलनसार, सरल-हृदय, मृदुभाषी और यथा-संभव हर आदमी की मदद करना नित्यानंदजी के गुण हैं। ऐसे आदमी का राजनीति में रहना उस राज्य के लिए हितकर तो है ही देशभर में एक उदाहरण के रूप में भी उन्हें प्रस्तुत किया जा सकता है।

इसलाम में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां है ?

हम पहले लिख चुके हैं कि सलमान रुशदी और तसलीमा नसरीन इन दिनों इसलामधर्मी होने का दंड भोग रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि उनके विवादास्पद उपन्यास का हिंदी अनुवाद दिल्ली में धड़ल्ले से बिक रहा है। । उन दोनों को इसलाम धर्म के अंतर्गत मृत्युदंड दिया गया। इसी पंक्ति में ढाका की फरीदा रहमान भी शामिल हो गयी हैं। फरीदा रहमान बंगलादेश की संसद की सदस्य हैं। फरीदा रहमान ने १५ मार्च को एक बयान दिया था कि, 'इसलाम की नजर में यह गलत नहीं होना चाहिए कि पारिवारिक संपदा पर पुरुष और स्त्री दोनों को समान हिस्सा दिया जाए... मैं चाहती हूं कि महिलाओं को समान अधिकार दिये जाएं। इसके लिए यह चिंता नहीं करनी चाहिए कि कुरान'में क्या लिखा है।' इस पर बंगलादेश के कट्टरपंथियों ने विरोध का स्वर उठाया और मांग की कि फरीदा को फांसी दी जाए। इसलामी नेता मुफ्ती फजूल हक अमीनी ने तो यहां तक कह दिया कि सरकार पर हम दबाव डालते रहेंगे कि वह फरीदा रहमान को फांसी पर चढ़ा दे। यह मांग उन्होंने तसलीमा नसरीन के संबंध में की थी। तसलीमा ने तो स्वीडन में जाकर शरण ली लेकिन फरीदा रहमान अभी तक ढाका में ही हैं, और उन्होंने एक बयान दिया है कि मैं भागूंगी नहीं, यहीं रहकर मुकाबला

करूंगी । मैंने तो केवल पारिवारिक संपदा में समान अधिकार की मांग की है । मैंने यह तो नहीं कहा कि कुरान का पुनर्लेखन किया जाए ।

कौन पढ़ेगा अब : फिल्में देखेंगे सब

जी. टी. वी. की होड़ में अब दूरदर्शन ने भी दिन-रात फिल्में दिखाने के लिए एकदम एक नया चैनल खोल दिया है । इस हालत में दिन-रात लोग फिल्में ही देखेंगे या कुछ और काम करेंगे । जिस तरह की फिल्मों की घोषणा की गयी है, उससे पता चलता है कि सबसे ज्यादा 'कपड़ा उतारू' फिल्में ही दिखायी जाएंगी । हॉलीवुड की फिल्में भी दिखायी जाएंगी । दिखाया चाहे जो जाए मैं विरोधी नहीं हूं, लेकिन दुनियाभर में मैंने देखा है कि दूरदर्शन में 'पे' चैनल भी होते हैं । यानि बाकी चैनल से तो आप सभी कुछ मुफ़्त में देख सकते हैं, 'पे' चैनल में पैसा डालना पड़ता है और उसमें मात्र 'ब्लू फिल्में' होती हैं । मेरा सुझाव है कि भारतीय दूरदर्शन को भी 'पे' चैनल शुरू कर देना चाहिए ताकि देश को कुछ आमदनी तो हो ।

कागज की कीमतें क्यों बढ़ीं

इस देश के प्रकाशक परेशान हैं कि कागज की कीमत की बेहद बढ़ोतरी कर दी गयी है । प्रकाशक परेशान होगा तो लेखक और छात्र भी परेशान होंगे, क्योंकि भार तो सभी को ढोना पड़ेगा । मजेदार बात तो यह है कि पर्यावरण के नाम पर हमारे जंगल काटे जा रहे हैं । उनसे कागज बनता है और 'ओपन मार्केट' की शर्त के अनुसार अब भारत का कागज विदेशों में बेचा जा रहा है । प्रकाशक परेशान जरूर हैं, लेकिन एक बात समझ लें तो शायद उन्हें थोड़ी शांति मिलेगी । बात बहुत छोटी है—हमारी सरकार नहीं चाहती कि इस देश की जनता साक्षर हो । यदि वह पढ़-लिख लेगी तो समझदार हो जाएगी और तब आज के कितने नेताओं को वोट मिलेंगे और वे जीत सकेंगे, यह सब खुदा-जाने ।

आडवाणी और हांजी

हाल ही एक भाषण में श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने एक मजेदार घटना सुनायी, उन्होंने बताया कि पाकिस्तान से जब मैं दिल्ली आया था और कोई फोन करता था तो मैं फोन उठाकर कहता था, 'हां, जी' ।

दूसरी तरफ से जवाब आता था कि साहब हैं ?

मैं उत्तर देता था, 'मैं बोल रहा हूं लालकृष्ण आडवाणी ।' इसे कोई मानने को

तैयार नहीं होता था । तब मैंने जाना कि 'हां जी' किसकी भाषा है, यह तो कर्मचारियों की भाषा है । सभी सोचते कि यदि आडवाणीजी बोल रहे हैं, तो कहते, 'हलो !' अथवा अपना नाम लेते आडवाणी ।

इस छोटे से प्रकरण ने मेरी आंखें खोल दीं' और तब मैंने समझा कि पढ़े-लिखे आदमी की भाषा 'हां जी' नहीं होती । भाषा में बहुत बड़ा बल है । वह हमारा समूचा संस्कार है ।



आखिर मोरारजी भाई नहीं रहे !

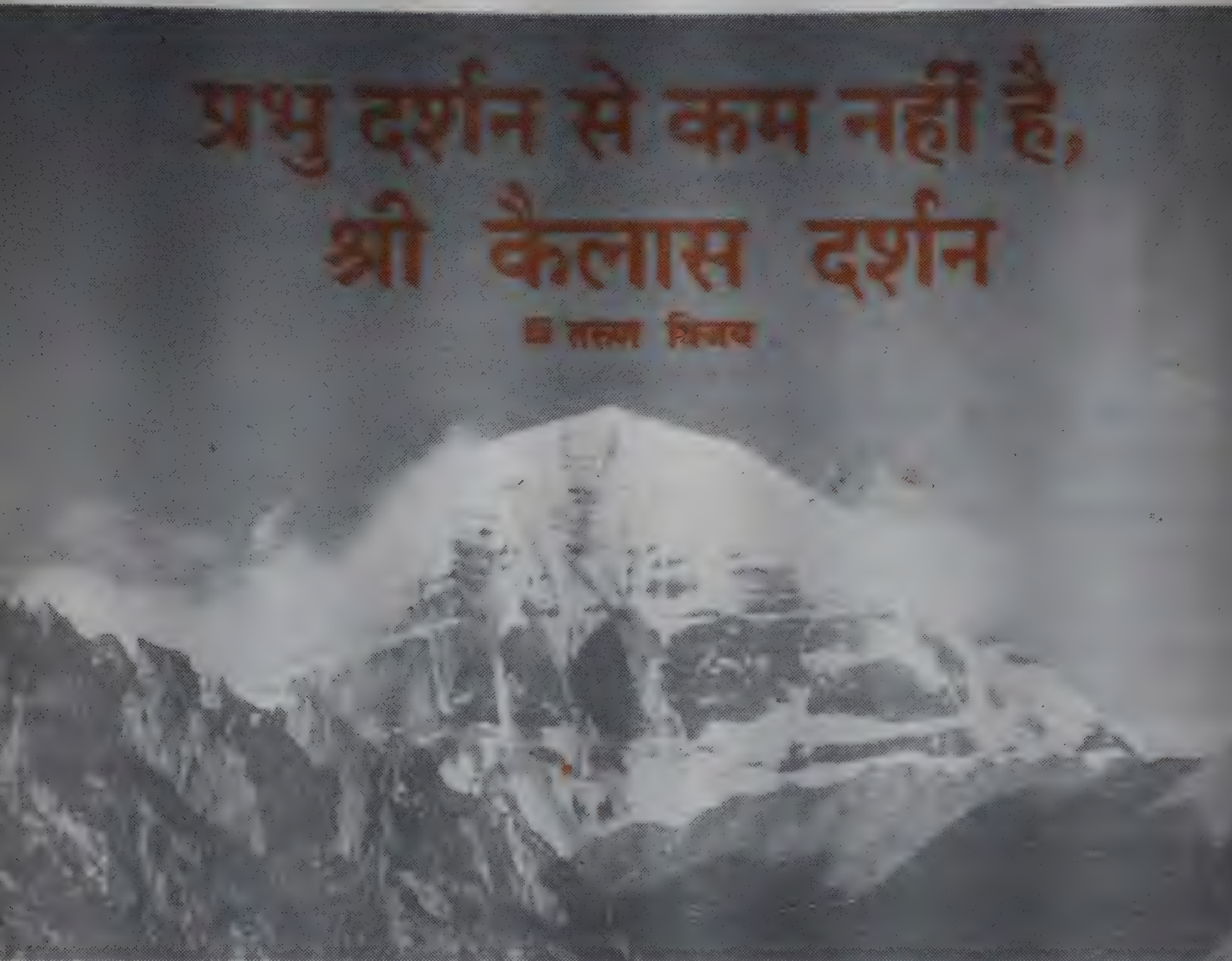
पिछले अंक में ही मैंने यह पूरा कॉलम मोरारजी भाई पर समर्पित किया था । उनके साथ बीते हुए अन्य क्षणों की मैंने चर्चा की थी । यह भी कामना की थी कि मोरारजी भाई इच्छामृत्यु के धनी बनें, लेकिन मृत्यु इतनी विकराल और दुष्ट है और यमराज का खाता इतना क्रूर है कि वहां किसी की कोई सुनवाई नहीं होती ।

जो भी हो मोरारजी भाई ने सौ वर्ष तो पूरे कर ही लिए । सार्वजनिक जीवन में इतनी लंबी जिंदगी हमारे देश में शायद किसी को नहीं मिली । मोरारजी भाई के प्रति कृतज्ञता और नमन प्रकट करते हुए कादम्बिनी परिवार उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

—राजेन्द्र अवस्थी

प्रभु दर्शन से कम नहीं है, श्री कैलास दर्शन

■ तरुण विजय



श्री कैलास पर्वत ।

कैलास मानसरोवर विश्व के हिंदुओं का सर्वोच्च तीर्थस्थान है । जहां जाने की हर हिंदू के मन में इच्छा रहती है । परंतु जब से यह स्थान चीन के कब्जे में गया है, यहां जाना न केवल अधिक दुष्कर बल्कि अधिक व्यय साध्य भी बन गया है । अब यहां की यात्रा हर वर्ष भारत और चीन के विदेश मंत्रालय संयुक्त रूप से आयोजित करते हैं और प्रत्येक यात्री का खर्च लगभग ५० हजार रुपये के आसपास होता है ।

एक माह में पूरी होनेवाली यात्रा में एक वर्ष में लगभग ४०० यात्रियों को ही जाने की अनुमति मिलती है । हजारों आवेदनकर्ताओं के नाम भारत विदेश मंत्रालय के पास आते हैं, जो हर वर्ष इन नामों में से लाटरी निकालकर ४०० यात्रियों का जाना सुनिश्चित करता है । यात्रा पर जाने के लिए एक कठोर चिकित्सा जांच से भी गुजरना पड़ता है, जो भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के डॉक्टर करते हैं ।

तकलाकोट के पुरंग गेस्ट हाउस में एक अजूबा हुआ । क्षितिज पर सूरज को अपनी स्वर्णमयी आभा का आलोक बिखेर अस्त होते समय का नयनाभिराम दृश्य देखकर जब हम अपने कमरों की ओर लौटे, तो एक आवाज

तकलाकोट के पुरंग गेस्ट हाउस में एक अजूबा हुआ । क्षितिज पर सूरज को अपनी स्वर्णमयी आभा का आलोक बिखेर अस्त होते समय का नयनाभिराम दृश्य देखकर जब हम अपने कमरों की ओर लौटे, तो एक आवाज सुनायी दी—''नमस्ते जी । कोई दिक्कत हो तो बताने का ।'' अरे वाह ! वह तिब्बती लड़का बड़ी अच्छी हिंदी बोल रहा था । विदेश में, अपनी मातृभाषा के दो शब्द सुनकर मन के तार कैसे झनझना जाते हैं ! उसका नाम टेम्पा था । देहरादून में पला-बढ़ा । फिर रिश्तेदारों से मिलने चुपके से तिब्बत पहुंचा, पर वापसी में पकड़ लिया गया । पर वह तकलाकोट का ही होकर रह गया । वहीं शादी रचा ली ।

सुनायी दी—''नमस्ते जी । कोई दिक्कत हो तो बताने का ।'' अरे वाह ! वह तिब्बती लड़का बड़ी अच्छी हिंदी बोल रहा था । विदेश में, अपनी मातृभाषा के दो शब्द सुनकर मन के तार कैसे झनझना जाते हैं ! उसका नाम टेम्पा था । देहरादून में पला-बढ़ा । फिर रिश्तेदारों से मिलने चुपके से तिब्बत पहुंचा पर वापसी में पकड़ लिया गया । किसी तरह छूट तो गया, पर वह तकलाकोट का ही होकर रह गया । वहीं शादी रचा ली । पत्नी गेस्ट हाउस में काम करती है । वह हमें घर ले गया । उत्साह से पुलकित हो उसने तिब्बती मक्खनवाली नमकीन चाय बनवायी । उसमें याक के दूध से बना मक्खन इस्तेमाल होता है—बड़ी मुश्किल से नाक बंद कर घूंट-घूंट चाय पी । मना इसलिए नहीं किया, ताकि वह बुरा न मान जाए ।

अगले दिन गणेश चतुर्थी थी । सुबह ५ बजे उठे । सामान बांधा । पौने छह बजे नाश्ता किया । नाश्ते में तली मूंगफली, रस, जैम, चाय, साबूदाने के पापड़ और मिली-जुली सब्जी थी । अच्छी होने के बावजूद एक तो चीनी स्वाद अभी जुबान पर चढ़ा नहीं था, दूसरे इतनी सुबह कैसे नाश्ता करें ! इस समय तो भारत में सुबह के ३.३० हो रहे थे । किसी तरह चाय पीकर जल्दी से बस में बैठे । हमारा सामान पीछे ट्रक में रखा था । यात्री दो दलों में विभक्त थे—एक दल 'अ'—जो पहले कैलास यात्रा पर जानेवाला था और दूसरा दल 'ब' जो पहले मानसरोवर परिक्रमा करेगा । तकलाकोट से अगला पड़ाव तारचेन में था, प्रायः ५० किमी. दूर । मार्ग में मानसरोवर तट पर जैदी शिविर पड़ता है, जहां कुछ देर रुककर यात्री स्नान करते हैं और पास ही एक पहाड़ी पर चढ़कर कैलास के प्रथम दर्शन करते हैं । इस यात्रा के रोमांच और उत्तेजना के बारे में क्या कहा जाए ! लगता है बस अब जीवन सफल हो गया । अब कुछ भी हो जाए, परवाह नहीं । मानसरोवर में स्नान के बाद कैलास दर्शन हो जाए तो फिर और क्या शेष रह जाता है चाहने को ? तो साहब, सुबह बस चलते ही गणपति



गड़रिए का दुर्लभ चित्र ।

बप्पा मोरया के जयघोष से तकलाकोट गूंज उठा । गणेश चतुर्थी के दिन पहले गणपति स्मरण किया, फिर भजन गूंजने लगे । आज यात्रियों में कुछ अनोखा ही उत्साह था । सुबह का सुरमई अंधेरा छंटता जा रहा था । बस कच्चे, पथरीले रास्ते पर हिचकोले खाती बढ़ रही थी । एक घंटे बाद अभी झपकी लगी ही थी कि अबूधाबी से आये राव साहब चीखे—अरे बायीं ओर देखो, बायीं ओर ! फैंटास्टिक ! सबने तुरंत बायीं ओर मुंह घुमाया तो अवाक रह गये । वह स्वप्न था या सत्य ? हल्के-हल्के उजाले में आकाश के अनंत विस्तार के एक छोर पर दिव्य मणि-सा चमकता वह अपार गरिमामय पर्वत-शुभ्र, उज्ज्वल, मनमोहक ! गाइड बोला—यह गुरला मांधाता पर्वत है । लोकश्रुति के अनुसार महाराजा मांधाता ने मानसरोवर की खोज की थी और वहीं तट पर तपस्या की थी ।

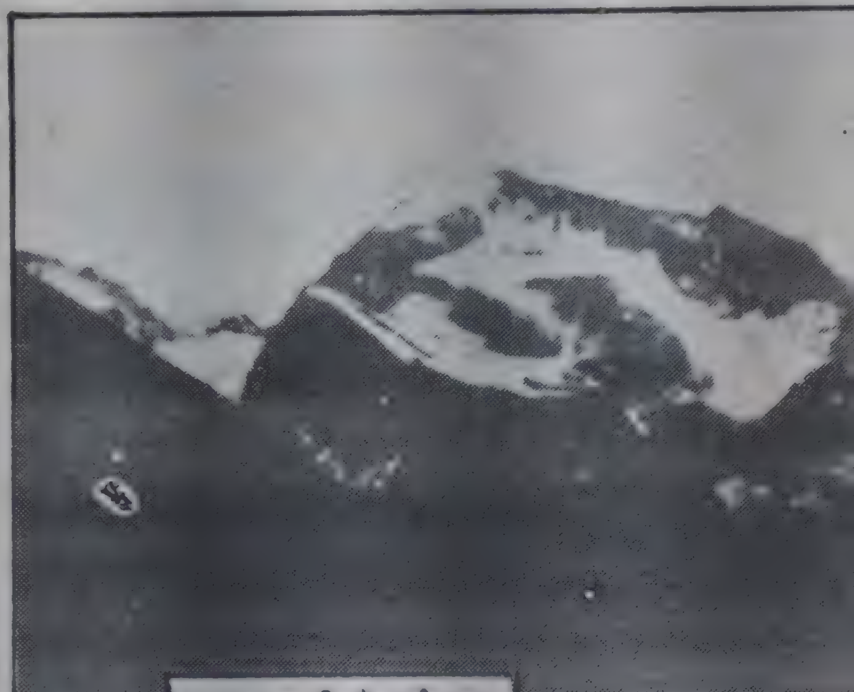
मांधाता पर्वत

७.३० बजे मांधाता पर्वत के मंत्रमुग्ध कर देनेवाले दर्शन के उपरांत आगे बढ़े । हम एकदम मैदानी क्षेत्र से गुजर रहे थे । पठार, पहाड़ी क्षेत्र से बिलकुल भिन्न होता है । ऊंचाई पर रेगिस्तानी मैदान जैसा—जहां छोटे-छोटे टीले, टीलेनुमा पहाड़ियां ही ज्यादा होती हैं । ९ बजे के लगभग दो पहाड़ियों के बीच स्फटिक-सा निर्मल गहरे नीले रंग का जलाशय दिखा तो सब यात्री खुशी से चिल्ला उठे—मानसरोवर ! पर गाइड ने बताया वह राक्षस ताल है । जिसे रावण-हृद भी कहते हैं । इसके बारे में कई कथाएं प्रचलित हैं । इसका जल आचमन या स्नान के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता । न यहां कोई पूजा होती है,कहते हैं, रावण ने तपस्या कर शिवजी से वरदान मांगा कि वह कैलास लंका ले जाएगा । सब देवता परेशान हो गये, अब शिवजी के दर्शनार्थ लंका जाना पड़ेगा ? बड़ी कठिनाई हो जाएगी । अंततः उन्होंने एक उपाय किया । जब रावण कैलास पर्वत उठाकर लंका की ओर बढ़ने लगा तो उसे तीव्र लघुशंका हुई । पास ही गणेशजी खड़े थे । रावण ने गणेशजी को कैलास थमाया और कहा जब तक वे निवृत्त होते हैं, तब तक

कैलास भूमि पर न रखे । पर प्रभु की माया तो विचित्र होती है । एक ओर कैलासपति भारी होते चले गये, दूसरी ओर रावण को निवृत्त होने में घंटों लग गये । थककर गणेशजी ने कैलास भूमि पर रख दिया, तो रखा ही रह गया । कैलास लंका जाने से बच गया । राक्षस ताल इसी रावण का बनाया हुआ है । इसीलिए इसे अपावन माना जाता है ।

मानसरोवर पर सूर्य रश्मियां

११ बजे हम मानसरोवर तट पर पहुंचे । मानसरोवर-मानसरोवर ही है । उसकी उपमा किसी से नहीं कीजा सकती । सूर्य की रश्मियां मानस के जल में परावर्तित हो अनंत सूर्यों का आभास करा रही थीं । मानसरोवर की लहरें सागर की लहरों के समान उठती-गिरतीं, क्षितिज और मानस के जल का रंग एक जैसा-एक रूप ! कहां जल की सीमा खतम होती है और क्षितिज शुरू होता है, जान पाना असंभव । चारों ओर पठारी मैदान और कुछ-कुछ छोटी पहाड़ियां । मध्य में यह दैवी अपार जलराशि, जिसे स्वयं ब्रह्मा ने अपने मानस से रचा और जहां देवगण स्नान करने आते हैं । तट के आसपास रंगीन फूलोंवाली घास थी, जिस पर पांव रखते ही धंसते थे । मानसरोवर के हंसों के बारे में बहुत सुना था—काफी प्रयास किया, कहीं दिखें—पर हंस तो नहीं, हां बत्तखें जरूर दिखीं । इसी मानसरोवर का वर्णन हमारे आदि-ग्रंथों में मिलता है । रामायण, महाभारत, सभी पुराणों—विशेषकर स्कंदपुराण में इसका वर्णन है । बाणभट्ट की कादम्बरी, कालिदास के रघुवंश और कुमारसंभवम्, संस्कृत और पाली के बौद्ध ग्रंथों में भी इसका सुंदर वर्णन है । बौद्ध-ग्रंथों में इसे 'अनोतत्त' या 'अनवतप्त'—जो ऊष्मा और कष्ट से परे है—कहा गया है । महाभारत में इसे बिंदुसर तथा जैन ग्रंथों में इसे पद्म-हृद कहा गया है । इसके चारों ओर सतलज, करनाली (सरयू की एक सहयोगी नदी) ब्रह्मपुत्र तथा सिंधु के उद्गम हैं । इसके उत्तर में कैलास, दक्षिण में गुरला मंधाता, पश्चिम में राक्षस ताल है । सागरतट से १४९५० की ऊंचाई पर स्थित मानसरोवर का व्यास ५४ मील तथा गहराई

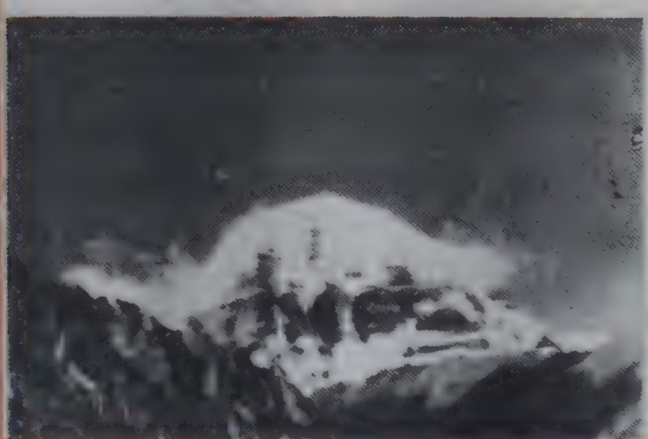


चमत्कारी ॐ पर्वत ।

३०० फीट है । यह २०० वर्ग मील क्षेत्र में फैली है । तिब्बती इसे 'त्सो मावांग' या 'त्सो माफाम' कहते हैं—यह विश्व की सबसे पवित्र, सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्राचीन झील है । सर्वे ऑव इंडिया द्वारा १९३४ में प्रकाशित एस. सी. बरार्ड व एच. एच. हैडन की पुस्तक में कहा गया है कि मानव-सभ्यता के ज्ञान में यह सबसे प्राचीन झील है । भूगोलविदों की जानकारी में आनेवाली सबसे पहली झील भी मानसरोवर ही

है ।

हां, तो मानसरोवर के तट पर आकर मानो होशोहवास गुम हो गये । एक-दूसरे ही लोक में सब विचरने लगे । ठंड काफी थी, फिर परिक्रमा के लिए भी दुबारा आना था । पर डॉ. अनिल व उनकी धर्मपत्नी झटपट स्नान की तैयारी करने लगे । अमरीका में १५ वर्ष बिताकर सिर्फ तीन वर्ष के लिए भारत आये, इस डॉक्टर की श्रद्धा ने सबको स्नान के लिए प्रेरित किया । अनिल ने कहा—"आते समय मैंने शिव-पुराण पढ़ा था । उसमें लिखा था, मानसरोवर में एक बार स्नान से सात पीढ़ियां तर जाती हैं । ऐसा मौका फिर कहां मिलेगा ?"



मानस को पहले प्रणाम किया, आचमन किया—एकदम मीठा अमृत-जैसा स्वाद । फिर डरते-डरते एक पांव... दूसरा पांव... सरदी लग रही थी । हड्डियां तक कांप रही थीं—पर एक बार जल में आधा शरीर डूबा, पहली डुबकी लगायी तो फिर न सरदी लगी, न भय । किनारे-किनारे घास काफी है, १५-२० फीट भीतर जाने पर ३-४ फीट की गहराई मिलती है । लहरें काफी तेज होती हैं । पर पानी इतना निर्मल है कि दूर से देखने पर भी तल के पत्थर साफ चमकते हैं ।

श्री कैलास दर्शन

मानस में स्नान कर सूर्य को अर्घ्य दिया—गायत्री मंत्र व महामृत्युंजय मंत्र का जप किया । बाहर आकर कपड़े बदले और भागे, पहाड़ी चढ़ने । जहां से श्री कैलास दर्शन करने थे । आज तो मुंह मांगी मुराद मिल रही थी । आज तो खजाना लुटाने का मन था । पांव में पंख थे, मन आकाश में था । धरती की, शरीर की सुधबुध रह ही नहीं गयी थी । पंद्रह मिनट लगे और पहाड़ी के ऊपर फैले मैदान के कोने पर पहुंचते ही ठीक सामने ज्योतिरूप शिवलिंग के आकार का हिमखंड दिखा बहुत दूर-पर बहुत पास लगा । नीला आकाश—आसपास कुछ नहीं, मात्र एक-एक ही केवल वह अत्युच्च शिखर, शुभ्र आभायुक्त प्रभु का ज्योतित स्वरूप ! मौन व्याप गया था सर्वत्र, किसी को किसी का ध्यान नहीं रहा । दंडवत प्रणाम कर सब चुप बैठ गये । दिलीप सिंघवी दूर तक शूटिंग करते चले गये थे । दौड़कर लौटे और लिपट गये । मेरे कंधे उनके प्रेमाश्रुओं से गीले हो गये, कुछ कहते ही नहीं बनता था—गला रूंधा था । मुझ सरीखे राजनीतिक पंक से घिर कागज काले करनेवाले कलमजीवी के लिए यह अनुभव साक्षात् प्रभुदर्शन से कम न था ।

—संपादक : पांचजन्य
संस्कृति भवन, देशबंधु गुप्ता मार्ग
नयी दिल्ली ११००५५

मध्य अमरीका में टेसो जनजाति की लड़कियां सगाई की अंगूठियों की लड़ी को अपनी जीभ के अगले सिरे पर एक वर्ष तक पहने रहती हैं । सुबोध सहर

छुट्टियों में बंगाल आपका स्वागत करेगा। पूर्वी भारत का यह एक आश्चर्यजनक हिस्सा है, अपने इतिहास और अपनी परंपरा, अपने साहित्य और अपनी कला, अपने विचारों और अपनी संस्कृति, अपने व्यापार और अपनी राजनीति, तथा वाणिज्यिक प्रतिभा के लिए यह देशभर में विख्यात है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में गौड़ या बंग के नाम से बंगाल को पहचाना जाता था। महाभारत के युद्ध में बंगराज ने पांडवों के विरुद्ध कौरवों का साथ दिया था। ईसा पूर्व असम तक अपना साम्राज्य फैला लिया।

वर्षा की अधिकता के कारण बंगाल के चप्पे-चप्पे पर हरियाली है। इसकी शस्य-श्यामला भूमि में हिमित पर्वत शृंखलाएं अत्यंत आकर्षक और मनोहारी हैं, जिनमें दार्जिलिंग उनका सिरमौर है। अपने बर्फीले शिखरों के कारण दार्जिलिंग की सुंदरता के दर्शनार्थ संसारभर से पर्यटक वर्ष पर्यंत आते रहते हैं। ग्रीष्मावकाश में तो भारत के प्रत्येक कोने से पर्यटक दार्जिलिंग पहुंचते हैं। कलकत्ता से ६८६ किलोमीटर उत्तर में समुद्र की

वर्षा की अधिकता के कारण बंगाल के चप्पे-चप्पे पर हरियाली है। इसकी शस्य-श्यामला भूमि में हिमित पर्वत शृंखलाएं अत्यंत आकर्षक और मनोहारी हैं, जिनमें दार्जिलिंग उनका सिरमौर है। अपने बर्फीले शिखरों के कारण दार्जिलिंग की सुंदरता के दर्शनार्थ संसारभर से पर्यटक वर्ष पर्यंत आते रहते हैं।

विश्व का सौंदर्य केंद्र दार्जिलिंग

• अनंतराम गौड़

तृतीय शताब्दी में बंगाल मौर्य साम्राज्य का अंग था और चौथी से छठी ईसवी (ए.डी.) शताब्दी में यह गुप्त वंश के आधीन रहा। किंतु नवीं शताब्दी में पहुंचने तक बंगाल ने अपने स्वाधीन राजाओं के वंश की परंपरा स्थापित कर ली और इसके पलास राजाओं ने बिहार, उड़ीसा तथा

सतह से ७००० फुट की ऊंचाई पर स्थित इस पर्वतीय नगरी में आवास की विपुल सुविधाएं उपलब्ध हैं। फिर भी यदि होटल अथवा लॉज में अग्रिम आरक्षण करा लिया जाए तो यात्रा अधिक सुखद बन सकती है।

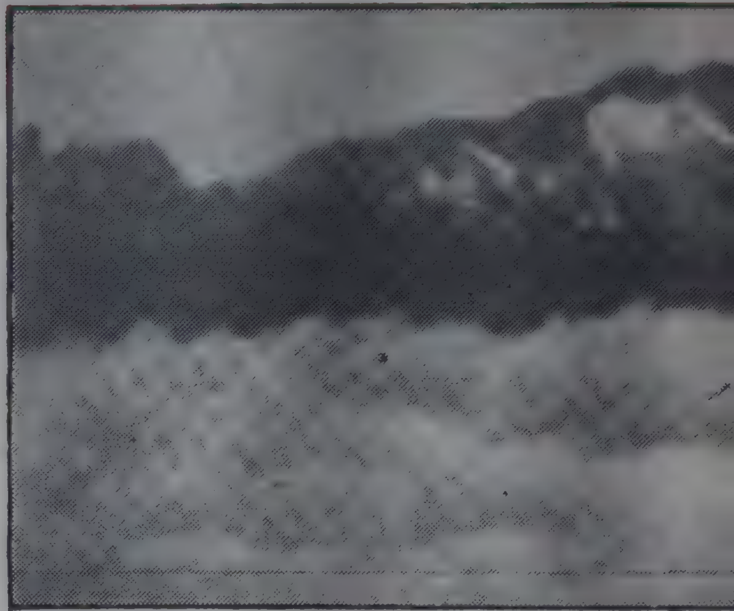
दार्जिलिंग में देखने के लिए अनेक स्थान

हैं : बतासिया लूप, घूम बौद्ध मठ, वेधशाला पहाड़ी, धीरधाम मंदिर, पद्मजा नायडू हिमालयी जंतु पार्क, प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, लायड्ज वानस्पतिक उद्यान, हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान, लेवांग रेस कोर्स आदि । इनके अतिरिक्त 'टाइगर हिल' से सूर्योदय देखिए, कंचनजंगा के बर्फीले धवल शिखरों का अवलोकन करते समय तो पर्यटक उसकी सुंदरता से अपनी सुध-बुध खो बैठते हैं, यदि आपको ट्रेकिंग का शौक है तो संदकफू ऐसे लोगों के लिए स्वर्ग सदृश है, पूर्णतया शांति में कुछ समय व्यतीत करने के लिए यदि किसी स्थान की तलाश है तो कालिंपोंग की सुरम्य घाटी में पहुंच जाइए या नयनाभिराम कुर्सियांग में कुछ दिन विश्राम कीजिए ।

जब पर्यटक दार्जिलिंग तक पहुंच जाते हैं तो वहां से भूटान की नयी राजधानी थिंपू तथा सिक्किम की राजधानी गैंगटक देखे बिना नहीं लौटते । वांगचू नदी के किनारे बसा थिंपू बर्फ से ढकीं पहाड़ियों और हरे-भरे क्षेत्र से अत्यधिक सुंदर बन गया है । इसका नयनाभिराम दृश्य इतना आकर्षक है कि पर्यटकों का यहां से जल्दी लौटने का मन नहीं करता ।

इसी प्रकार गगटोक की छटा भी निराली है । समुद्र की सतह से लगभग १६०० मीटर की ऊंचाई पर स्थित गैंगटक में एकांत और शहरी चहल-पहल दोनों की सुविधाएं उपलब्ध हैं । यहां सबकी जेबों के अनुरूप होटल और लॉज उपलब्ध हैं ।

पश्चिम बंगाल के अन्य दर्शनीय स्थल मुर्शिदाबाद, विष्णुपुर और सुंदरवन हैं । बंगाल



की नवाबी विरासत के दर्शन इसकी सड़कों, पत्थरों और बलुचारी साड़ियों में होते हैं । नवाब सिराजुद्दौला और लार्ड क्लाइव की सेनाओं के बीच १७५७ में प्लासी का युद्धस्थल मुर्शिदाबाद में ही स्थित है । इसने भारतीय इतिहास की धारा ही बदल दी थी ।

सुंदरवन सुप्रसिद्ध शाही बंगाल शेर का घर है । ऊंचे मचानों पर चढ़कर शेरों को धूप सेंकते और शिकार की तलाश में विचरते देखना दुर्लभ नहीं है । रेसस बंदर, चीतल, जंगली सुअर और बिल्लियां भी यहां देखी जा सकती हैं । सुंदरवन के द्वीपों में रंग-बिरंगे फूल और आकर्षक वनस्पतियां भरी पड़ी हैं । बड़ी संख्या में मधुमक्खियां भी पायी जाती हैं इसलिए यह क्षेत्र शहद से भरपूर है । कांकरा के लाल पुष्प तथा खलसी की पीत कलियां इस वन की सुंदरता को नंदन कानन में परिवर्तित कर देती हैं ।

दार्जिलिंग, गैंगटोक तथा थिंपू के लिए वायु मार्ग से जाना हो तो बागडोगरा हवाईअड्डा निकट पड़ता है । यह दार्जिलिंग से ९० किलोमीटर पर है । यहां से टैक्सी या बसें ली



मंदिरों तथा रामकृष्ण परमहंस और मां शारदा देवी के जन्मस्थानों को पहुंचने के मार्ग हैं ।

दीघा एक अन्य दर्शनीय स्थल है । यह कलकत्ता से लगभग २४३ किलोमीटर दक्षिण में सागर तट पर स्थित है जहां आधुनिक पर्यटक लॉज और विभिन्न प्रकार के होटल हैं । दीघा का समुद्र तट मीलों तक सपाट है और समतल है जो अन्यत्र नहीं मिलता । यहां से छोटे-मोटे अन्य रोचक स्थानों की भी यात्रा संभव है ।



जा सकती हैं । रेल मार्ग से जाने पर न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पर पहुंचिए । यह दार्जिलिंग से मात्र ८० किलोमीटर पर है । मुर्शिदाबाद पहुंचने के लिए वायु मार्ग से मालदा पहुंचना होगा और वहां से टैक्सी या बस लीजिए । दूरी १२४ किलोमीटर है । रेल द्वारा सियालदह से बहरामपुर होते हुए मुर्शिदाबाद पहुंचा जा सकता है । सुंदरवन की यात्रा जलमार्ग से भी संभव है । रेल मार्ग सियालदह से उपलब्ध है जहां से ५४ किलोमीटर दूर कैनिंग तक जा सकते हैं।

कलकत्ता से १५२ किलोमीटर की दूरी पर विष्णुपुर स्थित है । विष्णुपुर कभी वास्तुकला, संगीत तथा मूर्तिकला से संपन्न था । इसके अवशेष अब भी यहां मिलते हैं । बांकुड़ा जिले के एक भाग विष्णुपुर से अनेक पवित्र हिंदू

धार्मिक तीर्थों की यात्रा के लिए उत्सुक लोग बंगाल में शक्ति पीठों के दर्शन का लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं । दिल्ली-हावड़ा लाइन पर वर्द्धमान स्टेशन उतरकर फुल्लारा देवी के दर्शन किये जा सकते हैं । यहां सती का अधरोष्ठ गिरा था । वर्द्धमान से नंदीपुर भी दूर नहीं है जहां सती का कंठहार गिरने से देवी नंदिनी रूप में प्रतिष्ठित हैं । हावड़ा-क्यूल लाइन पर नलादेवी के दर्शन संभव हैं । यहां सती की नला (आंत) गिरी थी तथा यहां नलादेवी महाकाल योगेश भैरव के साथ अवस्थित हैं । वर्द्धमान स्टेशन से महिषमर्दिनी वक्रेश्वरी देवी के दर्शन के लिए यात्री जाते हैं । यहां भी एक शक्तिपीठ है ।

—सी-२ बी/११२ सी
जनकपुरी, नयी दिल्ली-५८



मठों की कला अंकित कला-कृतियां, उनके आकार और साज-सज्जा पर्यटकों के लिए एक विशेष आकर्षण पैदा करती है। अधिकांश मठ छह से सात मंजिल की ऊंचाई के हैं। इनकी छोटी-छोटी खिड़कियां बेहद सुंदर लगती हैं।

लद्दाख के अनोखे मठ

हमारे प्रतिनिधि द्वारा

लद्दाख ! देश के ऊपरी छोर पर स्थित और भिन्न जलवायुवाला लद्दाख पर्यटकों को बिलकुल अलग तरह का सुख और आनंद देता है। यहां के लोगों की भाषा, संस्कृति और पहनावा भी पर्यटकों को विशेष आकर्षण पैदा करता है। लेह पहुंचने पर पर्यटकों के कानों में बौद्ध प्रार्थना के मंत्र स्वर 'ओम मनी पद में हम' उनका ध्यान बरबस प्रकृति की अप्रतिम सुंदरता से अध्यात्म की ओर मोड़ते हैं। बौद्धधर्म के सबसे ज्यादा मठ लद्दाख में ही है इसलिए इसे बौद्धमठों की नगरी कहा जाता है, जिनकी छाप यहां के लोगों के जीवन के हर क्षेत्र में मिलती है।

शाही महलों के आसपास स्थित और ११वीं से लेकर १७वीं शताब्दी के मध्य बने मठ जहां समृद्धि और संपत्ति के प्रतीक हैं वहीं ये आज भी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियों के महत्त्वपूर्ण केंद्र बने हैं। पहाड़ों की चोटी में स्थापित मठों का उद्देश्य हालांकि मठों को युद्ध से अलग रखने का था, पर इन मठों से यह भी निगरानी की जाती थी कि कहीं शत्रु क्षेत्र में हमला करने तो नहीं आ रहा है।

मठों के भीतर छोटे और बड़े कक्ष प्रकोष्ठ हैं जहां प्रार्थना, योग और ध्यान किया जाता है। लामा के लिए दुखंग और लखंग मुख्य कक्ष होते हैं। सभी उम्र के लामा यहां एक साथ बैठकर प्रार्थना करते हैं। इन कक्षों से मध्य भाग तक जाया जा सकता है।यहां मुख्य धार्मिक समारोह आयोजित किये जाते हैं। शेय,थिक्से,

हेमिस, लामायुरु, आल्ची, शांति, शंकर, स्तकन तथा माठो अन्य ऐसे ही दर्शनीय मठ हैं, जो बौद्धधर्म की आस्थाओं, मान्यताओं और संस्कृति का परिचय कराकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' के संदेश को प्रतिपादित कर रहे हैं।

शेय

लेह से १२ कि.मी. की दूरी पर शेय नामक स्थान पर शेय मठ स्थापित है।

मठ से लगा एक विशाल वृक्ष है, जिसमें तांबे की बुद्ध की प्रतिमा स्थापित है। कहा जाता है कि सन १६३३ में राजा डेल्डन नामग्याल ने इसकी स्थापना की थी। मठ की दीवालें बुद्ध के संदेश से चित्रित हैं। महल के नीचे एक भाग में बुद्ध की एक और

प्रतिमा स्थापित है । शेय सातवें तिब्बत गुरु की याद में दस दिन तक चलनेवाले कार्यक्रमों का मुख्य स्थान है । शेय का अन्य भाग छोटे मठों (कोरटन) से घिरा हुआ है ।

स्पीतुक

लेह हवाई-अड्डे से कुछ ही दूरी पर है, स्पीतुक मठ । यहां विभिन्न आकार-प्रकार वाले मठों की श्रृंखलाएं हैं । स्पीतुक मठ दलाईलामा के लिए विशेष रूप से आरक्षित किया गया है । यहां आने पर वह इसी मठ में ठहरते हैं । पर्यटक यहां वज्र-भैरव की एक विशाल मूर्ति भी देख सकते हैं । इसके अतिरिक्त ११ सिर वाली अवलोकतेश्वर तथा बुद्ध की एक सुंदर प्रतिमा भी यहां स्थापित है । यहां एक काली मां का मंदिर भी है । कुछ हिंदू यहां मंदिर के आकर्षण से आते हैं ।

थिक्से

लेह से २५ कि. मी. की दूरी पर है, अत्यंत सुंदर थिक्से मठ । थिक्से मठ के ऊपर से देखने पर सिंधु घाटी के सुंदर नजारे को देखा जा सकता है । इसके ऊपरी भाग में गुरु रिनपोच या लामा के लिए स्थान हैं । थिक्से में १५ मीटर की ऊंची स्वर्ण-मंडित बुद्ध की प्रतिमा है । दीवारें अत्यंत सुंदर चित्रों और कलाकृतियों से मढ़ी हैं । लखंग और दुखंग का भी अन्य बौद्ध गुरुओं— जैसे बोद्धिसत्त्व, मैत्रेय, अवलोकेत्श्वर की तरह स्थान है । १७वीं और १८वीं शताब्दी के १२वें तिब्बती गुरु की स्मृति में कार्यक्रम इसी मठ में आयोजित होते हैं ।

हेमिस

लेह से ४५ कि. मी. की दूरी पर है, हेमिस मठ । इसे लद्दाख के सुंदर मठों के रूप में जाना जाता है । मठ में दो-द्वार हैं, जहां से मध्य भाग तक पहुंचा जा सकता है । छठे तिब्बती गुरु की याद में चलनेवाले कार्यक्रम के १०वें दिन 'मास्क नृत्य समारोह' इसी मठ में आयोजित किया जाता है ।

लामायुरु

लेह से दो कि.मी. की दूरी पर है, लामायुरु मठ । हालांकि इस मठ की दीवारों की अभी हाल में पेंटिंग की गयी है, पर अद्भुत शैली की कलाकृतियां और चित्रकारी पर्यटकों को बेहद आकर्षित करती हैं ।

आलची

सस्पोल से पुल पार करते ही मिलती है आलची की सुंदर घाटियां जहां स्थित है आलची मठ । इस मठ की पेंटिंग और चित्रकारी अनोखी तथा दुर्लभ है । इनकी दुबारा पेंटिंग नहीं की गयी है, फिर भी चित्र आज के से लगते हैं । मठ की दीवारों में विभिन्न प्रकार के मांडाला चित्र भी चित्रांकित किये गये हैं, जो बेहद मनमोहक हैं ।

शांति

लेह में सबसे अलग किस्म का मठ है शांति मठ सफेद रंग का बना मठ अत्यंत मोहक है । रंग-बिरंगी कलाकृतियों तथा संदेशों से ओतप्रोत, शांति, सद्भाव और मित्रता की शिक्षा देता है ।

शंकर, स्तकन और माठो

लेह में लघु श्रेणी के कई मठ हैं । उनमें शंकर लेह बाजार में स्थित है । यहां आसानी से पैदल जाया जा सकता है । यह २०० वर्ष से पुराना है । इसकी चित्रकारी अद्भुत है । स्तकन और माठों के मठ पहाड़ी भाग में हैं । माठो मठ को वार्षिक नग-रंग समारोह के कारण जाना जाता है । ●

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर

गौतम बुद्ध : क्रांतदर्शी प्रवृत्तियां

• रामचंद्र सरोज

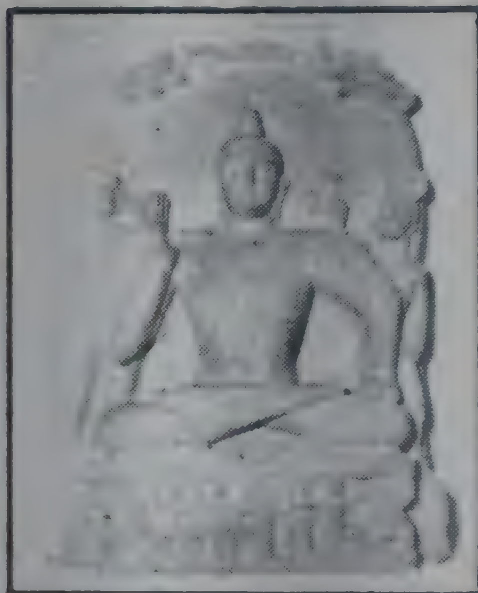
ईसा पूर्व छठी शताब्दी तथा उसके आसपास का समय भारतीय इतिहास का ऐसा काल-खंड है जिसमें राजनीति, धर्म, दर्शन तथा समाज के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए और चिंतन की नयी दिशाओं का अनावरण हुआ।

धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में जिन धर्मों ने तत्कालीन जन-समाज को बृहत्तर रूप में प्रभावित किया वे निम्न हैं—

— दास-पुत्र (शूद्र) मक्खलि गोशाल तथा उनके अनुयायिओं द्वारा विकसित 'आजीविक धर्म'। इसे 'आजीवक' तथा पाणिनि के अनुसार 'दैष्टिक धर्म' भी कहा गया है।

— प्रागैतिहासिक ऋषभदेव से प्रारंभ होकर पार्श्वनाथ आदि अनेक तीर्थंकरों द्वारा विकसित जैन धर्म का वर्धमान महावीर द्वारा नव्यतम संस्कार।

— तथागत गौतम बुद्ध द्वारा प्रवर्तित



बौद्धधर्म।

बुद्धपूर्णिमा तथा बुद्धत्व की प्राप्ति

बुद्ध पूर्णिमा को राजकुमार सिद्धार्थ को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई। गया में, निरंतर सात दिनों तक अश्वत्थ (पीपल) के नीचे समाधिस्थ रहने के बाद, आठवें दिन बैसाख की पूर्णिमा को उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इसे 'संबोधि' कहते हैं। इसलिए गया को 'बोधि गया' तथा अश्वस्थ वृक्ष को 'बोधि वृक्ष' कहा जाता है। इस बुद्धत्व की प्राप्ति के पूर्व उनके जीवन एवं तपश्चर्या की प्रारंभिक कड़ियां लुम्बिनी, कपिलवस्तु एवं उरुबेला से जुड़ी हुई हैं।

कौशल राज्य के अधीनस्थ कपिलवस्तु राज्य के निर्वाचित शाक्यगण मुख्य शुद्धोदन की पत्नी महामाया का मातृकुल का नगर देवदह था। प्रसव के पूर्व वहां जाते समय, लुम्बिनी के शाल वन में, उन्हें प्रसव-पीड़ा हुई और वहीं

एक शाल वृक्ष के नीचे शिशु सिद्धार्थ का जन्म हुआ। अशोक का प्रस्तर-स्तंभ अब भी वहां है, जिस पर *'हिद बुधे जाते साक्य मुनीत'* अर्थात यहां शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म हुआ—अंकित है। 'मज्झिम-निकाय' के अनुसार जन्म के एक सप्ताह बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया और उनका लालन-पालन उनकी मौसी, जो शुद्धोदन की दूसरी पत्नी बनी—के द्वारा हुआ। डॉ. उमेश मिश्र के अनुसार जन्म की तिथि ५६३ ई.पू. की वैशाखी—पूर्णिमा है।

महानिष्क्रमण

अनेक शास्त्रों के अध्ययन एवं शास्त्रों में निपुणता प्राप्त कर लेने के बाद, 'प्रब्रज्या ग्रहण करने के भय से' उनका विवाह, केवल सोलह वर्ष की अल्पायु में, शाक्यवंश की ही राजकुमारी यशोधरा से कर दिया गया। उनके एक पुत्र हुआ जिसका नाम राहुल रखा गया। 'ललित-विस्तार' के अनुसार देवदूतों द्वारा क्रमशः व्याधिग्रस्त व्यक्ति, जर्जर शरीर वाला वृद्ध, शव लेकर जाते हुए लोग तथा काषायवस्त्रधारी साधु को देखकर, उनका महानिष्क्रमण हुआ। उनतीस वर्ष की अवस्था में, उन्होंने रात्रि में, अपने परिवार का त्याग किया। कपिलवस्तु से दूर आने पर, उन्होंने अपने केश काटे और काषायवस्त्र धारण किया। इसके उपरांत उन्होंने अनेक स्थानों में भ्रमण किया, अनेक सन्यासियों से, अनेक प्रकार से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया, किंतु न तो उन्हें मानव की समस्याओं का कोई उत्तर प्राप्त हुआ और न उन्हें संतुष्टि ही हुई। मगध जनपद के 'उरुबेला' में निरंजना नदी के तट पर, लगभग छह वर्षों तक, कठिन तपश्चर्या की। शारीरिक यंत्रणा के इस दौर में वह अत्यंत जीर्ण एवं अशक्त हो गये। अन्न-त्याग के साथ श्वास-क्रिया को भी अवरोधित किया और मृत्यु के निकट पहुंच गये। इतना सब कुछ होने पर भी उन्हें ज्ञान की प्राप्ति में सफलता नहीं मिली।

संबोधि तथा धर्म-चक्र प्रवर्तन

उन्होंने तपश्चर्या से विराम लिया। उरुबेला में ही सुजाता द्वारा प्रस्तुत भोजन को स्वीकार किया। उनके साथ के अन्य तपस्वी उन्हें पथ-भ्रष्ट समझकर उनका साथ छोड़कर चले गये। सिद्धार्थ ऋषिपत्तन होते हुए गया पहुंचे और यहीं, जैसा कि कहा जा चुका है, 'संबोधि' की प्राप्ति हुई। बोधि गया में बर्मा, चीन, जापान, तिब्बत तथा थाईलैंड की विशिष्ट शैलियों वाले बौद्ध मंदिर हैं। महाबोधि मंदिर में बुद्ध की स्वर्ण मंडित प्रतिमा है, जो बौद्धों के आकर्षण का केंद्र है।

'संबोधि' के बाद उन्होंने निरंजना नदी में स्नान किया। सर्वप्रथम उन्होंने शूद्रवर्गीय तपस्सु तथा भल्लि को उपदेश देकर दीक्षित किया। इन अनुयायियों के साथ काशी के ऋषि पत्तन (सारनाथ) में उन्होंने, उन पांच तपस्वियों को भी दीक्षा दी, जो उनका साथ छोड़कर चले गये थे। बौद्ध साहित्य में इस प्रसंग को 'धर्म चक्र प्रवर्तन' के नाम से स्मरण किया जाता है। 'संयुक्त निकाय' में 'धर्मचक्र-प्रवर्तन' अर्थात तथागत बुद्ध के प्रथम उपदेश का तात्पर्य इस प्रकार है—

उनका भ्रमण जारी रहा। सामान्य जनता के अतिरिक्त अनेक राजा-सम्राट भी उनके धर्म में दीक्षित हुए। वह अपने पिता के राज्य कपिलवस्तु पहुंचे। उन्होंने अपनी मौसी गौतमी,

पत्नी यशोधरा, पुत्र राहुल तथा नवविवाहिता पत्नी सुंदरी के प्रेम में आसक्त अपने चचेरे भाई नंद को दीक्षित किया । नंद के संदर्भ में यह कहा जाता है कि बलात उसका सिर मुंडित कर उसे दीक्षित किया गया । उसकी पत्नी प्रतीक्षारत रही । वह फिर लौटकर नहीं जाने पाया । अश्वघोष ने उस प्रसंग को अपने 'सौदरनंद' काव्य का विषय बनाया है । मोहन राकेश ने इसी प्रसंग को लेकर 'लहरों के राजहंस' नामक नाटक की रचना की ।

वैशाली की गणिका आम्रपाली तथा श्रावस्ती के दुर्दांत दस्यु अंगुलिमाल को दीक्षित कर, उन्होंने अपने व्यक्तित्व के दिव्य प्रभावलय का परिचय दिया । भिक्षु संघ, भिक्षुणी संघ, तथा संघाराम की स्थापना तथा अनेकशः व्यक्तियों के दीक्षित होने के साथ, उन्हें विरोध का भी सामना करना पड़ा । उनके चचेरे भाई देवदत्त का विरोध इतना प्रबल था कि बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर भी, उसने भगवान बुद्ध की हत्या के लिए तीन बार प्रयास किया, किंतु हर बार असफल रहा । दरअसल, वह बुद्ध का स्थान लेना चाहता था ।

जातिरहित बौद्ध संघ

बुद्ध के प्रधान शिष्यों में सारिपुत्र (ब्राह्मण), आनंद (बुद्ध के चचेरे भाई), मौद्गल्यायन (चिंतक तथा विद्वान), उपालि (नापित), सुनीति (भंगी), बिम्बिसार (मगध के शासक), अजातशत्रु (बिम्बिसार के पुत्र), जीवक (प्रसिद्ध वैद्य) तथा प्रसेनजित (कोसल के राजा) आदि का नाम आता है । शिष्याओं में गौतमी (मौसी), यशोधरा (पत्नी), नंदा (गौतमी का पुत्री), खेमा (बिम्बिसार की पत्नी), आम्रपाली (वैशाली की गणिका) तथा विशाखा (अंग जनपद की श्रेष्ठिपुत्री) के नाम प्रसिद्ध हैं ।

महाप्रयाण

बुद्ध का देहावसान अस्सी वर्ष की अवस्था में हुआ (असीतिको में वयो वत्तति—महानिब्बाण सुत्त) । जब वह वैशाली में थे, तभी वेलुग्राम में अस्वस्थ हो गये ।

मल्लों के शालवन में भिक्षुकों को अंतिम उपदेश देकर प्राण त्याग किया । यह तिथि ४८३ ई.पू. की बैशाख की पूर्णिमा थी ।

क्रांतदर्शी धर्मों की भूमिका

बुद्ध के समकालीन, आजीवक धर्म के प्रवर्तक मक्खलि गोशाल, वर्धमान महावीर के मित्र तथा नालंदा में छह वर्ष तक उनके सहपाठी थे । उनके पिता गोशाले में नियुक्त थे और वहीं उनका जन्म हुआ । तथागत गौतम बुद्ध की मृत्यु के एक वर्ष बाद संभवतः ४८४ ई.पू. में उनकी मृत्यु हुई । मक्खलि गोशाल निम्न जाति के थे और प्रवज्या ग्रहण किया था । उनके सिद्धांतों का प्रचार पश्चिम सौराष्ट्र से लेकर अंग देश तक था । अशोक तथा मौर्य सम्राट दशरथ आदि ने आजीविकों के लिए गुफाओं का निर्माण कराया था । कालांतर में जिस प्रकार बौद्ध धर्म भारत से तिरोहित हो गया, उसी प्रकार आजीविक धर्म भी दक्षिण के कुछ स्थानों तक ही सिमट कर रह गया ।

बुद्ध की मूर्तियों के संबंध में

तथागत के निर्वाण के बाद, लगभग छह सौ वर्षों तक उनकी मूर्तियां नहीं बनीं ।

बाद में मूर्तियां बनाने की प्रथा चल पड़ी ।

— निशांत, ए-५१, मेंहदौरी कॉलोनी
इलाहाबाद-४



वैदिक संस्कृति की जीवन यात्रा-२

इंद्र की स्वराज्य कामना

● डॉ. सुधा पांडे

प्रस्तुत कथा मिथकीय परंपरा की पृष्ठभूमि में उस प्रारंभिक युग का प्रत्याख्यान करती है जब पृथिवी पर संस्कार समाप्त हो चले थे । असुरों के अनाचार से देवगण भी संतप्त हो उठे थे, वृत्र का वध और स्वराज्य की कामना इंद्र के लिए अनिवार्य प्रश्न था । संस्कृति से च्युत होकर पराभव होना स्वाभाविक है, सत्ता और शक्ति के मद में 'असुर' (देवों के शत्रु) अपना वास्तविक स्वरूप भूल चुके थे ।

वर्षा ऋतु का समय था, आकाश घने मेघों से आच्छन्न । सायंकाल होते ही पर्वतों और घने कांतार की वृक्षावलियों में अंधकार छाने लगा । दैदीप्यमान सूर्य की लोहित प्रभायुक्त सुदृढ़ देहयष्टि, आजानुबाहु एक व्यक्ति पगडंडी पर अपने विचारों में लीन मंदगति से चला जा रहा था । मुख किंचित अवसाद से मलिन किंतु दृढ़वती अस्तित्वयुक्त वह युवक अंतरिक्ष और द्युलोक सभी को अभिभूत कर रहा था, उसकी व्याप्ति का अंत न तो द्युलोक पा सकता था, न पृथिवी और न ही कोई अन्य लोक ! उसके दृढ़व्रत का अनुकरण करने को द्यावा पृथिवी, वरुण, सूर्य और नदियां भी तत्पर रहती थीं । चलते-चलते युवक पथ में अचानक क्षणभर ठिठक गया, समीप के गुल्म से कोई आहट आयी... युवक ने अपना खड्ग संभाला ही था कि उसके सामने धम से कूदने की आवाज हुई ।

कहीं कोई वन्य जीव या असुर तो नहीं ? इस आशंका से युवक संभलता, तभी उसने देखा विपत्ति कुछ भी नहीं थी, सामने मुसकराती शची विद्यमान थी । इठलाती चंचलता से भरी शची युवक के और समीप आ गयी !

"मरुतवान इंद्र ?"

"हां मैं ! पर तुम यहां ? इस समय कैसे ? इस विजन वन में कोई असुर या वन्य जंतु आ जाता तो... ?"

शची के नेत्र उन्माद से भरे थे इंद्र के प्रति अनुरागभरी विह्वलता से उसने उत्तर दिया— "मैं इंद्र की अनुगता हूं, इंद्र का खड्ग भी तो महान पराक्रमी है..." शची की सारी देह थिरक उठी ।

इंद्र चिंतित थे, शची के आगमन से उनकी विचारधारा टूटी किंतु वे उसी चिंता भाव को शची के समक्ष व्यक्त करते हुए बोले— "इन असुरों को राह दिखाये बिना देवकुल का कल्याण नहीं... अब और अधिक नहीं सहा जा सकता । ये भी तो हमारे देवकुल से ही है । शताब्दियों पूर्व ये नीचे उतर आये थे । आज ये देवों की सारी संस्कृति भूल गये हैं... यज्ञ विधि भी नहीं करते... ब्रह्म को भी नहीं मानते, केवल वरुण को नाममात्र के लिए मानते हैं । अपने को सभ्य कहते हैं, पर धन के दास हो गये हैं । तू अपना ही उदाहरण देख— तू यज्ञ के सामने ब्रह्म द्वारा प्रदत्त मेरी वधू है, पर तेरा पिता कहता है कि 'जब तक इंद्र मेरी कन्या के बदले पर्याप्त धन नहीं देगा, वह शची का पति नहीं बन सकता... !'

"किंतु इंद्र ! एक बात तुम्हें स्वीकार करनी होगी, देवगणों में एक बहुत बड़ी कमी है ।"

"क्या ?" इंद्र आश्चर्यचकित थे ।

"असुर अपने राजा के अधीन संगठित हो चुके हैं और वे निरंतर शक्तिशाली हो रहे हैं । हमारे देवकुल में वैराग्य है, हम ठीक से संगठित भी तो नहीं ।" शची ने उत्तर दिया ।

इंद्र सहमत थे, विवशभाव से बोले— "हमारी सबसे बड़ी कमी तो यही है कि हमारा कोई नेता नहीं है... संगठित होकर कार्य कर पाना इसी से कठिन हो रहा है ।"

"पर ऐसा नेता तो इंद्र ही हो सकता है" शची अब अधिक उल्लास से भर गयी थी । दस्र और नासत्य भी इस बीच आ गये थे ।

"शची के साथ एकांत मिलन का अच्छा स्थान ढूंढ़ा है इंद्र ।" दस्र ने व्यंग्य किया ।

"अरे नहीं ! मैं आचार्य भृगु के आश्रम की ओर जा रहा था, उनसे कुछ वार्ता करने... अच्छा हुआ तुम लोग भी मिल गये ।"

भृगु का आश्रम समीप दिखायी दे रहा था । वे सभी एक साथ आश्रम की ओर जाने लगे । तभी एक अन्य युवक भागता हुआ आया और इंद्र के समीप आकर खड़ा हो गया । भय और व्यग्रता से उसके मुख से शब्द भी नहीं निकल पा रहे थे ! आनेवाला युवक और कोई नहीं नारद थे । नारद । "कहो अचानक यहां कैसे ? कोई विशेष संवाद... ?" इंद्र ने नारद से पूछा ।

नारद अभी संयत भी नहीं हो पाये थे । शची, दस्र और नासत्य भी उनकी घबराहट से विचलित हो उठे ।

कुछ क्षण रुककर नारद ने किसी प्रकार कहा— "असुर देवयानी को उठाकर ले गये... सुना है वृत्र ने उसके साथ अनाचार भी किया है ।"

"नीच ! बर्बर !" हठात इंद्र के मुख से निकला।

"बिना स्वराज्य मिले हमारा निस्तार नहीं है। मैं तो अब इस निश्चय पर पहुंच चुका हू चाहे अन्य देवगण मेरा अभिमत मानें या न मानें.."

"इंद्र ! हम सब तुम्हारे ही साथ हैं। अंगिरा, ऋभु, अथर्वा आदि सभी देव युवक तुम्हारा अनुगमन करने को तत्पर हो उठे हैं। प्रतिदिन अपमानित होते रहने से अच्छा है कि हम मृत्यु का वरण करें..." नासत्य बोला।

"मैं भी तो देव कुलगुरु भृगु से इसी विषय में विमर्श करने ही जा रहा था।" इंद्र ने उत्तर

"वह तो शर्यणावत सरोवर में चला गया है।"

"क्यों ? उसे तो मैं मधुविद्या का उपदेश भी दे चुका हूं।" — इंद्र ने पूछा।

"वत्स ! वह घोर तपस्या में लीन हो गया है। योगध्यान द्वारा कठिन तपस्या कर अपनी देह को बज्र की भांति बना चुका है वह।"

"गुरुदेव ! क्या आप उचित समझते हैं कि इस समय देव युवक इन कार्यों में अपने को व्यस्त रखें ?" इंद्र ने पुनः प्रश्न किया।

"संभवतः उसके लिए यही मार्ग प्रथित रहा हो..."

"बिना स्वराज्य मिले हमारा निस्तार नहीं है। मैं तो अब इस निश्चय पर पहुंच चुका हूं चाहे अन्य देवगण मेरा अभिमत मानें या न मानें..."

देते हुए कहा। क्रमेण आगे बढ़ते हुए वे भृगु के आश्रम के समीप पहुंच गये। विशाल अश्वत्थों से घिरे आश्रम में भृगु गो सेवा में व्यस्त थे! तीक्ष्ण नासिका, ओजस्वी दृष्टि, श्वेत केश राशि से सुशोभित भृगु का तपोपूत शरीर सभी की दृष्टि को बरबस अपनी ओर खींचनेवाला था! अपने आश्रम में इंद्र सहित देवगणों का आया देख उन्होंने बैठने के लिए आसन बिछा दिये! सभी देवगण उन्हें अभिवादन कर अपने-अपने स्थान पर बैठ गये।

"इंद्र ! कहो इधर कैसे आना हुआ ?"

"भगवन ! सारा आश्रम सूना क्यों है ? मैं तो आपका आशीर्वाद लेने आया हूं। दध्यंग भी नहीं दिखायी पड़ रहा !"

"जब वह एक मार्ग ढूंढ़ चुका है, तो अपनी नयी परंपरा से क्या लाभ ?"— इंद्र ने प्रतिवाद किया।

"वत्स ! तनिक समझो तो जब कई संस्कृतियां साथ रहेंगी, तो समन्वय अवश्य होगा, निश्चय ही किसी दिन आज की देव, असुर, नाग, गंधर्व, यक्ष आदि संस्कृतियां मिलकर एक महान सभ्यता को जन्म देंगी ! कई और कई दध्यंग इसके लिए जन्म लेंगे।" ऋषि भृगु ने शांत भाव से उत्तर दिया।

"भगवन ! आप स्थितियों को तो देखिए ! देवकुल का सर्वनाश होने को है... भूमि पर यज्ञ की अग्नि शांत हो रही है, शायद कुछ दिनों में कोई ब्रह्म का स्वर नहीं सुन सकेगा।" अब

नासत्य भी मुखर हो उठा !

इंद्र का मुख क्रोध से तमतमा उठा वह भी चुप न रह सके— "इन असुरों से क्या आशा की जा सकती है, यज्ञ विधि छोड़ चुके हैं, ब्रह्म को भी नहीं मानते... वरुण को भुला ही देंगे। हमें पग-पग पर इनसे अपमानित होना पड़ता है, इसका भी कभी विचार किया आपने ?"

"यह कैसे संभव है ? इनके पूर्व पुरुष तुम्हारे पूर्वजों के बड़े भाई हैं। पहले दोनों कुल एकत्रित होकर रहते थे, वरुण की स्तुति करते थे ! ऋषि ने बिना व्यग्र हुए कहा।"

"नहीं इंद्र सत्य कह रहे हैं, हमें स्थान-स्थान पर जंगली कहकर वे हमारा उपहास करते हैं।" अब दस्र भी उग्र हो उठा था।

"यह तो सचमुच उनका अन्याय है।" ऋषि बोले।

"गुरुदेव ! तभी तो हम सब मिलकर आपसे कह रहे हैं कि असुर ऋत से च्युत हो गये हैं ! इंद्र आज से ही उनके विरुद्ध विद्रोह करेंगे !"

"गुरुदेव ! आज ब्रह्म से भी भेंट होगी। आज इसका निर्णय करना ही होगा।"— यह नारद का स्वर था !

"यदि आज ब्रह्म ने आज्ञा दी तो उचित है, अन्यथा इंद्र अकेला ही संघर्ष करेगा।" इंद्र ने दृढ़तापूर्वक कहा !

"तुम सब आवेग में अंधे हो गये हो। शांत मन से कल वार्ता करना।" ऋषि प्रवर ने समझाने का प्रयास किया।

"कोई शक्ति हमें स्वराज्य प्राप्ति के पथ से विरत नहीं कर सकती।" इंद्र पुनः दृढ़ता से गरजे।

"वरुण देव यदि यही चाहते हैं तो ऐसा ही हो... आज से मैं देवों से अपना संबंध तोड़ता हूं।" ऋषि भृगु किंचित अनमने भाव से कहकर चले गये।

नारद कातर भाव से कहने लगे— "पता नहीं आगे कैसे चलेगा ? बिना गुरु के देवों की शक्ति भी तो निर्बल पड़ जाएगी।"

"असंभव।" इंद्र का स्वर अविचलित था। मरीचि और अत्रि, कश्यप और अंगिरा— जैसे स्वप्नदृष्टा नये सूक्त रचेंगे। नवयुग का प्रादुर्भाव होगा। रात्रि बढ़ चली थी, यज्ञ स्थल के समीप अन्य देवगण भी एकत्रित होने लगे थे। अर्यमा को जल्दी हो रही थी कि शीघ्र ही होम की विधि संपन्न हो और सोमपान का कार्यक्रम शुरू हो, तभी समूह में से एक स्वर उभरा— "देव कुलगुरु कहां हैं ? वे नहीं दीख पड़ते...।" यह इंद्र का पिता द्यौस था।

"वह नहीं आएंगे ! वह चाहते हैं कि हम असुरों के अन्याय सहते रहें।" इंद्र ने संयत होकर उत्तर दिया।

अर्यमा भी चिंतित थे, "क्या तुम असुरों के विरुद्ध विद्रोह करने जा रहे हो ?"

"ठीक ही कह रहे हैं आप।" इंद्र ने उत्तर दिया।

आज सारा देव समाज अपमान से क्षुब्ध हो चुका है, इसका प्रतीकार आवश्यक है।" दस्र ने समर्थन किया।

द्यौस के लिए यह सब सहना संभव न हो सका। वह खड्ग उठाकर इंद्र की ओर दौड़े, "अरे यह इंद्र यदि जीवित रहा, तो असुरों के साथ सभी देवताओं का भी वध करवा देगा। मैं इसका ही वध करता हूं।" उसने पूरे जोर से

प्रहार किया। इंद्र तनिक पीछे हटे और वार को बचा लिया। भीषण कोलाहल होने लगा, द्यौस वार पर वार कर रहे थे। इंद्र निरंतर बचते जा रहे थे, कोई तीसरा इस बीच नहीं आ सकता था, यह इंद्र युद्ध का नियम था। दस्र और नासत्य इंद्र को ललकार रहे थे तभी एक किनारे से शची ने इंद्र के कान में चुपके से कुछ कहा। इंद्र जो अभी तक वार बचा रहे थे, अब उग्र हो उठे, जैसे बादल के दो छोरों से बिजली चमकी हो वैसे ही खड्ग चमका और पलभर में द्यौस शांत था।

'प्राणघाती इंद्र ! पितृहंता इंद्र !'— जैसी ध्वनियां पूरे वातावरण में गूंज उठीं... सर्वत्र वातावरण स्तब्ध हो उठा था।

"इंद्र ने हत्या नहीं की है। द्वंद्व युद्ध में एक की मृत्यु निश्चित होती..." यह दस्र का स्वर था।

" इंद्र हत्यारा नहीं है," मरुत भी जनसमूह के बीच से निकलकर बोला। अभी भी वातावरण में उत्तेजना व्याप्त थी,अंगिरा सबको शांत करने में व्यस्त थे, कुछ क्षण रुककर बोले, "अपराध द्यौस का ही था। यदि इंद्र ने कोई अपराध किया था, तो ब्रह्म उसका निर्णय देते। द्यौस ने अधिकार अपने हाथ में लेना चाहा... नियम विरुद्ध कार्य किया और दंड भोगा।" अंगिरा की संयत वाणी से सूची भेद्य नीरवता छा गयी।

अर्यमा ने ब्रह्म को पुकारकर पूछा— "मैं प्रार्थना करता हूं कि ब्रह्म इंद्र के लिए अपना निर्णय दें कि वह दोषी है अथवा निर्दोष।"

भीड़ में से आवाज आयी— 'इंद्र निर्दोष है, इंद्र निर्दोष है।' जो विरोध कर रहे थे उनकी भी आवाज कोलाहल में छिप गयी... शची आह्लाद से भर उठी।

"ब्रह्म भी इंद्र के निर्देशों पर अपनी सहमति दे चुके हैं अतः अब उचित है कि हम असुरों का नाश करने के लिए रणनीति बनाना प्रारंभ करें।" नासत्य गर्वित स्वर में बोला।

"किंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि असुर बहुत अधिक शक्तिशाली हो चुके हैं। वृत्रासुर उनका अजेय अधिपति है। देवों को संगठित करने के लिए हमें नेता चुनना होगा। मैं चाहता हूं कि अपार महिमा और शक्ति संपन्न इंद्र हमारा नेता बने।" नारद ने सुझाव दिया। मित्र और अर्यमा सहित सभी देव हर्ष ध्वनि कर उठे, "अपने जाल में बांधकर सभी शत्रुओं को पराजित करनेवाला इंद्र आज से हमारा नेता है।"

वह इंद्र जो उत्पन्न होते ही अजेय योद्धा बन गये थे, उनकी निर्बाध गति कें आवेग से पर्वत शिलाएं, द्युलोक और पृथिवी मानो कांप उठी। देवों द्वारा नेता मनोनीत करने पर इंद्र और

देवगण विस्मय विमुग्ध थे। उनके स्वप्न साकार होने लगे थे। ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे पृथिवी वासियों को सुसंस्कृत करने के लिए अवतरित हुए हैं।

अधिक गर्व से भर गये । द्यौस के साथ हुए युद्ध में उनके शरीर पर भी आघात हुआ जिससे उनके कंधे से रक्त अभी भी बह रहा था । दस्र और नासत्य योग्य चिकित्सक के रूप में शची की सहायता से व्रण साफ करने लगे । सभी देव सोमपान की प्रतीक्षा कर रहे थे कि किसी ने देवों का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा— "अग्नि कहीं छिप गया है ।"

सभी यज्ञ-कुंड की ओर दौड़े । देवगण अपनी व्यस्तताओं के कारण कुंड में समिधा डालना भूल गये थे, अग्नि का कहीं नाम नहीं था ।

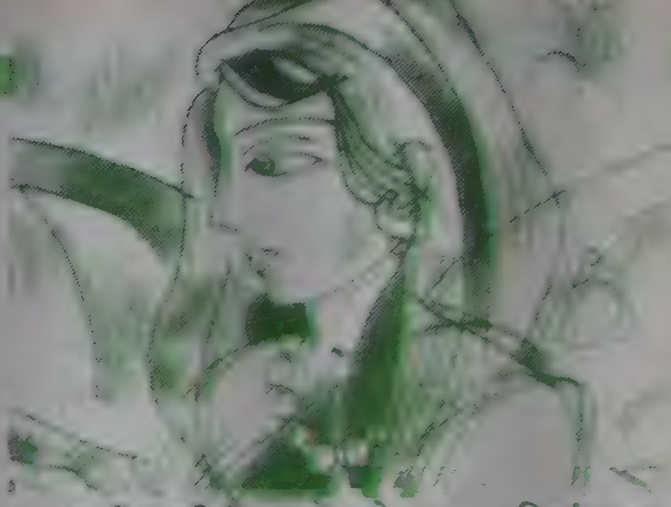
अर्यमा घबरा उठे— "भृगु भी हमें छोड़कर चले गये हैं अग्नि भी कहीं अंतर्धान है शायद वरुण हम पर रुष्ट हो गये हैं ।

"मुझे ज्ञात है अग्नि कहां छिपा होगा ?" अंगिरा ने आगे बढ़कर कहा, "वह भागकर शमी वृक्ष के कोटर में छिप गया है ।"

देव समूह अंगिरा के साथ उस शमी वृक्ष के पास पहुंचे, अंगिरा ने उसकी अरणियों को घिसा, घर्षण से अग्नि विचलित होकर तुरंत प्रकट हो गया । अंगिरा ने कुछ शब्द अस्फुट स्वर से पढ़े और अग्नि को कुंड में प्रविष्ट कर दिया ।

इंद्र ने आदेश दिया "तुमने जो कुछ भी अभी कहा उसे ब्रह्म को सुनाओ ।"

अंगिरा ने इंद्र से कहा, "तुम यज्ञ में समिधा डालो, मैं अग्नि की स्तुति में सूक्त पढ़ता हूं— 'अग्नि सूर्य की भांति चमकता है और प्रज्वलित होकर अंधकार का मार्ग खोल देता है, अग्नि का रथ भी कांतिवान है, यह अरणियों के घर्षण से उत्पन्न होता है, यह दोनों हाथों की अंगुलियों



द्वारा मथी जाती है, मानो उसे दस युवतियां जन्म देती हैं. पुरातन होकर भी अग्नि नित्य एक युवक के रूप में जन्म लेते हैं ।"

देवगण विस्मय विमुग्ध थे । उनके स्वप्न साकार होने लगे थे । ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे पृथिवी वासियों को सुसंस्कृत करने के लिए अवतरित हुए हैं ।

इंद्र ओज से भर उठे थे । उसी ऊर्जा भरे स्वर में बोले— "मैं अंगिरा को आज से देव कुलगुरु बनाता हूं । इसने कृषि के नये विधान असुरों से सीख लिये हैं, अग्नि को ढूंढ़ निकाला है । यह मेधावान है और स्वप्न दृष्टा भी । नये सूक्तों का रचयिता, अंगिरा हमारा कुलगुरु हो ।"

"अंगिरा हमारा कुलगुरु, अंगिरा हमारा कुलगुरु ।" देवगण हर्षध्वनि कर उठे । आज से हमारा नया युग प्रारंभ होता है । अंगिरा ने समीप रखे भांड से एक चषक में सोम पलटा— "आज सबसे पहले सोम के अधिकारी तुम हो इंद्र !"

अपना प्रिय पेय पाकर इंद्र सोमपावन बन गये । बृहस्पति, अत्रि भी पहुंच गये थे । आखेट का मांस भूना जा चुका था । कृषि की भुनी बालियां, कंद-मूल, फल-फूल आदि भी भोजन के लिए प्रभूत मात्रा में जुटाये जा चुके थे । इंद्र का जयजयकार हुआ, सभी भोजन में

लग गये । इंद्र ने कुछ याद करते हुए नारद से कहा— "नारद तुम शीघ्र ही गंधर्वों के देश जाकर उनके राजा से मिलो । उन्हें मेरा संदेश देना और कहना कि आज से देव और गंधर्व मित्र हैं । देव स्वराज्य जीत लें । गंधर्व भी असुरों के विरुद्ध खड़े होकर स्वराज्य जीत लें । इसके बाद उन्हें किसी प्रकार की बाधा नहीं आएगी ।"

देवों ने क्रांति आरंभ कर दी थी । "इंद्र के नेतृत्व में देव असुरों के साथ संग्राम में प्रवृत्त होते हैं । वरुण अन्यायी वृत्र का शासन उलटने में हमारी सहायता करेंगे ।" अंगिरा का स्वर ओज से भर उठा । अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोला, "इंद्र को चुनने के बाद शची को इंद्राणी के पद पर अधिष्ठित करो ।"

"ब्रह्म की राय ली जाए ।"

ब्रह्म समवेत था... "देव कुलगुरु ठीक कहते हैं । शची को इंद्राणी पद मिलना चाहिए ।"

"शची इंद्र के वाम भाग पर स्थित हो और यह सोम ले ।" शची का मुख दिव्य ओज से दीप्त हो उठा । त्वष्टा ने इंद्र के लिए भी एक विशेष चषक बनाकर दिया । रात्रि मदिर होने लगी थी । नारद, अत्रि, मरुतगण सोमपान कर आनंदित हो रहे थे । सोम की विशेष स्फूर्ति से पिछली शिथिलता समाप्त हो गयी... आनंद का वह वातावरण सभी दिशाओं को भी प्रफुल्लित बना चुका था । तंद्रालस देव कब निद्रा में मग्न हो गये, कोई जान न सका ।

— प्राचार्या
एम.के.पी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

नदियों के उद्गम

तिब्बती कथाओं के अनुसार मानसरोवर के पश्चिम में लङ्चेन खम्बब् या हस्ति-मुख नदी (शतद्रु), उत्तर में सिंगी खम्बब या सिंह-मुख नदी (सिंधु), पूर्व में तमचोक शम्बब् या अश्व-मुख नदी (ब्रह्मपुत्र), और दक्षिण में मपृचा खम्बब् या मयूर-मुख नदी (करनाली) के उद्गम-स्थान हैं । इन नदियों में प्रत्येक की पांच-पांच सौ सहायक नदियां हैं । शतद्रु का जल शीतल, सिंधु का जल गरम, ब्रह्मपुत्र का जल ठंडा, और करनाली का जल उष्ण है । शतद्रु में सुवर्ण, सिंधु में वज्रमयी, ब्रह्मपुत्र में नीलम, और करनाली में रजतमय बालू है । शतद्रु के जल को पान करने वाले प्राणी हाथी— जैसे बलवान, सिंधु के जल को पीनेवाले सिंह जैसे शूरवीर, ब्रह्मपुत्र के जल को पीनेवाले अश्व जैसे बलिष्ठ, और करनाली के जल को पीने वाले मयूर—जैसे सुंदर होते हैं । ये चारों महानदियां कैलास और मानसरोवर की सात प्रदक्षिणा करके क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व और दक्षिण दिशा में प्रवाहित होती हैं । शतद्रु नदी प्रारंभ में कैलास की पूर्व दिशा से निकलकर पश्चिम की ओर ; सिंधु नदी दक्षिण दिशा से निकलकर उत्तर की ओर, ब्रह्मपुत्र पश्चिम दिशा से निकलकर पूर्व की ओर, और करनाली उत्तर दिशा से निकलकर दक्षिण की ओर बह रही है । मानसरोवर के किनारे सीधी रेखा में पैंतालिस मील के भीतर ही इन चारों नदियों के उद्गम-स्थान हैं ।

निर्वस्त्र नहानेवाला राष्ट्रपति

● शैलेन्द्र गार्गव

अमरीका और सोवियत संघ दो ऐसे राष्ट्र हैं, जिनके राष्ट्राध्यक्षों की एक-एक हरकत पर पूरी दुनिया नजर रखती है। खासतौर पर अमरीका के कई राष्ट्रपति तो अपनी हरकतों के कारण अत्यधिक चर्चित रहे हैं। अपनी विचित्र हरकतों व प्रेम-प्रसंगों के लिए कैनेडी से लेकर बुश तक भी चर्चित रहे हैं, लेकिन बहुत समय पूर्व एक अमरीकी राष्ट्रपति की एक विचित्र आदत को जितनी चर्चा मिली थी, उतनी शायद ही अब तक किसी को मिली हो।

अमरीका के छठे राष्ट्रपति एडम्स सन १८२५ से १८२९ तक राष्ट्रपति के पद पर कार्य करते हुए काफी लोकप्रिय रहे थे।

राष्ट्रपति एडम्स सुबह चार बजे उठने के आदी थे। चार बजे उठकर एडम्स स्नान के लिए बाहर चले जाते थे और सिर्फ व्हाइट हाउस के कुछ खास लोगों को इस बात का पता था। उस समय न तो आज-जैसा आतंक का माहौल था और न ही बड़े लोगों को इतना खतरा रहा करता था। अतः एडम्स महोदय अकेले ही स्नान के लिए जाते थे और सूर्योदय से पूर्व ही लौट आते थे।

पार्टमिक नामक नदी समीप ही बहती थी। एडम्स रोज वहां जाकर एक निश्चित चट्टान पर अपने वस्त्र उतारकर रख देते थे और नदी में घुस जाते थे। चट्टान नदी से कुछ दूरी पर थी, अतः नहाने व तैरने के बाद एडम्स उस चट्टान पर आते थे, बदन पोंछते थे और फिर कपड़े पहनकर लौट आते थे। इस पूरी प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण पहलू यह था कि वह सदैव निर्वस्त्र होकर स्नान करते थे। अतः चट्टान तक उन्हें उसी अवस्था में आना पड़ता था। एडम्स को यह आदत कई बार महंगी पड़ी, निर्वस्त्र चट्टान तक आने के कारण उन्हें अनेक बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपनी आदत बरकरार रखी।

सन १८२५ की बात है, तब वह राष्ट्रपति बने ही थे। २२ जुलाई के दिन भी वह सामान्य आदत के अनुसार नहाने चले गये। उन्होंने अपने नियमानुसार कपड़े उतारकर उस चट्टान पर रख दिये और नहाने चले गये। लगभग एक घंटे तक उन्होंने स्नान किया और तैराकी का आनंद लिया। नहाने के बाद वह कपड़े पहनने के लिए बाहर निकले, तो सकते में आ गये। उन्होंने देखा कि उनके कपड़ों के समीप ही कई आदमी बैठे थे। आदमी गमगीन से नजर आ रहे थे और पानी को बहुत गौर से देख रहे थे।

श्री एडम्स अब असहाय हो गये थे, यदि कोई उन्हें देख लेता, तो उनका भेद खुलने का डर था। निर्वस्त्र अवस्था में खड़े हुए उन्हें लज्जा भी आ रही थी। दूसरे वह यह भी नहीं चाहते

राष्ट्रपति एडम्स सुबह चार बजे उठने के आदी थे । चार बजे उठकर एडम्स स्नान के लिए बाहर चले जाते थे और सिर्फ व्हाइट हाउस के कुछ खास लोगों को इस बात का पता था । उस समय न तो आज-जैसा आतंक का माहौल था और न ही बड़े लोगों को इतना खतरा रहा करता था । अतः एडम्स महोदय अकेले ही स्नान के लिए जाते थे और सूर्योदय से पूर्व ही लौट आते थे ।

थे कि कोई उनके प्रातः नहाने की बात जाने, क्योंकि इससे वहां पर सुबह ही उनके प्रशंसकों के आने का डर था । खैर, एडम्स वहां खड़े रहे और उनके जाने की प्रतीक्षा करते रहे । उन्होंने उनकी बातें ध्यान से सुनीं, तो पता चला कि उनका कोई साथी नहाते हुए डूब गया था और वे लोग उसे ही ढूंढ़ने का प्रयास कर रहे थे । तभी वह बुरी तरह से हड़बड़ा गये, क्योंकि उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति की लाश उनके पास से बहती हुई जा रही थी । हलकी-हलकी-सी रोशनी में लाश बेहद भयानक नजर आ रही थी । एडम्स की चीख निकलने को हुई, लेकिन किसी तरह उन्होंने काबू कर ली ।

संयोग से एक आदमी की नजर लाश पर पड़ गयी । सभी लोग उस लाश की ओर दौड़े । एडम्स को यह सर्वाधिक उपयुक्त मौका लगा । लोगों के जाते ही वह तुरंत चट्टान के पास पहुंचे और उन्होंने आधे-पौने कपड़े पहन लिये । उस दिन न उन्हें केवल अपना शेष काम करने में देरी हुई, बल्कि पानी में बहुत देर तक रहने के कारण उनका स्वास्थ्य भी अगले कई दिन तक खराब रहा । श्री एडम्स ने अपनी २२ जुलाई की डायरी में लिखा भी है कि उनके लिए यह घटना काफी अजीब साबित हुई । उस दिन उन्होंने इस बात पर गंभीरता से विचार किया कि निर्वस्त्र नहाना छोड़ दिया जाए, किंतु बाद में उन्होंने यों ही नहाते रहने का निश्चय कर लिया ।

उनकी इस आदत का पता आम जनता को नहीं चला था और निर्वस्त्र नहाने की आदत उन्हें लगातार मुसीबतों में डालती रही थी । एक बार तो जब वह नहाकर उस चट्टान के पास पहुंचे, तो यह देखकर हतप्रभ रह गये कि वहां उनके कपड़े ही मौजूद नहीं थे । बेचारे एडम्स बेहद परेशान हो गये । उन्होंने इधर-उधर घूमकर कपड़े ढूंढ़ने का प्रयास किया । लगभग १५-२० मिनट बाद उन्हें एक स्थान पर कपड़े मिले, लेकिन वह भी पूरे नहीं थे । कपड़ों पर दांतों के निशान थे, जिससे इस बात के संकेत मिल रहे थे कि कपड़ों को किसी जानवर ने निशाना बनाया होगा । इसके बाद कई बार छोटी-छोटी घटनाएं घटती रहीं । किंतु कुछ समय बाद एक ऐसी घटना घटी, जिसने न केवल एडम्स को अपनी आदत सुधारने के लिए मजबूर कर दिया, बल्कि उनकी यह आदत काफी अरसे तक समाचार पत्रों की सुर्खियों में भी स्थान पा गयी ।

हुआ ऐसा कि एक चुलबुली युवा पत्रकार ऐनी रॉयल श्री एडम्स का इंटरव्यू लेना चाहती थी, पर श्री एडम्स उसे इसके लिए समय नहीं दे रहे थे । किसी तरह ऐनी को व्हाइट हाउस से

एडम्स के नहाने का भेद मालूम हो गया। अगले ही दिन सुबह के समय वह नहाने के स्थल पर पहुंच गयी और एडम्स के कपड़े उठा लिये और उसने एडम्स को इंटरव्यू के लिए मजबूर कर दिया। एडम्स ने बार-बार कपड़े मांगे पर ऐनी ने नहीं दिये। हारकर उन्हें ऐनी के प्रश्नों का जवाब देना पड़ा, तब कहीं जाकर कपड़े वापस मिले।

अगले ही दिन अमरीकी राष्ट्रपति के इस विचित्र नहाने की खबर दूर-दूर तक फैल गयी। ऐनी रॉयल का नाम जगह-जगह गूंजने लगा। इस घटना वाले दिन राष्ट्रपति एडम्स बेहद तनाव में रहे और रात में उन्होंने अपनी डायरी में लिखा—"गलती उस महिला पत्रकार की नहीं है, हर आदमी मजबूरी का फायदा उठाता है, उसने भी ऐसा ही किया। निश्चत रूप से मुझे अपनी आदत सुधारनी होगी ताकि भविष्य में ऐसा न हो।"

—शांति निकेतन, पुनासा (खंडवा)
पिन-४५०११४

हंसिकाएं



अत्याचार

लगातार भाषण देते समय आंखें मूंद लीं
भाव विभोर...आत्मलीन...हो उठे
सहसा आंखें खोलीं तो देखा भृकुटि तनी थी
भीड़ गायब थी— सम्मुख पत्नी थी

विस्फोट

तुम्हारी हंसी विस्फोटक
संबंधों के चिथड़े उड़े
ठहाकों में कान फटे जाते हैं अब तक

निर्माण

सिविल इंजीनियर पति पर कटाक्ष किया—
धराशायी हो गये तारीफों के पुल भी
(तुम्हारे बनाये हुए)
अन्य पुलों की नाईं पिया

विवशता

वृद्ध पति के बारे में रही कहती
इस बरगद की छांह तले
यौवन की, तपती दोपहरी बीती।



निवारक

पति कहीं भी जाते
उनके कपड़ों पर
इत्र की जगह
कीटाणु नाशक औषधि छिड़ककर
वह मुसकाती
दबे स्वर में कहती—
"इससे चींटियां नहीं चिपकतीं,
मक्खियां नहीं मंडरातीं"

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

व्यंग्य

अंकल मत कहो, प्लीज

• गोपाल चतुर्वेदी

जब से उसने हमें अंकल जी कहा है केशव [illegible] अपना मन भी संन्यास की तरफ ढुर गया है। तन तो हमें काफी पहले से दगा दे चुका है। छह-सात दांत बत्तीसी से नदारद हैं। खोपड़ी से बालों ने भी कुछ नयी अदा से पलायन किया है। चांद के बीचोंबीच ठीक एक गोलाकार आकार के केश उड़न-छू हो चुके हैं। उसे छुपाने के लिए हम चारों तरफ से लंबे बालों की कुमुक भेजते हैं। इन सुरक्षा दस्तों की पोल आंधी-तूफान में अपने आप खुल जाती है। जहां सेना हटी, गंज वहीं चमकी। एक बार तो हमने उस्तरा चलवाकर विग की टोपी तक लगा ली थी। पर आज की युवा आंखें विग की असलियत झट-से ताड़ जाती हैं। यों हमें अंगरेजी से परहेज नहीं है। आम हिंदुस्तानी बाबू की तरह हम अंगरेजी से आम जनता पर रौब गालिब करते हैं। अपन को एक ही शिकायत है। यह 'अंकल' शब्द आंग्लभाषा के शब्दकोष से निष्कासित क्यों नहीं हो जाता।

हम अपनी चुस्त-दुरुस्त पतलून, शर्ट, सात नकली दांत, सुरक्षित चांद व्यवस्था से लैस होकर घर से दफ्तर पहुंचते हैं। अभी तो नयी-नयी लड़कियां भरती हुई हैं। यही मौका है उन्हें 'इंप्रैस' करने का। कहीं हमारे युवा सहयोगियों ने हमसे पहले उन्हें 'हथिया' लिया तो अपना तो भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। आधुनिक पीढ़ी 'हैलो' कहती और हाथ मिलाती है। कहीं देर हुई तो हम तो नमस्कार करते रह जाएंगे। हम जब दफतर पहुंचे, तो चौकीदार ताला खोल रहा था।



"सरकार। आज किधर रास्ता भटक गये", उसने आश्चर्य जताया।

"जब से प्रमोशन हुआ है, अपना कर्तव्यबोध जाग गया है", हमने उसकी जिज्ञासा शांत की।

हम अपने केबिन में जाकर मुफ़्त का अखबार पढ़ने लगे। नेताओं ने सत्ता पाकर देश को चरा है। हमने नौकरी पाकर फ्री की किताब, अखबार और मैगजीन को चाटा है। पैसे खर्चने ही हैं तो पान-सिगरेट क्या बुरे हैं! असल में हमें पर-चर्चा से बौद्धिक परहेज है। अखबार इसके अलावा और होता ही क्या है। जिसने खर्चा-पानी दिया उसकी खबर छाप दी।

इतने में चार केबिनों के इकलौते चपरासी रामदीन पधारे। हमारे सरकारी गुरु ने हमें नौकरी के शुरू में ही आगाह किया था कि प्रमोशन पाना है तो काम-काज मत करना। चपरासी को पटाना, चाय-पानी की जुगाड़ भिड़ाना और बिना किसी रोक-टोक प्रगति की सीढ़ी चढ़ते जाना। बहुतों ने जी-तोड़ कर फाइलों पर खून-पसीना बहाया। एकाध बार गलती हुई। उसकी सजा अब तक भोग रहे हैं। न करोगे काम, न भुगतोगे अंजाम। कर्म की कोरी चादर को सिर्फ कोरा ही रखना है तभी बस प्रमोशन का इनाम मिलना है।

हमारी रामदीन से पुरानी दोस्ती है। अपनी मिलीभगत के तहत दूसरों के सामने उसने हमें हमेशा अफसर का रुतबा दिया है और हमने एवज में उससे मिल-बांट के खाया है। हर स्तर पर आपसी सहयोग कामयाबी का अचूक नुस्खा है। व्यक्तिगत जीवन से लेकर सियासती दलों तक इसकी दरकार है। हमें तो कभी-कभी लगता है कि साझा सरकारें हमारे और रामदीन के पारस्परिक सहयोग के आदर्श पर ही चल रही हैं। रामदीन हमें देखकर चौंके—

"अरे चौबे जी आज सूरज पश्चिम से कैसे निकल आया। कहीं बड़े साहब का सरप्राइज इंसपैक्शन तो नहीं है?" हमने उन्हें आश्वस्त किया कि दस वर्ष में तो घूरे के दिन भी फिरते हैं। अगर दफ़्तर के कभी-कभार फिर जाएं तो ताज्जुब कैसा।

हमने उन्हें विश्वास में ले लिया। पीढ़ियों के संघर्ष का जिक्र किया।

"बस रामदीन जी। हम दोनों की इज्जत का सवाल है। जैसे ही आपको नयी चिड़िया दिखे, हमारे पिंजरे में ले आना। कहीं युवा टोल ने उन्हें फंसा लिया तो यह हम सब की भद होगी। ऐसे भी इन नये लड़कों का क्या भरोसा। कहीं आलतू-फालतू छेड़छाड़ कर दी तो सारे दफ़्तर की बदनामी है।"

हमने उनकी नैतिक चेतना को जगाया। नैतिकता के नाम पर अपना उल्लू सीधा करना हमारे देश का दस्तूर है। पूरे के पूरे युग की प्रतीक्षा के बाद जैसे अचानक शुभ घड़ी आयी। रामदीन ने हमारी केबिन में झांका और साजिश के लहजे में सूचित किया—'वह आ गयी।' हमने घड़ी देखी। सरकारी समय से पांच मिनट ऊपर गुजर चुके थे।

"जरा मेरे पास भेजिए।" हमने रामदीन को निर्देश दिया। तीन देवियां हमारे केबिन में दाखिल हुईं।

"आपको दफ़्तर समय से आना चाहिए", हमने अपनी अफसरी का रौब गांठा और चालू रहे— "धर्म-निरपेक्ष देश में दफ़्तरों का दरजा

हम अपनी चुस्त-दुरुस्त पतलून, शर्ट, सात नकली दांत, सुरक्षित चांद व्यवस्था से लैस होकर घर से दफ़्तर पहुंचते हैं । अभी तो नयी-नयी लड़कियां भरती हुई हैं । यही मौका है उन्हें 'इंप्रैस' करने का । कहीं हमारे युवा सहयोगियों ने हमसे पहले उन्हें 'हथिया' लिया तो अपना तो भविष्य अंधकारमय हो जाएगा ।

मंदिर, मसजिद-जैसा है । काम पूजा है । हम तो आज हैं, कल रिटायर होंगे । फिर मुल्क को चलाने की अहम जिम्मेदारी आपको ही निभानी है ।''

मन ही मन हमें अपनी बकवास पर हंसी आ रही थी । पर वास्तविकता तो वास्तविकता है । देश का प्रशासन तो बाबू ही चलाते हैं । अफसरों को कागज पढ़ने की फुरसत ही कहां है । बेचारे रात-दिन मीटिंग करते हैं । अच्छी पोस्टिंग की जुगत भिड़ाते हैं । कौन-सा पद पाएं कि खाना-पीना फ्री में उड़ाएं और छुट्टी मनाने यूरोप जाएं । रोज तो 'गौरमिंट' बदलती है । अफसर भी मिनट-मिनट में अपने नये सियासती आकाओं को पटाने पर गौर करते हैं । बाबू फाइलों की जलेबी बनाते हैं । एक-एक कागज को तीन-चार मंत्रालयों का चक्कर कटवाते हैं । इसीलिए सरकार यानी गौरमिंट को समझदार ऐसी स्थायी संस्था बताते हैं जहां अस्थायी आकाओं से अफसर मिंट-मिंट पर सिर्फ निजी स्वार्थ और नयी सुविधाएं बढ़वाने के लिए गौर करवाते हैं ।

बहरहाल इस समय तो अफसर की भूमिका हमारी थी । लड़कियों ने हमारी तकरीर के असर में देश की सेवा का और समय से आने का व्रत लिया । हमने भी आज घंटी बजाने का दुस्साहस किया और रामदीन ने आने का कष्ट । वरना हम उनसे उनकी बैंच के ठिकाने पर जाकर चाय लाने का निवेदन करते थे ।

''रामदीन जरा सबको चाय पिलवाइए'', हमने आवाज में अफसरी का रूखापन लाकर हुकुम चलाया । चाय के बाद 'मिलते रहिएगा' कहकर हमने आगे की संभावनाओं का द्वार खोला । नये रीति-रिवाज के तहत लड़कियों ने जाने से पहले हमसे हाथ मिलाया । अपनी साधना तो सफल हो गयी । क्यों न रोज चौकीदार के साथ दफ़्तर का ताला खुलवाएं और इस कोमल स्पर्श सुख का आनंद उठाएं । यह तो सिर्फ शुरुआत है । आगे-आगे देखिए होता है क्या ? हमारे सपने एक मीठी आवाज ने भंग किये ।

''अंकल जी । कोई मुश्किल आयी तो आपके अलावा किसके पास जाएंगे ।'' एक बार तो इच्छा हुई कि अंकल का रिश्ता रखने की सजा के बतौर उन्हें भाड़ में जाने की सलाह दे दें । फिर अफसरी का लिहाज कर हम चुप रह गये । ऐसे भी चाय का 'इनवैस्टमेंट' तो हमने हाथ पकड़कर वसूल ही लिया था । गलती तो एक की थी ! दो में तो समोसे, पकौड़े



की संभावना अभी भी बरकरार थी ।

ऐसे हमें अंकल और डंकल दोनों से परहेज है । डंकल तो एक बार आया तो टिक जाता है । पर हम अंकल जैसे नामाकूल संबोधन से तो बच सकते हैं । अब तो इंगलैंड, अमरीका में सब एक-दूसरे को नाम लेकर बुलाते हैं । उम्र का फर्क हो तो वहां बड़े लोगों पर कोई जबरदस्ती बड़प्पन नहीं लादता है । यहां उल्टा है । जैसे ही कोई अच्छा-खासा इनसान देखा उसके अंकल का थप्पड़ जड़ दिया । हम तो दूसरे मुल्कों की तरक्की से बेहद प्रभावित हैं । हमने अपने फ्री अखबार में ही पढ़ा था । किसी अस्सी साल के युवा ने किसी सत्ताइस वर्ष की प्रौढ़ा से शादी कर ली । यह कन्या का दूसरा और पुरुष का चौथा विवाह था । कितना मुक्त और परिपक्व समाज है । अपने हिंदुस्तान में जाने क्यों शादी को उमर कैद के समकक्ष बना दिया गया है । नारियों की आजादी और समानता वाकई तब ही आएगी जब आयु और विवाह के प्रति उनका दृष्टिकोण बदलेगा । जब जी आये शादी करो । जब मन भाये छोड़ दो ।

हमें इन नौकरीपेशा लड़कियों से बेहद निराशा हुई । दफ़्तर कोई घर का विस्तार तो है नहीं । काम-काज की सरकारी जगह है । कैंटीन की खाने-पीने की सहूलियत का यह अर्थ तो नहीं है कि आप उसे घर का रसोईघर बना डालें । एक औपचारिक स्थल है दफ़्तर । यहां की औपचारिकता बरकरार रखने के लिए सरकार लाखों-करोड़ों का खर्चा कर शानदार बहुमंजिली इमारत बनवाती है । जनता की भलाई का काम बिना जनता के जाने चले इसीलिए उसके प्रवेश पर रोक लगाती है । असली जन-सेवा तो वही है कि शिकार को पता भी न चले और आप उसे ठिकाने लगा दें । ऐसे पवित्र और कामकाजी माहौल में घर का बेवजह प्रवेश कहां तक उचित है । मम्मी-पापा, अंकल-आंटी घर में भले हैं । वहीं बसें । उन्हें दफ़्तर में जबरदस्ती घुसेड़ने की क्या दरकार है ।

यों भी अपन चलते-फिरते रिश्ते बनाने के

पक्ष में नहीं हैं। कौन इन लड़कियों के पिता की जन्मपत्री जानता है। हो सकता है कि वह एक शरीफ इनसान हों। तस्कर, माफिया, दादा होते तो कुछ फायदा भी होता। पर उनके बच्चे क्यों यह दो टके की नौकरी करेंगे। इन शरीफ लोगों का क्या भरोसा। आज 'अंकल' कहा, कल योग्य वर की तलाश में लगा दें। क्या पता उसके बाद दहेज का जिम्मा भी सौंप दें। सिर्फ एक बार हाथ पकड़ने की ऐसी सजा कौन भुगते।

हम तो इस मामले में अपने प्रचलित दफ़्तरी संबोधन 'सर' के कायल हैं। अंगरेजों ने 'सर' का आविष्कार कर कमाल कर दिया है। अंकल की तरह 'सर' से उम्र तो नहीं झांकती है। आपका 'सर' आपसे छोटा भी हो सकता है। बड़ा भी। 'सर' से सम्मान झलकता है। अंकल आयु का दर्पण है, सर औपचारिक पहचान का। 'सर' से 'मिस्टर' का सफर दूर नहीं है। आजादी के बाद कई अफसर सर से शुरू कर अपनी पी.ए. के साथ शादी तक का सफ़र तय कर चुके हैं। इश्क-मोहब्बत का क्या कहना। दफ़्तर की नालायकी की जिंदगी में वही तो एक लायकी का काम है।

अपन तो कोर्ट-कचहरी में कहने को तैयार हैं। रिश्ते बनाने का अपना कतई इरादा नहीं है। हम तो समाज सेवा के पक्षधर हैं। लड़कियां घर से बाहर आयी हैं। कुछ मौज-मस्ती कर लें। शादी-वादी के बाद तो घर-गृहस्थी चलानी ही है। आज मौका है। कुछ सैर-सपाटा हो। कुछ हमारे अनुभव के गुर सीखें। हम-उम्रों के साथ तो इतना वक्त गंवा दिया। समय का थोड़ा-बहुत सही उपयोग भी हो। यों भी अपनी उम्र है ही क्या। आजकल हम जवानी के कगार पर हैं। बाकी वर्ष तो लड़कैया के थे। जाने कब आये कब चले गये। बस किताबी ज्ञान में इजाफा होता रहा। जीवन का असली आनंद तो पचास-पचपन के बाद का है। हमारे एक परिचित अफसर ने जिंदगीभर मीटिंग के नाम पर दफ़्तर की सुंदर लड़कियों को सफल जीवन और वरीयता लांघकर प्रमोशन पाने की जुगत सिखायी। अब उन्होंने रिटायर होकर एक आश्रम बनाया है। उसमें वह विवाहित महिलाओं को सुखी जीवन के राज बताते हैं। हम ऐसे लोगों की तहेदिल से इज्जत करते हैं।

तकदीर भी ऐसे रण-बांकुरों का साथ देती है। उनकी ख्याति से अपने आप उनके कमरे के सामने ज्ञान-पिपासु कन्याओं का 'क्यू' लगा रहता है। अच्छे और शरीफ होने की मध्यम-वर्गीय छवि जिंदगी में किसी को भी 'एडवेंचर' का अवसर नहीं देती है। आजकल हम अपनी 'इमेज' सुधारने में जी-जान से लगे हैं। वक्त से पहले कोई दफ़्तर पहुंचे। अपने पैसे से किसी को वहां चाय पिलाये। इससे बढ़कर अपमानजनक परिस्थिति शायद ही मुमकिन हो। पर समाजसेवा की निष्ठा-लगन में हम सब हंसी-खुशी भुगत रहे हैं। यों इमेज का परिवर्तन कोई आसान तो है नहीं। यह क्या किसी फाइल पर चिड़िया बनाना है या दिनभर खाली बैठे मक्खी मारना है। छवि बनाने में बड़ी मेहनत लगती है। यकीन न आये तो किसी राजनेता से दरयाफ़्त कर लें। बैठे-ठाले प्रेस वालों ने हमारे विद्वान प्रधान को अनिर्णय की 'इमेज' दे दी है। ज्ञान और अनिर्णय एक ही

सिक्के के दो पहलू हैं । समझदार हर कोण से समस्या का निदान सोचता है । उसी तरह की समान ऐतिहासिक परिस्थितियों का स्मरण करता है । उनका वर्तमान से तालमेल बिठाता है । उसके निर्णय का भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा । उसके फैसले की वोटर पर क्या प्रतिक्रिया होगी । ऐसे उसे न वोट की चिंता है, न चुनाव की । उसे तो केवल एक आदर्श और निष्पक्ष निर्णय लेना है । ऐसे सोच-विचार में सदियां बीत जाती हैं । इसे अनिर्णय से जोड़ना कतई नाइंसाफी है । पर अखबारों का कोई क्या करे । जब देश के प्रधान तक छवि परिवर्तन में अपने को विवश समझते हैं तो हमारे-जैसे सामान्य बाबुओं की मुश्किल का अंदाजा लगाया जा सकता है ।

इन मुश्किलों को अंकल-जैसे शब्द और मुश्किल बनाते हैं । हम तो खून-पसीना बहाकर अपनी समाजसेवी मुहिम में लगे हैं । उस पर उम्र का अहसास दिलानेवाले इस कमबख्त लफ़्ज़ की जरूरत ही क्या है । आयु की अवधारणा सिर्फ महिलाओं के लिए है । उनके शरीर में मां का दिल होता है । वह सृष्टि को कायम रखने के लिए जिम्मेदार हैं, पुरुष तो भारतीय समाज में घी के लड्डू का दरजा रखता है । न घी का लड्डू खराब होता है, न आदमी बुढ़ाता है । बस पैदा हुआ, जवान हुआ और एक दिन चल बसा । घर बसाना तो पूरी तरह एक महिला गतिविधि है । इधर हमारे-जैसों की किस्मत जागी है कि वह दफ़्तर भी बसा रहे हैं । अपना तो पूरा प्रयास उन्हें कार्यालय में स्थापित करने का है । इस निःशुल्क सेवा के एवज में 'अंकल' की गाली ! वाकई नेकी कर कुएं में डाल देनी चाहिए । दिक़्क़त है कि शहर में कुआं भी तलाश करना पड़ेगा । अपने महल्ले में तो नल है । वह भी नल की दमयंती विहीन है । चलो, नेकी गटर में डाल देंगे ।

पर यह 'अंकल जी' की आदत बला की नाइंसाफी है । हमारी नयी पीढ़ी क्या पूरी तरह भाषाहीन है । भला कोई अंकल के बाद 'जी' लगाता है । यह तो बिलकुल नौसिखियों की अंगरेजी हुई । इन दफ़्तर आती लड़कियों को अपने अज्ञान के प्रदर्शन में लाज-शरम भी नहीं आती है । यही तो मजबूरी है । दफ़्तर में पहले

यों भी अपन चलते-फिरते रिश्ते बनाने के पक्ष में नहीं हैं । कौन इन लड़कियों के पिता की जन्मपत्री जानता है । हो सकता है कि वह एक शरीफ इनसान हों । तस्कर, माफिया, दादा होते तो कुछ फायदा भी होता । ...इन शरीफ लोगों का क्या भरोसा । आज 'अंकल' कहा, कल योग्य वर की तलाश में लगा दें । क्या पता उसके बाद दहेज का जिम्मा भी सौंप दें ।

सिर्फ खानदानी लोग आते थे, एक पीढ़ी ने बाबूगीरी का धंधा चुना तो अगली दस के लिए निर्णायक हो गया । अब 'सिलैक्शन' है । रिजर्वेशन है । यह अनपढ़ लोग हमारी चयन-पद्धति की बानगी हैं ।

अंकल-आंटी के पीछे जी लगाते हैं । सुना है कि नव-अभिजात्य पीढ़ी हर स्थल पर 'जी'

की दुर्घटना से ग्रसित है । पतिदेव की पत्नियां अपने 'उनको' प्यार से डार्लिंगजी कहती हैं । उनका नाम लेने से गंवई गांव की औरतों की तरह कतराती हैं और 'डार्लिंगजी' बापरते ही तत्काल आधुनिक बन जाती हैं । धीरे-धीरे हमें तो यकीन होता जा रहा है कि 'अंकल जी' का इस्तेमाल करनेवाले लोग अंगरेजी की टोल में हिंदी के घुसपैठिये हैं । हम तो गंभीरता से विचार कर रहे हैं कि भारत में इंगलैंड के हाई-कमिश्नर को इस भीतरघात से आगाह करें । कहीं हिंदीवालों की साजिश कामयाब हो गयी तो हम अंगरेजीदां लोगों का क्या होगा ।

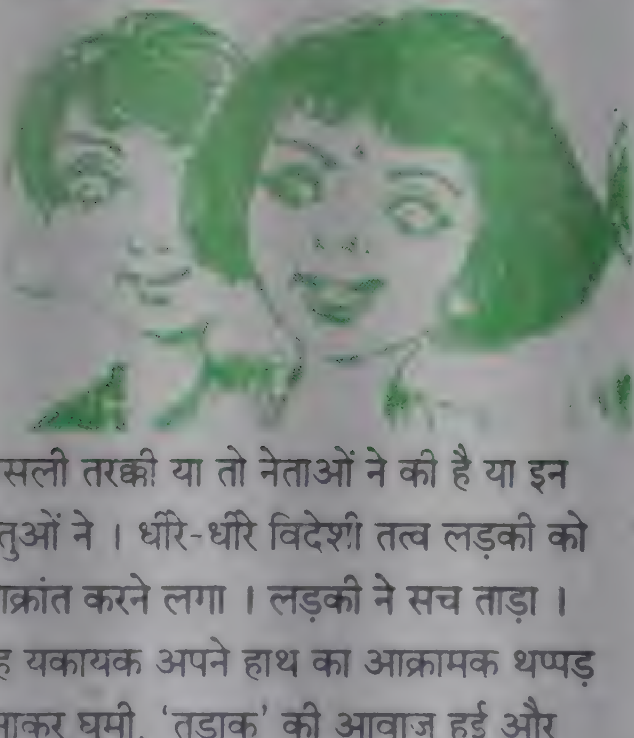
हम तो अपने दफ्तर के सीमित अनुभव से जानते हैं । अकसर हमारे यहां के चतुर्थ श्रेणी के अधिकारियों के बच्चे हर अंगरेजी शब्द के साथ 'जी' का पिछलग्गू लगाने में विश्वास रखते हैं । यही हमारे समृद्ध-वर्ग वाले भी कर रहे हैं । 'जी' के इस समाजवाद से हमें कोई उज्र नहीं है । कल आता है तो आज आये । 'स्वीट-हार्टजी', 'डार्लिंगजी', 'मम्मीजी', 'डैडीजी' जो जी में आये, इस्तेमाल करें । बस जरा अंकलजी से बचो । नहीं तो हम इस अंगरेजी को करप्ट करने की साजिश के खिलाफ आंदोलन करेंगे ।

महिलाएं अभी समझ नहीं पा रही हैं । उनके मुक्ति आंदोलन में यह अंकल जी शर्तिया आड़े आएगा । हमारे-जैसे वालंटियर कब तक अपमान का घूंट पीकर अपनी महिला सेवा मुहिम में लगे रहेंगे । अपनी तो इकलौती आकांक्षा अपने संपर्क में आयी औरतों को दफ्तर के सही तौर-तरीके सिखाने की है । इससे पुरुषों के साथ कंधा और हाथ से हाथ मिलाने में उनकी झिझक दूर होगी । मुल्क आगे बढ़ेगा । औरतों का आत्मविश्वास जगेगा । हमें तो ताज्जुब है । हमें अंकल जी कहकर महिलाएं अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मार रही हैं । हमारा मनोबल कमजोर हुआ तो उनका साथ इस सेवा-भाव और निष्ठा से कौन देगा ।

हम अपने नारी सुधार अभियान में सिर्फ वक्त ही नहीं, पैसा गंवाने को भी तैयार हैं । कितने ऐसे समर्पित व्यक्तित्व होंगे । अपना तो एक ही मिशन है । किसी भी तरकीब से कामकाजी महिलाओं का उद्धार हो । हमारी तरह के दो-चार व्यक्तियों का ही कार्यालय के सरकारी इतिहास में जिक्र है । उनका भी जीवन में हमारी तरह केवल एक ही लक्ष्य और शौक था । महिला दिखी नहीं कि उसके शरीर से चुंबक से विवश उनके हाथ उसके बदन की ओर खिंचे चले जाते थे । अपना तो अभी भी अपने ऊपर थोड़ा-बहुत नियंत्रण है । दफ्तर की श्रुति-परंपरा के अनुसार उनके साथ ऐसा नहीं था । औरत नजर आये तो उसका शरीर उनको छूना ही छूना । उनके स्वभाव की इस स्पर्श विवशता पर उनका स्वत्वाधिकार तो हो नहीं सकता । ट्रेन, बस, बाजार, सब जगह ऐसे पुरुषों की भरमार है । कंधा करीब मिला तो उसे सहला लिया, दो कदम पीछे रह गये तो पार्श्व भाग में चिकोटी काट ली ।

एक स्पर्श विवश सज्जन के हाथ अनजाने में यह हरकत अपनी पुत्री की एक सहेली के साथ ही कर बैठे । इस तरह के हाथ बहुधा बुद्धि से आजाद रहते हैं । हाथों की क्या गलती । उनके आंखें तो हैं नहीं । न दिमाग है । हिंदी के गीतकार को अबूझी गंध की तलाश है । ऐसे

हाथों को स्त्री तन के स्पर्श की । दोनों विवश हैं । गीतकार गीत रचने को, चिकोटीकार चिकोटी काटने को । इन बेबस हाथों को साड़ी, स्कर्ट, ड्रैस, सलवार-कमीज सब समान है । सहेलीवाला हादसा एक सार्वजनिक स्थान अर्थात बाजार में संपन्न हुआ । वह दुकान के 'काउंटर' पर नयी साड़ी का मोल-तोल कर रही थी । उसे लगा कि कोई मच्छर, मक्खी, खटमल, पिस्सू होगा । हिंदुस्तान की आबादी में ऐसे तत्वों की बहुतायत है । इनके आवागमन पर कोई रोक-टोक नहीं है । आजादी के बाद



असली तरक्की या तो नेताओं ने की है या इन जंतुओं ने । धीरे-धीरे विदेशी तत्व लड़की को आक्रांत करने लगा । लड़की ने सच ताड़ा । वह यकायक अपने हाथ का आक्रामक थप्पड़ बनाकर घूमी, 'तड़ाक' की आवाज हुई और वातावरण में एक आहत स्वर उभरा । दूसरी अवाक आवाज आयी—'अरे अंकलजी ! आप ।' सुना है कि अंकलजी सुनते ही उन सज्जन को दिल का दौरा पड़ गया ।

हमें दिल के इस मरीज से दिली हमदर्दी है । 'भूल हाथों की दिल सजा पाये', कहां का न्याय है ? यों भी अगर कपड़े के ऊपर किसी का हाथ लग भी गया तो फर्क क्या पड़ता है । महिलाएं कोई छुई-मुई का फूल तो हैं नहीं कि हाथ लगा और मुरझा गयीं । घर की चारदीवारी से बाहर जाने पर हाथ-वाथ का स्पर्श तो होगा ही । हमने तो किसी भी पुरुष को बाजार या बस की धक्का-मुक्की पर ऐतराज करते नहीं देखा है । अगर स्त्रियों का यही तौर-तरीका चलता रहा तो औरत-आदमी की बराबरी तो धरी की धरी रह जाएगी । सिर्फ दफ़्तर में आना ही तो काफी नहीं है । हमारे जैसे निःस्वार्थ महिला उद्धारकों से दोस्ती भी तो जरूरी है । यह तो मुमकिन नहीं है कि वह तो हमें 'अंकलजी' की गाली दें और हम चुपचाप उनकी सेवा में लगे रहें । हमें महिला मुक्ति आंदोलन से यही शिकायत है । नारियों को अपनी मानसिकता बदलनी है । अगर आदमी चिकोटी काटता है तो आप भी काटो । कभी किसी स्पर्श इच्छुक पुरुष के गाल पर जरा कोई महिला 'पब्लिकली' हाथ फेर करके तो देखे । वह चीख-चिल्लाकर विरोध करे न करे पर पानी पानी तो शर्तिया हो जाएगा ।

अंतरराष्ट्रीयता के टी.वी. युग से हम खुश हैं । कैसे सहज भाव से आदमी-औरत आलिंगनबद्ध होते हैं । चूमाचाटी करते हैं । वहां तो कोई 'अंकलजी' नहीं चिल्लाता । सिर्फ उदार अर्थव्यवस्था ही तो काफी नहीं है । उदार मन और व्यवहार भी तो चाहिए । पुरुषों की प्रगति का यही राज है । उन्होंने छुआछूत से कभी परहेज नहीं किया । हम तो सबको आमंत्रण देते हैं— 'हमारे हाथ तुम्हें छूने को विवश हैं । तुम भी बदला लो । स्वागत है, हमें छुओ ।

बस अंकल जी मत कहो, प्लीज !'

—डी-१/५ सत्य मार्ग
चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली-२१

गोष्ठी

ा पाठक, वाराणसी

• वित्त आयोग क्या स्थायी निकाय है ?

□ प्रत्येक पांच वर्ष के बाद राष्ट्रपति वित्त ायोग की नियुक्ति करते हैं । इसका उद्देश्य घ और राज्यों के बीच करों के बंटवारे का धारण करना है । केंद्र द्वारा राज्यों को दिये नेवाले अनुदानों के सिद्धांतों का भी यह र्धारण करता है । अब तक दस वित्त आयोग ठित हो चुके हैं । यह एक संवैधानिक वस्था है ।

ागीरथ कुशवाहा, हजारीबाग

• गोल गुंबद क्या है और कब निर्मित किया या ?

□ यह मोहम्मद आदिल शाह (शासनकाल न १६२६-५६) का मकबरा है । इसका र्माण सन १६५९ मे हुआ था । इसका गुंबद, ी ससार में दूसरा विशालतम गुबंद है, १७८ ट ऊंचा और १२४ फुट चौड़ा है ।

यपाल सिंह,उन्नाव

• अवध में कितने नवाब हुए थे ? इनके नाम या थ ?

□ अवध के ग्यारह नवाब हुए हैं । इनमें प्रथम ह तो नवाब थे, जो दिल्ली में मुगल सल्तनत े अधीन कार्य करते थे । किंतु बाद में मुगल ासकों के कमजोर हो जाने और अंगरेजों की हायता से बाद के ५ शासक बादशाह बन गये । पहले नवाब थे बुरहानुलमुल्क (सन १७२२-३९), सफदरजग (सन १७३९-५४), शुजाउद्दौला (सन १७५४-७५), आसफुद्दौला (सन १७७५-९८), वजीर अली (सन १७९८) इनको ४ माह बाद ही अवैध पुत्र होने के कारण सिंहासन से उतार दिया गया । फिर सआदत अली खा (सन १७९८-१८१२), बादशाह गाजीउद्दीन हैदर (सन १८१२-२७), नसीरुद्दीन हैदर (सन १८२७-३७), मोहम्मद अली शाह (सन १८३७-४२), अमजद अली शाह (सन १८४२-४७) और वाजिद अली शाह (सन १८४७-१८५६), अंगरेजों ने इन्हें गद्दी से उतार दिया । १८८७ में मटियाबुर्ज (बंगाल) में इनका देहांत हो गया ।

सुरेश चंद्र घिमिरे, लयजुग (नेपाल); भागीरथ कुशवाहा, हजारीबाग

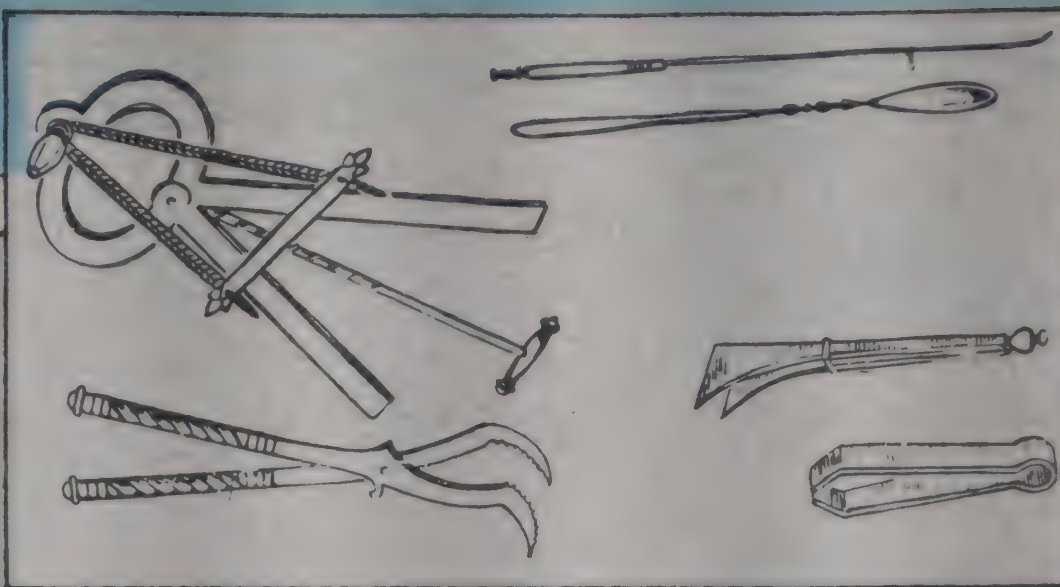
• लक्ष्मीजी के साथ गणेशजी की पूजा क्यों होती है, गणेश सदैव लक्ष्मी के बायें क्यों आसनरत रहते हैं ?

□ गणेशजी विघ्ननाशक, मंगल और ऋद्धि-सिद्धि के देनेवाले हैं, विद्या और बुद्धि के आगार हैं । इसलिए प्रत्येक मंगल कार्य के प्रारंभ में इनका आह्वान किया जाता है । सबसे पहले इनकी पूजा करके विघ्नों को दूर करने की प्रार्थना की जाती है । लक्ष्मीजी के बायें आसनरत इसलिए रहते हैं कि स्त्री के दक्षिण में पति का स्थान होता है ।

यशोधरा राय, अंबाला

• सिख धर्म के दस गुरु कौन थे ?

□ गुरु नानकदेव, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन, गुरु हरगोविंद सिंह, गुरु हरराय, गुरु हरकिशन, गुरु तेगबहादुर और गुरु गोविंद सिंह ।



विजय भास्कर, हैदराबाद

□ **शल्यक्रिया का इतिहास कितना पुराना है ?**

— शल्यक्रिया प्राचीनकाल से होती आयी है । संसारभर में चकमक का उपयोग सर्जरी के लिए किया जाता था । इस आशय के प्रमाण मिले हैं कि अंगच्छेदन तथा छोटी-मोटी अन्य शल्यक्रियाएं मिस्र, यूनान, भारत और चीन में प्राचीनकाल में भी सफलतापूर्वक की जाती थीं और इसके लिए चकमक का प्रयोग होता था । यह प्रागैतिहासिक काल से चला आ रहा है । मछली के दांत और धारदार कांटे भी शल्यक्रिया के औजार थे । मोतियाबिंद का ऑपरेशन कांटों से किया जाता था । इसकी सत्यता इस बात से प्रमाणित होती है कि अनेक ममी (पुराने परिरक्षित शव) ऐसी मिली हैं, जिनमें इस प्रकार की शल्यक्रियाओं के परिणाम देखने में आ चुके हैं । कांस्य और लोहे से औजार बनाने की कला जब मनुष्य ने सीख ली, तब कैंची, लोहे की सुइयों तथा अन्य जटिल औजारों का इस्तेमाल होने लगा । इस आशय के रेकॉर्ड भी मिले हैं कि आज जितने जटिल ऑपरेशन होते हैं, उतने ही प्राचीनकाल में भी किये जाते थे । पाम्पी (इटली) के अवशेषों में कुछ ऐसे औजार मिले हैं, जिनसे जटिल ऑपरेशन किये जाते थे । हजारों वर्षों तक एनेस्थीसिया के बिना ही ऑपरेशन होते रहे, फलतः रोगी दर्द से ही बेहोश हो जाता था ।

सरस्वती शरण, मथुरा

□ **पौधों को खूराक कैसे मिलती है ?**

— अपनी खूराक बनाने के लिए पौधों के पास 'कारखाने' होते हैं, और उनकी पत्तियां ही उनके कारखाने हैं । पौधों की पत्तियां हवा से कार्बन डायक्साइड नामक गैस प्राप्त करती हैं और मिट्टी से उनको जल मिलता है । इस जल और कार्बन डायक्साइड से पत्तियां शर्करा बनाती हैं । यह प्रक्रिया प्रकाश-संश्लेषण (फोटोसिंथेसिस) कहलाती है । कई तरह के पौधों में शर्करा नहीं होती, क्योंकि यह अन्य प्रकार के खाद्य में परिवर्तित हो जाती है, जैसे कि मांड (स्टार्च) और प्रोटीन में । जिस प्रकार खाद्य कारखानों में यंत्र होते हैं, वैसे ही क्लोरोप्लास्ट नामक छोटे-छोटे अवयव इन पत्तियों के यंत्र हैं । और सूर्य का प्रकाश इस यंत्र को चलानेवाली शक्ति है । धूप के रहते पत्तियां शर्करा बनाती रहती हैं ।

सुव्रत सुमन, बांका

● ***अकबर के नौ-रत्नों के नाम क्या थे ?***

□ बीरबल, मानसिंह, टोडरमल, अब्दुर्रहीम खान खाना, तानसेन, फैजी, अबुल फजल, हकीम हुम्माम, मुल्ला दोप्याजा ।



ऋषभ चंद सेठी, उज्जैन

□ गुजरात में प्रमुख जैन मंदिर कितने हैं ?

— गुजरात में जूनागढ़ के निकट गिरिनार पर्वत पर जैन मंदिरों की एक शृंखला अत्यधिक दर्शनीय है । भावनगर के निकट स्थित शत्रुंजय गिरिमाला के अंचल में पालिताना नामक स्थान में जैनियों का विशालतम तीर्थ है । यहां लगभग ६०० मंदिर हैं जिनका निर्माण ११वीं शताब्दी में हुआ था । मुसलिम आक्रमण में ध्वस्त होने के बाद १६वीं शताब्दी में कुछ नये मंदिर बनाये गये । यहां मुख्य मंदिरों में भगवान आदिनाथ और चौमुखी के मंदिर हैं । कहते हैं कि ऋषभनाथ को यहीं पर केवलज्ञान प्राप्त हुआ था और यहीं पर निर्वाण भी ।

मुकेश चंद्र झा, बक्सर

प्र. अधिक आयु तक जीवित रहनेवाले पशु-पक्षी कौन-कौन से हैं ?

□ हाथियों की आयु सबसे अधिक बतायी गयी है । इन्हें ६० वर्ष से अधिक की आयु तक जीवित रहते देखा गया है । घोड़ा ५० वर्ष की आयु प्राप्त कर लेता है । दरियाई घोड़ा ४१ वर्ष; गैंडा ४० वर्ष; भालू ३४ वर्ष; बंदर २० वर्ष; कुत्ता २२ वर्ष; (इसके संबंध में विवाद है, लोग १२ भी बताते हैं ।) पक्षियों में चील और तोते ५४ वर्षों तक जीवित रहे हैं । गौरैया २३ वर्ष की भी देखी गयी है । जलचरों में कछुआ सबसे अधिक दीर्घजीवी है । मॉरिशस नामक कछुआ १५२ वर्ष तक जीवित रहा था ।

लोकेश चंद्र जायसवाल, लखनऊ

प्र. द्वितीय विश्वयुद्ध में हताहतों की अनुमानित संख्या कितनी थी ?

□ जरमनी के ३५ लाख योद्धा और ७ लाख, ८० हजार असैनिक मारे गये थे । इसके विपरीत ब्रिटेन ने ९२,६७३ असैनिक खोये तथा इसके लगभग २ लाख, ६४ हजार, ४४३ योद्धा मारे गये थे । सबसे अधिक क्षति सोवियत संघ की हुई थी । उसके १ करोड़, १० लाख योद्धा और ७० लाख असैनिक मारे गये थे । जापान के १३ लाख योद्धा तथा ६ लाख, ७२ हजार नागरिक बमवारी में मारे गये थे । मरनेवाले अमरीकी योद्धाओं की संख्या ३ लाख, ९२ हजार, १३१ तथा असैनिकों की ६ हजार थी । इसके अतिरिक्त नाजी यातना शिविरों में हिटलर ने कोई ५७ लाख यहूदियों को मरवा दिया था । (स्रोत : मैक्मिलंस एनसाइक्लपीडिया) ।

चलते-चलते

मेरे मम्मी-पापा मेरे प्रेमी से विवाह नहीं करने देते । उनका कहना है चुनाव वे करेंगे जबकि वर का चुनाव मेरा निजी मामला है ।

—शेषन से शिकायत कीजिए । मामला चुनाव का है ।

—सूत्रधार

नगर वानिकी एवं पर्यावरण

● डॉ. डी. एन. तिवारी

सन् २००० तक पृथ्वी के आधे से अधिक निवासियों के नगरीय क्षेत्रों में बसने की संभावना है। इस शताब्दी में आबादी के घातीय रूप से बढ़ने के साथ नगरों की ओर भागने की प्रवृत्ति ने एक सैलाब का रूप धारण कर लिया है। विकासशील देशों में नगरीकरण में वृद्धि अत्यधिक नाटकीय ढंग से हुई है। यहां सन् १९५० के बाद से नगरवासियों की संख्या चार गुना अधिक हो गयी है। विकासशील देशों में बढ़ी हुई आबादी का दो-तिहाई हिस्सा शहरों द्वारा समावेशित किया जा रहा है। सन् २००० तक जिन ६६ शहरों में चार करोड़ से अधिक आबादी होने की आशा है, उनमें से ५० शहर विकासशील देशों में हैं। नगरीय विकास की गति में इस अभूतपूर्व वृद्धि ने वृक्षों और वनों के साथ मानव के संबंधों को अत्यधिक प्रभावित किया है।शहरों में, निश्चय, आबादी अधिक होती है, भोजन तथा ऊर्जा के उत्पादन में आत्म-निर्भरता की कमी होती है और अपने निवासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वे आमतौर पर वाणिज्य एवं उद्योग पर निर्भर रहते हैं। जब शहरों और कुल आबादी की वृद्धि गति धीमी थी, तब भोजन और विशेष ऊर्जा की आवश्यकता अपने आसपास के क्षेत्रों से पूरी की जा सकती थी। व्यवहार में, हालांकि नगरीय केंद्रों में कुछ ही पेड़ होते थे, तथापि वन अधिक दूर नहीं थे।

प्रत्येक शहर में स्वस्थ नगर-वानिकी के सृजन के लिए राजनीतिक, सामाजिक और तकनीकी तीनों मोर्चों पर कार्रवाई करने और इसमें नागरिकों, कंपनियों, नगर निगमों, सरकारी एजेंसियों, राजनेताओं, गैर-सरकारी संगठनों तथा कुशल वनविदों को शामिल करने की आवश्यकता है। चूंकि नगर-वानिकी, एक विज्ञान के रूप में, अभी विकास की प्रथम अवस्था में है, अतः भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने बेहतर परिस्थितिकी एवं वृक्षों के प्रति एक नयी और व्यावहारिक समझ विकसित करने के लिए अनुसंधान की शुरुआत की है।

नगर वानिकी

नगर वानिकी, वानिकी की एक विशेष शाखा है जिसका उद्देश्य नगरीय समाज के भौतिक, सामाजिक और आर्थिक कल्याण में वृक्षों के वर्तमान और संभावित योगदान को देखते हुए उनको अधिक संख्या में उगाना और उनका प्रबंधन करना है। अधिक विस्तृत रूप में नगर वानिकी में एक बहु प्रबंधकीय तंत्र शामिल है, जिसके अंतर्गत नगरपालिका जल विभाजक, वन्यजीव आवास, बाह्य मनोरंजन



शहरीकरण की ओर प्रवृत्त देशों में, यदि हम यह चाहते हैं कि लोगों का जीवनस्तर इतना अधिक न गिर जाए कि उसे पुनर्स्थापित करना हमारे वश में ही न रहे, तो हमें नगर वानिकी कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए अधिक-से-अधिक प्रयास करने होंगे ।

विधाएं, भू-दृश्य डिजाइन, नगरपालिका की कार वस्तुओं का पुनः चक्रण, सामान्य रूप में क्षों की देख-रेख तथा कच्चे माल के रूप में कड़ी, रेशों का उत्पादन आदि निहित है ।

नगर वानिकी में नगर केंद्र, उपनगरीय क्षेत्र था नगरीय सीमांत अथवा ग्रामीण भूमियों हित अंतरपृष्ठीय क्षेत्र में होनेवाली क्रियाएं मिल हैं । वानिकी क्रियाओं में अंचल जोन) के अनुसार महत्वपूर्ण अंतर आ सकता । केंद्रीय क्षेत्रों में महत्वपूर्ण नवीन नगर निकी प्रयासों की संभावना अधिकांश शहरों अपेक्षाकृत सीमित है । अतः यहां मुख्यतया हुत समय पहले लगाये गये पेड़ों के रखरखाव अथवा उनकी जगह दूसरे पेड़ लगाने की वश्यकता है ।

नगर वानिकी और पर्यावरण

शहरी क्षेत्रों में तथा इसके आसपास कंकरीट भवनों, डामर तथा रोड़ी के साथ ही साथ परिवहन प्रणालियों तथा औद्योगिक गतिविधियों की प्रधानता के फलस्वरूप मध्य तापमान उच्च (ताप द्वीप प्रभाव) रहता है । वायु अपेक्षाकृत अधिक शुष्क तथा प्रायः प्रदूषित, वर्षा कम तथा प्रभावशाली ढंग से अवशोषित तथा ग्रामीण पर्यावरण की अपेक्षा पर्यावरण सामान्यतः कोलाहलपूर्ण होता है ।

वायु, कार्बनडाइऑक्साइड तथा कई अन्य प्रदूषकों और धूलों से भर जाती है । इसके परिणामस्वरूप बड़े शहरों की, विशेष तौर पर दोषपूर्ण संवातित क्षेत्रों में, आबोहवा अपने

> ***गरीबी उन्मूलन के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली तथा आर्थिक दृष्टि से उपयोगी होने के साथ-साथ पर्यावरणीय सुधार और सौंदर्यपरक के रूप में भी बहुउद्देशीय नगर वानिकी की मान्यताएं बहुत पहले से ही स्थापित हो चुकी हैं । हमें नगर वानिकी के क्रिया-कलापों को नियोजित और कार्यान्वित करने के लिए, सहायतार्थ हाथ बढ़ाने वाले अभिकरणों को शामिल कर, व्यावसायिक संगठनों की स्थापना करनी होगी ।***

आसपास के क्षेत्र से काफी अलग होती है ।

वृक्षों ने अनेक लाभदायक प्रभावों को सिद्ध किया है जैसे कि ये धूल कम करते हैं, कुछ विषाक्त पदार्थों को स्थिर करते हैं तथा उच्च तापमान को कम करके सापेक्ष आर्द्रता को बढ़ाते हैं । फ्रैंकफर्ट में, केवल ५० से १०० मीटर चौड़ी हरित पट्टियों ने वाष्पन-वाष्पोत्सर्जन द्वारा ३.५ डिग्री सेल्सियस तक तापमान कम करने का महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाया तथा इसके द्वारा शहर केंद्र की तुलना में पांच प्रतिशत तक सापेक्ष आर्द्रता को बढ़ाया । वृक्षों की अन्य महत्वपूर्ण भूमिका निम्न है :—

हवा की सफाई : शहरी क्षेत्र में प्रदूषित वायु एक प्रमुख समस्या है । वनस्पति द्वारा वायुवाहित प्रदूषकों के निराकरण पर किये गये अनुसंधान दर्शाते हैं कि पौधे प्रदूषण के लिए प्रभावी कुंड (सिंक्स) हैं । वृक्ष सल्फरडाइऑक्साइड को अच्छी तरह से शोषित करते हैं । कीलर (१९७९) ने वृक्षों की एक रक्षा पट्टी के पीछे सीसे (लैड) में ८५ प्रतिशत की कमी का अनुमान लगाया है । मृदा, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, ओजोन तथा हाइड्रो कार्बनों सहित गैसीय प्रदूषकों को अवशोषित करती है । वृक्ष धूल रोकते हैं । वृक्षों की ३० मीटर चौड़ी पट्टी क्षेत्र लगभग सारी धूल को रोक देती है । वृक्ष प्रायः धुएं और अप्रिय सुगंधों को अधिक प्रीतिकर सुगंधों के द्वारा अथवा वास्तव में उन्हें अवशोषित करके भी हटा देते हैं । वृक्ष वाष्पन-वाष्पोत्सर्जन द्वारा शहरी वायु की सापेक्ष आर्द्रता को बढ़ाने में भी सहायता प्रदान करते है ।

तापमान की तीव्रता में कमी : वृक्ष, झाड़ियां और अन्य वनस्पतियां सौर विकिरण को सुधारकर शहरी पर्यावरण में तापमान की तीव्रता को नियंत्रित करने में सहायता देती है । एक विशाल वृक्ष की छाया किसी भवन के तापमान को उसी सीमा तक कम कर सकती है जितना कि एक समान, किंतु छाया रहित भवन में ४२२० के जे पर १५ वातानुकूलक करेंगे । घरों के आसपास वृक्षारोपण द्वारा ऊर्जा की बचत शीतलन के लिए १० से ५० प्रतिशत तक तथा तापन के लिए चार से २२ तक होती है ।

कोलाहल में कमी करना : अधिकांश बड़े शहरों में अत्यधिक कोलाहल शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की क्षति पहुंचाते हैं ।



ाहल प्रदूषण का प्रभाव-क्षेत्र विशेष तौर पर ली जैसे बड़े शहरों में लगातार बढ़ रहा है। -जून के दौरान दिल्ली के २५ विभिन्न स्थानों, समें संवेदनशील, आवासीय, व्यापारिक तथा यात क्षेत्र शामिल हैं, में परिवेशी कोलाहल अनुमत मानकों से कहीं अधिक था। वृक्ष, ाहल का अवशोषण तथा परावर्तन कर वा नष्ट कर दोनों ही तरीके से सहायता कर ते हैं।

म-जलवायु को प्रभावित करना : म-जलवायु तथा जलवायु पर वन परितंत्रों प्रभाव, विशेष तौर पर कार्बन चक्र पर इनके व नगण्य नहीं है। अत्यधिक वन नीकरण की दशा में ग्रीनहाउस गैसों के तों' के रूप में अथवा 'सिंक्स' के रूप में हो ते हैं, जबकि उचित वन संवर्धन तथा वन रण के विस्तार वर्धमान स्टॉक का सुधार संरक्षण कर सकते हैं।

गर वनों की जरूरतें क्या हैं ? शहरों की पारिस्थितिकी को सुधारने के लिए वृक्षों, अधिक वृक्षों तथा वृक्षों के उगने के लिए उचित दूरी की आवश्यकता है, लेकिन पिछले दशक से शहरों में छोटे पेड़ उगाने की प्रवृत्ति चल रही है, जिससे शहरी संरचना और वृक्षों में तालमेल बैठ जाता है। यदि वृक्षों से रास्तों को ठंडा रखना है, भवनों में छाया करनी है, सरदियों की कठोर हवा के प्रभाव को कम करना है, तूफानी जल के बहाव को कम करना है तथा वायु की शुद्धता बढ़ानी है, तो उनका आकार और स्थान बढ़ाना होगा। यदि छोटे वृक्षों की ओर झुकाव जारी रहा तो शहर की सड़कों के किनारे गमलों में उगाये जाने वाले पौधों की कतारें लग जाएंगी जिनका शहरी परिस्थितिकी पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है।

नवरोपित वृक्षों का जीवनकाल बढ़ाने के मामले में पुरानी रोपण प्रविधियों को अनुपयुक्त समझा जाने लगा है तथा नयी प्रविधियों को अपनाया जा रहा है। अनुसंधानकर्ताओं को यह पता लग गया है कि वृक्ष की ९० प्रतिशत जड़ें मृदा में ३० से.मी. गहराई तक होती हैं। मृदा जितनी अधिक कसी हुई होगी, जड़ें सतह के उतने ही नजदीक तक उगेंगी। नयी रोपण प्रविधि में सभी प्रकार के रोपणों में अधिक जड़ीय क्षेत्र पर जोर दिया जाता है। वृक्षों के लिए इसका तात्पर्य है उथले किंतु चौड़े रोपण क्षेत्रों को तैयार करना, जो जड़ पिंड के बराबर गहरे तथा तीन से पांच गुना चौड़े हों। शहरों में गड्ढों में रोपण करने पर वृक्षों को जीवित रखने के लिए व्यापक अभियांत्रिकी तरीके अपनाने होते हैं। उदाहरण के लिए जिओटेक्साइल्स अथवा प्लास्टिक शीटों पर फ्लोटिंग वाक द्वारा मार्गों के अंदर जगह बनानी पड़ती है। ये नयी तकनीकें पुरानी तकनीकों से महंगी पड़ती हैं

लेकिन वृक्ष अधिक समय तक जीवित रहते हैं तथा प्राणियों के लिए पर्यावरण सुधारने में अधिक योगदान देते हैं ।

बाधाएं तथा उन्हें दूर करने की आवश्यकता

प्रायः सभी शहरी क्षेत्रों में वानिकी विकास के मार्ग में आनेवाली मुख्य बाधाएं इस प्रकार हैं :—

अपर्याप्त धनराशि : योजनाबद्ध वृक्ष प्रबंधन करने तथा नगर वानिकी कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावशाली ढंग से चलाने में धन की कमी मुख्य बाधा है । मुद्रा स्फीति तीव्र गति से बढ़ रही है और संसाधनों की कमी होती जा रही है । अतः शहरी क्षेत्रों के वानिकी प्रयासों में इस बात का अधिक से अधिक प्रदर्शन करना होगा कि वानिकी पर लागत कम और लाभ अधिक हो । इसके लिए शहरी क्षेत्रों में वानिकी प्रयासों के सकारात्मक परिणामों पर गुणात्मक अनुसंधान करने की अत्यधिक आवश्यकता है ।

कम प्राथमिकता : राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर शहरी क्षेत्रों में वानिकी को कम महत्त्व दिये जाने की प्रवृत्ति है और अन्य कार्यक्रमों को प्राथमिकता देते हुए, इसे आसानी से स्थगित किया जाता है । शहरी वातावरण में वृक्षों के आर्थिक, सामाजिक और जैव विज्ञानीय लाभों के संबंध में अपर्याप्त ज्ञान, सूचना, जानकारी और सूझबूझ की कमी के कारण वानिकी को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता है । यहां तक कि आज भी नगर वानिकी को सजावटी, सौंदर्यपरक, सुख सुविधा अथवा विलासिता की चीज समझा जाता है तथा इसके लिए अधिक प्रयास करना आवश्यक नहीं समझा जाता । राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं सहायता के बिना नगर वानिकी पर उचित ध्यान दिया जाना असंभव है ।

जिम्मेदारियों का बिखराव : शहरी वृक्ष तथा वनों के प्रबंधन का उत्तरदायित्व प्रायः विभिन्न प्रशासनिक संरचनाओं में बंटा होता है जिनकी जिम्मेदारियां प्रतिस्पर्द्धात्मक तथा कभी-कभी प्रतिकूलात्मक भी होती हैं । सौंदर्यपरक दृष्टिकोण पर मुख्य ध्यान केंद्रित होने के कारण पार्क मनोरंजनात्मक विभागों—जैसे अभिकरणों को सामान्यतः मुख्य जिम्मेदारी सौंप दी जाती है, लेकिन लोक निर्माण अभिकरणों, उपयोगिता कंपनियों, पर्यावरणीय सुरक्षा अभिकरणों, फलोद्यान विभागों तथा राष्ट्रीय वानिकी विभागों को भी इसमें शामिल किया जाना चाहिए । इसके लिए सरकार को मुख्य अभिकरण बनाने की आवश्यकता है और अपर्याप्त वित्तीय तथा मानव संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग के लिए विभिन्न क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करना होगा ।

भूमि की कमी : नगर वानिकी के प्रयासों में मुख्य बाधा भूमि की सीमित मात्रा में उपलब्धता है । रोपण के लिए उपयुक्त भूमि की उपलब्धता और साथ ही उसके स्वामित्व और काश्तकारी आदि की दृष्टि से शहरी स्थल अत्यंत जटिल होते हैं ।

पर्यावरणीय दबाव : सामान्यतः शहरी पर्यावरण वृक्षों की वृद्धि एवं पोषण के लिए अधिक उपयुक्त नहीं होता है । पर्यावरणीय दबाव कई वृक्ष प्रजातियों की शक्ति को कम कर देता है और बीमारियों तथा कीटनाशकों का प्रतिरोध करने के लिए उन्हें अशक्त कर देता



शहरी क्षेत्रों में पेड़ों को कम कार्बनिक र्थों वाली पोषक तत्वों के अभाव तथा र्द्रता वाली कमजोर मृदाओं एवं वायु और न-प्रदूषण जैसी विपरीत परिस्थितियों में का सामना करते हुए अपने को स्थापित ना पड़ता है । वानिकी प्रजाति चयन में इन वाओं से पार पाने को सर्वोच्च महत्व दिया ता है ।

शिक्षण तथा विस्तार का अभाव : सकर विकासशील देशों में शहरी वानिकी प्रशिक्षण और शिक्षा के लिए अपेक्षाकृत अवसर हैं, जबकि उचित अनुदेशात्मक ग्री की कमी भी एक अन्य बाधा है । ान्यतः यह कहा जा सकता है कि नगर की में विस्तार कार्यक्रम अत्यंत कमजोर नागरिकों खासकर गरीबों तक पहुंचने और की भागीदारी प्राप्त करने के लिए हारिक उपाय अपनाने होंगे ।

गर वानिकी, वनविदों तथा जन सामान्य के अपेक्षाकृत एक नयी अवधारणा है । यह एक ऐसी अवधारणा है, जो अभी विकास की स्थिति में है । तेजी से शहरीकरण की प्रवृत्त देशों में, यदि हम यह चाहते हैं कि लोगों का जीवनस्तर इतना अधिक न गिर जाए कि उसे पुनर्स्थापित करना हमारे वश में ही न रहे, तो हमें नगर वानिकी कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए अधिक-से-अधिक प्रयास करने होंगे ।

गरीबी उन्मूलन के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली तथा आर्थिक दृष्टि से उपयोगी होने के साथ-साथ पर्यावरणीय सुधार और सौंदर्यपरक के रूप में भी बहुउद्देशीय नगर वानिकी की मान्यताएं बहुत पहले से ही स्थापित हो चुकी हैं । हमें नगर वानिकी के क्रिया-कलापों को नियोजित और कार्यान्वित करने के लिए, सहायतार्थ हाथ बढ़ाने वाले अभिकरणों को शामिल कर, व्यावसायिक संगठनों की स्थापना करनी होगी ।

—महानिदेशक,
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद,
न्यू फॉरेस्ट, देहरादून-२४८००६

बहुत कुछ है गंगोत्तरी से पहले भी

● डॉ. आशा मोहन



हरसिल में रुकना चाहें, तो रुका जा सकता है । लेकिन यहां से गंगोत्तरी ज्यादा दूर नहीं है । मात्र २५ कि.मी. है । आगे का रास्ता और भी सुहाना है । लंका और भैरोंघाटी से अत्यंत रमणीय प्राकृतिक परिवेश से गुजरते हुए बार-बार आपका मन कहीं रुकने, बैठने या रात्रि-विश्राम का होगा । सुविधा के लिए आप लंका या भैरों घाटी में बने विश्रामगृहों में रुक सकते हैं । या फिर सीधे पहुंच सकते हैं गंगोत्तरी ।

गढ़वाल को देवभूमि और स्वर्ग का प्रवेश-द्वार तक कहा गया है । ठीक भी है, क्योंकि मध्य हिमालय के इस अनुपम भू-भाग में केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी और हेमकुंड-जैसे सुप्रसिद्ध तीर्थ अवस्थित हैं । जहां यह क्षेत्र आध्यात्मिक ज्ञान का प्रेरणा-केंद्र

ड्डीं पर्यटकों के लिए मनोरम प्राकृतिक
वलियां प्रस्तुत करता है । यदि आप ये
हो बिंदु अत्यंत निकट से देखना चाहें, तो
गंगोत्तरी तक की यात्रा कर लें । आप
कि गंगोत्तरी, उसके आसपास तथा उससे
और भी बहुत कुछ दर्शनीय है, जो
की इस यात्रा को अविस्मरणीय बनाने के
पर्याप्त है ।

ौमुख गंगा का उद्‌गम बिंदु है । एक
ा ग्लेशियर । इसके १८ कि.मी. पहले है
री मंदिर । गंगोत्तरी-गौमुख जानेवाला
म मार्ग गढ़वाल के प्रवेश-द्वार ऋषिकेश
तरता है । ऋषिकेश-दर्शन के उपरांत
ात्री और पर्यटक अपनी यात्रा या तो
नाथ-बदरीनाथ के लिए शुरू करते हैं या
ओर गंगोत्तरी-यमुनोत्तरी के लिए । हम
ंगोत्तरी के लिए । रास्ता है ऋषिकेश से
नगर-टिहरी होते हुए । टिहरी ९० कि.मी.
गभग । गढ़वाल की प्राचीन राजधानी
निर्माणाधीन टिहरी-बांध के कारण
र । कुछ देर रुककर इस नगर को देख
हैं, क्योंकि बांध जब बन जाएगा, तो यह
पुराना नगर फिर देखने को नहीं मिलेगा । पानी में डुबो दिया जाएगा । यहां का घंटाघर, प्राचीन केदारनाथ-बदरीनाथ मंदिर, राज महल, पुराना दरबार आदि देखने योग्य हैं । बनते बांध को भी देखा जा सकता है । टिहरी से लगभग १५ कि.मी. पहले चम्बा है । चम्बा से नयी टिहरी भी जाया जा सकता है । मात्र १५-२० कि.मी. नयी टिहरी काफी ऊंचाई पर अच्छी तरह योजना बनाकर बसाया गया आधुनिक नगर है । नये पर्यटन की असीमित संभावनाएं नयी टिहरी में निहित हैं । यहां भी उत्तुंग चोटी पर एक देवी मंदिर है, जहां से समूचे नयी टिहरी शहर का नयनाभिराम दृश्य दिखायी देता है । स्वामी रामतीर्थ की तपस्थली और निर्वाणस्थली टिहरी को देखने के बाद आप उत्तरकाशी की ओर चलेंगे, यानी भागीरथी के किनारे-किनारे उत्तर दिशा में । टिहरी से उत्तरकाशी मात्र ७६ कि.मी. है । मार्ग में हरी-भरी उपजाऊ घाटी की दृश्यावली मन को बांध लेती है । उत्तरकाशी से २९ कि.मी. पहले धरासू है, जहां से एक रास्ता बड़कोट के लिए जाता है और यमुनोत्तरी तक पहुंचाता है ।


गंगोत्तरी मंदिर



उत्तरकाशी देवनगरी है । मात्र ११५८ मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह छोटा-सा नगर तीर्थयात्रियों, साहसी पर्यटकों, पथारोहियों आदि के लिए समान रूप से प्रिय है । अनेक मंदिर हैं, यहां । इनमें विश्वनाथ मंदिर, परशुराम मंदिर, भैरव मंदिर, देवी का मंदिर मुख्य हैं । सामने पुल पार कर आगे बढ़ें, तो हम नेहरू पर्वतारोहण संस्थान भी देख सकते हैं । इस प्रसिद्ध संस्थान में देश के कुशल एवं अनुभवी पर्वतारोही तैयार किये जाते हैं । इसमें कई प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जाते हैं । आप चाहें, तो इस संस्थान से पैदल यात्रा और पर्वतारोहण के आवश्यक उपकरण किराये पर ले सकते हैं ।

उत्तरकाशी में रुका जा सकता है । अब भी यहां कुछ साल पहले आये विनाशकारी भूकंप के चिह्न दिखायी देते हैं । भूकंप के मलवे पर पुनर्निर्माण की कहानी अभी लिखी ही जा रही है । एक उदासी के भीतर से उम्मीद सुबह के रूप में झांकती है । आप भोर की किरन फूटते ही अपनी यात्रा शुरू कर दें, तो सुविधा रहेगी । सड़क एक पुल पार कर भागीरथी घाटी से गुजरती हुई धुर उत्तर की ओर चल पड़ती है । अब आ जाता है गंगनानी । मात्र २९-३० कि.मी. की दूरी पर । अधिकांश यात्री यहां गरमपानी के कुंड में स्नान करते हैं । गरम सल्फर के स्रोतों के लिए प्रसिद्ध गंगनानी थके हुए यात्रियों को अपूर्व आनंद प्रदान करती है । इसके बाद सुकी पर पर्वत श्रृंखलाओं का रमणीय दृश्य देखा जा सकता है । अब थोड़ा आगे, नदी के पूर्व की ओर सड़क हरसिल तक मुड़ जाती है । थोड़ा हरसिल अवश्य रुकें ।

हरसिल (२६२० मीटर) अत्यंत मनोरम स्थल है । जिन लोगों ने कश्मीर का पहलगांव देखा है, उन्हें हरसिल कस्बे में पहुंचकर एक बार को तो यही भ्रम हो जाएगा कि कहीं वे पहलगांव ही तो नहीं आ गये । वैसे ही सेब के बगीचे, दरख्तों का हुजूम, मखमली घास के मैदान, हरी-भरी पहाड़ियां, झरने, खामोश खड़े बरफीले पर्वत । घाटी के बीचोंबीच हरहराता बहता भागीरथी का प्रवाह । प्रकृति ने खुले हाथों बहुत कुछ सौंप दिया है, इस छोटे-से गांव को ।

हरसिल एक अंगरेज विल्सन ने आबाद किया था । अठारहवीं सदी की बात है । विल्सन साहब, जो ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी करते थे, घूमते-घामते मसूरी से इधर आ गये । उन्हें यह स्थान बहुत अच्छा लगा । यहां के प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत हो उन्होंने यहीं बस जाने का मन बना लिया । वह स्थानीय

गंगोत्तरी के नीचे केदारगंगा का संगम है । वहां पर थोड़ी दूर पर बड़ी ऊंचाई से गंगाजी शिवलिंग पर गिरती हैं । इस स्थान को गौरीकुंड कहते हैं । यह बड़ा ही मनोरम और सुषमापूर्ण स्थान है ।

ों से घुल-मिल गये । उन्होंने यहीं पास के की एक लड़की से शादी कर ली ।

-धीरे उन्होंने हरसिल में आलू तथा सेब की शुरू की । उन्होंने इंगलैंड से सेब के पेड़ ये और यहां रोपे । उससे पहले यहां सेब होता था । विल्सन के रोपे सेब खूब फले । भी विल्सन का बनाया बगीचा खस्ता त में जीवित है । यह सेब 'विल्सन सेब' के से मशहूर है । इसी तरह आलू भी विल्सन दा किया ।

हरसिल में विल्सन ने एक अच्छा-सा बंगला बनवाया था । यह बंगला आज भी खड़ा इतिहास के पृष्ठों को खोलता । उन्होंने कुछ पुलों का निर्माण भी कराया था ।तब झूला स्थानीय निवासियों के लिए एक आश्चर्य से क कुछ नहीं थे । लोग उन पर से जाने में थे । विल्सन साहब उन पुलों पर से अपने पर सवार हो मजे से आर-पार जाया करते उनको देखकर ही लोगों का भय कम । फिर सब इन पुलों का उपयोग करने । यहां तक तो ठीक था । बुरा यह हुआ विल्सन साहब ने भारी मात्रा में यहां के -देवदार के जंगल काट दिये । पेड़ और रों को नदी में बहाकर एक जगह से दूसरी पहुंचाने की व्यावसायिक चालाकी सिखा बड़े पैमाने पर यहां के दुर्लभ सुंदर पक्षी न को मार-मार कर विदेश भेजना शुरू कर दिया । परिणाम यह हुआ कि यहां का घना जंगल नष्ट हो गया और मुनाल पक्षी संख्या में बहुत कम रह गये ।

हरसिल से सटा हुआ लगभग एक कि.मी. की दूरी पर एक गांव है बगोरी । यहां 'जाड भोटया' नामक अनुसूचित जनजाति के लोग रहते हैं । सरदियों में जब यहां सब जगह बरफ-ही-बरफ बिछ जाती है तो २५० परिवारों का यह गांव खाली हो जाता है । ये लोग नीचे उत्तरकाशी के आसपास आ जाते हैं । इस गांव में एक बहुत अच्छा बौद्ध मठ है ।

हरसिल में रुकना चाहें, तो रुका जा सकता है । लेकिन यहां से गंगोत्तरी ज्यादा दूर नहीं है । मात्र २५ कि.मी. है । आगे का रास्ता और भी सुहाना है । लंका और भैरोंघाटी से अत्यंत रमणीय प्राकृतिक परिवेश से गुजरते हुए



गंगोत्तरी-यात्रा : संक्षिप्त जानकारी

मार्ग : *ऋषिकेश तक कहीं से भी रेल या बस अथवा निजी वाहन से। जौलीग्रांट हवाई पट्टी भी, ऋषिकेश से मात्र १८ कि.मी.। ऋषिकेश से नरेंद्र नगर (१५ कि.मी.)-टिहरी (६५ कि.मी.) होते हुए उत्तरकाशी (७८ कि.मी.)। उत्तरकाशी से गंगनानी (२९ कि.मी.) और हरसिल (३२ कि.मी.) होते हुए गंगोत्तरी। सामान्य सड़क मार्ग। यात्रा निजी वाहन अथवा बस से।*

दर्शनीय स्थल : *नरेंद्र नगर, टिहरी, उत्तरकाशी, गंगनानी, हरसिल, लंका, भैरवघाटी, गंगोत्तरी। गंगोत्तरी से १८ कि.मी. पैदल पथ केदारताल ११८-१९ कि.मी. गौमुख और कुछ आगे तपोवन।*

कहां ठहरें : *ऋषिकेश ठहरने की अच्छी सुविधा है। उत्तरकाशी में अनेक अच्छे होटल, धर्मशालाएं, गढ़वाल मंडल विकास निगम तथा वन-विभाग आदि के विश्रामगृह। लंका में विश्रामगृह गंगोत्तरी में कुछ धर्मशालाएं, विश्रामगृह। चीड़वासा एवं भोजवासा में टूरिस्ट बंगला। एक कुटिया स्वामी सुंदरानंदजी की।*

बार-बार आपका मन कहीं रुकने, बैठने या रात्रि-विश्राम का होगा। सुविधा के लिए आप लंका या भैरों घाटी में बने विश्रामगृहों में रुक सकते हैं। या फिर सीधे पहुंच सकते हैं गंगोत्तरी।

गंगोत्तरी ३०४८ मीटर की ऊंचाई पर बना छोटा-सा खूबसूरत गांव-सा है। यहीं है प्राचीन गंगोत्तरी मंदिर। अत्यंत आकर्षक। यह गंगा का मंदिर है। मंदिर में गंगा की जो मूर्ति है कहा जाता है कि वह आदि शंकराचार्यजी ने स्थापित की थी। इसके साथ ही राजा भगीरथ, यमुना, सरस्वती और शंकराचार्य की मूर्तियां भी हैं। गंगाजी की मूर्ति एवं छत्रादि स्वर्णनिर्मित हैं। गंगाजी के मंदिर के पास एक भैरव मंदिर है। यहीं विशाल भगीरथ-शिला है, जिस पर राजा भगीरथ ने तप किया था। इस शिला पर पिंडदान किया जाता है।

गंगोत्तरी के नीचे केदारगंगा का संगम है। वहां पर थोड़ी दूर पर बड़ी ऊंचाई से गंगाजी शिवलिंग पर गिरती हैं। इस स्थान को गौरीकुंड कहते हैं। यह बड़ा ही मनोरम और सुषमापूर्ण स्थान है।

गंगोत्तरी से १८ कि.मी. पैदल चलकर पर्यटक केदारताल जा सकते हैं। अत्यंत आकर्षक यह ताल मनोरम प्राकृतिक परिवेश के बीच स्थित है। दूसरी ओर यात्री पगयात्रा कर १८ कि.मी. गौमुख और तपोवन तक की कठिन, किंतु अविस्मरणीय यात्रा कर सकते हैं। रास्ते में ९ कि.मी. के बाद चीड़वासा में रुका जा सकता है। या फिर ७ कि.मी. आगे चलकर भोजवासा में। भोजवासा अद्‌भुत जगह है। नीरव एकांत में अचानक हरे-भरे वनखंड में पहुंचकर बहुत सुकून मिलता है और गौमुख ? बहुत ही सुंदर ग्लेशियर। यहीं से निकलती है गंगा यानी भागीरथी। पिघलती जलधारा चांदी की। सब ओर बरफ।

तो, इस बार आप इधर निकलें और गंगोत्तरी से पहले तथा आगे केदारताल एवं गौमुख और तपोवन तक की अविस्मरणीय यात्रा अवश्य करें।

—पो. बाक्स-२०, श्रीनगर (गढ़वाल), उ.प्र



इन फलों से रोली बनती है



छाया :

छाया : डॉ. हरिमोह



▲ मंदिर



▲ रुद्रनाथ मं



▲ शेषशायी विष्णु की दुर्लभ मूर्ति रुद्रनाथ

तो आइए इस बार अनूठे धामों पंचकेदार की तीर्थयात्रा करें । निश्चय ही यह 'तीर्थयात्रा' तीर्थ कम, पर्यटन अधिक लगेगी । विश्वास है कि आप अपने को मुक्त सैलानी अनुभव करेंगे जो प्रकृति के अछूते सौंदर्य को छूकर लौट रहा है । महानगरों की मशीनी जिंदगी और कोलाहल तथा भागमभाग से दूर यह निरभ्र एकांतिक सौंदर्य आपके भीतर किसी मद्धिम संगीत की तरह बस जाएगा । बस थोड़ा-सा पैदल चलने का साहस कर लें । केदारनाथ की यात्रा से ही संतोष न कर लें । फिर देखें ये पंचकेदार आपको पथारोहण (ट्रैकिंग) के स्वर्गिक आंगन लगने लगेंगे ।

अछूते पर्यटन स्थल



पंचकेदार

आलेख एवं छाया : डॉ. हरिमोहन

सारी दुनिया में शिव के लाखों मंदिर हैं । लेकिन गढ़वाल के सुरम्य पर्वतांचल में स्थित पंचकेदार सर्वोपरि हैं । ये पंचकेदार हैं—सुप्रसिद्ध विश्वतीर्थ केदारनाथ, मदमहेश्वर, रुद्रनाथ, तुंगनाथ और कल्पेश्वर । इन पांच केदारों में शिव के अलग-अलग अंगों की पूजा की जाती है । केदारनाथ में शिव के पृष्ठ भाग की, तुंगनाथ में उनकी भुजाओं की, रुद्रनाथ में उनके मुख की, कल्पेश्वर में जटाओं की और मदमहेश्वर में उनकी नाभि की पूजा होती है । इन पंचकेदारों की दुर्लभ श्रृंखला में अनोखी प्राकृतिक दृश्यावलियां हैं, जो बरबस ही पर्यटकों के मन को मोह लेती हैं ।

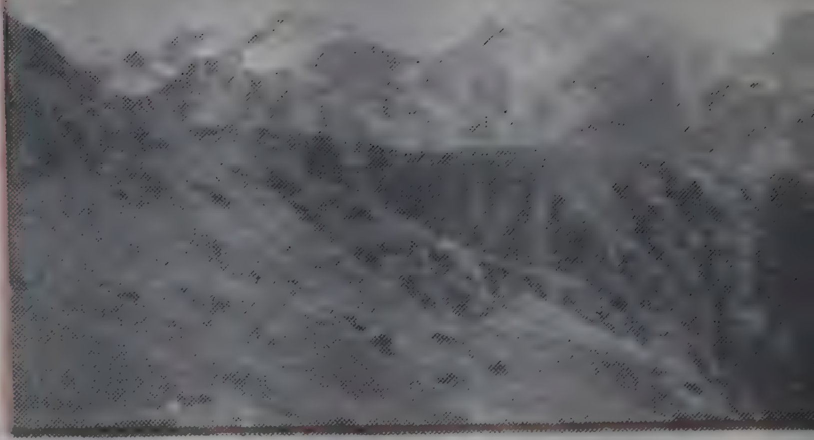
शिवपुराण के अनुसार महाभारत के युद्ध के बाद पांडव अपने कुल-परिवार और सगोत्र बंधु-बांधवों के वध के पाप का प्रायश्चित करने के लिए यहां तप करने आये थे । यह आज्ञा उन्हें वेदव्यास ने दी थी । पांडव स्वगोत्र-हत्या के दोषी थे । इसलिए भगवान शिव उनको दर्शन नहीं देना चाहते थे । भगवान शिव ज्यों ही महिष (भैंसे) का रूप धारण कर पृथ्वी में समाने लगे, पांडवों ने उन्हें पहचान लिया । महाबली भीम ने उनको धरती में आधा समाया हुआ पकड़ लिया । शिव ने प्रसन्न होकर पांडवों को दर्शन दिये और पांडव गोत्रहत के पाप से मुक्त हो गये । उस दिन से महादेव शिव पिछले हिस्से से शिलारूप में केदारनाथ में विद्यमान हैं । उनका अगला हिस्सा जो पृथ्वी में समा गया था, वह नेपाल में प्रकट हुआ, जो पशुपतिनाथ के नाम से प्रसिद्ध है । इसी प्रकार उनकी बाहु तुंगनाथ में, मुख रुद्रनाथ में, नाभि मदमहेश्वर में

और जटाएं कल्पेश्वर में प्रकट हुईं ।

पंचकेदार पुराणकथा की सत्यता-असत्यता के विषय में तो अलग-अलग तथ्य हैं, पर इतना अवश्य है कि श्रद्धालु तीर्थयात्री भक्ति भावना से जुड़ कर यहां आते हैं । इन पांचों तीर्थस्थलों तक कठिन चढ़ाई चढ़ने के बाद पहुंचा जा सकता है । रास्ता कठिन है, किंतु वह नैसर्गिक सुंदरता से भरा हुआ है । इसलिए पर्यटक भी ट्रैकिंग के उद्देश्य से इन स्थानों तक रुचिपूर्वक जाते हैं । यानि तीर्थ का तीर्थ, पर्यटन का पर्यटन ।

हमारे सामने रुद्रनाथजी का मंदिर था । छोटा-सा गुफा मंदिर । एक सीधी खड़ी चट्टान की उपत्यका में यह गुफा बनी हुई है । आसपास चारों ओर मनोरम पर्वत श्रृंखलाएं । ये शृंखलाएं मई-जून में भी बर्फ से ढंकीं रहती हैं । अगस्त-सितंबर में तो कहने ही क्या ? सैकड़ों तरह के फूलों की सुगंध से पूरी घाटी गमकती रहती है । हरे-भरे घास के मैदान (बुग्याल) गलीचे से बिछे दिखायी देते हैं । ब्रह्मकमल और फेन कमल सरीखे दुर्लभ पुष्पों के साथ ही अनेक तरह की जड़ी-बूटियां इस घाटी की दुर्लभ संपदा हैं । सालमपंजा, अतीस, कुटकी, जटामासी, गुग्गुल, वज्रदंती पर्याप्त मात्रा में यहां मिलती हैं ।

सामने भोजपत्र का वनखंड है । मंदिर के दक्षिणी छोर पर सूरजकुंड है । उत्तर-पश्चिम में सरस्वती कुंड । इसी दिशा में एक कि.मी. दूर मानसकुंड भी है । मंदिर के नीचे पूर्व की ओर वैतरणी कुंड दिखायी देता है । दक्षिण-पश्चिम में एक विस्तीर्ण मैदान है जो खूब हरा-भरा रहता है । पुजारी ने बताया कि यह देवांगनी है । यानि



यहां देवताओं की बैठक होती है । देवांगनी, यानि देवताओं का आंगन । कामेट, त्रिशूल, नंदाघुंटी, नीलकंठ की पर्वत-चोटियां इस घाटी के चारों ओर बहुत ही भव्य सौंदर्य की सृष्टि करती हैं । देवांगनी के नीचे नारदकुंड दिखायी देता है ।

मंदिर में एकानन रुद्र की स्वयंभू प्रतिमा है । यह अत्यंत दुर्लभ प्रतिमा मानी जाती है । शिव के एकानन रूप की पूजा केवल रुद्रनाथ में ही होती है । जबकि शिव के चतुरानन की पूजा काठमांडू में और पंचानन की पूजा मानसरोवर में होती है । इस आकर्षक एकानन स्वयंभू मूर्ति की पूजा यहां श्रावणमास में जय-विजय पुष्पों से और शेष समय में ब्रह्मकमलों से करने का विधान है । ज्येष्ठ संक्रांति के दिन से मंदिर के पट खुलते हैं और कार्तिक संक्रांति को बंद हो जाते हैं । उन दिनों यहां कुछ स्थानीय श्रद्धालु पूजा के लिए आते हैं तथा कुछ साहसी पर्यटक भी । जब मंदिर के पट बंद हो जाते हैं तब रुद्रनाथ की पूजा गोपेश्वर के शिव मंदिर में होती है ।

रुद्रनाथ मंदिर में एकानन शिव के अतिरिक्त शेषशायी विष्णु तथा शिव-परिवार की अत्यंत दुर्लभ मूर्तियां रखी हुई हैं । पुजारी इन दुर्लभ मूर्तियों को चोरी के भय से कहीं गुप्त स्थान पर रख देते हैं ।



रुद्रनाथ शिव के इस मंदिर का महत्त्व इस
रर बताया गया है—'रम्यं शिवमुखं तत्र
र्वाभरण भूषितम् । एतस्य दर्शनादेव
र्ही भवनि मानवः । पौराणिक कथा है कि
धक नामक देत्य ने सभी लोकपालों—सहित
को भी परास्त कर दिया और अमरावती को
त लिया । देवता पृथ्वी पर भटकने लगे ।
देवताओं ने यहां रुद्रालय में तपस्या की ।
व ने उनके तप से प्रसन्न होकर उन्हें
मयदान दिया । तब से शिव पार्वती-सहित
रं रहते हैं । उन्हें यह स्थान अत्यंत प्रिय है ।
ृति का इतना नयनाभिराम दृश्य और भला
हां होगा ?

लौटते हुए पितृधार से समूची घाटी स्वर्ग के
ान लग रही थी । आने का मन नहीं हो रहा
, लेकिन हमें अभी और यात्रा करनी थी ।
ी तरह की नीलम घाटी में । यहां से उतरते
तोलीताल और बगुवा बुग्याल तथा सुनार
ाल के मनमोहक दृश्यों ने बहुत देर तक हमें
ये रखा ।

केदारनाथ तो कई बार गया था । बहुत
तीर्थयात्री यहां प्रतिवर्ष आते हैं । ऋषिकेश
गौरीकुंड तक सड़क है । दूरी होगी करीब
५ कि.मी. । गौरीकुंड से १४ कि.मी.
यात्रा के बाद यहां पहुंच सकते हैं । मई-जून
में यात्रियों की अपार भीड़ रहती है । पिघली
चांदी-से ग्लैशियर, नीचे बहती मंदाकिनी की
पतली धार, हरे-भरे छायापथ से गुजरते हुए हर
यात्री को अपूर्व सुख देते हैं । यहां की प्रकृति
की सुषमा सचमुच न्यारी है । इसीलिए तो यह
धर्मधाम सतयुगीन साधकों की साधना-भूमि,
भगवान शिव की आराधना-भूमि, पांडवों की
तपोभूमि और कवियों-सैलानियों की भावभूमि
है ।

गंगनाकुल शिखरों की छाया में ही खड़ा है
केदारनाथ मंदिर । विश्व के बारह
ज्योतिर्लिंगों में से एक । कहा जाता है कि इस
मंदिर का निर्माण पांडवों ने किया था । कत्यूर
शैली का यह मंदिर समुद्रतल से ३५८४ मीटर
की ऊंचाई पर है । कुछ लोग यह जानकारी देते
हुए भी मिलेंगे कि यह मंदिर पांडवों ने नहीं,
उनके वंशज जनमेजय ने बनवाया था । कुछ
लोगों का विचार है कि इसे जगत्गुरु शंकराचार्य
ने बनवाया था । मंदिर प्राचीन है, और इसके
पीछे शंकराचार्य ने मुक्ति प्राप्त की थी । ३२ वर्ष
की अल्पायु में ही उनका देहावसान यहां हुआ
था । उनकी समाधि इस मंदिर के पीछे बनी है ।

मंदिर में कोई निर्मित मूर्ति नहीं, अपितु स्वयं
निर्मित एक त्रिकोण प्रस्तर प्रतिमा है । इसी की
पूजा का विधान है । शिव की श्रृंगारमूर्ति भी
मंदिर में है । यह पंचमुखी है । इस उत्सवमूर्ति
को सरदियों में पट बंद होने पर समारोहपूर्वक
ऊखीमठ ले जाया जाता हैं और पट खुलने तक
उसकी पूजा यहीं की जाती है । इस मंदिर में ही
उषा, अनिरुद्ध, पंचपांडव, श्री कृष्ण, तथा
शिव-पार्वती की सौम्य मूर्तियां हैं । मंदिर के
बाहर उदक कुंड या अमृत कुंड, ईशानकुंड,

जिस स्वयं भू लिंग की उन्होंने आराधना की उसे तुंगनाथ कहा गया । यह परम क्षेत्र देवताओं को भी दुर्लभ है । इसके दर्शनमात्र से ही पाप का क्षय होकर परम पद की प्राप्ति होती है ।' जो भी हो, इस अनूठे तीर्थ की यात्रा कर हम प्रकृति के अत्यंत भव्य रूप के दर्शन पा अपनी यात्रा को सार्थक बना सके ।

इसी क्रम में है कल्पेश्वर । यानि, पंचकेदार श्रृंखला के अंतिम बिंदु तक । चोपता से मंडल होते हुए गोपेश्वर । गोपेश्वर से चमोली होते हुए पीपलकोटी से आगे हेलंग तक आते हैं । बदरीनाथ-यात्रा को जानेवाले यात्री इस मार्ग से अच्छी तरह परिचित हैं । बस यहीं हेलंग से पैदल चलना होगा । अलकनंदा की इस धार के पार चलें, १० कि.मी., दूर गांव है, उर्गम । पुराणकार कहते हैं कि इस स्थान पर इंद्र ने दुर्वासा ऋषि के शाप से मुक्ति पाने के लिए शिव की आराधना की थी और कल्पतरु प्राप्त किया था । तभी से इस स्थान पर शिव 'कल्पेश्वर' नाम से प्रसिद्ध हुए ।

पंचकेदार-श्रृंखलाएं : संक्षिप्त जानकारी

१.केदारनाथ : ऊंचाई समुद्रतल से ३४८४ मीटर । ऋषिकेश तक कहीं से भी सड़क अथवा रेल-मार्ग (जौलीग्रांट हवाई पट्टी भी । ऋषिकेश से गौरीकुंड तक २२५ कि.मी. सड़क मार्ग । गौरीकुंड से सात कि.मी. रामवाणा । रामवाणा से सात कि.मी. केदारनाथ । बीच में जलपाल की सुविधाएं उपलब्ध । केदारनाथ में ठहरने की अच्छी सुविधाएं । केदारनाथ-बदरीनाथ मंदिर समिति का विश्रामगृह । गढ़वाल मंडल विकास निगम का टूरिस्ट लॉज । कुछ धर्मशालाएं भी ।

२.मदमहेश्वर ऊंचाई ३२८९ मीटर । ऋषिकेश से ऊखीमठ १८० कि.मी. तक अच्छा सड़क मार्ग । ठहरने की सामान्य सुविधा ११० कि.मी. तक मनसूना तक सड़क मार्ग सामान्य । यहां से पैदल लगभग ३६ कि.मी. । बीच में जलपान की सुविधाएं । मदमहेश्वर में केदारनाथ-बदरीनाथ मंदिर समिति की एक धर्मशाला ।

३. रुद्रनाथ : ऊंचाई २२८६ मीटर (ऋषिकेश से गोपेश्वर होते हुए मंडल तक लगभग २१० कि.मी. का सड़क मार्ग । मंडल से अनुसूया (छह कि.मी.) होते हुए लगभग ३२ कि.मी. का कठिन पगमार्ग । दूसरा मार्ग गोपेश्वर से तीन कि.मी. सगर गांव होते हुए । ३१ कि.मी. कठिन पगमार्ग । मार्ग में चायपान की कोई व्यवस्था नहीं है । मंदिर के पास दो-तीन झोंपड़ियां जिनमें अपने साधनों से ठहरा जा सकता है ।

४. तुंगनाथ : ऊंचाई ३७५० मीटर । ऋषिकेश से ऊखीमठ १८० कि.मी. । ऊखीमठ से चोपता २८ कि.मी. सड़क-मार्ग । चोपता से तीन-चार कि.मी. चढ़ाई वाला पगमार्ग ।

५. कल्पेश्वर अथवा **कल्पनाथ :** ऊंचाई २१३४ मीटर । ऋषिकेश से बदरीनाथ मार्ग पर पीपलकोटी से २० कि.मी. आगे हेलंग । हेलंग से १० कि.मी. पैदलमार्ग ।

केवल केदारनाथ-यात्रा में उचित

समुद्रतल से २१३४ मीटर की ऊंचाई पर कल्पेश्वर अथवा कल्पनाथ का यह छोटा-सा गुफा मंदिर है, रुद्रनाथ की भांति। लेकिन यहां शिव की जटाओं की पूजा होती है। बेशक इस स्थान की ऊंचाई अन्य केदारों से कम है, लेकिन फिर भी यहां आसपास प्रकृति का अनुपम सौंदर्य बिखरा पड़ा है। यह सौंदर्य अन्य चार केदारों से कम भले ही हो, लेकिन उतना ही पवित्र और आत्मीय है।

तो आइए इस बार अनूठे धामों पंचकेदार की तीर्थयात्रा करें। निश्चय ही यह 'तीर्थयात्रा' तीर्थ कम, पर्यटन अधिक लगेगी। विश्वास है कि आप अपने को मुक्त सैलानी अनुभव करेंगे जो प्रकृति के अछूते सौंदर्य को छू कर लौट रहा है। महानगरों की मशीनी जिंदगी और कोलाहल तथा भागमभाग से दूर यह निरभ्र एकांतिक सौंदर्य आपके भीतर किसी मद्धिम संगीत की तरह बस जाएगा। बस थोड़ा-सा पैदल चलने का साहस कर लें। केदारनाथ की यात्रा से ही संतोष न कर लें। फिर देखें ये पंचकेदार आपको पथारोहण (ट्रैकिंग) के स्वर्गिक आंगन लगने लगेंगे।

— अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, हे.नं. बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल) उ.प्र.

किराया देकर अशक्त श्रद्धालु तीर्थयात्री घोड़ों-खच्चरों या डोली-पालकी पर सवार होकर यात्रा कर सकते हैं। शेष केदारों की यात्रा में यह सुविधा नहीं है।

अन्य दर्शनीय परिदृश्य :ऊखीमठ और तुंगनाथ के बीच लगभग ८ कि.मी. पैदल चलकर देवरियाताल, चोपता, चोपता से मंडल के बीच लगभग १५ कि.मी. दूरी पर सड़क के किनारे ही बना कस्तूरा मृगविहार भी देखा जा सकता है।

पथारोहियों (ट्रैकर्स) के लिए पंचकेदार श्रृंखला १०-१२ दिन में एक साथ पूरी करने की सामर्थ्य। पहले केदारनाथ, फिर मदमहेश्वर, तुंगनाथ और रुद्रनाथ, वहीं से कल्पनाथ निकला जा सकता है। सुविधा के लिए पर्यटक गोपेश्वर पहुंच सकते हैं। गोपेश्वर में खोजने पर गाइड मिल सकता है। यह गाइड प्रायः रुद्रनाथ से यात्रा शुरू कर १० दिन में पंचकेदार की पगयात्रा प्रायः १०० रु. प्रतिदिन पारिश्रमिक लेकर पूरी करा सकता है।

उचित मौसम : पंचकेदार-यात्रा तो मई से आरंभ हो जाती है। लेकिन प्रकृति का भरपूर आनंद लेने के लिए अगस्त-सितंबर सर्वोत्तम। उन दिनों यहां अनेक प्रकार के फूल खिले होते हैं। चारों ओर हरियाली रहती है। फूलों की घाटियों के मनोरम दृश्य देखने को मिलते हैं।

सुझाव : केदारनाथ में रहने-खाने की समुचित व्यवस्था है। अन्य केदारों में इतनी अच्छी व्यवस्था नहीं है अतः यात्रा का पूरा सामान लेकर ही जाना चाहिए। स्लीपिंग बैग, टैंट, आरामदायक जूते, छाता, पॉलीथिन की चादर, सूखे मेवे, बिस्किट, पानी की बोतल, टार्च आदि लेकर चलना आवश्यक है। कॉफी या चाय का पैकेट, सूखा दूध, हल्के बरतन और छोटा स्टोव ले लें तो और भी अच्छा। अनुभवी पर्यटक सुविधानुसार अन्य आवश्यक सामग्री लेकर चल सकते हैं।

■ ■

शहर में प्लेग

● विश्वमोहन तिवारी

अचानक, सारे भारत में ही नहीं, सारी दुनिया में तहलका मच गया था कि भारत में प्लेग ने आक्रमण कर दिया है । येरसिनिया पेस्टिस नामक सूक्ष्म जीवाणुओं ने राई के दाने से भी छोटे पिस्सुओं की सहायता से चूहों पर सवार होकर भयंकर आतंक मचा दिया था । जो स्वयं उड़ भी नहीं सकते, उन पिस्सुओं ने कई देशों के विमानों की, भारत से आने-जाने वाली, उड़ानें रद्द करा दी थीं । बहुत से देशों ने भारतीय उत्पाद का आयात भी रोक दिया था । एक पड़ोसी देश ने इस मौके का लाभ उठाकर अपना निर्यात एकदम बढ़ा लिया था । सारा विश्व, किस तरह का एक गांव है, यह समझ में आने लगा था ।

खंबात शहर अपने हीरे तथा कपड़ों के निर्यात के लिए जाना जाता था । अब उस शहर में प्लेग से सैंकड़ों लोगों की मृत्यु के कारण वह प्रमुख चर्चा का विषय बनकर, अखबारों तथा अन्य संचार माध्यमों पर छा गया था । सारे विश्व के दूरदर्शनों में भारत की गंदगी को उसी या शायद, उससे भी अधिक उत्साह से दिखलाया जा रहा था, जिस ललक से मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन के एक-एक अंग को, भाव-भंगिमा को, उसकी काया की थिरकन को दिखलाया गया था । अब अचानक उस शहर में रहनेवालों को भी वह गंदगी दिखने लगी थी । और लोग खंबात को छोड़कर कहीं भी उसी तरह भाग रहे थे, जिस तरह महाराष्ट्र के लतूर जिले में भूकंप आने पर चूहे भागे थे । रेलवे स्टेशन पर पैर रखने की जगह नहीं थी ।

रात के समय मंगल भाई अपनी दूकान बंद कर, रोज की अपेक्षा जल्द ही लौटे थे । कुछ उत्तेजित भी थे, प्लेग का आतंक सारे बाजार में अफवाहों की तीव्रता से फैल रहा था । घर में प्रवेश करते ही उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, 'सुमति तैयारी कर लो, कल सुबह ही आमखेड़ा जाएंगे, दो-तीन दिन में लौटने की उम्मीद है ।'

सुमति, "मैं तो खुद ही तैयारी करके बैठी हूं, पड़ोस के सारे लोग भाग रहे हैं । पर मैं आमखेड़ा वामरवेड़ा नहीं जाऊंगी । उस जंगल में जाकर जंगली लोगों के बीच रहना मुझे पसंद नहीं । मैंने तो अपने घर जूनागढ़ जाने की तैयारी की है ।"

मंगल भाई, "तुम समझती क्यों नहीं, एक तो जूनागढ़ जाने के लिए दो ट्रेनें बदलनी पड़ेंगी, फिर आजकल ट्रेन में तुम और हम तो घुस भी नहीं पाएंगे ।"

सुमति, "जब सब लोग जा सकते हैं, तो हम भी जा सकते हैं ।

मंगल भाई, "जूनागढ़ जाने में दो-ढाई दिन

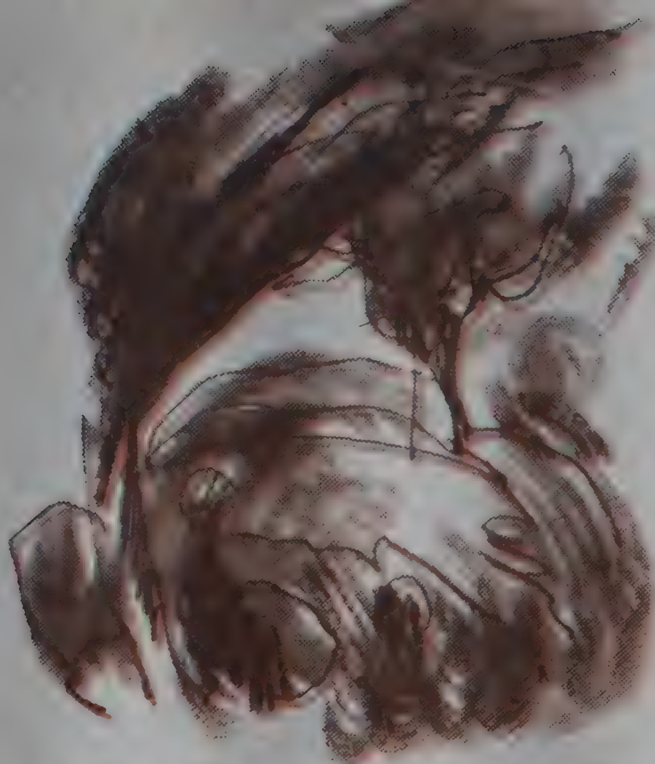


और आने में उतने ही दिन । बस, वहां रुकने के लिए समय नहीं मिलेगा । कहो तो चलते हैं, बस पहुंचते ही साथ खबर मिलेगी कि बाजार खुल गया है । इस भीड़ में पांच दिन भेड़-बकरी सरीखा रेल के डिब्बे में घुसे रहने का क्या फायदा !"

सुमति, "तुम्हें तो जूनागढ़ जाने से ही चिढ़ है । कर लो अपने मन की, मैं क्या तुमसे बातों में जीत सकती हूं !"

सुबह मंगल भाई ने पत्नी सुमति को अपनी मोटर साईकिल पर पीछे बैठाया और आमखेड़ा गांव के लिए चल दिये सामान के नाम पर उन्होंने एक छोटे से सूटकेस में अपने जेवरात रख लिये थे और छोटा-सा बिस्तर । मंगल भाई ने सोचा था कि ज्यादा से ज्यादा तीन-चार दिनों तक हालात काबू में आ जाएगी और वे तुरंत ही वापस लौट आएंगे ।

आमखेड़ा खंबात से अधिक दूर नहीं था, व दोपहर तक आराम से वहां पहुंच जाएंगे । आमखेड़ा गांव जंगल में आदिवासियों का गांव था । उस गांव में मंगल भाई एक आदिवासी भीमा को जानते थे । उन्होंने भीमा की एक बार मदद की थी । भीमा आमखेड़ा से खंबात एक मेले के अवसर पर आया था । किसी शहरी होशियार आदमी ने उसे बेवकूफ बनाकर उसके सारे पैसे ऐंठ लिये थे । तब बेचारा सड़क के किनारे रुआंसा खड़ा था । शाम भी हो गयी थी और उसने दिनभर से कुछ नहीं खाया था । खैर, भूखे रहने की तो उसे आदत-सी ही थी । अपने गांव इतनी दूर-पैदल भी जाने की हिम्मत भी थी उसमें । किंतु शाम हो चुकी थी और सारा रास्ता रात में ही तय करना पड़ेगा—इसी



मंगलभाई कपड़ों का छोटा व्यापारी था और उसी में वह खुश रहता था । उसकी दूकान के काफी सारे ग्राहक बंधे हुए थे । माल में वह कभी धोखा नहीं करता था और दाम भी वह वाजिब रखता था, इसलिए उसके ग्राहक उससे खुश रहते थे । मंगल भाई भी अपने परिवार में अकेला था और उसके ससुर दूर जूनागढ़ के पास रहते थे ।

जूनागढ़ जाने में ही उसे पूरे दो दिन लगते, वह भी यदि उस खचाखच भरी रेलगाड़ी में यदि उसे जगह मिलती तब । और उसकी पत्नी तो ऐसे में जाने की हिम्मत ही नहीं कर पा रही थी । इसीलिए उसने सोचा कि पास ही आमखेड़ा चला जाए और वहां से वह जल्द लौट भी सकेगा । उसे मालूम था कि आमखेड़ा बहुत ही साफ-सुथरा गांव है, हरेक घर बाहर भी भीतर सरीखा ही चमचमाता-सा साफ, और इसी तरह गलियां भी । यहां तक कि कुंए के पास भी कोई दलदल नहीं, नाली ठीक ढंग से बनी थी और उसकी मरम्मत गांववाले बराबर किया करते थे । मंगल भाई को पूरा भरोसा था कि आमखेड़ा में पिस्सू नहीं होंगे । खंबात में तो कितने कचड़े के ढेर और वे भी अकसर सड़ते हुए । अब जब उसने सोचा तो उसे अचरज हो रहा था, उसे लगा कि खंबात में तो प्लेग क्या, हैजा भी बहुत दिन पहले, और एक बार नहीं, कई बार हो जाना चाहिए था । उसने सोचा कि लौटने के बाद, कम से कम, अपने घर और दूकान के आसपास वह सफाई रखेगा ।

अभी तक उसे कोई संतान नहीं हुई थी जिसका दुख उसे तथा सुमति को सालता रहता था । पर आज उसने सोचा कि ठीक ही है,

सोच में वह चिंता में डूब गया था । तब मंगल भाई ने खुद ही आकर उससे उसकी तकलीफ पूछी थी और तुरंत ही बिना मांगे दस रुपये भी दे दिये थे । तब वह बस से देवड़ा पहुंच गया था, जहां से आमखेड़ा कोई तीन किलोमीटर ही था ।

दूसरे ही सप्ताह मंगलभाई के पैसे लौटाने वह खंबात गया था । साथ में उसने मंगलभाई के लिए नीम के शहद की एक बोतल भी रख ली थी । मंगल भाई ने पहले तो पैसे लेने से इनकार किया, किंतु जब वह बिलकुल नहीं माना, तब उसने शहद के पैसे देना चाहे । किंतु भीमा ने वे पैसे भी नहीं लिये । बिना कुछ विशेष बात किये भीमा उन्हें अपना आभार प्रकट कर रहा था—एक सीधे-सादे भोले आदिवासी की तरह ।

भीमा अपनी झोंपड़ी में अब अकेला ही रहता था, उसकी पत्नी का देहांत हो गया था । उसने दूसरे विवाह के विषय में अभी तक सोचा भी नहीं था । कुछ अकेला ही रहना उसे अच्छा लगता था । कभी-कभी मंगलभाई उससे मिलने आमखेड़ा आ जाया करता था ।



क्योंकि बच्चे होते तो उन्हें जूनागढ़ ही जाना पड़ता और पता नहीं वे किस तरह वहां पहुंचते । और साथ में दूकान भी कम से कम दो हफ्ते बंद रखनी पड़ती । इस तरह वे देवड़ा पहुंच गये । वहीं एक बड़े बरगद की छांह भी थी और एक बावड़ी भी । सुमति ने सुबह जल्द ही उठकर पूड़ी-भाजी बना ली थी । दोनों ने पूड़ी-भाजी खायी और समय बिताने के लिए विश्राम किया । वे शाम को ही आमखेड़ा पहुंचना चाहते थे, जिससे कि भीमा घर पर ही मिले ।

वे शाम को आमखेड़ा पहुंचे । मोटर साइकिल की आवाज सुनकर, भीमा अपनी झोंपड़ी से बाहर आ गया । भीमा ने जब सुमति को देखा, तब दौड़कर उसने जै राम जी की और सामान भीतर रख लिया । उसे कुछ संकोच हो रहा था । मंगल भाई ने उसे भांप लिया । बोले, "भीमा तुम चिंता नहीं करो, हम लोग वैसे ही रहेंगे, जैसे तुम रहते हो । हमारे लिए कुछ भी खास करने की तुम्हें जरूरत नहीं । अरे, हम लोग एक कोने में रह लेंगे और दो-तीन दिन में ही वापस लौट जाएंगे ।

भीमा, "मालिक हम गरीब की झोंपड़ी के भाग खुल गये, पर मालकिन को कष्ट..." । मंगल भाई ने बीच में ही टोककर, फिर अपनी बात दुहरा दी और पानी मांगा । भीमा दौड़कर घड़े में से एक गिलास में पानी लाया । पहले मालकिन को दिया । सुमति ने देखा, कि घड़ा भी साफ रेत के ढेर पर रखा था और वह गिलास भी चमचमा रहा था । पानी एकदम साफ और स्वाद में मीठा था । भीमा ने फिर गिलास धोया, [illegible] के व्यापारियों या दुकान के नौकरों की तरह मात्र दिखावा नहीं किया । और फिर उसने पानी मंगल भाई को दिया । मंगल भाई ने गिलास लेते हुए, शायद, मंगल भाई पर कम वजन डालने के लिहाज से कहा, 'हम लोग एक ही गिलास में काम चला लेंगे, देखो इस तरह...' और उसने मुंह को ऊपर कर खोलते हुए तथा गिलास को मुंह के ऊपर रखते हुए, पानी की धार मुंह में डाल दी । भीमा ने मुसकरा दिया ।

भीमा ने पूछा, "मालिक शहर में सब ठीक है ना ? यहां कुछ ठीक पता नहीं चल रहा है ।"

मंगल भाई ने आशा बंधाते हुए कहा, "शहर में कहीं-कहीं प्लेग की बीमारी फैली है । अभी हमारे महल्ले में नहीं आयी थी, पर पता नहीं कब आ जाए, इस डर के मारे हम लोग पहले ही भाग आये । आमखेड़ा में तो [illegible] है, यहां बीमारी नहीं आएगी ।"

भीमा, "ये क्या बिमारी है मालिक ? हमने तो सुना है इसमें लोग पटापट मरते हैं ।"

मंगल भाई, "यह बीमारी पिस्सुओं और चूहों से फैलती है । यह पिस्सू चूहों में रहते हैं ।

किंतु इन पिस्सुओं से ये शहरी चूहे पटापट मरने लगते हैं । तब ये पिस्सू ताजा गरम खून चूसने के लिए दूसरे शिकार खोजने लगते हैं । और आदमियों का खून इन्हें पसंद आता है, तब आदमी भी पटापट मरने लगता है ।''

भीमा, ''मालिक, क्या आदमी लोग, जो बीमार नहीं दिखते हैं, इस बीमारी को फैला सकते हैं ?''

मंगल भाई, ''नहीं, स्वस्थ आदमी से यह बीमारी नहीं फैलती, केवल बीमार आदमी ही इसे फैला सकता है ।''

भीमा, ''चलो मालिक, खेड़ामाई सब ठीक करहैं । हमारे गांव की रच्छा तो खेड़ामाई करती हैं । बस, यहां आप मालिक-मालकिन को कष्ट न होय । आपके खाबे को कछु इंतजाम करत हौं ।''

मंगलभाई, ''अरे तुम कुछ विशेष नहीं बनाना । तुम्हारे हाथ की बाजरे की रोटी और लाल भाजी अच्छी लगती है ।''

भीमा, ''ठीक है मालिक, मैं जरा खेड़ामाई कर असिरवाद लेन जात हौं, फिर लौट खें रोटी बनाइब ।''

वास्तव में भीमा अभी तक अपनी पत्नी के देहांत के दुःख और विषाद से उबरा न था । गांववाले उसके दर्द को समझते थे, इसलिए वे उसकी मदद करते रहते थे । खेड़ामाई की मड़िया गांव की सीमा पर पीपल के नीचे थी । भीमा खेड़ामाई की मूर्ति के सामने गया और साष्टांग लेट गया । वह देर तक साष्टांग मुद्रा में खेड़ामाई से प्रार्थना करता रहा कि वे उसके गांव को प्लेग से बचाकर रखें । यदि मंगल भाई प्लेग लेकर आये हैं, तो सबसे पहले उनका प्लेग ठीक कर दें । इस गांव में प्लेग का कलंक वह अपने ऊपर नहीं लेना चाहता था, उसके कारण गांव में प्लेग नहीं आना चाहिए । बस, इन्हीं को वह बदल-बदलकर खेड़ामाई से असिरवाद के रूप में मांग रहा था ।

यद्यपि वह खेड़ामाई के मंदिर में देर तक रहा, किंतु जब वह लौट रहा था, तब भी उसका मन शांत नहीं हुआ था । वह मंगल भाई का बहुत आदर करता था । शहरी लोगों की तुलना में उसने मंगल भाई को बहुत भलामानस पाया था । वैसे शहरी लोगों का व्यवहार वह ठीक से कभी नहीं समझ पाया था । तब भी मंगलभाई उसे बहुत अच्छे लगे थे । क़िंतु एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी । उसके गांव में यदि ऐसी बीमारी होने का संदेह भी किसी को हो जाता, तो किसी के सुझाने के पहले ही, वह आदमी अपने आप गांव के बाहर, खेड़ामाई से थोड़ी दूर रहने चला जाता । लेकिन, मंगल भाई तो बीमार शहर से आये हैं और बस्ती से कहीं दूर जाने के बजाय वे उसके गांव में आ गये हैं । क्या मंगल भाई को इतनी-सी बात समझ में नहीं आती ? कभी उसकी इच्छा होती कि वह मंगल भाई को यह समझा दे, वे तो समझदार भी हैं और भले आदमी हैं, वे उसकी बात का बुरा नहीं मानेंगे । लेकिन इस समय तो मालकिन भी साथ हैं, उन्हें बुरा लग जाएगा । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इस गुत्थी को वह कैसे सुलझाये, रह-रह कर उसके दिमाग में खयाल आता कि कहीं गांव में प्लेग फैल गया तो जितने लोग मरेंगे उनका पाप उसके सिर पड़ेगा । तब वह डर के मारे जय खेड़ामाई का जप करने लगता ।



रात को उसने बाजरे की रोटी और लाल भाजी बनायी। लालभाजी तो उसकी झोपड़ी के पीछे ही उसने लगा रखी थी। सुमति ने बाजरे की रोटी और लाल भाजी खा तो ली, पर मंगल भाई जैसी खुशी नहीं दिखलायी। मंगल भाई ने देखा कि भीमा, हमेशा की तरह खुश न होकर, कुछ उदास है ; वैसे तो वह बातें कम ही करता है किंतु इस समय वह कुछ अपने में खोया-खोया-सा है। उन्होंने पूछा—"क्या भीमा, क्या बात है... क्या अपनी लुगाई की याद सता रही है ?" भीमा ने जवाब दिया, 'बस मालिक कछु न पूछो। आज जी बहुत दुख रहा है। खेड़ामाई सब भला करिहैं।' थोड़े समय के बाद झोपड़ी के कच्चे किंतु साफ कोने में दरी-चादर बिछाकर सो गये और भीमा दरवाजे के पास लेट गया। किंतु भीमा की आंखों में नींद कहां !

रह-रह कर उसके मन में एक ही बात घुमड़ती—क्या मंगल भाई जो इतनी किताबें पढ़ते हैं, इतना कपड़ा बेच लेते हैं, इतना पैसा कमा लेते हैं, इतने बड़े शहर में रहते हैं, इनकी समझ में इतनी छोटी-सी बात नहीं आती कि छुआछूत की बीमारी वाले आदमी को, गांव के अंदर नहीं, गांव के बाहर जाना चाहिए। मानो समुद्रतट पर लगी चट्टान से इस विचार की लहरें बार-बार टकरातीं और बिखर जातीं। बिखरने पर बार-बार भीमा सोचता कि मंगल भाई तो भले मानस हैं। इसी उधेड़ बुन में आखिरकार भीमा की नींद लग गयी।

उसने देखा कि सुबह मंगल भाई और सुमति दोनों मर गये हैं। गांव का मुखिया उस पर बहुत बिगड़ रहा है कि क्यों उसने इन पिस्सुओं को अपने घर में, अपने गांव में रहने दिया। अब गांव के जितने लोग मरेंगे उन सब का पाप उसके सिर पर पड़ेगा। उसकी घिघ्घी बंध गयी और घबराहट में वह उस दुस्वप्न से जाग पड़ा। मौसम गरम तो नहीं था, किंतु वह पसीने से नहा गया था, उसने फौरन मंगलभाई की तरफ देखा, वे सो रहे थे। उन्हें जिंदा देखकर भी उसे राहत नहीं मिली। उसने सोचा कि मंगल भाई तो अच्छे आदमी हैं, उन्हें जगाकर वह उन्हें अपने सपने के बारे में बतला दे। वह बता देगा कि खेड़ामाई ने किरपा कर उसे यह सपना दिया है। खेड़ामाई का हुकम तो मानना ही पड़ेगा। लेकिन सुमति को सोते देखकर उसने तय किया कि वह मंगल भाई को

सुबह खेड़ामाई का हुक्म अवश्य बतला देगा । मंगल भाई तो समझदार आदमी हैं वे समझ जाएंगे और इस बात का बुरा नहीं मानेंगे । हां, अगर वे शहर वापस नहीं जाना चाहते तो, खेड़ामाई के मंदिर के आगे उनके लिए वह एक झोपड़ी भी बना देगा । इस तरह उसकी नींद फिर लग गयी ।

उसे लगा कि उसे खेड़ामाई के पास फिर जाना चाहिए । खेड़ामाई उसे बुला रही हैं । वह दौड़ता-दौड़ता खेड़ामाई के पास गया । उसने देखा कि वे उसे जोर-जोर से बुला रही हैं । पास जाने पर देखा कि खेड़ामाई की बड़ी-बड़ी आंखें गुस्से से लाल हो गयी हैं । वह एकदम साष्टांग दंडवत होकर 'जय खेड़ामाई' का जाप करने लगा । तब उन्होंने गुस्से में ही हुकम दिया, "भीमा तुम मंगल भाई को वापस जाने के लिए कहो । नहीं कहोगे तो मुझे उनका बलिदान मांगना पड़ेगा ।"

भीमा बस इतना ही कह सका, "खेड़ामाई जो हुकम, खेड़ामाई जो हुकम ।" फिर उसने कानों में दूर से मंगलभाई की आवाज आयी, "ऐ भीमा, भीमा क्या हो गया है ?"

भीमा की नींद फिर खुली, उसने देखा कि मंगल भाई उसके ऊपर झुके हुए हैं और चिंतित दिख रहे हैं । फिर उन्होंने उससे पूछा, "भीमा तुम नींद में यह क्या बड़बड़ा रहे थे—खेड़ामाई जो हुकम, खेड़ामाई जो हुकम ?"

पहले तो भीमा की समझ में नहीं आया कि वह सपने से जागा है या अभी सपना देख रहा है । फिर भीमा ने देखा कि कोने में मालकिन भी नहीं हैं । सुबह की किरन फूटनेवाली है, पंछी अपना गान कर रहे हैं, ठंडी बयार चल रही है. लेकिन वह पसीने से तर है । फिर उसने मंगल भाई की तरफ देखा । मंगलभाई ने कहा, "भीमा बोलो बोलो, खेड़ामाई का क्या हुकूम है ? सब कुशल तो है ?" भीमा के हृदय में भी उस अरुणिम ऊषा की शांति आ गयी थी । उसने धीरे से कहा, "मालिक, खेड़ामाई का हुकम है कि आप लोग चले जाएं ।"

कहने को मंगलभाई ने कह तो दिया कि चले जाएंगे किंतु वे एकदम असमंजस में पड़ गये थे । सोच रहे थे कि न तो इधर के रहे और न उधर के । विशेष चिंता उन्हें सुमति के व्यंग्य बाणों की हो रही थी क्योंकि वे उसे अपनी जबरदस्ती से ही जूनागढ़ के बजाय आमखेड़ा लाये थे ।

इतने में सुमति भी हाथ-मुंह धोकर आ गयी थीं और उन्होंने भी पूछा कि ये खेड़ामाई के हुकम की क्या बात हो रही है । मंगल भाई ने जवाब दिया, "खेड़ामाई का हुकम है कि हम लोग वापस जाएं ।" उन्होंने अपनी निराशा छिपाने की कोशिश तो की थी, पर हलकी-सी छाया आवाज पर आ ही गयी थी ।

सुमति ने उत्साहपूर्वक कहा, "अरे, तो इसमें उदास होने की क्या बात है ! खेड़ामाई तो सबका भला करती हैं, वे तो सब जानती हैं । उन्होंने ठीक ही कहा है । शहर के प्लेग पर अब तक काबू हो गया होगा । चलो, तैयार हो जाओ । चलते समय हम भी खेड़ामाई से आशीर्वाद लेते चलेंगे ।"

और जब सुबह उन्होंने शहर में प्रवेश किया तब अखबारवाले चिल्ला रहे थे—'प्लेग पर ...

— एयर वाइस मार्शल (से.नि.)

ई-१४३ खंड २१ नोएडा-२०१३०१

वैष्णो देवी आस्था की यात्रा है यह

• सुरेश डुग्गर

किसी धर्मस्थल की कितनी मान्यता है, अगर इसको मापने का पैमाना वहां आनेवाले श्रद्धालुओं की संख्या से हो, तो जम्मू-कश्मीर स्थित माता वैष्णो देवी की गुफा का नाम इस सूची में सबसे ऊपर है । गत वर्ष जहां ३३.७७ लाख श्रद्धालु आये थे, वहीं इस वर्ष आनेवालों की संख्या ३५.७५ लाख को पार कर गयी है । दिनोंदिन यहां आनेवाले भक्तों की संख्या बढ़ रही है ।

जम्मू से उत्तर-पूर्व में ७० कि.मी. की दूरी पर पवित्र त्रिकूटा की पहाड़ियों में स्थित वैष्णो देवी की गुफा के दर्शनार्थ आनेवाले कोई धार्मिक यात्रा पर नहीं आते हैं क्योंकि, यह यात्रा कोई धार्मिक यात्रा नहीं है बल्कि, आस्था तथा अविचल और स्थिर आस्था की यात्रा है, जिसमें लोग हजारों कि.मी. का सफर तय करके आते हैं क्योंकि, इस आस्था की यात्रा पर आनेवालों के लिए तो यह संतुष्टि देनेवाला अनुभव होता है, जिसकी तलाश सभी को अपने जीवन में अवश्य होती है ।

है तो यह अविश्वसनीय लेकिन, मानना ही पड़ता है कि आज से चवालीस वर्ष पूर्व सन १९५० में जिस पवित्र गुफा के दर्शन के लिए सालभर में मात्र तीन हजार लोग आये थे, उसी गुफा के दर्शनार्थ इस वर्ष ३५.७५ लाख श्रद्धालु आये । इस सबका श्रेय राज्य के तत्कालीन राज्यपाल श्री जगमोहन को जाता है, जिन्होंने ३० अगस्त, १९८६ को इस तीर्थस्थान को सरकारी एकाधिकार में लेकर 'श्री माता वैष्णो देवी स्थापना बोर्ड' का गठन कर सारी व्यवस्था में सुधार ला दिया । जिससे प्रति वर्ष आनेवाले श्रद्धालुओं की संख्या में बराबर वृद्धि होती चली गयी । अब तो विदेशों से भी लोग आते हैं ।

इस धर्मस्थल की उत्पत्ति कब और कैसे हुई कोई सही जानकारी प्राप्त नहीं है फिर भी इस गुफा की उत्पत्ति के बारे में कई कथाएं प्रचलित हैं । एक पौराणिक कथा बताती है कि वैष्णो



भवन का एक विहंगम दृश्य



पवित्र गुफा में स्थित माता की पिंडियां



मनोकामना की पूर्ति पर देवी के दरबार में

देवी भगवान विष्णु की परम भक्त एवं उपासक थीं और उन्होंने कौमार्यव्रत धारण किया हुआ था । जब वे कुछ बड़ी हुई, तो भैरोंनाथ नामक एक तांत्रिक उनकी ओर आकर्षित हो गया, जो उन्हें प्रत्यक्ष देखने का अभिलाषी था । अपनी अभिलाषा को पूरा करने के लिए उसने अपनी तंत्र शक्ति का प्रयोग किया और देखा कि देवी माता त्रिकूटा पर्वत की ओर जा रही हैं । फिर क्या था तांत्रिक ने उनका पीछा किया । कहा जाता है कि बाण गंगा नामक स्थान पर जब माता को प्यास लगी, तो उन्होंने धरती को अपने बाण से बेध डाला और वहां से जल की धारा निकल पड़ी । यह भी कहा जाता है कि चरण पादुका नामक स्थान का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि, उन्होंने वहां पर विश्राम किया था तथा उनके पद-चिन्ह वहां आज भी मौजूद हैं ।

यही पौराणिक कथा आगे कहती है कि इसके उपरांत माता अर्धक्वारी नामक स्थान पर एक प्राकृतिक गुफा में तपस्या करने हेतु लीन हो गयीं लेकिन, भैरोंनाथ ने यहां भी उनका पीछा नहीं छोड़ा । जिस गुफा में माता ने शरण ली थी, उसका नाम गर्भ जून पड़ गया । वह वहां भी आ पहुंचा । कहा जाता है कि माता अपने आप को बचाती हुई दरबार स्थित पवित्र गुफा की ओर अग्रसर हुई । यहां आकर माता ने महाकाली का रूप धारण कर लिया और अंततोगत्वा अपने त्रिशूल के प्रहार से भैरोंनाथ का धड़ काटकर इतने वेग से फेंका कि वह दूर पहाड़ पर जा गिरा । जिस स्थान पर वह गिरा वहां आज भैरों का मंदिर है । कथा के अनुसार गुफा के द्वार पर स्थित चट्टान असल में भैरोंनाथ का धड़ है, जो पाषाण बन गया था ।

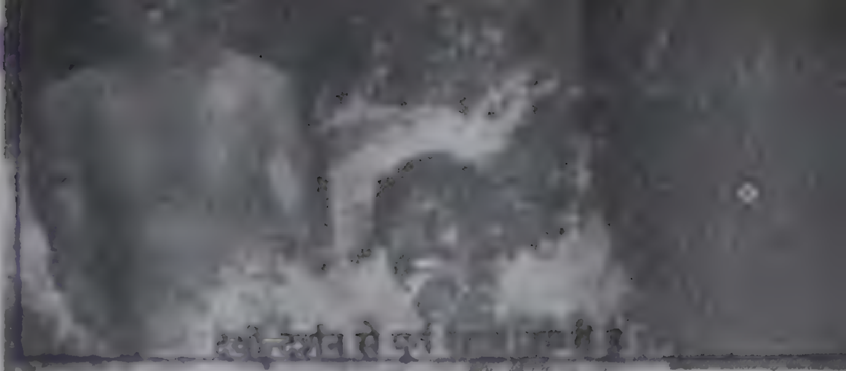
करुणामयी माता ने भैरोंनाथ को उसके अंतिम समय में क्षमा प्रदान की और यह वरदान दिया कि आनेवाले समय में जो भी भक्त माता के दर्शनार्थ आएगा, उसकी यात्रा तभी पूरी मानी जाएगी, जब वह वापसी पर भैरों के दर्शन करेगा।

इस गुफा की कथा जम्मू प्रदेश के एक ऐतिहासिक किसान बाबा जित्तो, जो माता वैष्णो देवी के एक अनन्य भक्त थे, से जुड़ी हुई है। लोककथाओं में भी सुनी जा सकती है। हमेशा बाबा जित्तो की गाथाओं में इस पवित्र गुफा का संदर्भ दिया जाता है।

एक अन्य प्रचलित कथा के अनुसार वैष्णो देवी एक दिव्य लड़की थी, जो जम्मू के पास कोटल कंडोली में पैदा हुई थी। वहां एक सदियों पुराना मंदिर आज भी विद्यमान है। इस मंदिर को वहीं बनाया गया है, जहां उन्होंने सर्वप्रथम तपस्या की थी। कुछ पौराणिक किताबों में ही इस धार्मिक स्थल का वर्णन मिलता है। जबकि त्रिकुटा पहाड़ियों के लोकगायक माता के बारे में सदियों से गाथाएं गाते आ रहे हैं।

वैसे कुछ भूगर्भ शास्त्री यहां की चट्टानों के अध्ययन के आधार पर कहते हैं कि वैष्णो देवी की गुफा कई सौ वर्ष पुरानी हैं। जबकि ब्रह्मर्षियों— पुलस्तु तथा धोमया के कथनानुसार जम्मू, जो पहले जम्मू के नाम से जाना जाता था, भारत के धार्मिक स्थलों में से एक महत्त्वपूर्ण स्थल है, प्राचीनता में पुष्कर के उपरांत वैष्णो देवी का ही स्थान है।

वैसे आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि महाकाव्य महाभारत में जम्मू के साथ वैष्णो देवी के नाम



की चर्चा कहीं नहीं आती है, मगर महाकाव्य में अन्य स्थानों पर इसका संदर्भ अवश्य आता है। बताया जाता है कि जब कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में पांडवों व कौरवों की सेनाएं आमने-सामने एक-दूसरे से भिड़ने के लिए आ जुटी थीं तो तब भगवान कृष्ण ने अर्जुन से वैष्णो देवी का स्मरण करने विजय की प्राप्ति के लिए उनका आशीर्वाद प्राप्त करने को कहा था। त्रिकुटा पहाड़ियों, जो वैष्णो देवी के निवास के रूप में जानी जाती है, ऋग्वेद तथा वैदिक काल के अन्य ग्रंथों में उनका वर्णन अवश्य मिलता है।

एक कथा के अनुसार कटरा के नजदीक हंसाली गांव में रहनेवाले एक ब्राह्मण श्रीधर ने इस गुफा की खोज की थी, जिसे माता ने एक बच्ची के रूप में दर्शन देकर इस गुफा के बारे में जानकारी दी थी। यह कथा भी ७०० साल पुरानी बतायी जाती है।

यात्रियों की संख्या वृद्धि के साथ-साथ उनके लिए की जानेवाली सुविधाओं का प्रबंध भी बेहतर होता जा रहा है। बोर्ड के गठन से पूर्व यात्रा को कठिन समझा जाता था, तो आज वह सुखदायक मानी जा रही है। वस्तुतः वैष्णो देवी की यात्रा पहाड़ी चढ़ाई और गुफा के चमत्कारिक होने के कारण जहां एक ओर साहसिक यात्रा अभियान है वहीं गुफा में प्रवेश रोमांचक। आध्यात्मिक और मानसिक शांति तो देती ही है, मां वैष्णो देवी। ●



आरक्षण का प्रावधान

मांगीलाल चौधरी, ब्यावर : मुझ ग्रामीण, निर्धन शिक्षित विकलांग व्यक्ति को चतुर्थ श्रेणी या क्लर्क दोनों में से एक पद पर सन् १९८१ से आज तक नियुक्ति नहीं दी गयी, जबकि भारतीय संविधान के तहत विकलांग आरक्षण का प्रावधान केंद्र व राज्य सरकार के विभागों में है । कृपया, बताएं कि इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए ?

क्या आपने विकलांग व्यक्ति के रूप में आरक्षित स्थान के लिए आवेदन किया था ? यदि योग्यता की सीमा में आने के बाद भी किसी विभाग ने आरक्षण के प्रावधान के विरुद्ध आचरण किया है तब तो आपकी शिकायत उपयुक्त है । यदि ऐसा हुआ है, तो आप इसकी शिकायत भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय से करें । विभाग व उस पद का उल्लेख भी करें, जहां नियम विरुद्ध कार्य हुआ है । नियम का पालन न करने की स्थिति में तो सरकारी विभाग के विरुद्ध उच्च न्यायालय में समादेश याचिका भी प्रस्तुत की जा सकती है । उच्च न्यायालय नियमों का उल्लंघन रोकने के लिए आवश्यक आदेश दे सकता है ।

मेरा हक

राजकुमार, सिंहभूमि : मैं केंद्रीय सरकार के एक विद्यालय में पिछले नौ वर्षों से अध्यापक हूं । मेरी आयु ३१ वर्ष है । मैं स्वैच्छिक अवकाश कब ले सकता हूं ? स्वैच्छिक अवकाश लेने पर क्या मैं अवकाश ग्रहण करने की अन्य सुविधाओं, जैसे—ग्रेच्युटी, लीव इनकैशमेंट, रिटायरमेंट टी. ए, डी. ए. आदि का हकदार रहूंगा ?

स्वैच्छिक अवकाश के लिए प्रत्येक विभाग के अपने-अपने नियम हैं । उनमें उस समय का भी उल्लेख है, जिसके बीतने पर अर्थात उतने समय तक नौकरी कर लेने पर स्वैच्छिक अवकाश लिया जा सकता है । स्वैच्छिक अवकाश लेने पर सेवा-निवृति प्राप्ति लाभ की भांति ही सभी सुविधाएं जैसे ग्रेच्युटी आदि प्राप्त होती हैं । साधारणतः केवल नौ वर्ष के कार्यकाल के बाद स्वैच्छिक अवकाश की व्यवस्था अध्यापकों के लिए नहीं है ।

नजर कमजोर है

मुकेशकुमार राठौर, इंदौर : मैं बाइस वर्षीय स्नातक हूं । चश्मा लगाता हूं क्योंकि मेरी नजर काफी कमजोर है । क्या मुझे इसके आधार पर विकलांगता प्रमाण-पत्र मिल सकता है ?

नजर का कमजोर होना विकलांगता नहीं माना जाता । आपकी नजर कमजोर है, जिसके लिए आप चश्मा लगाकर उस कमजोरी को दूर कर लेते हैं । फिर आप विकलांग कैसे हुए ? दूसरे आप स्वयं को विकलांग क्यों मनवाना चाहते हैं ?

दत्तक पुत्र हूं मैं

क ख ग, बिहार : मेरी उम्र ३२ वर्ष हैं । पच्चीस

, सात वर्ष की उम्र में मुझे गोद लिया गया गोद लेनेवाले पिता के केवल पांच पुत्रियां सब शादीशुदा हैं । गोद लेने वाले पिता । उनके पास पचास एकड़ जमीन है । लिंग में है, जिसका मुकदमा चल रहा है । लेते समय बारह एकड़ जमीन की रजिस्ट्री कर दी गयी थी । मेरे गोद लेनेवाले पिता खर्च के लिए एक पैसा भी नहीं देते । र्थिक स्थिति अच्छी नहीं है । उधर उनकी कियां भी उनकी संपत्ति में अपना मानती हैं । कृपया बताएं कि मैं अपने गयी जमीन का हकदार कैसे हो सकता दत्तक पुत्र का अधिकार वास्तविक पुत्र हीं होता ? यदि न्यायालय सीलिंग से जमीन ले लेता है, उस स्थिति में मुझे बची में से वास्तविक पुत्र के समान लाभ ता है या नहीं ?

क पुत्र को वही अधिकार प्राप्त होते हैं विक पुत्र को प्राप्त होते हैं । आपके वाले पिता के पांच पुत्रियां तथा एक प) सभी समान संतानें मानी जाएंगी । ालक पिता की संपत्ति जिसकी वह नहीं करें तो उनकी मृत्यु के बाद सार बांट दी जाएगी । जो जमीन उन्होंने दे दी वह आपकी है । यदि वह जमीन नियमानुसार आपको नहीं दी जा सकती आपको जमीन दिये जाने संबंधी प्रपत्र पर प्रश्न-चिह्न लग सकता है । उनकी को भी उनके धन पर बराबर का है । पर आप सबका उनके ल में उनके धन या संपत्ति पर कोई नहीं है ।

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—

रामप्रकाश गुप्त

डॉक्टर कंज्यूमर फोरम में

विभूति, पटना : कृपया यह बताएं कि वर्तमान में अपने देश में निजी प्रैक्टिस कर रहे या सरकारी अस्पतालों में कार्यरत डॉक्टरों के खिलाफ क्षतिपूर्ति के लिए उपभोक्ता मंच में मामला दायर किया जा सकता है या नहीं ? यदि किया जा सकता है तो इसका तरीका क्या है ?

उपभोक्ता फोरम में डॉक्टरों पर लापरवाही के अनेक मामले चल रहे हैं । कुछ डॉक्टरों व अस्पतालों ने ऐसे मामलों को रोकने के लिए न्यायालय की शरण ली है । कुछ मामलों में स्थगन आदेश के कारण उपभोक्ता मंच या प्रदेश उपभोक्ता आयोग में चल रहे मामले रुक गये । डॉक्टर या अस्पताल उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत आते हैं या नहीं, यह उच्चतम न्यायालय के विचाराधीन है । इसलिए न्यायालय का निर्णय आने तक इस विषय पर स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता । यह ठीक है कि उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत डॉक्टरों के खिलाफ कार्रवाई प्रारंभ की जा सकती है परंतु अंतिम निर्णय उच्चतम न्यायालय के निर्णय से प्रभावित होगा । मुआवजे या क्षतिपूर्ति की मांग जिला उपभोक्ता फोरम, प्रदेश उपभोक्ता आयोग तथा राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग में से कहां की जाए यह मांगी जानेवाली रकम के आधार पर निश्चित करना होगा ।

संपत्ति मेरी है

छगनलाल गुप्ता, कोटा : जो मकान मेरे स्वयं का क्रय किया गया है या अन्य संपत्ति जो स्व-अर्जित है, उसमें मेरे तीन पुत्र क्या बराबर का हक मांगने के अधिकारी हैं, या मैं जिसे चाहूं देने के लिए स्वतंत्र हूं ?

मेरे छोटे पुत्र की नौकरी न लगने के कारण धंधे के लिए मैंने कुछ रकम दी । बड़े लड़के की नौकरी लगी हुई है, तो क्या वह भी उतनी ही रकम मांगने का अधिकारी है ?

जो मकान आपने स्वयं क्रय किया है, या जो आपकी स्व-अर्जित संपत्ति है, उसके भाग्य का निर्धारण आप स्वयं कर सकते हैं । उस संपत्ति में से आप जिस व्यक्ति या पुत्र को वह संपत्ति या उसका कोई भाग देना चाहें तो दे सकते हैं । आप स्वतंत्र हैं । आपके पुत्र उसमें बराबर का हक मांगने के अधिकारी नहीं हैं ।

आपने अपने छोटे बेटे को कोई रकम दी, यह आपका निर्णय है । बड़े को उस आधार पर आपसे रकम मांगने का अधिकार नहीं है । कोई भी बेटा आपसे कुछ भी मांगे, यह उसकी इच्छा पर है, लेकिन आप उसकी मांग पूरी करें, न करें, यह आपकी इच्छा पर है । कोई अपनी मांग पूरी करने के लिए आपको बाध्य नहीं कर सकता ।

मैं चौहान, वह ब्राह्मण

दीपक सिंह, कानपुर : मैं एक लड़की से प्यार करता हूं और हम दोनों शादी करना चाहते हैं । हम दोनों स्नातक हैं और बाइस साल की उम्र पार कर चुके हैं । यदि घर में कोई शादी की बात कहता है तो सभी भाई-बंधु मरने-मारने को तैयार हो जाते हैं । हम दोनों किसी की मौत पर अपने विवाह की नींव नहीं रखना चाहते । सुझाव दें कि हम किस प्रकार विवाह करें क्योंकि, वह उच्च वर्ग ब्राह्मण मैं राजपूत चौहान ?

आप अपना मन पक्का करें । आपने विवाह करना है या नहीं—यह निर्णय आपको ही करना है । बंधु-बांधवों की धमकी के बारे में आप ही जाने, जहां तक कानून का सवाल है, आप दोनों विवाह कर सकते हैं । उच्च या नि[illegible] वर्ग आपके विवाह में कोई वैधानिक अड़चन पैदा नहीं करता ।

हक मिलेगा या नहीं ?

अनाम, झालाबाड़ : पुरुष 'क' की दो पत्नियां थ[illegible] अब दोनों स्वर्गवासी हैं । बड़ी पत्नी के एक लड़[illegible] है तथा छोटी पत्नी के कोई संतान नहीं है । छोटी पत्नी ने मेरे पिताजी को गोद ले रखा था, जिसक[illegible] कोई लिखित प्रमाण नहीं है । बड़ी पत्नी की लड़[illegible] का पति घर जंवाई था, जिसे छोड़ दिया, अब लड़की अकेली अपने लड़के के साथ रहती है । क्या अब अदालत के जरिए उसकी संपत्ति में से हिस्सा प्राप्त किया जा सकता है या नहीं ? पुरु[illegible] 'क' व मेरे पिताजी परस्पर चाचा-भतीजे थे और हम पहले से ही अलग रह रहे हैं ।

आपके पिताजी को जिस महिला ने गोद लिया, उसका प्रमाण उपलब्ध नहीं है । क्या आपके पिता अपने आपको उक्त महिला व उसके पति की संतान के रूप में स्वीकार करते रहे हैं तथा प्रमाण-पत्रों में लिखते रहे हैं । आपके पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि गोद के बारे में कोई किसी प्रकार का प्रमाण उपलब्ध नहीं है । ऐसी स्थिति में आपके पिता का उक्त महिला का उत्तराधिकारी प्रमाणित किया जान[illegible] कठिन कार्य है । आपका पहले से ही अलग रहना भी इसका प्रमाण ही माना जाएगा कि ग[illegible] के संबंध को स्वीकारा या माना नहीं गया ।

शिलालेखों की विरासत :

महाबलीपुरम्

ज्योति खरे

हाबलीपुरम् देश का एक प्रमुख बंदरगाह है। यह तमिलनाडु प्रदेश की राजधानी न से लगभग साठ किलोमीटर दूर दक्षिण गाल की खाड़ी पर स्थित है। सात ाओं का शहर महाबलीपुरम् आज ल्लीपुरम नाम से भी जाना जाता है। इस ने नामकरण के पीछे एक पौराणिक कथा हुई है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने वामनावतार धारण कर जिस असुर पर विजय प्राप्त की थी, उसी महाबली दानव के नाम पर इस जगह का नामकरण हुआ है। वैसे, एक किवदंती और भी प्रचलित है कि सातवीं शताब्दी में पल्लवराजा नरसिंह वर्मन-महा-मल्ल थे, बलशाली थे और उन्हीं के नाम पर इसका नाम महामल्लपुरम् और अपभ्रंश होते-होते आज मामाल्लीपुरम् अथवा





महाबलीपुरम् (शिल्पकला)



पंच रथ के

महाबलीपुरम् हो गया ।

विश्व प्रसिद्ध महाबलीपुरम का निकटतम रेलवे स्टेशन चेंगलपट्ट है, जो महाबलीपुरम से तीस किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है । यह रेलवे स्टेशन दक्षिण रेलवे की मद्रास-त्रिची लाइन पर पड़ता है । यह कांचीपुरम और आरकोनम नगरों को भी जोड़ता है । चेंगलपट्ट से महाबलीपुरम तक का सफर बस या टैक्सी द्वारा तय किया जा सकता है । महाबलीपुरम मद्रास तथा दक्षिण भारत के अन्य नगरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है । महाबलीपुरम का निकटतम हवाई अड्डा 'मीनामवक्कम' है, जो मद्रास से लगभग उन्नचास किलोमीटर दूर है ।

महाबलीपुरम आज एक छोटी-सी जगह है । कभी यहां पल्लवों का बंदरगाह था । ईसा पूर्व से ही ग्रीक नाविक अपने पोत यहां खड़े करते थे । आसपास के स्थलों से प्राप्त असंख्य रोमन सिक्के इसके अंतरराष्ट्रीय व्यापार केंद्र होने का संकेत देते हैं । महाबलीपुरम् के मंदिरों और मूर्तियों की कला भारत की प्राचीन कलाभिरुचि की परिचायक है । आज यह स्थल कलाप्रेमियों, इतिहासकारों एवं पुरातत्व के पारखियों का तीर्थ-स्थल बन गया है । जैसे यह शिला-शिल्प के लिए भी संपूर्ण विश्व में प्रसि
है ।

सात पैगोडाओं का केंद्र

महाबलीपुरम् पर्यटकों के लिए सात पैगोड के नाम से आकर्षण का केंद्र रहा, हालांकि आज केवल एक पैगोडा ही बचा है । शेष पैगोडाओं को समुद्र ने अपने आंचल में स लिया है । कहा जाता है कि पांडवों ने अप वनवासकाल में कुछ समय तक महाबली में अज्ञातवास किया था ।यहां एक ही चट्ट काटकर बनाये गये मंदिर पांच पांडवों के से जाने जाते हैं जैसे-युधिष्ठिर रथ, अर्जुन भीम रथ, नकुल और सहदेव रथ । सबसे रथ द्रोपदी के नाम का है, जिसके अंदर द्रो की प्रतिमा प्रतिष्ठित है ।हालांकि कुछ लोग कहना है कि यह दुर्गाजी की मूर्ति है । इनके अतिरिक्त इंद्र, शिव, दुर्गा के वाहन—हाथ सिंह और नंदी रथ के पाश्चात्य प्रदेश में है अर्जुन रथ बौद्ध विहार शैली में निर्मित है रथ के पीछे की दीवार में इंद्र की प्रतिमा उ की गयी है । तीसरा रथ, जिसे भीमरथ के

जाना जाता है शिलाखंड की कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है । इस वृहत्तम ४८×२५ फीट के रथ की ऊचाई २६ फीट है । अंत में युधिष्ठिर रथ जो देखने में अर्जुन रथ जैसा ही है, दर्शनीय है । द्वितीय पक्ति में अर्जुन रथ के समीप ही बौद्ध चैत्य के आकार में नकुल व सहदेव रथ हैं । इन रथों के समूह का नाम पंच रथ है, लेकिन इनकी कुल संख्या आठ है ।

नौ गुफा मंदिर

महाबलीपुरम में पहाड़ को काटकर नौ गुफा मंदिर भी बनाये गये हैं, जिनकी शिल्पकला बहुत ही आकर्षक है । एक विशाल शिलाखंड को काटकर मत्स्याकार में निर्मित अर्जुन की तपस्या करते हुए प्रतिमा उस काल की कलात्मकता, सूक्ष्मकारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है । यही गंगा का मर्त्य लोक में आगमन, पंचतंत्र की कथाएं भी भित्ति—चित्रों में सजीव हो उठी हैं । श्री कृष्ण मंदिर के ऊपरी स्तंभ पर ब्रजवासियों की रक्षा के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठिका पर धारण किये हुए कृष्ण का अंकन है जो बड़ा ही सुंदर लगता है । अन्य स्तंभों पर बराह का मोहक अंकन है । इसी प्रकार दूसरे स्तंभों पर अंकित महिषासुर-मर्दिनी की प्रस्तर मूर्ति शिल्पकला की दृष्टि से उत्कृष्ट है । देवताओं की असीम शक्ति का परिचायक है । श्री कृष्ण की माखन चोरी का प्रतीक जो एक बैलेन्सिंग रॉक पर निर्मित है । गणेश मंदिर भी एक शिलाखंड को काटकर तैयार किया गया है, यहां वर्तमान में पूजा-अर्चना होती है ।

महाबलीपुरम के चित्रखंडों पर अंकित प्रतिमाएं बौद्ध शैली की हैं । इनमें गंगावतरण का दृश्य एव अनंतनाग पर सोये विष्णु विशेष रूप में सुंदर हैं । उन पर अंकित प्रतिमाओं को देखने से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक प्राणी तपस्या में लीन है । तपस्या में लीन सपरिवार गजराज का दृश्य तो बड़ा ही मार्मिक है । शिशु हाथियों के चित्र भी बहुत ही आकर्षक हैं । इसी प्रकार इन चट्टानों पर बंदरों की सजीव प्रतिमाएं भी अद्वितीय हैं ।

समुद्र तट पर स्थित 'शोर टेंपल' जो पिरामिड शैली में निर्मित है, का निर्माण सातवीं शताब्दी के अंतिम राजा सिंह के युग में द्रविणीय रीति के अनुसार निर्मित हुआ है ।पल्लव राजाओं को कलात्मक कीर्तियों का यह अंतिम पड़ाव है । मंदिर में शिव व विष्णु की प्रतिमा के पीछे शक्तिरूपेण दुर्गाजी की भी मूर्ति है । पहाड़ों की खुदाई कर बनायी गयी सांड़ों की कतार भास्कर्य कला के अतुलनीय साक्ष्य के रूप में विद्यमान है । यह मंदिर धर्मराज युधिष्ठिर के रथ के समान ही बना है ।

पत्थर को तराशती छेनी की आवाज से जगनेवाला यह स्थल अब भी अपनी प्रस्तर प्रतिमा की विरासत को जिंदा रखे हुए है । पर्यटक यहां देवी-दवताओं की छोटी प्रस्तर और काष्ठ मूर्तियां, चूड़ियां, हस्तशिल्प की चीजें सस्ते दामों में खरीद सकते हैं ।

महाबलीपुरम् समुद्रतट पर बने होटल में पर्यटक ठहर सकते हैं हालांकि ये होटल काफी मंहगे हैं पर यहां पर पर्यटक चाहे तो बस्ती में स्थित धर्मशाला, निजी मकानों में भी भाड़े पर रह सकते हैं ।

—आर. बी.—२/९९६/ सी,
रानी लक्ष्मी नगर, झांसी—२८४००३

पक्षियों की प्रणय-लीला

● रामचरण धाकड़



अपने अंडों पर बैठी
मादा सारस क्रेन

पक्षियों का भी एक संसार होता है । वे भी अपनी संतति के लिए अपने जीवन साथी का चुनाव करते हैं । मादा पक्षी को जो भी नर पक्षी अपने लिए उपयुक्त लगता है, उसे लेकर वह एक सीजन या जन्मभर उसके बंधन में बंध जाती है ।

स्थलीय एवं जलीय पक्षियों के प्रणय-प्रसंगों को देखने के लिए भरतपुर पक्षी-विहार विश्वविख्यात है, जो आगरा से पैंसठ किलोमीटर व जयपुर से एक सौ इक्यासी किलोमीटर दूर है । इस पक्षी विहार में मई से जून माह तक स्थलीय पक्षियों और जुलाई से अक्तूबर तक जलीय पक्षियों का प्रजनन काल होता है ।

भरतपुर पक्षी विहार में, संसार में सबसे अधिक लगभग पंद्रह पक्षी जातियां विहार में प्रजनन काल बिताती हैं । इन पंद्रह पक्षी जातियों में पेंटेड स्टार्क, ईग्रेट, कारमोरेंट, कॉटनटील, स्पून विल, आइबिस इत्यादि प्रमुख हैं । जलीय पक्षी प्रजनन काल में पेड़ों की डालियों पर घोंसले बनाते हैं, जबकि स्थलीय पक्षी जमीन या पेड़ों के तनों के खोखलों में अपना आवास बनाते हैं ।

तरह-तरह के घोंसले

स्थलीय पक्षियों में ज्यादातर जातियों के पक्षी भूमि पर जमा की गयी छीलन, कतरन, घास, सूखी पत्तियों को बिछाकर घोंसला बनाते हैं । इस तरह के घोंसले बटेर, जंगली मुरगी तथा अन्य [illegible] पक्षी बनाते हैं । टिटहरी जमीन पर कंकड़, छोटे-छोटे पत्थर व मिट्टी के टुकड़ों को इकट्ठे कर अपना घोंसला

है । इन पत्थर, कंकड़ों का रंग अंडों के
मिलता-जुलता होता है, जिससे शिकारी
को उसके अंडे आसानी से दिखायी नहीं
कौवे, चील, गिद्ध इत्यादि पक्षी पेड़ों की
ों पर प्यालेनुमा घोंसले बनाते हैं, जिसके
पेड़ों की सूखी टहनियों, घास-फूस को
करते हैं ।
ी प्रकार गौरेया, कठफोड़ा, मैना,
ल इत्यादि पक्षी जीवित या सूखे पेड़ों के
ो खोखला कर घोंसले बनाते हैं । इन
ने घोसलों में ये पक्षी मुलायम घास-फूस
स्तर बिछा लेते हैं । कस्तूरा, अवावील
ार्टिना चिड़ियाएं गीली मिट्टी के कोटरनुमा
बनाती हैं । इस काल में पक्षियों की लार
काफी बड़ी हो जाती हैं । लार ग्रंथियों से
नेवाले लार को ये मिट्टी में मिलाकर
ुमा घोंसले बनाती हैं । बया व सूर्य
के घोंसले तो देखने लायक होते हैं ।
ड़ों की टहनियों पर घास के तिनकों से
बा घोंसला बुनती है । इसी प्रकार
की पक्षी का घोंसला भी प्रायः बया के
जैसा होता है ।

अनूठे प्रेम-प्रसंग

व मादा अपना जोड़ा बनाने के लिए
सरे को आकर्षित करने की कोशिश करते
दिनों पक्षी के पुराने पंख हट जाते हैं
के स्थान पर नये पंख निकल आते हैं ।
बल स्टार्क, इग्रेट, स्पूनबिल आदि
में तो प्रजनन काल में विशेष पंख
ी हैं, जो प्रजनन काल के पश्चात गिर
।
पक्षी, जिनमें बोलने की क्षमता होती

है, नर मादा को अथवा मादा नर को आकर्षित करने के लिए विशेष प्रकार का गाना गाते या जोर से आवाज करते हैं । कारमोरेंट जाति की मादा नर को आकर्षित करने के लिए एक विशेष प्रकार की तीखी आवाज करती है । इसके विपरीत जिन पक्षियों में बोलने की क्षमता नहीं होती वे मादा को आकर्षित करने के लिए विशेष प्रकार की उड़ानें, नाच या करतब दिखाते हैं ।

हरेक जाति के पक्षी अपना घोंसला बनाने के लिए एक ऐसे निश्चित स्थान को चुनते हैं, जो भोजन, तापक्रम आदि से उपयुक्त हो । सबसे पहले नर अपना क्षेत्र निर्धारित करता है, जिसे पाने के लिए या तो उसे पहले से ही मौजूद पक्षियों से युद्ध करना पड़ता है या फिर उसी की तरह प्रवेश करनेवाले अन्य पक्षियों से । एक बार क्षेत्र पर अधिकार करने के बाद नर मादा का इंतजार करता है । वह वहां बैठकर गाना गाता है । यानी वह एक प्रकार से मादा को घोसले बनाने के लिए उपयुक्त स्थल मिलने की सूचना देता है । गाने से मादा उसकी ओर आकृष्ट होती ही है, साथ में दूसरे नर पक्षियों को भी चेतावनी मिल जाती है कि वह अपनी मादा की तलाश में है । मादा को रिझाने के लिए नर को कई तरह की अनुरंजनी प्रदर्शन भी करने पड़ते हैं । एक ही मादा को पाने के लिए अकसर कई नर पक्षियों में लड़ाई भी हो जाती है । मादा को रिझाने के लिए ब्रजे नामक पक्षी हवा में ऊपर चक्कर लगाता है और फिर शोरगुल करता हुआ नीचे पानी में गोता लगा जाता है । यह मनोरंजक दृश्य गरमी शुरू होते ही दिखायी पड़ता है ।



घोंसले में बैठे हुए जलीय पेंटेड स्टार्क प्रजाति के पक्षी

बया पक्षी का प्रेम-प्रसंग बड़ा रोचक है। प्रजनन ऋतु शुरू होते ही नर पेड़ों की शाखाओं पर घोंसला बनाना शुरू कर देता है। घोंसले की बुनाई के लिए वह एक-एक तिनका तोड़कर लाता है और कपड़े की बुनाई की तरह एक लंबा घोंसला तैयार करता है, लेकिन इसे वह अभी अधूरा छोड़ देता है। नर बया पक्षी घोंसले बनाने में विशेषज्ञ तो होते ही हैं, साथ ही गाने में भी अपनी अलग पहचान रखते हैं। घोंसला तैयार होते ही नर सुरीली आवाज में गाने की रट लगाना शुरू कर देता है। गाना सुनकर मादा दौड़ी चली आती है। मादा भी ऐसी-वैसी मादा नहीं होती, बल्कि एक कुशल गृहिणी होती है। वह आकर नर द्वारा बनाये घोंसले का निरीक्षण करती है। यदि घोंसले की निर्माण-कला उसे पसंद आ जाती है, तो वह उसमें जाकर बैठ जाती है। और नर फिर घोंसले को पूरा करने में जुट जाता है। यदि मादा को घोंसला पसंद नहीं आता, तो वह उड़कर दूर जा बैठती है। थका-हारा नर पक्षी दूसरा नया घोंसला बनाने में जुट जाता है। जिस घोंसले को मादा पसंद कर लेती है, उसे नर पूरा कर देता है।

हार्नबिल पक्षियों का नीड़ निर्माण भी बड़ा अद्‌भुत होता है। जोड़ा बनाने के बाद हार्नबि मादा किसी पेड़ के तने में बनाये गये खोखले घोंसले में चली जाती है। इस खोखले तने के अंदर बैठकर वह अपनी चोंच को उस्तरे के में इस्तेमाल कर अपनी बिष्ठा से प्रवेश द्वार बं कर देते हैं। मात्र एक छोटी-सी दरार ही छोड़ है, जिससे नर पक्षी अपनी चोंच अंदर डालक उसे भोजन पहुंचाता रहे। मादा इस दीवारबंद कठघरे में बंद हो जाती है। जिससे कोई बाह का जीव या पक्षी उसके बच्चों व मादा पर आक्रमण न कर सके। मादा द्वारा बनाया गय यह प्लास्टर सीमेंट-जैसा मजबूत होता है। मादा इसमें दस पंद्रह दिन बिताती है, तब तक उसके अंडों से बच्चे बाहर निकल आते हैं। अवधि में नर भोजन लाकर उसको देता रहत है। भोजन में पीपल या बरगद के अंजीर या छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े होते हैं। मादा के लि भोजन जमा करने के लिए नर को काफी मेह

करनी पड़ती है। जिसके कारण वह सूख कर कांटा हो जाता है जबकि, मादा आराम के दिन बिताने के कारण स्वस्थ हो जाती है। मादा भी इन दिनों में अपने पंखों को त्याग देती है। जब बच्चे लगभग पंद्रह दिन के हो जाते हैं, तो मादा दीवार तोड़कर बाहर निकल आती है। उसके बाद फिर से दीवार की मरम्मत कर दी जाती है। नर और मादा दोनों बच्चों को तब तक खिलाते-पिलाते हैं, जब तक कि वे अपने पैरों पर खड़े होने योग्य नहीं हो जाते।

कुकू जाति के पक्षी तो दूसरे पक्षी के बनाये घोंसलों में अंडे दे आते हैं। इतना ही नहीं वे अंडों की पैतृक जिम्मेदारियां भी उन्हीं पर थोप आते हैं। पपीहा नामक पक्षी प्रायः बेबलर के घोंसलों में अंडे दे आता और अपने अंडों की जगह बनाने के लिए बेबलर पक्षी द्वारा दिये गये अंडों में से दो या तीन को अलग कर देता है। कोयल आमतौर पर घरेलू तथा जंगली कौवों के घोंसलों में अपने अंडे रख आती है।

जकाना पक्षी पानी में तैरते हुए पत्तों पर अंडे देता है। मादा अंडे देकर चली जाती है, नर उन्हें सेता है। इतना ही नहीं, पानी के घटने व बढ़ने से पत्तों से ये अंडे लुढ़कते नहीं हैं।

अलग-अलग पक्षी प्रजातियों के रोचक प्रेम-प्रसंग यहां देखे जा सकते हैं। पक्षी विहार में चकवा-चकवी की विरह-वेदना, बया का नीड़-निर्माण, हंसा की मदमाती चाल, जलकौवों की गोताखोरी, पपीहा की पीऊ-पीऊ, मोर का नृत्य, प्रेमी कपोत की गुटर-गूं इन दिनों सुनी जा सकती है।

पक्षियों का प्रजनन काल

वर्षा ऋतु शुरू होते ही जलीय पक्षियों का प्रजनन-काल शुरू हो जाता है। जुलाई माह में ओपिनबिल स्टार्क, कारमोरेंट, इग्रेस अपने घोंसले बनाने शुरू कर देते हैं। घोंसले मुख्यतया बबूलों के छतरीनुमा पेड़ों पर होते हैं। स्थलीय पक्षियों का प्रजनन वर्षा से पहले समाप्त हो चुका होता है। अप्रैल व मई माहों में कबूतर, तोता, टिटहरी, जकाना इत्यादि का प्रजनन पूरा हो जाता है।

अगस्त एवं सितंबर माह के अंत तक ओपिनबिल स्टार्क, लार्ज कारमोरेंट, लिटिल एवं मोडियम इग्रेट, आइबिस, रेड पेंटेड, बुलबुल का प्रजनन समाप्त हो जाता है। भारतीय सारस का प्रजनन जून-जुलाई तक समाप्त हो जाता है। पानी के पास रहनेवाली अधिकांश प्रजातियों का प्रजनन अकसर सितंबर तक पूरा हो जाता है। अक्तूबर व नवंबर तक इनके बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो ये घोंसलों को छोड़कर उड़ जाते हैं। कुछ पक्षी जातियों का प्रजनन वर्ष में दो बार होता है।

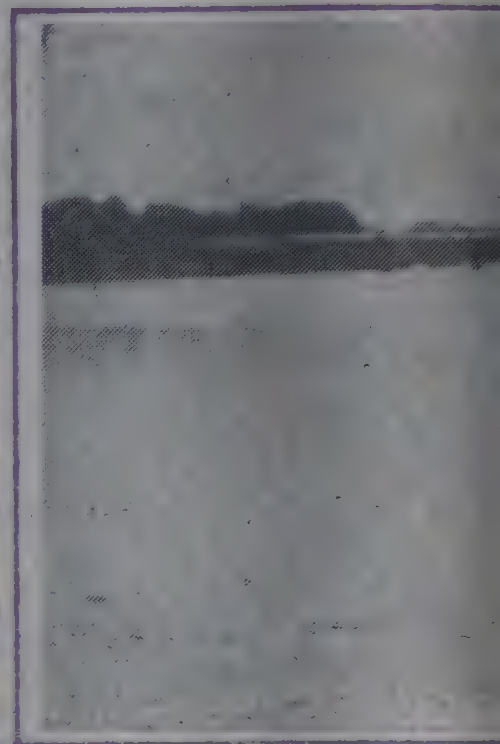
पक्षी विहार में मुख्यतया सर्द ऋतु में आनेवाले विदेशी मेहमान पक्षियों को देखने पर्यटक आते ही हैं. परंतु प्रजनन कालीन दिनों में भी पक्षी प्रजनन को देखने के लिए पर्यटकों की भीड़ आती रहती है।

— सूचना केंद्र, भरतपुर (राज.)

बिछड़ चला है तो मेरी दुआ भी लेता जा
वहां-वहां मुझे पाये जहां-जहां जाएं
— मोहसिन नकवी

जय पूर्णा ! जय कालटी !

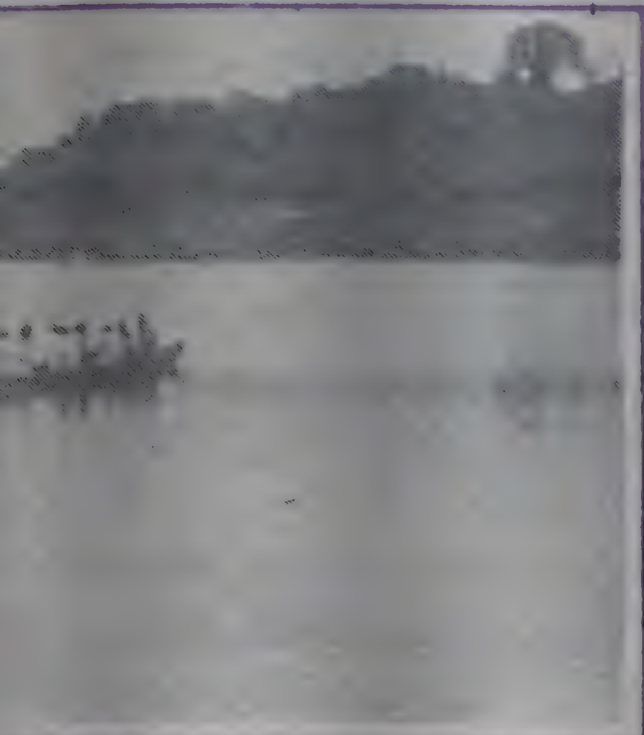
● अभिराज डॉ. राजेंद्र मिश्र


प्रशांत, सुस्थिर पूर्णा (पेरियार) का दृश्य !

केरल के प्राकृतिक-सौंदर्य, सम्मोहक अंग-सौष्ठव तथा नृत्य-गीत की लोकधर्मी, परंपराओं ने चिरकाल से ही कवियों एवं साहित्यकारों को, यायावरों तथा पर्यटकों को प्रभावित किया है । पश्चिमी सागर के मनोरम सैकत-पुलिनों से श्रीमंडित तथा नारियल की सांद्रवनिकाओं से भरा-पूरा केरल प्रदेश, भारतवर्ष का ही भूखंड-विशेष होते हुए भी, गंधर्वलोक-सा प्रतीत होता है । ईसा-पूर्व तृतीय-चतुर्थ शती में जन्मे महाकवि भास के तेरह नाटकों को इसी पावन-प्रदेश के रंगजीवी चाक्यारों ने सुरक्षित कर रखा था । इन नाटकों की पहचान करायी सन १९१२ में म. म. टी. गणपति शास्त्री ने । केरल नृत्य, गीत एवं वाद्य की प्रसव-भूमि रहा है । आज भी कुचीपुड़ी नृत्य-शैली तथा मोहिनीअट्टम नाट्यों के कारण यह प्रदेश सारे संसार में समाहत है !

केरल का प्राचीनतम साहित्यिक-संदर्भ कविकुलगुरु कालिदास-कृत रघुवंश महाकाव्य

वर्तमान केरल राज्य की तमिलनाडु-सीमा पबर स्थित पेरियार नामक विशाल झील से निकलकर बहनेवाली नदी पेरियार के दाहिने तट पर, एर्नाकुलम से प्रायः ३० मील दूर पूर्वोत्तर दिशा में विद्यमान है आदिशंकर की जन्म-भूमि— कालटी ! यहां पर कांची कामकोटिपीठ के शंकराचार्य स्वामी जयेंद्र सरस्वती ने आदिशंकर का एक भव्य स्मारक निर्मित कराया है, जिसके सात खंडों (तल्लों) में बने गर्भगृहों में देवी-देवताओं की भव्य प्रतिमाएं स्थापित हैं ।



क छठे सर्ग में वर्णित विदर्भ राजकुमारी इंदुमती क स्वयंवर में मिलता है । इंदुमती की सखी सुनंदा, देश-देशांतर से पधारे नरपतियों का र्णन करने के प्रसंग में पांड्य-नरेश का भी रिचय देती है, जो केरल प्रदेश (दक्षिणापथ) क शासक थे । ये नरेश उरगपुर (वर्तमान रैय्यूर) से आया है । उसके कंधों पर मुक्ताहार लटक रहा था तथा शरीर पर हरिचंदन का गाढ़ लेप था । फलतः वह भोरहरे सूरज की ललछौंही आभा से रंगे (मुक्ताहार के कारण) पात-जलधारा से मंडित विशाल पर्वत-सा दीख रहा था । सुनंदा पांड्यनरेश की प्रशंसा करते हुई कहती है—

'हे चकोराक्षि । इस महाकुलीन नरेश का रण करके तुम निश्चय ही रत्नों से भरे-पूरे सागर की करधनीवाली दक्षिण दिशा की सौत (सत्वामिनी) बन जाओगी ! तुम तांबुल लताओं से जकड़े सुपारी के पेड़ों, इलायची की लताओं से आलिंगित चंदन वृक्षोंवाले तथा तमाल-पत्रों से बने बिछौनोंवाली मलयपर्वत की वेदियों पर रमण करोगी । यह राजा है नीलकमल के समान श्यामलवर्ण और तुम हो गोरोचन-जैसी गोरी ! एक-दूसरे की शोभा तुम दोनों यूं ही बढ़ाओगी जैसे तडित और तोयद (मेघ) परस्पर शोभा बढ़ाते हैं ।

(श्लोक ६० से ६५ तक)

महाकवि कालिदास 'तांबूलवल्ली परिणद्ध-पूग' एवं 'एलालताऽलिंगित-चंदन' द्वारा वस्तुतः केरल और सीमावर्ती चोलदेश (तमिलनाडु) का ही वर्णन कर रहे हैं ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इस वर्णन से स्पष्ट है कि कालिदास के काल ईसा-पूर्व प्रथम शती में भी केरल का पांड्य-साम्राज्य वैभवशाली था । सन ३२२ में केरल का अधिपति था— कुलशेखर ! कवि कुमार ने अपनी कृति 'राज-शेखरचरित' में इसी

कालटी में कामकोटि पीठ, कांची द्वारा निर्मित आदिशंकर का सप्तभूमिक स्मारक ।



को रसिकशेखर अथवा राजशेखर भी कहा है। 'मुकुंदमाला' नामक रमणीय भक्तिपरक-काव्य इसी नरेश की कृति है।

जिस समय उत्तरी भारत में कान्यकुब्ज का गुर्जर प्रतिहार वंश, मान्यखेट का राष्ट्रकूट वंश, बंगाल का पालवंश, त्रिपुरी (वर्तमान तिउरी, जबलपुर) का कलचुरि राजवंश, उज्जैन एवं धारा का परमार वंश तथा महावती (महोबा) का चंदेल राजवंश समृद्धि की पराकाष्ठा पर थे, ठीक उसी समय तंजौर (चोलदेश) तथा उरगपुर (केरल) में चोल एवं पांड्यवंश भी ऐश्वर्य के शिखर पर थे। दुर्भाग्यवश, ये दोनों राजवंश निरंतर चार शतियों तक संघर्षरत रहे, जब तक कि अलाउद्दीन खिलजी के नृशंस सेनापति मलिक काफूर ने इन्हें नष्ट नहीं कर दिया।

दसवीं शती में चोल नरेश परांतक प्रथम ने तथा उसके उत्तराधिकारियों— राजराज, राजेंद्र तथा कुलोत्तुंग— प्रथम एवं तृतीय ने पांड्या साम्राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया। परंतु पांड्य नरेश कुलशेखर जटावर्मा ने वंशप्रतिष्ठा को अक्षत रखा तथा उसने ट्रावनकोर को चोलों से छीन लिया। उसका पुत्र मारवर्मा सुंदर पांड्य अत्यंत प्रतापी सिद्ध हुआ। उसने न केवल कुलोत्तुंग तृतीय को बुरी तरह परास्त किया बल्कि, चोलों की शक्ति के केंद्रभूत दो नगरों— तंजापुर (तंजौर) तथा उरगपुर (उरैयूर) को जलाकर भस्म कर दिया।

मारवर्मा सुंदर पांड्य के पुत्र जटावर्मा सुंदर पांड्य ने भी पिता के राज्य की श्रीवृद्धि करते हुए होयसलों की शक्ति को नष्ट कर दिया तथा वारंगल के काकतीय-नरेश गणपति पर विजय प्राप्त की। उसने चिदंबरम, श्रीरंगम तथा मदुरै में सुवर्ण शिखर-मंडित देवालय बनवाये। जटावर्मा का राजकवि था— गोविंदभट्ट, जो उस युग का महान शास्त्रज्ञ था।

जटावर्मा सुंदर पांड्य का पुत्र भी पिता के ही समान शूर-वीर तथा साहित्यानुरागी था। कुलशेखर पांड्य मारवर्मा नामक इस दिग्विजयी नरेश ने सिंहल-नरेश पराक्रमबाहु तक को उच्छिन्न कर डाला और भगवान बुद्ध के पवित्र दंतावशेष छीन लिये। कुलशेखर का राजकवि था— हस्तिमल्ल, जिसने 'विक्रांतिकौरवम' तथा 'अंजनापवनजयम' नाटकों की रचना की है।

वेनिस का प्रख्यात यात्री मार्कोपोलो कुलशेखर का ही अतिथि था। उसने उस काल के पांड्या साम्राज्य के ऐश्वर्य-वैभव की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मार्कोपोलो पांड्य राजधानी उरगपुर को विश्व की सुंदरतम नगरी बताता है। इस वंश का अंतिम प्रतापी एवं यशस्वी सम्राट था कुलशेखर का पुत्र— वीरपांड्य जटावर्मा! 'शार्ंगधरपद्धति' (१४वीं शती) में इसी वीरपांड्य की प्रशस्ति में अनेक कवियों की कविताएं संकलित मिलती हैं। सुदर्शन कवि कहता है— हाथियों को प्राप्त कराने में विंध्य पर्वत, कोश धारण करने में अप्रतिम रत्नाकर, सुगंध बिखेरने में मलयाचल, सारे के सारे सेवक विद्याधर (अर्थात शिक्षित) तथा सबकी आशा पूर्ण करनेवाला आपका साम्राज्य— दक्षिण देश! हे वीरपांड्य! आपका प्रत्येक वैभव लोकोत्तर ही है।

(पांड्याखांडल वीरपांड्य ! भवतः किं किं न लोकोत्तरम् !)

जय पूर्णा ! जय कालटी !!

ी केरल प्रदेश में अवतरित हुए, आठवीं
भगवान आदिशंकर, जिन्होंने बौद्धों की
नवादी संस्कृति से भारत को मुक्त कर पुनः
क कर्मयोग को प्रतिष्ठापित किया तथा
मात्र की मुक्ति के लिए 'ब्रह्माद्वैत' मत की
ली। आज संपूर्ण विश्व जिस भारतीय
दर्शन' की गरिमा के समक्ष नतमस्तक
आदिशंकर की ही देन है। मात्र सोलह
ी आयु में वेद, वेदांत, पुराणों तथा शास्त्रों
हन ज्ञान आत्मसात कर तथा इस प्रधान
दों, श्रीमद्भागवद्गीता तथा बादरायण
र 'शारीरिक-भाष्य' लिखकर इस महान
संन्यासी ने अपने जीवनकाल में ही, स्वयं
अलौकिक' सिद्ध कर दिया। 'शंकर
साक्षात्' अर्थात वह साक्षात् भगवान्
ही थे !

चार्य शंकर का जन्म वैशाख शुक्ल
के दिन वर्तमान एर्नाकुलम जनपद के
ी नामक गांव में हुआ। इनके पिता श्री
रु एक महान साधक शिवभक्त नंबूद्री
थे। माता सुभद्रांबा भी अत्यंत तपस्विनी
भगवान शिव की सेवा के फलस्वरूप
को जीवन की प्रौढ़ावस्था में पुत्र की प्राप्ति
शिव का साकार अनुग्रह मानकर ही पिता
ु का नाम शंकर रखा। पिता के देहांत के
ने ही शिशु का पालन किया। शंकर
मां के अनन्य अनुरागी थे। वह शैशव
अपने जन्म के रहस्य तथा जीवन लक्ष्य से
हो चुके थे। इस लक्ष्य की पूर्ति के
नका संन्यासी होना आवश्यक था। परंतु
के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मां ही
थी।

मायावी ग्राह की लीला

वर्तमान केरल राज्य की तमिलनाडु-सीमा पर स्थित पेरियार नामक विशाल झील से निकलकर बहनेवाली नदी पेरियार के दाहिने तट पर, एर्नाकुलम से प्रायः ३० मील दूर पूर्वोत्तर दिशा में विद्यमान है आदिशंकर की जन्म-भूमि— कालटी ! यहां पर कांची कामकोटिपीठ के शंकराचार्य स्वामी जयेंद्र सरस्वती ने आदिशंकर का एक भव्य स्मारक निर्मित कराया है, जिसके सात खंडों (तल्लों) में बने गर्भगृहों में देवी-देवताओं की भव्य प्रतिमाएं स्थापित हैं। गोलाकार सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए, दीवार पर भगवान शंकर के जीवन-वृत्त का अंकन है।

परियार नदी में बालक शंकर प्रतिदिन अपनी मां के साथ स्नान के लिए जाया करते थे। एक दिन उन्होंने मां से संन्यास की अनुमति प्राप्त करने के लिए, अपने दैवी प्रभाव से एक विचित्र लीला की। जैसे वह नदी में उतरे, एक घड़ियाल ने उन्हें पकड़ लिया और नदी के गहरे जल में खींचने लगा। यह देखकर मां क्रंदन करने लगीं। चीख-पुकार सुन ढेर-सारे लोग आ जुटे, परंतु घड़ियाल से शंकर को बचाने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। सब निरुपाय खड़े थे।

तभी शंकर ने कहा, 'मां ! मुझे संन्यास की अनुमति दे दो तो यह घड़ियाल मुझे मुक्त कर देगा।' पुत्र की रक्षा के लिए विह्वल, आंसुओं में डूबी मां ने हामी भर दी और बालक शंकर सचमुच घड़ियाल के जबड़े से मुक्त हो गया। वस्तुतः यह घड़ियाल उन्हीं की दिव्यशक्ति का

चमत्कार था।

मां ने दुःखी हृदय से मात्र आठ वर्ष की अवस्थावाले बालक शंकर को इस शर्त पर संन्यास की अनुमति दे दी कि, 'मेरी मृत्यु के समय तुम मेरे पास उपस्थित रहना।'

उत्तर की ओर यात्रा करते शंकर माहिष्मती (वर्तमान मध्य प्रदेश में महेश्वर) क्षेत्र में स्थित ओंकार— तपोभूमि पहुंचे, जहां नर्मदा तट पर रहनेवाले महायोगी एवं तपस्वी गोविंद भगवत्पाद से उन्होंने संन्यास की शिक्षा ली और फिर अपने ब्रह्माद्वैत मत के दिग्विजय-पथ पर चल पड़े काशी, कुरुक्षेत्र, कश्मीर, बद्रिकाश्राम होते हुए वह प्रयाग के रास्ते शृंगेरी लौटे।

शंकर-दिग्विजय

बालक शंकर ने अपनी सांस्कारिक प्रतिभा, गहन शास्त्रज्ञान तथा अतींद्रिय तत्व-मीमांसा द्वारा समूचे भारत के विद्वतसमाज को विस्मित कर दिया। उस युग के अनेक उद्भट मतांतर-पोषक आचार्य, उनसे शास्त्रार्थ में पराजित होकर ब्रह्माद्वैत वेदांतमत में दीक्षित हो गये। तत्त्व-मीमांसा के पारमार्थिक एवं व्यावहारिक — दोनों स्वरूपों को स्वीकार कर भगवान शंकर ने एक ओर सांसारिक प्रपंचों को मान्यता भी दी, साथ ही साथ उसे सत, चित, आनंदात्मक परब्रह्म का 'विवर्त' मात्र सिद्ध कर, उसकी निस्सारता भी स्थापित की और कहा, 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नाऽपर :।'

आदिशंकर वेदों में प्रतिष्ठित तथा भगवान कृष्णद्वैपायन व्यास द्वारा बादरायण-सूत्रों में व्याख्यात औपनिषदिक वेदांतमत के अनुयायी भाष्यकार थे। उन्होंने अपने दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए मुख्यतः तीन ग्रंथरत्नों का आश्रय लिया— उपनिषद, बादरायण सूत्र तथा श्रीमद्भागवद्गीता! इसी को 'प्रस्थानत्रयी' कहते हैं।

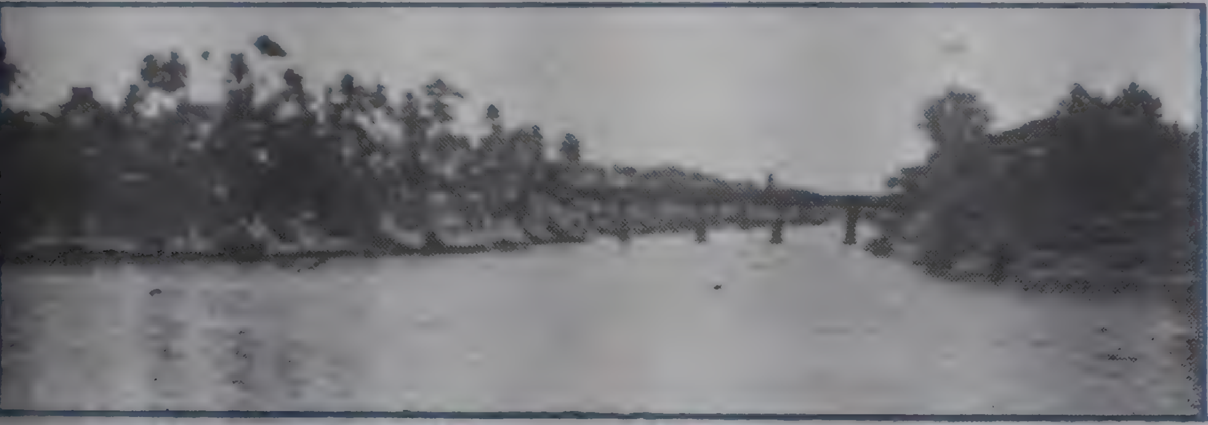
आदिशंकर संसार को ब्रह्म का विवर्तमा (तत्त्व में अतत्त्व का भान) मानते हैं। वह उसकी मात्र प्रातिभासिक सत्ता स्वीकारते हैं पारमार्थिक सत्ता तो एकमात्र परब्रह्म की ही जो त्रिगुणातीत, निरंजन निर्विकार, सच्चिदानंदस्वरूप तथा अवांगमनोगोचर है संसार की प्रतीति उस सर्वव्यापी ब्रह्म में तभी तक होती है, जब तक हमारा भ्रम या अज्ञान बना रहता है, जैसे किसी रस्सी में सांप के अस्तित्व का भ्रम बना रहता! सांप का भ्रम टूटते ही रस्सी 'रस्सी' मात्र रह जाती है। यह भ्रम अथवा अज्ञान ही जीव के 'बंधन' (जीवन-मरण) का कारण है। इसी अज्ञान अथवा माया से मुक्त होकर समूचे संसार को ब्रह्ममय देखना तथा जीवनमुक्त होकर विचरण करना, भगवान शंकर के ब्रह्माद्वैत का लक्ष्य है।

अद्वैतमत तथा सनातन धर्म की प्रतिष्ठा लिए शंकराचार्य ने लौकिक-स्तर पर भी मह कार्य किया। उन्होंने भारत के चारों कोनों में धर्मपीठों की स्थापना की। द्वारका, जगन्नाथ बद्रीवन (हिमालय) तथा श्रृंगगिरि (श्रृंगेरी) क्षेत्र में उन्होंने क्रमशः कालिकापीठ, विमलापीठ, ज्योतिष्पीठ तथा शारदापीठ की संस्थापना की और सुरेश्वराचार्य (पूर्वनाम मंडनमिश्र, जो महामीमांसक आचार्य कुमारिलभट्ट के शिष्य थे), पद्माचार्य, तोटकाचार्य एवं हस्तामलकाचार्य को वहां

यानदेशिक-पद पर नियुक्त किया ।
ह सब करने के बाद शंकर कांचीपुरी
। वहां उन्होंने भगवती कामाक्षी एवं
क को अपने हाथों प्रतिष्ठित कर,
कोटिपीठ की स्थापना की । धर्म एवं
ष्ठान का व्यावहारिक स्तर पर समर्थन करते
द्धा एवं करुणा में पगी उत्कृष्ट देवस्तुतियों
णयन किया, जिनमें 'सौंदर्यलहरी',
दलहरी', 'कनकधारा-स्तव', 'गंगास्तव'
'चर्मटमंजरिका' आदि प्रमुख हैं । इन
ों की साहित्यिक उत्कृष्टता तथा शब्द-शब्द

नीलकंठ में वरप्राप्ति, केदार में मुक्ति, श्रृंगेरी में भोग तथा चिदंबर में मोक्ष-पूजा का विधान संपन्न किया । श्रृंगेरी में उन्होंने भगवती अखिलांडेश्वरी के ताटंकों (कर्णभूषणों) की ज्योति को अपने तंत्रोपचार से कम किया, फलतः भक्तों को भगवती का सुस्पष्ट मुख दर्शन होने लगा ।

कहा जाता है कि ब्रह्माद्वैत-मत की प्रतिष्ठापना की मंत्रणा शंकर को स्वयं काशी विश्वनाथ ने चांडालवेश में प्रकट होकर दी थी । भगवान व्यास ने भी साक्षात दर्शन देकर उनके



आलवई उपनगर में दो भागों में विभक्त पूर्णा (पेरियर) का दृश्य । त्रिचूर रेलवे पुल

माई गहन आस्था पाठक को सम्मोहित कर
है !

संचरणशील धर्मविग्रह

'चरैवेति' ही मूलमंत्र था आचार्य के जीवन
सन ७८८ से ८२० की ३२ वर्षीय आयु
इस महान संन्यासी ने भारत की चप्पे-चप्पे
को अपने पैरों से नाप लिया । वस्तुतः वह
त-प्रतिष्ठापक' आचार्य थे । उनका
त' (शिव, विष्णु, दुर्गा, सूर्य, गणपति एवं
केय) समूचे भारत में व्याप्त विविध
सनाओं को स्वयं में समेट लेता था ।
लाश पर्वत से लाये गये, आत्मार्चित
लिंग की प्रतिष्ठा द्वारा आदिशंकर ने

ब्रह्म-सूत्रभाष्य का अभिनंदन किया था तथा शेष महान कार्यों के लिए उन्हें सोलह वर्ष की अतिरिक्त आयु, अपने तपोबल से प्रदान की थी । गंगा-यमुना के पावन संगम पर आचार्य कुमारिलभट्ट से भी, जो उस समय अपने सौगतमतावलंबी गुरु से द्रोह करने के प्रायश्चित-स्वरूप धान की भूसी में जलकर प्राणोत्सर्ग कर रहे थे, आचार्य शंकर के मिलने का सुदृढ़ प्रमाण मिलता है ।

फिर कालटी लौटे शंकर

अद्भुत संन्यास था आदिशंकर का !
संन्यासी के लिए कोई आत्मीय नहीं होता !
उसका तो अर्थ ही है— सम न्यास अर्थात पूर्ण

परित्याग ! परंतु आचार्य शंकर की मातृभक्ति, इन शास्त्रीय वर्जनाओं से भी ऊपर थी । संन्यासी होकर भी मां की खोज-खबर लेते रहने के कारण समाज ने शंकर का घोर विरोध किया । उन्हें शास्त्र-विरोधी तथा कृतक-संन्यासी भी कहा । परंतु मां की ममता में डूबे शंकर, अपनी मां से किये गये छल की क्षतिपूर्ति जीवनभर करते रहे ।

जब मां वृद्धावस्था के कारण परियार नदी-स्नान में असमर्थ होने लगीं, तो आदिशंकर ने नदी से अपना मार्ग बदलने के लिए करुण गुहार लगायी । वह उनकी भावभीनी स्तुति से पिघल उठीं और उनकी एक पतली धारा, स्वाभाविक रूप से, उनके घर के समीप से होकर बहने लगी, जो आज भी यथावत है !

मां का महाप्रयाण काल निकट आया जानकर आदिशंकर अंतिम बार कालटी लौटे । मां को ब्रह्माद्वैत-तत्त्व के उपदेश से विदेहमु कर, शंकर ने सामाजिक विरोध के बावजूद अपने ही हाथों उनका दाह-संस्कार व श्राद्ध किया ।

आदिशंकर कामकोटि-पीठ (कांची) लौटे । भक्तों के आग्रह पर वह 'सर्वज्ञपीठ' आसीन हुए । संपूर्ण भारत-भूमि की प्रदक्षि तो वह कर ही चुके थे । चारों पीठों पर उन विद्वान शिष्य अधिष्ठित हो चुके थे । अब उ अपनी लीला को समेटने का समय आ गय था ।

उन्होंने सौंदर्यलहरी आदि स्तोत्रों से प कामाक्षी को परितुष्ट किया, मंदिर की परिक्र की तथा अपने प्रिय शिष्य अष्टवर्षीय 'सर्व को कामकोटिपीठाधिपति नियुक्त कर भगव कामाक्षी के समक्ष ही देह का त्यागकर दिय

— हिमाचल प्रदेश वि. वि. शिमल

हल्दी से कैंसर का उपचार

हल्दी का उपयोग अभी तक तो मसाला के रूप में एवं सौंदर्य प्रसाधन बनाने के रूप में किया जाता रहा है, किंतु अब इसकी उपयोगिता और बढ़ गयी है । अब वैज्ञानिकों ने कैंसर उपचार में भी हल्दी का प्रयोग ढूंढ़ लिया है ।

हाल ही में नयी दिल्ली में हुए अंतरराष्ट्रीय कैंसर सम्मेलन में, कैंसर अनुसंधान संस्थान, बंबई के एक पूर्व वैज्ञानिक एवं वर्तमान में सवाई प्रकाशानंद आयुर्वेदिक अनुसंधान केंद्र में कार्यरत डॉ. एस.वी. भिंडे ने बताया कि हल्दी के प्रयोग से मुख के कैंसर के लक्षणों में काफी कमी पायी गयी है ।

डॉ. भिंडे के अनुसार फूलगोभी भी कैंसर के इलाज में काफी उपयोगी है । अतः सब्जी के रूप में फूलगोभी का सेवन करना भी उपयोगी सिद्ध होगा ।

—डॉ. गणेशकुमार पाठक

बुद्धि विलास

क. आधुनिक वैज्ञानिकों ने समय के
से छोटे हिस्से सेकंड को जिस न्यूनतम हिस्से
ांटा है, उसे क्या कहते हैं ? वह कितना
?

उसका क्या उपयोग है ?

क. सौरमंडल का ऐसा कौन-सा ग्रह है जो
य ग्रहों के विपरीत घूमता है ?

अपनी धुरी पर और सूर्य के चारों ओर
ने में उसे कितना समय लगता है ?

क. 'भानुमती का पिटारा' मुहावरे का क्या
र्थ है ?

इसमें भानुमती का क्या प्रसंग है ? वह
न थी ?

क. १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम
निक विद्रोह) में किन वीरों ने नेपाल में
ण ली थी ?

किस वीर को अंगरेजों ने फांसी पर चढ़ा
ा था ?

क. सबसे पहले लघु मूक फिल्मों का
र्ण और प्रदर्शन कब और कहां हुआ था ?

भारत में मूक और बोलती फिल्में कब
?

क. गत जनवरी में भारत के किस
स्थान में और किस अवसर पर श्रद्धालुओं
सबसे अधिक भीड़ थी ?

कितनी ?

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सही प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

७. क. अंतरिक्ष में जानेवाली प्रथम भारतीय कौन चुनी गयी है ?

ख. सबसे पहला भारतीय कौन था जो अंतरिक्ष में गया ?

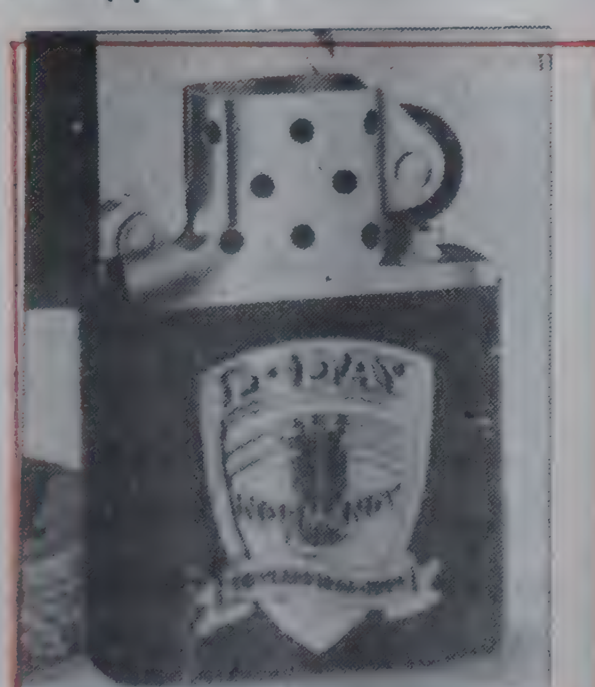
८. १९९४ का विश्व शतरंज आस्कर अवार्ड पानेवाली महिला कौन है ?

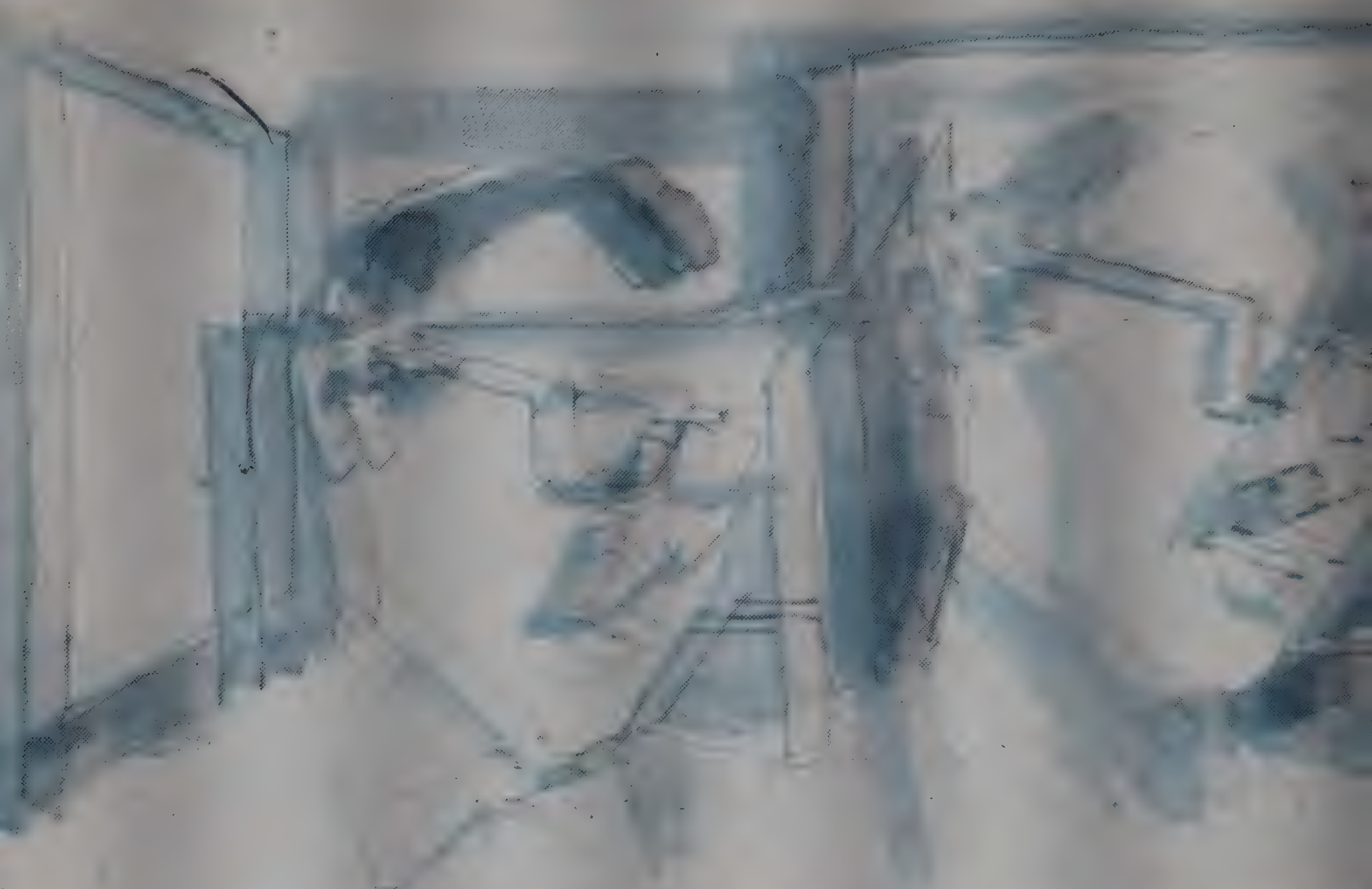
९. क. गत फरवरी में ऑकलैंड में हुए शताब्दी क्रिकेट प्रतियोगिता में पुरुषों की किस टीम ने खिताब जीता ?

ख. उपर्युक्त प्रतियोगिता में महिलाओं की किस टीम ने चैंपियनशिप जीती ?

ग. इस वर्ष संतोष ट्राफी राष्ट्रीय फुटबाल चैंपियनशिप किसने जीती ?

१०. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिये और बताइए यह क्या है—





कहानी

पुनश्च

• श्रीनिवास वत्स

थोड़ी-थोड़ी देर बाद रामदास उस कागज को अपने हैंडबैग से निकालकर पढ़ने लगता । वही पंक्तियां पुनः-पुनः पढ़ने में उसे सुखद अनुभूति हो रही थी ।

गाड़ी अपनी गति से चली जा रही थी । पर रामदास के विचारों की दौड़ उससे कहीं आगे थी । सीट के सहारे बैठा वह अपने भावी के स्वप्नों का ताना-बाना बुनने लगा । उस आठ साल क्लर्की में काट दिये । क्लर्क जीवन भी क्या जीवन था । सात सौ सत्तर तनख्वाह ! न जी पाते, न मर पाते । सारा दफ़्तर में अफसरों की डांट-फटकार, शाम आने पर खर्चे को लेकर पत्नी से झिक-झि

गांव में पिताजी का उलाहना अलग से मिलता । कहते, "तुम्हें नौकरी में इसलि लगवाया था कि कुछ मदद करोगे । पर तुम्हारा अपना ही गुजर नहीं हो पा रहा तो नौकरी का क्या फायदा ? भेड़-बकरी बेच पांच हजार जोड़े थे । वे भी तुम्हारी नौकरी खातिर स्वाहा कर दिये । इससे अच्छा तो मजदूरी कर लेते या पान-सिगरेट बेचते तो कम-से-कम बची रहती ।"

आज कागज पढ़ने से प्रसन्नता का जो फव्वारा रामदास के मन से फूट रहा था उ



क उसके चेहरे से देखी जा सकती थी । न से अधिक खुशी उसे इस बात की थी ब इस गले-सड़े माहौल से निकलकर शहर चला जाएगा । वहां बच्चे भी अच्छे में पढ़ सकेंगे । पत्नी की शिकायतें भी ो जाएंगी । फिर अफसर बनने पर स्टेटस ़ ही जाता है ।

हन छबीली की शिकायत थी कि पिछली पर उसे सिर्फ ग्यारह रुपये मिले थे । स सोचने लगा, 'जब उसकी बहन को लेगा कि उसका भाई अफसर हो गया है यं राखी बांधने आएगी । ठीक है इस बार क सौ एक रुपये और एक साड़ी लेकर दे दूंगा ।'

उसने बैग से कागज निकाला और फिर पढ़ने लगा—'हैविंग बीन सेलेक्टिड फोर दि पोस्ट ऑफ एस. ओ., मि. रामदास इज डाइरेक्टिड टू ज्वाइन . . . ।'

वह दफ़्तर में अपने अफसरों को देखा करता । कितने रौब से रहते थे । दिनभर चाय, टेलीफोन या गप्प ! लगता, उनके पास कोई काम ही नहीं होता था । दरवाजे के बाहर चपरासी बैठता । जब जी चाहा कॉलबेल बजायी और चपरासी हाजिर । कोई अंदर आएगा तो भी पूछकर ।

सीट पर बैठे-बैठे उसे लगा, उसका आकार दो गुना हो गया है । कल तक क्लर्क था तो एक कमीज तीन दिन चल जाती थी पर अब तो हर रोज धुलकर प्रैस हुआ करेगी । उसे टाई लगाने का चाव था । पर यह भावना क्लर्की ने दबा रखी थी । जब कभी लगायी भी तो स्वयं ही लगता जैसे सब कह रहे हों, 'टाई तो ऐसे लगायी है जैसे अफसर लगा हो । आखिर है तो मामूली क्लर्क ही ।' और अगले पल स्वयं ही उतार देता ।

अबकी बार गांव भी वह सूट पहनकर जाएगा । गली में लोग देखेंगे तो अपने आप समझ जाएंगे कि कोई बड़ा अफसर है ।

सुखद विचारों में खोये रामदास को पता ही नहीं चला कब स्टेशन आ गया । वह तो दूसरे

रामदास एक ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ क्लर्क, जिसने अफसर बन जाने पर भी अपने जीवन-मूल्यों से कोई समझौता नहीं किया । लेकिन अंततः क्या हुआ ?

यात्री उठकर चलने लगे तो उसने भी अपना हैंड बैग उठाया और धीरे-से आगे बढ़ा। सवारियों के उतरने-चढ़ने में धक्का-मुक्की चल रही थी। कल तक रामदास भीड़ में सबसे आगे होता था क्योंकि उसे घर पहुंचने की जल्दी रहती थी। लेकिन आज वह स्वयं को बड़ा आदमी मान बैठा और सोचने लगा, 'भीड़-भड़क्के में धक्का-मुक्की करूं यह मुझे शोभा नहीं देता। मैं जिम्मेदार व्यक्ति हूं। मुझे 'क्यू' में उतरना चाहिए।' तभी उसे खयाल आया कि 'क्यू' के चक्कर में तो गाड़ी चल पड़ेगी। बिना ज्यादा सोचे-विचारे रामदास धीरे से सभ्यतापूर्वक प्लेटफार्म पर उतर गया।

आज उसकी चाल-ढाल में काफी परिवर्तन आ चुका था। हर रोज साइकल स्टेंड से साइकल उठाते समय दैनिक यात्री एक-दूसरे की साइकलों को धक्का देने में नहीं हिचकिचाते थे। पर रामदास काफी देर इस इंतजार में खड़ा रहा कि अन्य सवारियां चली जाएं और कोई उसे साइकल पर जाते हुए न देखे। वैसे उसे स्कूटर या रिक्शा में जाना चाहिए क्योंकि साइकल तो छोटे-मोटे कर्मचारियों का वाहन है। फिर थोड़ा-सा लजाते हुए उसने साइकल निकाल ही ली।

रास्ते में ध्यान आया, बच्चों के लिये मिठाई या फल तो लिये ही नहीं। खुशखबरी सुनाऊंगा तो सभी मिठाई मांगेंगे। जेब में उन्नीस रुपये थे। रामदास ने सोचा, 'अब तो पैसे ही पैसे मिलेंगे। क्यों न इन पैसों से फल व मिठाई ले लूं।'

उसने सड़क के किनारे खड़े होकर एक बार पुनः कागज निकाला और स्ट्रीट लैंप के नीचे उसे पढ़ने लगा। अचानक सोते से जागता रामदास आगे बढ़ गया। उसने सोचा, 'कल नये ऑफिस में ज्वाइन करना है अतः जल्दी उठकर तैयार होना पड़ेगा। दिल्ली तक जाने तीन घंटे लग जाएंगे। 'फस्ट इम्प्रैशन इज ला इम्प्रैशन।' पहले ही दिन लेट गया तो मातह कर्मचारी क्या समझेंगे। मुझे समय से पूर्व कार्यालय पहुंच जाना चाहिए। नयी बनियान रखी है पर जुराबें यही धुलवानी पड़ेंगी। यह कश्यप भी है बड़ा गुरु। जिस दिन से नियुक्ति पत्र आया है मैं 'रिलीव' करने के लिए उसे बार-बार कहता रहा पर यह है कि आज भी बड़ी मुश्किल से 'रिलीव' करवा पाया है। ज तक कुछ मिल न जाए काम करते ही नहीं। अब नये दफ़्तर में मैं देखूंगा कि कैसे कोई कि से कुछ ले पाता है। मैं दिखा दूंगा कि ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा हिंदुस्तान से मिटी नहीं है।'

× × ×

पदभार ग्रहण करने के सप्ताह बाद ही रामदास अपने नये कार्यालय में चर्चित हो गया। सैकड़ों बिलों को उसने ऑब्जेक्शन लगाकर लौटा दिया। लगा, जैसे चलती धा रुक गयी हो। हर किसी को अपनी जेब खाली-खाली-सी लगने लगी। चपरासी भी जहां एक फाइल को साहब के कमरे से निकालकर बाबू की मेज पर रखने का कमीश लेता था, वहां ऐसी स्थिति स्वाभाविक थी। किसी का हिस्सा बंधा होता था। ठेकेदार बि पास करवाने के इस गुरुमंत्र को जानते थे इसीलिए बिल के साथ-साथ कमीशन भी पहुंचा देते।

रामदास के आने से पूर्व सब कार्य सामान्य से चल रहा था । पर उसने तो एक-एक को ऐसे देखना शुरू कर दिया जैसे परीक्षा णित के प्रश्न ।

बिल रुके, कमीशन रुका । नीचे से ऊपर हाय-तौबा ! पेमेंट रुकने से ठेकेदार अलग रेशान ।

कोहली बड़बड़ाता हुआ रामदास के कमरे कला । चौहान ने देखा तो जले पर नमक क दिया, 'अरे कोहली ! कैसी कट रही है साहब के साथ ?'

'अरे काहे का साहब है, कंगला कहीं का । सर बन गया तो क्या आखिर औकात तो है ।'

'सुना है सिर्फ पांच बिल निकल पाये हैं । के लगभग रुके पड़े हैं ।'

'रुके रहें, अपना क्या । जब ऊपर से डंडा गा तो भागता फिरेगा । हम कौन-सा ले खाते हैं । पहले ऊपरवालों का हिस्सा ता है तब कहीं कोई हमें पूछता है ।'

'वैसे है बड़ा ईमानदार यार ! किस महकमे गया है ?'

'अरे यहां बड़े-बड़े धर्मराज आकर चले ।'

इसे अपनी भाषा में समझा दो कि बिल पास किये जाते हैं । बेचारा नादान लगता कुछ समझाओगे नहीं तो सीखेगा कैसे ? पहले कहां काम करता था ?'

बंकापुर में क्लर्क था । यू. पी. एस. सी. से एस. ओ. बनकर आया है ।'

क्लर्क से अफसर बन गया ! जरूर कोई ड़म होगी ।'



'खैर यह तो बताओ, वैसे इस महीने कितना कमा लिया ?'

'अरे कहां यार ! सत्तर लाख के बिल रुके पड़े हैं । सप्लायर बिल पास हुए बिना एक धेला नहीं देते ।'

'मैनेजर गुप्ता क्या कहते हैं ?'

'वे क्या कहेंगे ! उनके नीचे ग्यारह एस. ओ. हैं । अगर एक ईमानदारी का बुरका पहन भी ले तो क्या फर्क पड़ता है ?'

रामदास दरवाजा खोलकर बाहर निकला । उसने इनकी बात नहीं सुनी थी । गैलरी में खड़े कोहली और चौहान उसे देखकर एक तरफ चले गये । रामदास ने सोचा, जरूर ये उसके सम्मानार्थ रास्ते से हट गये हैं । अपनी नयी पतलून ठीक करता हुआ वह बाथरूम में घुस गया ।

अगले दिन यह मामला कर्मचारी यूनियन में उठाया गया । सबने नये एस. ओ. की 'वर्क एफीसेंसी' पर प्रश्नचिह्न लगाया ।

'इससे तो पूरे दफ़्तर का नाम बदनाम हो जाएगा । ठेकेदार तो वैसे ही बहुत पहुंचवाले हैं । इनको पैसे की क्या परवाह । लज्जाराम एंड

संस तो फूड एंड सप्लाई मिनिस्टर का सादू है । पूरे हैड ऑफिस को नीलाम करवा देगा ।'

'ठेकेदारों से बिगाड़कर तो एक दिन भी काम नहीं चल सकता ।'

'नया माल सप्लाई नहीं होगा तो डिपो होल्डरों को कौन क्या जवाब देगा ? उन्हें हमारी ईमानदारी नहीं माल चाहिए ।'

'नागरिकों की अलग यूनियन है । उन्हें ज्यादा धीरज नहीं । युवा कस्टमर्ज एसोसिएशन के महासचिव ने पिछले महीने चेतावनी दी थी कि माल की घटिया क्वालिटी तथा अनियमित आपूर्ति के खिलाफ वे मुख्य कार्यालय के सामने धरना देंगे ।'

'देने दो ! अच्छा है । नये अफसर को आंख हो जाएंगी ।'

'यार, कहो तो किसी तांत्रिक से चक्कर चलवा दूं । इसकी मति ही फिर जाएगी ।' एक ने सुझाव दिया, पर किसी ने उस पर गौर नहीं किया ।

मीटिंग के बाद रामदास को धमकाने के लिए यूनियन का नेता उसके कमरे में घुस गया । उसने नेताई अंदाज एवं व्यंग्यात्मक शैली में बात की ।

'देखो सर ! इसका सबसे ज्यादा असर आप पर ही पड़ेगा । यहां के हर कर्मचारी को इतना अतिरिक्त पैसा वार्षिक मिलता है जितना आपने अपनी आठ साल की पुरानी नौकरी में कमाया होगा ।'

पुरानी नौकरी शब्द पर बाकी लोग एक साथ हंस पड़े ।

वह पुनः बोला, 'आपको जैसे-तैसे यह चांस मिला है इसे आप क्यों गवां रहे हैं ?'

अपने कमरे में एक साथ इतने आदमि[यों] को अभद्र एवं अपमानजनक व्यवहार करते देख रामदास का धैर्य जवाब दे गया । वह चिल्लाकर कहना चाहता था, 'गेट आऊट' परंतु उसने इतना ही कहा, 'मुझे बेईमान अफसरी की अपेक्षा ईमानदार क्लर्की पर ग[र्व] है ।'

दाल गलती न देख लगभग चुनौती के अंदाज में यूनियन के नेता बाहर आ गये ।

रामदास ने सुना दरवाजे के पास खड़े कु[छ] लोग बातें कर रहे थे ।

रामदास को लगा, उनके पूरे वार्तालाप [में] काम की बात कम, उसकी निजी जिंदगी प[र] कटाक्ष अधिक थे । परिस्थितियों से उसमें अद्भुत आत्मबल जाग गया । उसने ठान [लिया] वह टूट जाएगा पर झुकेगा नहीं ।

गुप्ताजी ने उसे एक बार फिर समझाया, 'लज्जाराम एंड संस के बिल नहीं रुकने चाहिए ।'

रामदास को भनक लग गयी थी कि ह[र] बिल पर दो प्रतिशत कमीशन आता है जि[से] सभी आपस में बांट लेते हैं ।'

उसने गुप्ताजी को कह दिया, 'सर ! मैं गलत काम नहीं कर सकता । कल को क[ोई] जांच-पड़ताल हो जाए तो सारा नजला मुझ[पर] गिरेगा । आप लिखित में दो मैं क्लीयर क[र दूं]हूं ।'

गुप्ताजी चुप रहे । उन्होंने सोचा लज्जार[ाम] एंड संस के बिल रुकेंगे तो उनसे साफ क[ह] देंगे । मिनिस्टर साहब जैसा आदेश देंगे ह[में] मानना ही पड़ेगा ।

× × ×

शनिवार को जब रामदास घर लौटा तो बंतो जैसे उसी की इंतजार में बैठी थी । बोली, "सारे महल्ले से बधाइयां मिल रही हैं । सामनेवाली किरायेदारिन बता रही थी कि उसके चाचा का लड़का भी इसी महकमे में है । उसने दो साल में मकान बनवा लिया और एक लड़की की शादी कर दी । अच्छी-खासी कमाई होती है उस दफ़्तर में ।"



रामदास को लगा कोई उसके सिर पर हथौड़े चला रहा है । जीवन के प्रति लोगों का दृष्टिकोण केवल आर्थिक है, पर इसका तात्पर्य यह तो नहीं कि हम अर्थ के लिए जीवन मूल्यों की बलि चढ़ा दें । वह अनमने चित्त से बंतो की बात सुनता रहा ।

'मकान मालिक पूछ रहा था, "क्या तुम सब अब दिल्ली रहा करोगे ? मैंने हां कह दी । मकान पूछने कोई नया किरायेदार आया होगा । हम खाली करेंगे तो इसे फायदा ही है । अब यह कमरा तीन सौ से कम में नहीं चढ़ेगा ।"

रामदास ने देखा, तीनों बच्चे नये कपड़े पहने हुए थे । नहा-धोकर बढ़िया कपड़ों में सजे उसके बच्चे आज किसी समृद्ध घर के बालक लग रहे थे ।

बंतो बोली, "मैं हफ़्तेभर से इन्हें साफ-सुथरे कपड़े पहना रही हूं । तुम्हीं ने कहा था कि बच्चों को ऐसे माहौल में ढालना शुरू कर दो ताकि वहां अफसरों की कॉलोनी में घुल-मिल सकें । अब तो छुटकी के नये फ्रॉक लाने होंगे । बबलू की नीली पैंट भी घिस-सी गयी है । वैसे तीनों बच्चों के दो-दो सूट और सिलवा दो ।"

रामदास चुपचाप बंतो की बात सुनता जा रहा था । पर दफ़्तर में अस्सी बिलों की पेमेंट और होनी है, इन विचारों ने उसके मस्तिष्क को कुछ बोझिल-सा कर दिया ।

उसने कहा—"मैंने दिल्ली मकान देख लिया है । आठ सौ रुपये किराया देना होगा । तुम सामान बांध लेना ।"

"आठ सौ रुपये लगेंगे ।" बंतो ने विस्मय से पूछा ।

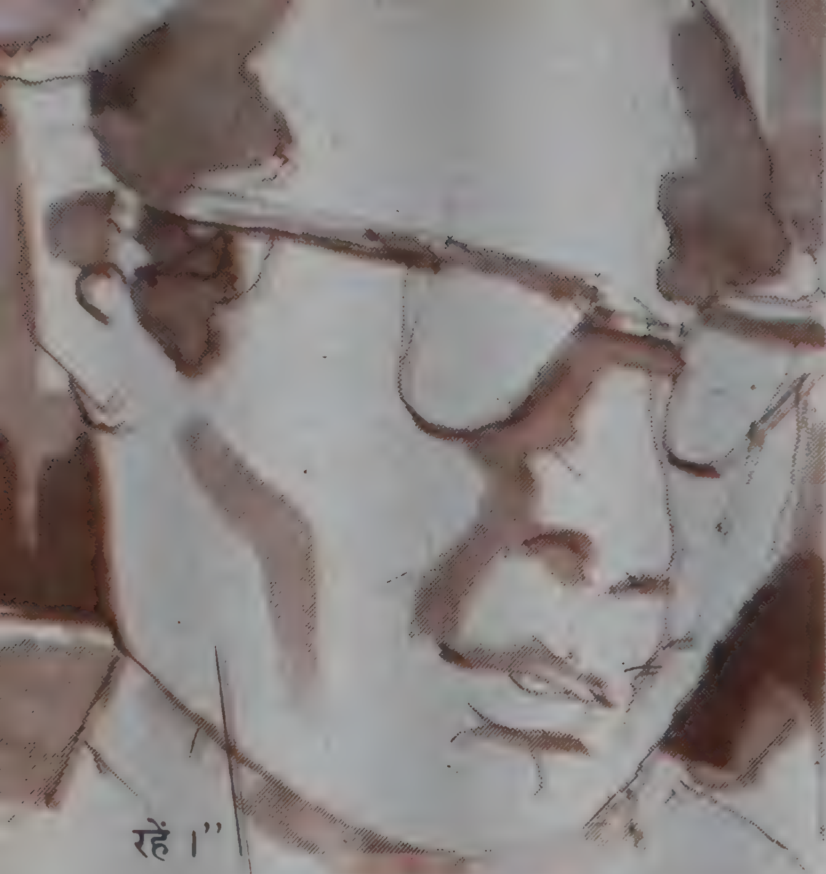
"तो क्या मुफ़्त में रहोगी ? दिल्ली, दिल्ली है । फिर नौकरी के हिसाब से स्टेटस तो बनाना ही पड़ेगा ।"

"सो तो सही है । पर एक बात कहूं ।"

"बोलो ।"

"पता नहीं क्यों यह मकान छोड़ते समय दुःख-सा हो रहा है । छह सालों में यहां मन रम गया था । फिर सोचती हूं, सौ रुपये का मकान छोड़कर आठ सौ रुपये देने होंगे । हर महीने सात सौ रुपये ज्यादा । सात सौ हर महीने बचाएं तो साल में नौ हजार हो जाएं । गांव में बाबूजी नौ हजार रुपये देखकर फूले न समाते ।"

"घुट-घुट कर आठ साल काट दिये । अब भगवान ने सुनी है तो क्यों न खुले वातावरण में



रहें ।''

रामदास ने पानी पिया और तौलिया उठाकर नहाने की तैयारी करने लगा । सफर से काफी थक गया था फिर पसीना भी गरमी के कारण बहुत आ रहा था । पंखा पूरी गति पर भी नाममात्र की हवा दे तो बेचारी बंतो क्या करे ? छुटकी फर्श पर सो गयी थी । उसकी फ्रॉक पसीने से तर बतर हो गयी थी ।

रामदास के मस्तिष्क में अभी भी दफ़्तर का चित्र घूम रहा था । गुप्ताजी ने कहा था कि ठेकेदारों और सप्लायर्ज के बिल तुरंत क्लीयर कर दो । पर यह तो आंखों देखी मक्खी निगलनेवाली बात थी । माल की क्वालिटी पर जगह-जगह लाल निशान लगे थे । सीमेंट की जगह आधी रेत । उसमें भी दस-दस किलो कम । अनाज, चावल, कपड़ा, तेल हर चीजों में घोटाला ।

उसे लगा, यह तो वही पुराने दफ़्तर वाली बात हो गयी । उसका अंतर्मन भभक उठा । कुछ भी हो, वह इस माहौल से टकराएगा ।

× × ×

दो दिन बाद जब रामदास सपरिवार दिल्ली जाने लगा तो पास-पड़ौस के कई व्यक्ति उससे मिलने आये थे । मकान मालिक खुश था । अच्छे किरायेदार के रूप में छह साल निकल गये । नया किरायेदार आने से किराया भी काफी बढ़ जाएगा ।

दिल्ली का मकान महंगा अवश्य था पर उसकी सुख-सुविधा इससे कहीं ज्यादा थी ।

पिछली नौकरी से रामदास के पास तीन हजार रुपये बचे थे । इस समय वे सब काम आ गये । रामदास दिल से स्वयं को बड़ा आदमी मानने लगा था और उसका प्रयास था कि उसके परिवार का व्यवहार भी मूलतः अफसरों-जैसा हो जाए ।

रामदास दोनों बड़े बच्चों को दिल्ली के किसी पब्लिक स्कूल में दाखिल करवाना चाहता था । पर वह इसमें सफल न हो सका । सैशन के बीच में भरती कहां ? प्रारंभ में भी हजारों रुपये डोनेशन देना पड़ता है । हारकर उसने दोनों को सरकारी स्कूल में दाखिल करा दिया । छुटकी को वह पड़ौस के छोटे-से स्कूल में भेजने लगा ।

× × ×

दफ़्तर में अजीब तरह की चुप्पी का वातावरण बन गया था । दो-तीन सप्ताह चलनेवाले विद्रोह की तपन दब-सी गयी । अब रामदास को कोई कुछ नहीं कहता था । सामान्यतः जितने बिल आते रामदास देख लेता । कोई किसी की सिफारिश या शिकायत लेकर उसके कमरे में नहीं आता था । हर कर्मचारी जैसे उसके साये से दूर भागने लगा । दूसरे एस. ओ. भी उससे मात्र औपचारिक दुआ-सलाम ही करते ।

यह सब देख रामदास को लगा, जैसे वह कोई असामाजिक तत्व बनकर रह गया है ।

दफ़्तर के अकेलेपन ने उसे घर के सदस्यों से काटकर अलग कर दिया था ।

दिल्ली आने या समृद्ध लोगों के मध्य रहने का उसका मोह शनैः-शनैः भंग होने लगा । जिस कॉलोनी में रामदास ने मकान लिया था वहां की कोई औरत कभी उनके घर नहीं आयी । सब अपने आप में मस्त । कोई किसी से बात नहीं करता था । ऐसे माहौल में बंतो का दम घुटने लगा ।

रामदास को भी भले ही वहां वेतन कम मिलता था पर मानसिक तनाव इतना न था । बंकापुर से नूनावास तक लगभग आधे घंटे का सफर होता था । इस बीच बीसियों सहयात्री रोज मिलते । नयी-नयी बातें सुनता तो सफर की थकान कभी अनुभव ही नहीं हुई । जबकि यहां तो बिना सफर थकान अनुभव कर रहा था ।

उसने निष्कर्ष निकाला, समाज भले ही कैसा हो पर हमें समय और समाज के अनुसार स्वयं को ढाल लेना चाहिए । दूसरे पल विचार आया, 'मैं अपने आदर्शों की बलि नहीं दूंगा ।'

पंद्रह दिन के दिल्ली निवास ने पूरे परिवार को डांवाडोल कर दिया था । छुटकी का मन यहां से भर गया । वह अकसर पूछती, "मां ! हम छज्जेवाले घर में कब चलेंगे ?"

नूनावासवाले मकान को वह छज्जेवाला घर कहती थी ।

भारी मन से रामदास दफ़्तर जाकर सीधा अपने कमरे में बैठ जाता । एक दिन विनायक बाबू ने उसे बताया कि लज्जाराम एंड संस के



यहां से टेलीफोन आया था । यहां विनायक ही ऐसा व्यक्ति था जिससे रामदास के विचार मिलते थे । उसने कहा—"आप थे नहीं । बाद में गुप्ताजी से उनकी बातचीत हुई थी ।"

रामदास को लगा, दफ़्तर के माहौल की चुप्पी तूफान से पूर्व की खामोशी है । दो-तीन दिन से हर कर्मचारी उसे तीखी-पैनी नजरों से देख रहा था । परंतु कहा किसी ने कुछ नहीं ।

अगले दिन गुप्ताजी ने रामदास को अपने कमरे में बुलाकर एक कागज थमा दिया । उसने वहीं बैठे-बैठे पूरा कागज पढ़ा । पढ़ते ही उसके पैर जवाब दे गये । कुरसी से उठना असंभव-सा लगने लगा ।

बिना कोई शब्द कहे रामदास अपने कमरे में आ गया । उसने कागज एक बार फिर पढ़ा । नये विभाग ने उसे इस पद के अयोग्य घोषित कर दिया था ।

कागज में यह भी लिखा था कि रामदास पुनः अपने पुराने विभाग में पूर्व पद पर कार्य करे । इस आशय की एक प्रति उसके पुराने विभाग को डाक द्वारा भेज दी गयी थी ।

विनायक ने सुना तो कोर्ट केस की सलाह

दी । रामदास ने पक्का निर्णय कर लिया कि वह कोर्ट में जाएगा और न्याय पाकर रहेगा । इन लोगों को दिखा देगा कि ईमानदारी की जड़ें कितनी गहरी होती हैं ।

रामदास बहुत बेचैनी अनुभव कर रहा था । उसके स्वप्निल महल एक-एक कर ढहने लगे ।

घर आकर वह चुपचाप पलंग पर लेट गया । बंतो ने उसे इतना उदास तो पहले कभी न देखा था । बार-बार के आग्रह पर जब रामदास ने उसे नयी नौकरी छूटने की बात बतायी तो बंतो सुन्न रह गयी । पर यह सुनकर कि अब वह फिर वही पुरानी नौकरी करेगा, उसे कुछ राहत मिली । पति को सांत्वना देते हुए उसने कहा—''भूल जाओ इन दो महीनों को । यह तो कोई बुरी ग्रहदशा थी जो टल गयी ।''

रामदास चुपचाप सुनता रहा । वह किसी अच्छे वकील के बारे में सोच रहा था । बच्चे स्कूल से आये । थोड़ी देर बाद उन्हें पता चल गया कि सब वापस नूनावास जाएंगे ।

रामदास ने देखा, बच्चों के चेहरे से दुख की बजाय प्रसन्नता झलक रही थी । बंतो बोली—''क्यों वकील के चक्कर में पड़ते हो ? हमारे पास इतना पैसा कहां ? मेरी मानो तो बंकापुरवाली नौकरी सही है ।''

रामदास ने सोचा जब वहां जाने में सब खुश हैं तो मैं वापस इस नरक में आने के लिए क्यों कोर्ट के चक्कर में पड़ूं ।

—शास्त्री सदन, ३९२ बी,
इंदिरा कॉलोनी,
रोहतक (हरियाणा) ।

गर्भस्थ शिशु को विकृतियों से बचाने वाला विटामिन

महिलाएं गर्भावस्था से पूर्व यदि फॉलिक एसिडयुक्त विटामिन लें तो शिशु को शारीरिक विकृतियों से बचाया जा सकता है । इससे शिशु को गर्भावस्था के दौरान न्यूरल ट्यूब में होने वाले दोषों से भी बचाया जा सकता है । न्यूरल ट्यूब वास्तव में रीढ़ की हड्डी के विकास की पहली अवस्था है । अतः इसमें दोष रहने पर बच्चे के शरीर में गंभीर विकृतियां आ जाती हैं । इन विकृतियों में हाथ-पांव का टेढ़ा होना और पूर्ण मानसिक विकास का न होना शामिल है ।

फॉलिक एसिड विटामिन के संबंध में यह निष्कर्ष लंदन के सेंट बारथोलोम्यू अस्पताल की देखरेख में सात देशों में आयोजित परीक्षणों से निकाला है । पहले मात्र इतना पता था कि गर्भावस्था के दौरान विटामिनों को लेने से शिशु को शारीरिक विकृतियों से बचाया जा सकता है । लेकिन वह कौन सा आवश्यक विटामिन है, इस रहस्य का पता अब चला है कि यह फॉलिक एसिड है । फॉलिक एसिड का सेवन करने वाली करीब ७२ प्रतिशत महिलाओं को इस दोष से मुक्त पाया गया है । इसलिए चिकित्सकों का कहना है कि वह गर्भधारण के दौरान फॉलिक एसिड अवश्य लें । कृत्रिम तौर पर लेने के अलावा फॉलिक एसिड का मुख्य स्रोत हरी सब्जियां हैं ।

निष्कासन

तुम्हारे वंश से निष्कासित
कभी-न-कभी
आ विराजूंगी तुम्हारे होंठों पर

न सही सूरत
अपनी सीरत से लबालब कर दूंगी

घोर सूखे में
तुम्हारे नयन कोरों से बहूंगी
गंगी-सी
तारूंगी तुम्हें
पुण्यों से पापों से
तन-मन के तापों से

बिरचूंगी
तुम्हारे आंगन के कोने-कोने
दीपमाला-सी

महकूंगी
बगिया में
रसना रुसवाई में
अन्नूर्णा-सी

बार-बार जन्म लेती रहूंगी
तुम्हारे ही अंतर में
कर-बद्ध प्रार्थना-सी
यज्ञवेदी की परिक्रमा-सी

हे मेरे जनक
मैं तुम्हारी शांत-सुता
मैं तुम्हारी मौन-सुता ।

• राजबुद्धिराजा
जी-२३३, प्रीत विहार
दिल्ली-९२

मेरी लेखनी

आज मेरी लेखनी की आहट सुनकर
अक्षरों ने अपने बंद दरवाजे खोल दिये—
आज मेरी लेखनी के प्रेम में
उन्होंने सदियों के बंधन खोल दिये
आज मेरी लेखनी के लिए
अक्षरों ने अपने अक्ष बिछा दिये . . .
आज हर एक अक्षर के बदन पर
मेरी लेखनी ने अपने होंठ रख दिये—
आज हर अक्षर के विरह को
प्रेम-मिलन के क्षण दे दिये
पुरानी यादों की स्याही से
आज उनके नाम लिख दिये
हर एक अक्षर को फिर से
आज उसके प्रेम-स्वर दे दिये,
आज अक्षरों की हर धड़कन को
जीवन के लिए तन दे दिये
आज मेरी लेखनी ने उनको
हर एक मन के घर दे दिये
अक्षर से अक्षर की जुदाई को
आज मिलन के गीत दे दिये
अपने इस प्रेम-मिलन से उन्हें
जीवन के नये सफर दे दिये
मेरी लेखनी ने अपने संबंधों को
आज उनके नाम दे दिये
आज मेरी लेखनी ने अक्षरों को
फिर से नये घर दे दिये
अक्षर से अक्षर की जुदाई को
आज मिलन के गीत दे दिये . . .

• प्रदीप अंशु
'कल्पतरु
डी-१८, सैक्टर-५६,
नोएडा-२०१३०१





अभयारण्य : प्रकृति प्रेम

प्रकृति और जीवन एक-दूसरे के पर्याय हैं । प्रकृति की एक अनमोल विरासत विविध वन्य जीव हैं । दुर्भाग्य से आज मनुष्य न केवल प्रकृति से दूर होता जा रहा है, बल्कि वह प्रकृति को अपने हाथों नष्ट कर रहा है । और प्रकृति का विनाश जीवन का विनाश है । जीवन, जिसकी परिधि में हम स्वयं हैं और हैं विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु । आज विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणी लुप्त होते जा रहे हैं । उनको संरक्षित करने की ओर कुछ वर्षों से दुनियाभर में प्रयास किये गये हैं । ऐसे प्रयासों में अभयारण्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं । ये अभयारण्य जहां प्रकृति के अनोखे संसार, अन्य प्राणियों की दुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण-संवर्धन में अपनी सार्थक भूमिका निभा रहे हैं, वहीं पर्यटकों के मनोरंजन, ज्ञान-वर्द्धन और उनके भीतर पर्यावरण-चेतना का विकास करने में भी महत्त्वपूर्ण हैं ।

हमारे देश में कांजीरंगा, मानस, सुंदरवन, राजाजी, कार्बेट, बंधवगढ़, कान्हा, बंदीपुर, मुदमलै, भरतपुर, रणथंभौर, सारिस्का इत्यादि प्रसिद्ध राष्ट्रीय अभयारण्य हैं । इनमें प्रायः अक्तूबर से अप्रैल-मई तक पर्यटक मजे से घूम सकते हैं ।

वन्यप्राणियों की दुर्लभ प्रजातियां

उत्तर प्रदेश का पर्वतीय भूभाग-उत्तराखंड विभिन्न प्रकार के वनस्पति और वनों से समृद्ध है । यहां के सुखद मौसम और घने वनों के कारण यहां विभिन्न प्रकार के जंगली जीव भी पाये जाते हैं । निचली पर्वतश्रृंखलाओं पर बाघ, तेंदुए, हाथी, चितकबरे हरिण, बारहसिंहा, जंगली सुअर इत्यादि मिलते हैं, तो बर्फ से ढंकी पर्वतश्रृंखलाओं पर वन्य प्राणियों की दुर्लभ प्रजातियां पायी जाती हैं । जैसे—कस्तूरी मृग, स्नोलेपर्ड, भूरा भालू, हिमालयी काला भालू, भरताल और तहर विभिन्न रंगों के तथा विभिन्न प्रजातियों के पक्षी निचले पर्वतों के बाशिंदे हैं । उनमें मुख्य हैं ग्रेट इंडियन हार्नबिल, हूपो, भारतीय ट्रीपी, विशाल पाइड बैगटेल, कटफोड़ा





र्यटकों के स्वर्ग

□ लेख एवं छाया : उषा खुराना

इत्यादि । जबकि ऊंचाई पर मिलने वाली आकर्षक पक्षी प्रजातियां हैं लाल चोंचवाली नीली मैगपाई, सुनहरी ओरियोल, विशाल हरी बारबेट, पैराडाइस फ्लाई कैचर आदि । इसी तरह १५०० मीटर से अधिक ऊंचाई पर हिमालयन व्हिसलिंग थ्रश, ब्लू राक थ्रश, सफेद टोपी वाली रेडस्टार्ट आदि पक्षी पाये जाते हैं । बर्फ तीतर, हिमालयी बर्फ मुर्गा हिमालय के अद्‌भुत पक्षी हैं जो यहां दिखायी देते हैं । इनमें सर्वाधिक आकर्षक है मोनाल पेजेंट जो प्रायः ३००० मीटर से अधिक ऊंचाई पर मिलता है । आज यह पक्षी बहुत कम होता जा रहा है ।

मध्य हिमालय के इस स्वर्गिक आंगन में पर्यटक प्रायः तीर्थयात्रा के लिए निकलते हैं, या फिर पथारोही आते हैं । और पर्वतारोहण के शौकीन । कम ही पर्यटक अभयारण्यों की ओर निकल पाते हैं । यदि इन अभयारण्यों की जानकारी अधिकाधिक पर्यटकों को हो जाए, तो इनकी संख्या में आशातीत वृद्धि हो सकती है ।

कार्बेट नेशनल पार्क

सबसे पहले हम चलकर देखते हैं कार्बेट नेशनल पार्क । सुप्रसिद्ध प्रकृति प्रेमी और शिकारी जिम कार्बेट के नाम से जुड़ा यह राष्ट्रीय उद्यान शिवालिक पर्वत श्रृंखला के निचले छोर के साथ-साथ रामनगर एवं नैनीताल जनपदों में फैला हुआ है । इसका क्षेत्रफल है लगभग २५० वर्ग कि.मी. । इस पार्क में बाघ, जंगली हाथी, भालू, सांभर, चीतल, हरिण, जंगली सुअर तथा विभिन्न तरह के सुंदरतम पक्षियों को निकट से देखा जा सकता है ।

इस कार्बेट नेशनल पार्क में ठहरने की सुविधा मुख्य रूप से ढिकाला में उपलब्ध है । फोरेस्ट रेस्ट हाउस ढिकाला, लाग हट, टूरिस्ट हट तथा स्विस टैंट के अतिरिक्त सरपदूली, बिजरानी धुराल एवं कांडा में भी फारैस्ट रेस्ट हाउस बने हैं । लेकिन इन सब में आवास के लिए पूर्व अनुमति लेनी होती है । आरक्षण के लिए फील्ड डाइरेक्टर, प्रोजेक्ट डाइरेक्टर,

कार्बेट नेशनल पार्क, रामनगर (जिला नैनीताल) से संपर्क करना होता है। अभयारण्य में सुरक्षित भ्रमण के लिए पर्यटकों को चाहिए कि वे हाथी पर बैठकर घूमें। सामान्य दरों पर हाथी की सवारी की व्यवस्था यहां हो जाती है।

रामनगर के लिए दिल्ली से सीधी बसें उपलब्ध हैं। रेल मार्ग से मुरादाबाद तक भी आया जा सकता है। यहां से रामनगर कुछ ही घंटों का सफर है। पर्यटक निजी वाहनों से भी जा सकते हैं।

राजाजी राष्ट्रीय अभयारण्य

इसी क्रम में दर्शनीय है राजाजी राष्ट्रीय अभयारण्य। उत्तर प्रदेश सरकार ने तीन अभयारण्यों को मिलाकर प्रदेश के सबसे बड़े अभयारण्य राजाजी राष्ट्रीय पार्क का निर्माण किया है। ये तीन अभयारण्य हैं—पोला, मोतीचूर और राजाजी पार्क। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की पहल पर इस अभयारण्य का नाम भारत के अंतिम गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचारी के नाम पर रखा गया है।

राजाजी राष्ट्रीय पार्क एशियाई हाथियों के निवास की उत्तर-पश्चिम दिशा की अंतिम सीमा है। पोला, मोतीचूर और राजाजी पार्क को एक जगह मिला देने से ८२०.४२ वर्ग कि.मी. का यह क्षेत्र यहां के हाथियों के संरक्षण-संवर्द्धन का विशेष पार्क बन गया है। इस तरह राजाजी राष्ट्रीय अभयारण्य के तीन हिस्से हैं—मोतीचूर (शिवालिक पर्वत मालाओं की उत्तरी ढलान पर), राजाजी (दक्षिणी ढलान पर) और चिल्ला, जो गंगा के दूसरी तरफ है।

हरिद्वार और ऋषिकेश के निकट स्थित यह विस्तीर्ण अभयारण्य हिमालय की तराई, गंगा के मैदान और शिवालिक की श्रेणियों के बीच मिलनेवाले अनेक प्रकार के वन, तरह-तरह की वनस्पतियों से भरपूर हैं। यही कारण है कि लगभग १५० हाथियों के अतिरिक्त यह अभयारण्य अनेक वन्य प्राणियों के लिए एक आदर्श चारागाह है। इस अभयारण्य में स्तनपायी जीवों की लगभग २५ और पक्षियों की लगभग १७५ प्रजातियां हैं। इनमें हाथी, हिरण, तेंदुए, सांभर, जंगली सुअर, नीलगाय आसानी से देखे जा सकते हैं। चीला, मोहंद कांसरो, धौलखंड, मोतीचूर कोनाई ऐसे स्थान

आज विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणी लुप्त होते जा रहे हैं। उनको संरक्षित करने की ओर कुछ वर्षों से दुनियाभर में प्रयास किये गये हैं। ऐसे प्रयासों में अभयारण्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। ये अभयारण्य जहां प्रकृति के अनोखे संसार, अन्य प्राणियों की दुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण-संवर्धन में अपनी सार्थक भूमिका निभा रहे हैं, वहीं पर्यटकों के मनोरंजन, ज्ञान-वर्द्धन और उनके भीतर पर्यावरण-चेतना का विकास करने में भी महत्त्वपूर्ण हैं।

जहां से पर्यटक इन वन्य जीवों को बहुत से देख सकते हैं । यदि आप ाग्यशाली हैं और थोड़ा धैर्य रखते हैं तो इस यारण्य में अजगर तथा कोबरा भी देख ते हैं । कई पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियां दियों में यहां आ जाती हैं, इन्हें भी स्वच्छंद रते देखा जा सकता है ।

इस अभयारण्य में भी पर्यटकों की सुविधा लिए विश्रामगृह है । निर्धारित प्रवेश-शुल्क र पर्यटक बहुत पास से इन वन्य प्राणियों को सकते हैं । अभयारण्य की सैर के लिए को हाथी की सवारी भी निर्धारित शुल्क उपलब्ध हो जाएगी । प्रायः यह शुल्क रु. ०० प्रति व्यक्ति है । कई पर्यटक अपने नों से भी अभयारण्य के अंदर तक जाते राजाजी राष्ट्रीय पार्क हरिद्वार तथा ऋषिकेश निकट स्थित है । इसलिए पर्यटक यहां र पर्यटन का आनंद भी उठा सकते हैं और यात्रा का सुख भी ले सकते हैं ।

मध्य हिमालय में कई छोटे-छोटे पार्क भी क्षित वनों के अंतर्गत बनाये गये हैं । इनमें क डीयर पार्क देहरादून से मसूरी के बीच इस पार्क में कई तरह के वन्य प्राणी हैं और कि नाम से ही प्रकट है, हरिणों की कई तियां यहां रखी गयी हैं । पर्यटक कम श्रम कम समय में इस छोटे से पार्क का भ्रमण वन्य प्राणियों का अवलोकन कर सकते हैं ।

नंददेवी राष्ट्रीय उद्यान

इसी तरह हरिणों की एक दुर्लभ प्रजाति रा को गढ़वाल के कुछ छोटे पार्कों में क्षत किया गया है । नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान प में केदारनाथ से ऊखीमठ होते हुए



बदरीनाथ तक जानेवाले चोपता मार्ग पर एक सुंदर-सा पार्क बनाया गया है । इस पार्क में विभिन्न दुर्लभ पक्षियों के अलावा बहुत कम दिखायी देनेवाले कस्तूरा मृग को देखा जा सकता है । दिसंबर से मार्च तक यहां बर्फ रहती है । उस समय कुछ साहसी पर्यटक यहां आकर कस्तूरा मृग विचरते देख सकते हैं ।

वास्तव में अभयारण्य पर्यटन के अनिवार्य हिस्से हैं । यही कारण है कि भारत सरकार अभयारण्यों के माध्यम से पर्यटकों के कार्यक्रमों को सिर्फ सैर-सपाटे और उनकी जिज्ञासा-शांति तक ही सीमित न रखकर पर्यावरण-पर्यटन को प्रोत्साहित कर रही है । इसका उद्देश्य अभयारण्यों में जानेवाले पर्यटकों में पर्यावरण और वन्य प्राणियों के प्रति जागरुकता पैदा करना है । इस योजना के तहत अभयारण्यों में पर्यटकों को फिल्म आदि के जरिए विशेष जानकारियां दी जाती हैं ।

इस बार आप घूमने निकलें तो इन अभयारण्यों की सैर करना न भूलें । यहां आपको मिलेगी अपूर्व शांति, शहरी शोर-शराबे



और धूल-धुंए से मुक्त आनंददायक वातावरण । चारों ओर हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध । चिड़ियों की सुखद चह-चहाहट, वन्य-प्राणियों की विचित्र आहटें और उनकी आश्चर्यजनक आवाजें । रात्रि की निस्तब्धता में आप तक आती जंगली जीवों की विस्मयकारी आवाजें 'सिंथेसाइजर' की यांत्रिक ध्वनियों से बिलकुल अलग एक अपूर्व अनुभ बन जाएगी ।

— १८/२८ मोती नगर, नयी दिल्ली-१

संक्षिप्त जानकारी :

कार्बेट नेशनल पार्क

मुरादाबाद तक देश के सभी मार्गों से रेल-मार्ग और सड़क मार्ग । मुरादाबाद से रामनगर सड़क मार्ग । रामनगर (जिला :नैनीताल) से कार्बेट नेशनल पार्क की दूरी ५० कि.मी. ।

एक मार्ग कोटद्वार से भी । कोटद्वार तक दिल्ली एवं अन्य स्थानों से रेल-मार्ग एवं सड़क मार्ग । कोटद्वार से कालागढ़ होते हुए रामनगर की दूरी ६० कि.मी. ।

उपयुक्त मौसम : **अक्तूबर से मई-जून । फरवरी सर्वोत्तम ।**

कहां ठहरें : ढिकाला, सरपदूली, बिजरानी, धुराल, कांडा में पर्यटक विश्रामगृह, फॉरेस्ट रेस्ट हाउस । पूर्व अनुमति आवश्यक । विश्रामगृह में आरक्षण के लिए फील्ड डाइरेक्टर/प्रोजेक्ट डाइरेक्टर, कार्बेट नेशनल पार्क रामनगर (नैनीताल) से संपर्क किया जा सकता है ।

आसपास अन्य दर्शनीय पर्यटक स्थल : **नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ ।**

राजाजी नेशनल पार्क

मार्ग : देश के सभी हिस्सों से हरिद्वार-ऋषिकेश तक रेल एवं सड़क मार्ग । जौलीग्रांट हवाई पट्टी ऋषिकेश से १८ कि.मी. । हरिद्वार से चीला ८ कि.मी. । ऋषिकेश से चीला १६ कि.मी. ।

अन्य दर्शनीय स्थल : हरिद्वार, ऋषिकेश, कण्व आश्रम (हरिद्वार से ४७ कि.मी. सड़क मार्ग पर), देहरादून, मसूरी । अधिक जानकारी के लि गढ़वाल मंडल विकास निगम के किसी भी क्षेत्रीय कार्यालय अथवा होटल द्रोण, महात्मागांधी मार्ग, देहरादून से संपर्क किया जा सकता है ।

उत्तराखंड में 'द्‌यवोरा' की एक अनोखी परंपरा है । द्‌यवोरा का अर्थ है देव यात्रा । नमें देवता के प्रतीक चिह्न के साथ संबद्ध मवासी साल-डेढ़ साल तक विभिन्न मंदिरों, र्थों, गांवों और कस्बों में रात बिताते हुए पनी यात्रा करते हैं । जहां भी रात्रि निवास ता है वहां रात को कुछ खास कार्यक्रम खाये जाते हैं तथा उस गांव के प्राचीन स्कृतिक संबंधों का स्मरण कर नये संबंधों की रुआत की जाती है ।

इस क्षेत्र में 'द्‌यवोरा' की परंपरा अत्यंत चीन है । ये द्‌यवोरा अर्थात देवयात्रा किसी व या क्षेत्र में बार-बार न निकलकर २५-३० र्षों से लेकर १००-१५० वर्षों के अंतराल से काली जाती हैं । एक बार निकाले जाने के द ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता कि यह



देवी की डोली के आगे नतमस्तक ग्रामीण

देव-यात्रा की परंपरा

• नंदकिशोर हटवाल

ः कितने वर्षों बाद निकलेगी ।, अतः जब भी यात्रा निकलती है तो संबद्ध देवता के क्यौर भाव-क्षेत्र) में आनेवाले लोगों के लिए में भाग लेना पहला और आखिरी अवसर बित होता है । इसलिए लोग इसमें ढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी निभाते हैं ।

देवयात्रा का आयोजन

ग्रामवासियों की बैठक के बाद देवयात्रा को कालने का निश्चय किया जाता है । पंचों द्वारा यात्रा के जानकारों के सहयोग से निर्धारित तिथि को समारोहपूर्वक देवता का निसाण (प्रतीक चिह्न) मंदिर से बाहर निकाला जाता है । देवयात्रा पर ले जाए जानेवाले इस 'निसाण' को ब्राह्म ठांग (बांस का ७ या ९ गांठोंवाला डंडा) पर स्थापित कर अथवा डोली में रख उसे रंग-बिरंगे रेशमी साफों से अलंकृत किया जाता है । इस 'निसाण' को देवयात्री अपने साथ ले जाते हैं । जो देवयात्री इस अलंकृतदेव चिह्न को ले जाने का काम करते हैं उन्हें एर्‌वाल या धारी (धारण करनेवाला) कहा जाता है । इनकी

संख्या ७, ९ या ११ तक होती है। ये एर्वाल पूरी देवयात्रा में नंगे पैरों चलते हैं तथा नियमित-संयमित रहकर देवचिह्न को ले जाते हैं। पूरी यात्रा में एर्वाल शुरू से आखिर तक बदलते नहीं हैं। पूरी यात्रा अवधि में भान, पुजारी, पाठार्थी, औजी भी सामान्य तौर पर बदले नहीं जाते हैं। बाकी लोग पंचायत द्वारा निर्धारित अपनी बारी पर आते हैं, यात्रा में अपनी भागीदारी निभाते हैं और जाते रहते हैं। जो परिवार अपनी बारी पर नहीं जा सकता वह दिहाड़ी पर किसी को लगा देता है। गांव से पलायन कर चुके लोगों को छूट दी जाती है। हालांकि उनके द्वारा भेजी गयी भेंट इत्यादि स्वीकार्य होती है।

यात्रा-पथ

देवयात्रा कई मंदिरों, तीर्थों, गांवों और कस्बों से होती हुई आगे बढ़ती है। यह यात्रा उस गांव में अवश्य जाती है जहां संबद्ध क्षेत्र की 'ध्यांण (ब्याही गयी बेटी) होती है। देवयात्रियों को स्वागत में 'ध्यांण' 'भात्तू' देती है। इसमें 'ध्यांण' अपनी सामर्थ्य के अनुसार देव यात्रियों को एक या दो समय के भोजन की समस्त कच्ची सामग्री देती है। इसके अतिरिक्त अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार चाय, चीनी रेशमी साफा, धूप अगरबत्ती, पिठोई आदि देत है। बदले में देवयात्री आशीष देते हैं और ध्यांण को उसके घर-परिवार की असल-कुश सुनाते हैं। 'ध्यांण' के अतिरिक्त जो भी ग्रामवासी भात्तू देना चाहे दे सकता है।

जिस गांव के लोग देवयात्रियों को बुलाना चाहते हैं वे बुलाते हैं और उन्हें अपने यहां रात बिताने का निमंत्रण देते हैं।

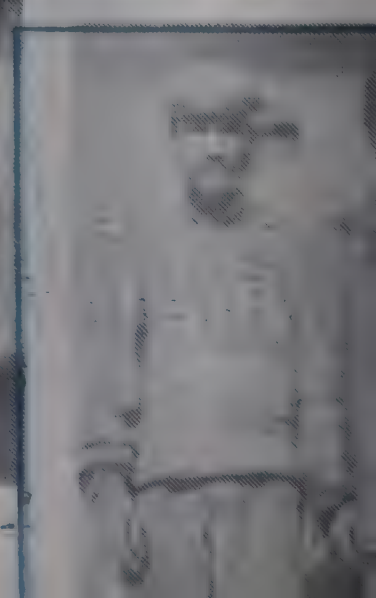
रात्रिनिवास

जिस गांव में देवयात्रियों की मंडली ठहर है वहां रात को विशेष मनोरंजन कार्यक्रम प्रस्तु किये जाते हैं। रात को भोजनोपरांत किसी चौ में गांववासी एकत्र होकर आग जला लेते हैं तथा वहां पर थोड़ा-बहुत प्रकाश का इंतजाम कर दिया जाता है। ठंड का मौसम हो तो अलाव की संख्या दर्शकों के हिसाब से बढ़ जाती है। लोग आग तापते हुए 'द्यवोरा' का आनंद लेते हैं। यह आग प्रकाश का काम करती है। दर्शकों द्वारा छोड़ी गयी थोड़ी-सी जगह ही मंच का रूप धारणकर लेती है और दर्शकों का घेरा होता है मंच की सीमा। सबसे पहले आता है कार्यक्रम का सूत्रधार। ये इस



← देवी की डोली ले जाते

देवयात्रा के गायक औ



नाट्य में विदूषक का काम करता है । इसे , बुडलू या बुड़देवा के नाम से संबोधित जाता है । ढोल की थाप पर ये धमाके से कों के बीच आता है और अपनी त्र-आवाज, भाव-भंगिमा और पहनावे से कों को खूब हंसाता है । 'भान' बुड़देवा से त्मक संवाद स्थापित कर लेता है यथा—

— "ऐ बुड़देवा !"
वा— "हूं !"
— करव बढ़ी आयी
वा— "कुजों बटी"
— "तब करव गयी"
वा— "मैकोट"
— "तरव क्य करी"
वा— "तरव जाख दगड़ा भेंट्टा-घाट्टीकरी"

मान प्रश्न पूछता है और बुड़देवा उनका जक उत्तर देता है । इसी संवाद के जरिये वा सारी यात्रा का वृतांत दर्शकों के सम्मुख है । जिस गांव के लोगों ने कोई गलत किया हो तो उन पर व्यंग्य भी करता है कई बार तो वर्तमान राजनीतिक विसंगतियों नेताओं की खिल्ली उड़ाने में भी नहीं ता ।

स संवाद का एक विषय महत्त्वपूर्ण होता जहां से भी यात्रा अब तक गुजर चुकी होती स्थानों की सांस्कृतिक विरासत की कारी दर्शकों को दी जाती है ।

मुखौटा नृत्य

त का एक और महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम होता खौटा नृत्य । इसमें नर्तक विभिन्न चरित्रों से द मुखौटों को पहनकर नृत्य करते हैं । ये टे लकड़ी के बने होते हैं और इनकी संख्या होती है । ये पूर्वीनंधर्रित क्रम में आकर नृत्य करते हैं । १८ मुखौटों के अतिरिक्त कुछ नर्तक बिना मुखौटों के भी होते हैं जो कि मनोरंजन हेतु किसी लोक-कथा पर आधारित चरित्र का अभिनय करते हैं । ये नर्तक हैं बैदा-बैदी, गणेश-ब्रह्मा, कौड़िया-क्षेत्रपाल, कानड़ा (कर्ण), लाटी-लाटू, गांडा-गांडी, नतृघू पीडे, ब्रह्मचारी, नरसिंह भगवान, शेर, हरिण- चीतल राम-लक्ष्मण-हनुमान, कलिंका (काली) बारह (ह्युवर), शंकर-पार्वती और ईश्वर । ये समस्त चरित्र पैराणिक, ऐतिहासिक और काल्पनिक कथाओं पर आधारित होते हैं जिन पर 'भान' नृत्य करते हैं ।

"बाघ का मुखौटा इस नृत्य में विशेष महत्त्व रखता है । इसे प्रत्येक रात नहीं निकाला जाता बल्कि सिर्फ 'भरीत्रि' को ही निकाला जाता है । "भरीत्रि' अर्थात रातभर नृत्य गीतों का आयोजन । भरीत्रि को पूरे १८ मुखौटे निकलते हैं जबकि सामान्य रात्रि को देवयात्रियों की इच्छानुसार मुखौटे निकाले जाते हैं । परंपरानुसार शेर का मुखौटा रातभर के नृत्य के बाद सुबह ठीक पौ-फटने पर निकाला जाता है । भरीत्रि लगातार नहीं होती है बल्कि इसके बीच तीन या पांच दिन का अंतर आवश्यक है । पूरी देवयात्रा में कम-से-कम २१ और ज्यादा से ज्यादा २३ भरीत्रि का प्राविधान है ।

भरीत्रि को रातभर १०-११ घंटे लगातार नृत्य-गीत के बावजूद दूसरे दिन नियत समय में देवयात्रियों की दिनचर्या उस गांव में शुरू हो जाती है । देवयात्री उस पूरे गांव में घूमते हैं, वहां के मंदिरों में जाते हैं तथा 'भात्तू' और 'ध्याण-भात्तू' ग्रहण करते हैं । दिन में देवयात्री स्वयं का बनाया भोजन ग्रहण करते हैं । इसके

'द्यवोरा' की परंपरा अत्यंत प्राचीन है । ये द्यवोरा अर्थात देवयात्रा किसी गांव या क्षेत्र में बार-बार न निकलकर २५-३० वर्षों से लेकर १००-१५० वर्षों के अंतराल से निकाली जाती हैं । एक बार निकाले जाने के बाद ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता कि ये पुनः कितने वर्षों बाद निकलेगी अतः जब भी देवयात्रा निकलती है तो संबद्ध देवता के क्यौर (प्रभाव-क्षेत्र) में आनेवाले लोगों के लिए इसमें भाग लेना पहला और आखिरी अवसर साबित होता है । इसलिए लोग इसमें बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी निभाते हैं ।

बाद उस गांव के लोग देवयात्रा को दूसरे गांव के लिए प्रस्थान करते समय छोड़ने जाते हैं और फिर यहीं क्रम दोहराया जाता है उस गांव में भी । इस प्रकार से चलती रहती है यात्रा गांव-दर-गांव ।

समापन की उदासी

देवयात्रा का समापन उस ग्राम में किया जाता है जहां पर उस 'द्यवोर्‌या (यात्रा पर जानेवाले) देवता का मंदिर होता है । इस समापन समारोह को 'बन्याथ' कहा जाता है । 'बन्याथ' अपने आप में भव्य आयोजन होता है । इसे देखने के लिए दूर-दूर से लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है । देवता के अंदर जाने का दृश्य बड़ा कारुणिक होता है । देवता के साथ ही— जैसे उपस्थित जन-समूह के आनंद और उत्साह की पिठारी मानो बंद होने जा रही हो । अब न जाने कितने वर्षों में निकलेगा 'द्यवोरा' । दुनिया-जहान के झंझटों से दूर साल-डेढ़-साल तक देवयात्रा से वापस आये यात्री को अब अपने पेट के लिए मेहनत-मजदूरी करनी है ।

अलिखित विधि-विधान

तमाम लोक उत्सवों की तरह इस भव्य और लंबे समय तक चलनेवाले उत्सव का भी कोई विधि-विधान लिखित रूप से नहीं है । हर वर्ष आयोजित होनेवाले तीज-त्योहारों, मेले, नृत्य-गीतों के लिए तो पिछले वर्ष का अनुकरण ही पर्याप्त है लेकिन अनिश्चित वर्षों बाद होनेवाले इस उत्सव के आयोजन के विधि-विधान के लिए या तो गांव के अत्यंत बुजुर्गों पर निर्भर रहना पड़ता है अथवा जिस गांव में 'द्यवोरा' हाल के वर्षों में निकला हो वहां के लोगों से मदद ली जाती है । देवयात्रा के सफल संचालन हेतु भान, बांसी, पुजारी, जागरण, पाठार्थी ठेके पर भी लाये जाते हैं । इस आयोजन में परंपरागत विधि-विधान को बदलने की सैद्धांतिक छूट तो नहीं होती है पर इसके अलिखित स्वरूप के कारण ये अपने अनुकूल करके ग्रहण किये जाते हैं । इसके परिवर्तनकारी स्वरूप के कारण जहां इसमें वर्तमान परिस्थितियों में ढालने की सुविधा निहित है वहीं इसके विकृत होने का खतरा भी

हुआ है ।
आज के बदलते सांस्कृतिक परिदृश्य को ते हुए इसके विकृत होकर समाप्त होने का रा इस सांस्कृतिक विरासत पर मंडरा रहा जहां कहीं ये होते भी हैं तो इनके प्रोत्साहन अभिलेखीकरण की कोई व्यवस्था नहीं । सरकारी स्तर पर इस दिशा में कोई गर कदम नहीं उठाया जा रहा है और निजी पर अथवा ग्राम स्तर पर इन समारोहों के भलेखीकरण की कोई परंपरा नहीं है । यही चलता रहा तो भविष्य में ये परंपराएं णिकता के अभाव में इतिहास के पन्नों में भी स्थान नहीं पा सकेंगी और फिर दादी मां ही सुनाया करेंगी 'द्यवोरा' के किस्से-कहानियां ! मगर वो सिर्फ किस्से ही होंगे । आखिर उन पर विश्वास करने के लिए कोई प्रमाण वर्तमान समय छोड़े तब ना ! यहां तक कि निहायत छोटी घटनाओं को स्थान देनेवाले अखबारों के पास भी इन समाचारों के लिए स्थान नहीं होता । या उन तक ये समाचार पहुंचाये ही नहीं जाते ।

रा. ई. का. छिनका,
पो. छिनका
जि. चमोली (उ. प्र.)

ग्राम



दुःख से मेरे ताप लेकर
उड़ चले वे ठोस घन बन
ग्राम के आंचल में बरसे
देखकर कितने सरल मन
बह चला मैं प्रेम की धारा बना
सींच डाले खेत, कितने गेह उन्मन
भर गये तालाब, पोखर
भर गये मधु-कूप, भीगे बाग, उपवन,

और शिशु कुछ भीगते निर्बंध होकर
गा रही कल्याणियां स्वच्छंद होकर
डाल दी झूलों ने बाँहें, देख सावन
कर रही अठखेलियां, परतंत्र होकर
मिट्टी से कितने बीज उपजे, अधखुले से
मिट्टी से कितने गेह जन्मे, जलजले से
जिनको न तनिक चिंता जलाती
दूब में आनंद लेते, तरु-फले से

पशु भी निर्द्वंद्व होकर चल रहे
बंशी से मीठे बोल उसके झर रहे
उपलों की भीनी गंध से महके पवन
प्रदूषणों से हीन होकर बह रहे

अतिथि देवों का यहां सत्कार कितना
प्यार से ही गूंजता संसार कितना
गीतों के कितने बोल हैं सादा यहां पर
सादगी पर सादगी का व्यभिचार कितना

—महेन्द्र कुमार जोशी
श्रम प्रवर्तन अधिकारी
धामपुर (बिजनौर) २४६७६१

चारों ओर से खूबसूरत पर्वतमालाओं से घिरा, व्यास नदी के तट पर बसा मंडी नगर अपनी ऐतिहासिकता, भव्यता व गौरवमयी संस्कृति के कारण न केवल हिमाचल अपितु देशभर में प्रसिद्ध है । श्रद्धालुओं व पर्यटकों के लिए जहां मंडी आकर्षण का केंद्र है, वहीं कलाप्रेमियों के लिए कौतुहल का विषय भी । यह वही नगरी है जहां महर्षि वेद व्यास ने विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत की रचना की थी । यह भी कहा जाता है कि महर्षि मांडव्य ने यहीं धूनी रमाकर वर्षों तपस्या की थी । जिस कारण इस नगरी का नाम पहले मांडव्य पड़ा जोकि बाद में अपभ्रंश होकर मंडी बन गया । इस नगरी की माटी में जहां रजवाड़ाशाही की महक रची है, वहीं यहां के वातावरण में भक्तिगीतों की सुरलहरियां गुंजायमान हैं ।

आकर्षण का केन्द्र

समुद्र तल से ढाई हजार फुट की ऊंचाई प स्थित मंडी एक लंबे अरसे तक सैन वंश के राजाओं के अधीन रहा । इन राजाओं की छत्रछाया में न केवल यहां की लोक संस्कृति फली-फूली, बल्कि वहीं इन राजाओं ने कई ऐतिहासिक दुर्गों, स्मारकों व मंदिरों का निर्माण करवाया जोकि आज भी पर्यटकों व श्रद्धालुअ के आकर्षण का केंद्र हैं । मंडी जोकि सुकेत और मंडी दो पहाड़ी रियासतों के एकीकरण से १५ अप्रैल, १९४८ को अस्तित्व में आया था, आज हिमाचल का सर्वाधिक विकसित व ख्यातिप्राप्त नगर है ।

मंडी आकर पर्यटक कभी निराश नहीं

श्रद्धा और सौंदर्य का संगम : मंडी

• गुरमीत बेदी



मंडी आकर पर्यटक कभी निराश नहीं होता । यहां के धार्मिक परिवेश में जहां उसे अलौकिक सुख का अनुभव होता है, वहीं यहां के पर्यटन स्थल उसे बार-बार आने का न्यौता देते हैं । एक अनुमान के अनुसार मंडी में सौ से अधिक मंदिर हैं । इनमें से कुछ एक का नियंत्रण भारतीय पुरातत्व विभाग के पास है । इतनी बड़ी संख्या में यहां मंदिरों के स्थित होने के कारण श्रद्धालु इसे 'छोटी काशी' का नाम भी दे देते हैं ।

होता । यहां के धार्मिक परिवेश में जहां उसे अलौकिक सुख का अनुभव होता है, वहीं यहां के पर्यटन स्थल उसे बार-बार आने का न्यौता देते हैं । एक अनुमान के अनुसार मंडी में सौ से अधिक मंदिर हैं । इनमें से कुछ एक का नियंत्रण भारतीय पुरातत्व विभाग के पास है । इतनी बड़ी संख्या में यहां मंदिरों के स्थित होने के कारण श्रद्धालु इसे 'छोटी काशी' का नाम भी दे देते हैं । भूतनाथ, एकादश रुद्र, नीलकंठ महादेव, काली माता सिद्धकाली, त्रिलोकीनाथ, अर्धनारीश्वर, भगवती टारना और सिद्ध भद्रा महामृत्युंजय यहां के प्रमुख मंदिर हैं ।

देवसमागम : सबसे बड़ा मेला

यहां के ऐतिहासिक पड्डल मैदान में तो मानो इस शहर का दिल धड़कता है । व्यास और सुकेती नदियों के किनारों को छूता यह विशालकाय मैदान शहर के एकांत छोर पर है । हरे-भरे पेड़ों से घिरा यह मैदान यहां बुजुर्गों के लिए अपने हमउम्रों के साथ बैठकर दुःख-सुख बांटने की सर्वाधिक उपयुक्त जगह है, वहीं युवाओं के लिए तफरीह का केंद्र । इस मैदान में ही खिलाड़ी अपना 'स्टैमिना' बनाते हैं और यहीं जुटता है हर साल शिवरात्रि को पर्यटकों व श्रद्धालुओं का समंदर । इतना ही नहीं, यह मैदान हर साल देवताओं के स्पर्श से धन्य हो उठता है । बात चौंकानेवाली भले ही हो लेकिन वास्तविकता यह है कि ये देवी-देवता कोई स्वर्ग से इस मैदान में नहीं उतरते । बल्कि ये तो मंडी के ग्रामीण देवी-देवता हैं जिन्हें श्रद्धालु पालकियों मे सजा-संवारकर ढोल-नगाड़ों के साथ शिवरात्रि मेले में यहां लाते हैं । उत्तरी भारत में इसे देवसमागम का सबसे बड़ा मेला कहा जाता है ।

प्रमुख पर्यटन स्थल

घाटी के प्रमुख पर्यटन स्थलों में रिवाल्सर, कमरूनाग, पराशर झीलों के अलावा कमलागढ़, जंजैहली घाटी, करसोग घाटी, बरोट, जोगिंद्रनगर का नाम गिना जा सकता है । ये स्थल जहां सौंदर्य प्रेमियों व श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र हैं, वहीं पर्वतारोहण के शौकीन भी देशभर से यहां आते हैं । सरकार ने यद्यपि पर्यटन के लिहाज से यहां काफी सुविधाएं जुटायी हैं लेकिन फिर भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है । अगर रिवाल्सर के अलावा यहां की दो अन्य प्रमुख झीलों—पराशर व कमरुनाग तक पहुंचने की राह को सुगम बना दिया जाए और सैलानियों के लिए समुचित सहूलियतें मुहैया करवायी जाएं





तो मंडी 'झीलों की नगरी' के रूप में भी प्रदेश के मानचित्र पर अंकित हो सकती है ।

मंडी में काशी मेला

पराशर झील मंडी नगर से चालीस किलोमीटर दूर उत्तर-पूर्व में नौ हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है । दूर से देखने पर इस झील का आकार एक तालाब की तरह लगता है लेकिन इस झील की वास्तविक परिधि आधा किलोमीटर से कुछ कम है । इस झील के चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियां देखने में ऐसी प्रतीत होती हैं मानो प्रकृति ने इस झील की सुरक्षा के लिए इन पहाड़ियों की गोलाकार दीवार खड़ी कर दी हो । यह झील जनबस्तियों से काफी दूर एकांत में है । झील के किनारे 'पगोड़ा शैली' में निर्मित ऋषि पराशर का तीन मंजिला मंदिर है । एक अनुमान के अनुसार इस मंदिर का निर्माण तेरहवीं शताब्दी में तत्कालीन मंडी नरेश बाणसेन द्वारा करवाया गया था । इस मंदिर में की गयी काष्ठ कला इतनी बेजोड़ है कि कलाप्रेमी 'वाह-वाह' किये बिना नहीं रहता । मंदिर में महर्षि पराशर की भव्य पाषाण प्रतिमा के अलावा विष्णु, महिषासुरमर्दिनी, शिव व लक्ष्मी की कलात्मक प्रस्तर मूर्तियां भी स्थित हैं । झील का सौंदर्यावलोकन करने आये पर्यटक स्वयंमेव ही इस मंदिर में आकर नतमस्तक हो जाते हैं । बैशाख मास में यहां एक भव्य मेला लगता है जिसे 'काशी मेला' के नाम से जाना जाता है ।

अनेक धर्मों की श्रद्धा का केंद्र

रिवाल्सर झील मंडी घाटी की सुप्रसिद्ध झील है । मंडी से करीब २५ किलोमीटर दूर सड़क मार्ग से जुड़ी यह खूबसूरत झील १३५० मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और इसे सर्वधर्म संगम भी कहा जाता है । हिंदू इसे स्कंध पुराण में वर्णित महर्षि लोमष की तपोभूमि मानते हैं जो भगवान शिव के अनन्य भक्त थे । एक किंवदंती के अनुसार महर्षि लोमष की घोर तपस्या से प्रसन्न होकर जब भगवान शिव ने उन्हें कोई वर मांगने को कहा तो बजाय स्वयं के लिए कुछ मांगने के, महर्षि लोमष ने अपनी तपोभूमि के लिए ही वरदान मांगा । बस तभी से यहां झील में भूखंड तैरने लगे जिन्हें श्रद्धालु आज भी बड़ी श्रद्धा से पूजते हैं । झील के तट पर स्थित भगवान शिव का प्राचीन मंदिर शिखर शैली का अद्‌भुत नमूना है । तिब्बतियों के लिए भी यह स्थल श्रद्धा का केंद्र है । यहां पर बौद्ध गुरु पद्‌मसंभव का एक प्राचीन गोंपा भी है । एक लोक मान्यता के अनुसार ८वीं सदी में इस झील के किनारे पद्‌मसंभव ने पद्‌मासन में

बैठकर चिंतन किया था। सिखों के लिए भी रिवाल्सर किसी पुण्य स्थल से कम नहीं है। झील के सामने पहाड़ी पर सिखों के दशम गुरु गोबिंद सिंह जी का ऐतिहासिक गुरुद्वारा बना हुआ है, कहा जाता है कि उन्होंने यहीं पर पहाड़ी राजाओं की एक सभा बुलाकर मुगल शासन के खिलाफ रणनीति तैयार की थी।

गरम जल के चश्मे

कमरुनाग इस घाटी की तीसरी प्रमुख झील है। मंडी नगर से ५१ किलोमीटर दूर करसोग घाटी में स्थित यह झील समुद्र तल से नौ हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है। देवदार के घने जंगलों से घिरी यह झील प्रकृति प्रेमियों को अभिभूत कर देती है। इस झील तक पहुंचने का रास्ता भी बहुत सुरम्य है और यहां के लुभावने दृश्यों को देख पर्यटक अपनी सारी थकान भूल जाता है। झील के किनारे पहाड़ी शैली में निर्मित कमरुनाग देवता का प्राचीन मंदिर भी है जहां पत्थर की प्रतिमा स्थापित है। जून माह में यहां भारी मेला लगता है। करसोग से शिमला की ओर जाते हुए राह में तत्तापानी नामक खूबसूरत स्थल है। यह स्थल सल्फरयुक्त गरम जल के चश्मों के लिए मशहूर है। एक तरफ बर्फ की तरह सतलुज का ठंडा जल अगर शरीर को सुन्न कर देता है तो वहीं इस नदी के आगोश से फूटता गरम जल पर्यटकों के लिए किसी अजूबे से कम नहीं है।

—राणा निवास
बैजनाथ-१७६१२५
जिला—कांगड़ा (हि. प्र.)

शांति और अध्यात्म का केंद्र : रिवाल्सर

गरमियों की छुट्टियों में शिमला जाएं, तो रिवाल्सर भी जाएं। यह स्थान मंडी से २४ कि.मी. की दूरी पर है। झीलों और प्राकृतिक संपदा से ओतप्रोत यह स्थान शांति और अध्यात्म का भी एक केंद्र है। बौद्धों के रहन-सहन तथा बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक पहलुओं का यहां प्रत्यक्ष अध्ययन किया जा सकता है।

रिवाल्सर पहुंचने पर यहां सबसे पहले जो चीजें ध्यान आकृष्ट करती हैं, वे हैं झील के किनारे लटकते कपड़ों के टुकड़े। इन टुकड़ों पर बौद्ध धर्म ग्रंथ के चिह्न अंकित हैं। मान्यता है कि हवा के इन कपड़ों से स्पर्श करने पर यहां का वातावरण शुद्ध तथा प्रदूषण खत्म हो जाता है।

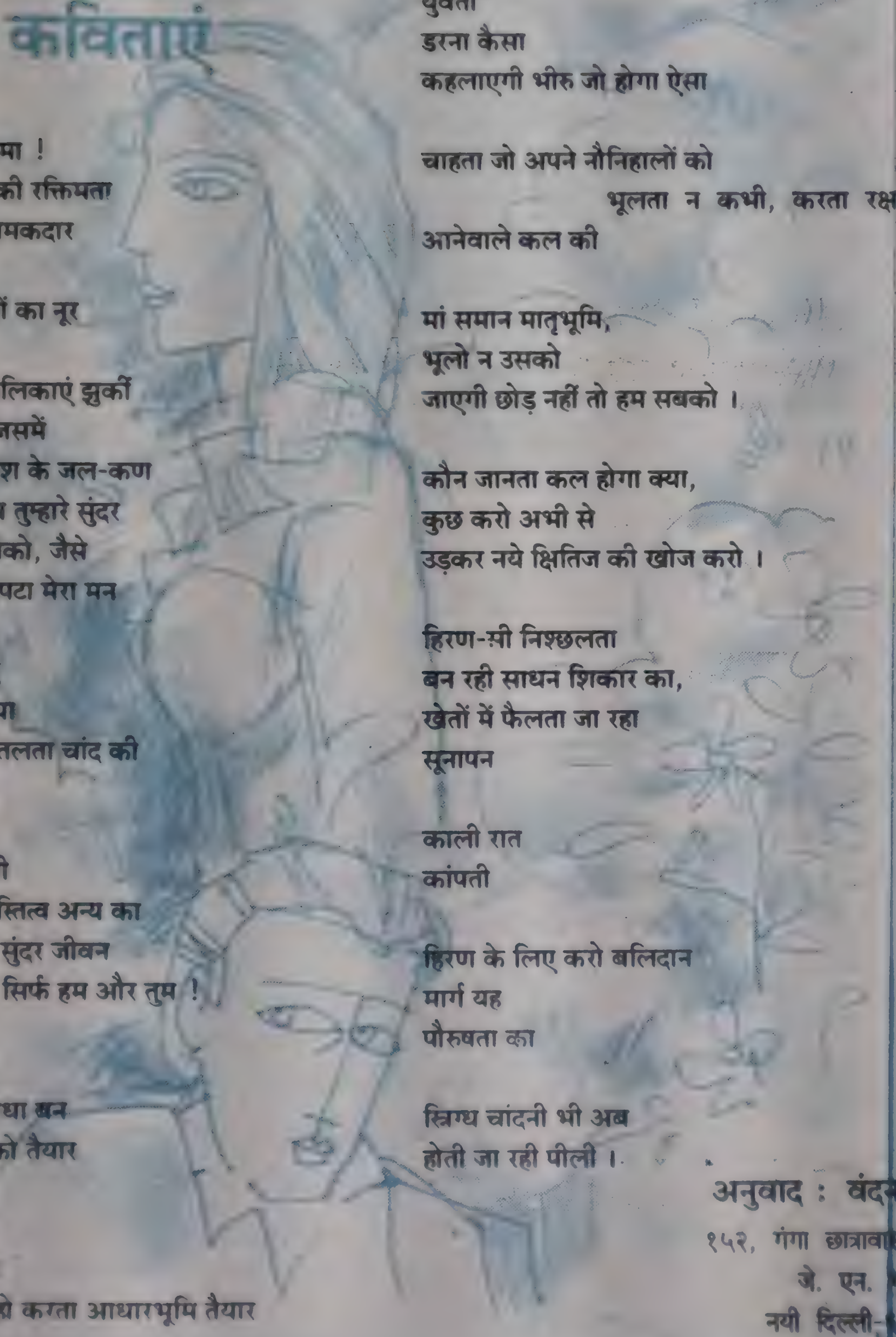
कला के अद्भुत सांचे में ढले विशाल बौद्ध मठ पर्यटकों का मन बरबस मोह लेते हैं। मठ में रोज प्रातः विशेष वाद्य यंत्र 'तुरही' के बजने से पर्यटकों की नींद अपने-आप खुल जाती है। मठ के भीतर की दीवारें बौद्ध धर्म से जुड़े चित्रों और कलाकृतियों से भरी हुई हैं। यही हाल मठ के बाहर भी है जहां, शांति, सौंदर्य और अध्यात्म तीनों का आनंद लिया जा सकता है। मठ परिसर में एक कक्ष है जिसमें भक्तों द्वारा रोज दो हजार तेल के दीये जलाये जाते हैं।

यहां मां काली का एक मंदिर भी है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर मानव खोपड़ियों के चित्र अंकित हैं। मठ के पास विद्यालय की एक भव्य इमारत भी है जहां बौद्ध शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त यहां एक भव्य गुरुद्वारा भी है। जिसे देखने और अरदास करने यहां देश-विदेश से पर्यटक आते हैं।

भीड़ और कोलाहल से दूर छुट्टियों के समय यहां आने पर मन और मस्तिष्क दोनों को आराम मिलता है और एक सुखद-शांति की अनुभूति होती है।

इंडोनेशियाई

कविताएं



ओ प्रियतमा !
चीयांजूर की रक्तिमता
इतनी है चमकदार
जितनी
तेरी आंखों का नूर

काली पुतलिकाएं झुकीं
ढुलकते जिसमें
अश्रु-बारिश के जल-कण
पोंछते हाथ तुम्हारे सुंदर
देखता उसको, जैसे
मधु में लिपटा मेरा मन

पोछो अश्रु
बदलो प्रिया
बदली शीतलता चांद की
अंगारों में

और प्रेयसी
नकारो अस्तित्व अन्य का
बनाने को सुंदर जीवन
रहें जिसमें सिर्फ हम और तुम !

कलाकार
प्रथम समिधा बन
अग्निदाह को तैयार

कलाकार
नवनिर्माता
भस्मीभूत हो करता आधारभूमि तैयार

युवती
ले कुछ निर्णय
गला घोंटती क्यों अपना रह अनिर्णीत

युवती
डरना कैसा
कहलाएगी भीरु जो होगा ऐसा

चाहता जो अपने नौनिहालों को
भूलता न कभी, करता रक्षा
आनेवाले कल की

मां समान मातृभूमि,
भूलो न उसको
जाएगी छोड़ नहीं तो हम सबको ।

कौन जानता कल होगा क्या,
कुछ करो अभी से
उड़कर नये क्षितिज की खोज करो ।

हिरण-सी निश्छलता
बन रही साधन शिकार का,
खेतों में फैलता जा रहा
सूनापन

काली रात
कांपती

हिरण के लिए करो बलिदान
मार्ग यह
पौरुषता का

स्निग्ध चांदनी भी अब
होती जा रही पीली ।

अनुवाद : वंदना

१५२, गंगा छात्रावास,
जे. एन. यू.
नयी दिल्ली-६७



धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल : चित्रकूट धाम

● डॉ. विभा सिंह

जेहि पर विपदा परत है, सो आवत एहि देस
चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेस

ओरछा में रामराजा मध्ययुग में लाये गये। किंतु इस बुंदेलखंड के चित्रकूट में वनवास की विपत्ति काटने के लिए वे स्वयं पधारे। उनके वहां निवास से इस तीर्थराज की महिमा और भी बढ़ी। अपने समस्त वाङ्मय की रचना करने के उपरांत संत तुलसीदास की दृष्टि फिर-फिर चित्रकूट की ओर जाती है। विनय पत्रिका में वे लिखते हैं—

अब चित चेति चित्रकूटहि चलु
भूमि बिलोकु रामपद अंकित
वन बिलोकु रघुवर-बिहारथलु

चित्रकूट धाम हमारे देश का सबसे प्रसिद्ध धार्मिक, सांस्कृतिक स्थल है। वनवासी राम ने सीता और लक्ष्मण के साथ एक लंबी अवधि चित्रकूट में बितायी। चित्रकूट की पग-पग भूमि राम, लक्ष्मण और सीता के चरणों से अंकित है। राम ने चित्रकूट में साधना कर शक्ति का संचय किया एवं अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का संकल्प किया—निसिचर-हीन करौं महि, भुज उठाइ प्रन कीन्ह।"

चित्रकूट की तपोभूमि इतनी मनोहारी है कि यहां के पर्वतों की चोटियां कामदगिरि, मंदाकिनी का प्रवाह, सुंदर एवं आकर्षक वन-गुफाएं एवं कंदराएं, ऋषि-मुनि, कोल-किरात, सभी दर्शक का ध्यान बरबस खींच लेते हैं। यह उल्लेखनीय है कि वनवासी राम को महर्षि वाल्मिकि ने चित्रकूट निवास का परामर्श दिया

था। उनके अवतार कार्य के लिए उपयुक्त क्षेत्र होने के अतिरिक्त चित्रकूट की जलवायु एवं प्राकृतिक सौंदर्य भी कुछ ऐसे हैं कि राम, लक्ष्मण और सीता वनवास की लंबी अवधि वहां काट सके।

अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य

चित्रकूट धाम के सभी प्रमुख स्थल मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित हैं। कामदगिरि, जहां भगवान राम ने विश्राम किया, जानकी कुंड, जहां जगज्जननी सीता मंदाकिनी में नित्य स्नान-पूजा करती थीं। स्फटिक शिला—जहां मंदाकिनी के किनारे एक विशाल शिला पर बैठे राम ने जयंत पर बाण चलाया था। यहां नदी-किनारे प्राकृतिक सुषमा देखते ही बनती है।

सती अनुसुईया आश्रम—विशालकाय पर्वत के नीचे मंदाकिनी का शांत अविरल प्रवाह एवं नाचते हुए मोरों के झुंड चित्त को अनायास हर लेते हैं। हनुमान धार, जहां पर्वत की चट्टानों के अंदर से झरना तीव्रगति से विशालकाय हनुमानजी की एक मूर्ति पर गिरता है। प्राकृतिक सुषमा से भरपूर हनुमान धारा का स्थल अनुपम है। देवांगना एवं कोटतीर्थ, बियावान जंगल के बीच दर्शनीय स्थल है। गुप्त गोदावरी में विशाल पर्वतमालाओं के नीचे मीलों अंदर पोल है तथा बहुत ही प्राकृतिक रेखांकन है। अंदर के जल प्रपात में राम, लक्ष्मण व जानकी के स्नान कुंड हैं। गुप्त गोदावरी की रचना मन को हर लेती है। सुप्रसिद्ध स्वर्णमुनि एवं संदीपन मुनि के आश्रम भी सतना जिले में स्थित हैं। चित्रकूट के संबंध में मनीषियों, कवियों के बहुत से दोहे, पद, लोकोक्तियां प्रसिद्ध हैं। जैसे—**चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेश जा पर विपदा परत है, जो आवत ऐहि देस चित्रकूट की रामरज वृंदावन की धूरि उड़ी-उड़ी परत शरीर पर पाप होए सब दूरि**

चित्रकूट में दीपावली एवं रामनवमी के अवसर पर विराट मेले लगते हैं। जिनमें पांच से दस लाख तक तीर्थ यात्री भाग लेते हैं। उत्तरी भारत का इतना बड़ा ग्रामीण मेला अन्यत्र कहीं नहीं लगता है। दीपावली के दिन हजारों श्रद्धालु मंदाकिनी नदी में दीपदान करते हैं।

चित्रकूट की तपोभूमि इतनी मनोहारी है कि यहां के पर्वतों की चोटियां कामदगिरि, मंदाकिनी का प्रवाह, सुंदर एवं आकर्षक वन-गुफाएं एवं कंदराएं, ऋषि-मुनि, कोल-किरात, सभी दर्शक का ध्यान बरबस खींच लेते हैं। यह उल्लेखनीय है कि वनवासी राम को महर्षि वाल्मिकि ने चित्रकूट निवास का परामर्श दिया था। उनके अवतार कार्य के लिए उपयुक्त क्षेत्र होने के अतिरिक्त चित्रकूट की जलवायु एवं प्राकृतिक सौंदर्य भी कुछ ऐसे हैं कि राम, लक्ष्मण और सीता वनवास की लंबी अवधि वहां काट सके।



वनवास की अवधि समाप्त होने पर भगवान श्री राम का अयोध्या में जो राज्याभिषेक हुआ था, उसकी याद में चित्रकूट के लोग घी के दिये जलाकर मंदाकिनी में बांस की टट्टियों में रखकर प्रवाहित करते हैं और लाखों दीपों की ज्योति से मंदाकिनी का प्रवाह प्रकाशित हो उठता है। कामदगिरि पर्वत संभवतः विश्व का पहला वह पर्वत है जिसकी वर्ष में लाखों तीर्थ यात्री परिक्रमा करते हैं।

मुखरित लोकगीत

कुछ लोग मनौती मांगते हैं, अपनी कामनाओं की पूर्ति के उपरांत पांच कि.मी. की प्रदक्षिणा लेटकर करते हैं। कामदगिरि की इस तरह प्रदक्षिणा करते देखते समय कभी-कभी बुद्धिजीवियों के मन में ही यह भाव उठता है कि कोई भी देश इतना मूर्ख तो नहीं हो सकता है कि वह चिरकाल से किसी पहाड़ की परिक्रमा करे। लगता है कोई महान विभूति निश्चित रूप से उस पर्वत में रमी रही होगी, जिसकी याद एवं श्रद्धा में श्रद्धालु नर-नारी परिक्रमा करते हैं। ऐसे अवसर पर माताएं मंगल गीत गाती हैं। कोल-भील लोकगीत गाते हैं एवं लोकनृत्य करते हैं। दीपावली के मेले में पैर में घुंघरू बांध, मोर के पंख लगाये, ढोलक मंजीरे की ताल पर अहिर नृत्य देखते बनता है। अहिरों की सैकड़ों टोलियां अपने-अपने गांव से नाच करती हुई आती हैं। चित्रकूट के मेले में इस क्षेत्र की लोककला एवं लोकगीत खुलकर मुखरित होते हैं।

—मदान पुस्तक भंडार
राष्ट्रीय कन्या इंटर कॉलेज के सामने
झांसी-२८४००१ (उ. प्र.)



श्री हनुमानधारा मंदिर



श्री कामदगिरि प्रतिमा







सुकुमार चटर्जी
की तीन
कला कृतियां



चटर्जी के चित्र अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता, वातावरण के प्रति तादात्म्य तथा प्रकृति और पुरुष के अंतर संबंधों को रूपायित करने में अपना वैशिष्ट्य रखते हैं

त्र काल खंडों से गुजरती

मेरी यात्रा दर यात्रा

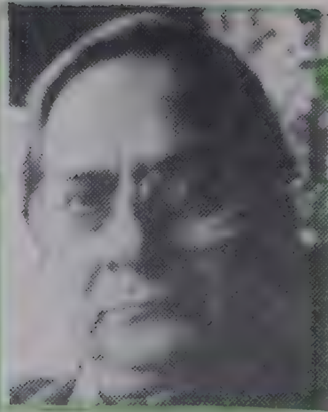
● सुकुमार चटर्जी

स संसार में मेरी जीवन-यात्रा का आरभ उत्तर बिहार के एक नगर दरभंगा से हुआ। भंगा, जहां मेरा जन्म हुआ। दरभंगा के बाद ना होते हुए मैंने अपनी यात्रा का पड़ाव ली में डाला, जहां मुझे अब लगभग तीस ल होने जा रहे हैं। मेरी यह यात्रा कुछ अर्थों देहिक है, लेकिन दिल्ली में रहते हुए -दूसरे किस्म की यात्रा आरंभ हुई— एक ल खंड के बीच से गुजरती हुई यात्रा इस रे किस्म की यात्रा में, आप अतीत में झांक कते हैं, उस पर सोच-विचार कर सकते हैं, किन आप पीछे छोड़ आये क्षणों को दोहरा सकते, फिर से एक बार उन क्षणों को जी सकते।

मैं जब-जब दरभंगा जाता हूं, जहां मेरे ा-पिता आज भी उसी पुराने मकान में रहते जहां मैं पैदा हुआ था, तो मैं पाता हूं कि वहां बचपन के दिन आज भी जीवित हैं। ांकि, मैं दरभंगा कभी-कभार ही जा पाता लेकिन, हर बार, जब भी मैं दरभंगा जाता हूं, अपनी स्मृतियों को बार-बार संजोया है, कि आज भी दरभंगा वैसा ही है। यकीनन लाव तो दरभंगा में भी काफी आया है, पर ना ज्यादा नहीं, जितना दिल्ली में।

मैं आज भी दरभंगा में उस बूढ़े पीपल के को और घास-फूस की छतवाली झोंपड़ियों वहीं-का-वहीं और वैसा-का-वैसा ही पाता हूं, जैसा मैं उसे दशकों पूर्व छोड़ आया था। दृश्यावलि में कोई बदलाव नहीं आया लेकिन, दिल्ली में, लोदी रोड का रेलवे क्रॉसिंग और जंगपुरा की, जहां मैं वर्षों से रह रहा हूं, झुग्गी-झोंपड़ियां गायब हो चुकी हैं। सच पूछा जाए तो सन साठ के आस-पास की दिल्ली के निशान तो अब ढूंढ़े से भी नहीं मिलते। समय की गति दिल्ली और दरभंगा में अलग-अलग है— दिल्ली की तेज और दरभंगा की सुस्त। मैं इन दोनों कालों के बीच बराबर चलता रहा हूं। मैं इन दोनों कालों के बीच से एक साथ ही गुजरता रहा हूं।





सुकुमार चटर्जी की गणना देश के जाने-माने चित्रकारों में की जाती है । दरभंगा (बिहार) में सन १९३७ में जन्मे सुकुमार चटर्जी ने पटना के राजकीय कला महाविद्यालय से चित्रकला की विधिवत शिक्षा प्राप्त की । सन १९६४ में उन्हें नयी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय आधुनिक चित्रकला दीर्घा में तकनीकी अधिकारी नियुक्त किया गया । दिल्ली, कलकत्ता, बंबई आदि में उनके चित्रों की कई एकल प्रदर्शनियां हुईं और अनेक महत्त्वपूर्ण समूह प्रदर्शनियों में भी उनके चित्रों को स्थान मिला ।

राष्ट्रीय आधुनिक चित्र कला दीर्घा द्वारा प्रायोजित चित्र-प्रदर्शनियों के संदर्भ में उन्होंने यूरोप के अनेक देशों की यात्राएं कीं और विश्व के प्रमुख कला-केंद्रों से साक्षात परिचय प्राप्त किया ।

राष्ट्रीय आधुनिक चित्र-कला दीर्घा की राजकीय सेवा को छोड़कर हिंदुस्तान टाइम्स के प्रकाशन-समूह में प्रमुख चित्रकार का पदभार संभाला । उनके बनाये चित्रांकन और डिजायनों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण मानते हुए उन्हें कई बार राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए । ललित कला अकादमी के तृतीय त्रिनाले के अवसर पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में उन्हें पुरस्कृत किया गया । पटना के शिल्प कला परिषद ने उन्हें चित्रों और रेखांकनों के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया है ।

सुकुमार चटर्जी के चित्र ललित कला अकादमी, नयी दिल्ली, राष्ट्रीय आधुनिक कला-दीर्घा, नयी दिल्ली; ए. बी. सी. आर्ट गैलरी, वाराणसी; पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़; तथा देश-विदेश के अनेक कला-संग्रहालयों में संकलनों में सम्मिलित हैं ।

इन दोनों कालों के बीच से एक साथ गुजरते हुए मैंने एक और यात्रा की है । यह यात्रा है कला-जगत की । मेरे पितामह और पिता दोनों चित्रकार थे । मैंने उन दोनों को चित्र बनाते देखा है । चित्र-फलक को रंगों से उन्हें तब तक रंगते देखा है, जब तक कि चित्र-फलक यथार्थतः सजीव नहीं हो उठा है । ऐसा मैंने उस समय से देखा है, जब मैं नहीं जानता था कि वे क्या कर रहे हैं ? मेरे लिए तो यह सब एक जादू-जैसा



था और मैं इस जादू में इतना बंधा हुआ था, इतना मंत्र-मुग्ध था कि मैं भी इस जादू को सीख गया । मेरे पितामह कलकत्ता के स्कूल ऑव आर्ट से ब्रिटेन की तत्कालीन प्रचलित विक्टोरियन अकादमीवादी शैली में प्रशिक्षित चित्रकार थे ।

मेरे पिता ने जिस समय कलकत्ता के स्कूल ऑव आर्ट में प्रवेश लिया, उस समय उनके समकालीन इस पुरानी शैली से छुटकारा पाकर एक नयी राष्ट्रीय शैली— बंगाल शैली को विकसित करने में लगे हुए थे । पितामह और पिताजी दोनों अलग-अलग शैलियों के

चित्रकार थे और मैंने एक साथ इन दोनों को अपनी-अपनी शैलियों में चित्र बनाते देखा है, यानी एक ही समय पर मैंने दो भिन्न 'काल-खंडों' से साक्षात्कार किया है। इसके बाद दिल्ली में राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि में काम करते हुए मैंने अपने आप को राजा रवि वर्मा और एम. एफ. हुसैन या फिर हुसैन और अवनींद्रनाथ टैगोर के बीच झूलते हुए पाया है।

इन सारे सालों में, मैं एक ही साथ भिन्न-भिन्न कालों में जीता रहा हूं। जब आप समय की समकालिकता में जीते हैं, तो धुंधले और चमकीले, उजले और काले धब्बे एक-दूसरे पर चढ़ जाते हैं और आप एक प्रकार की अस्तित्ववादी जिंदगी जीते हैं। इसलिए, मैं जब भी अपने कोरे सफेद कैनवास के सामने खड़ा होता हूं, तो अपने रचना-कर्म में अपने उन्हीं क्षणों को जीना चाहता हूं। मेरे चित्रों में वृक्ष, झोंपड़ियां, महिलाओं के चेहरे आदि जो बार-बार उतर आते हैं, वे कोई स्मृति-छवियां नहीं हैं। मेरी ये छवियां रंगों, ब्रुशों और स्पेटुला की भांति मेरे उपकरण हैं। इन छवियों के साथ मैं अपने-आप को रचना-कर्म में निमग्न कर देता हूं। रचना-कर्म ही मेरे लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, यही मेरे लिए यथार्थ है। मैं उस जादू को, जो कभी मेरे ऊपर हावी था, उसे पैदा करने की कोशिश कतई नहीं करता।

मैंने इसे महसूस तो किया लेकिन, शायद बहुत देर के बाद। लेकिन, जैसे ही एक बार महसूस किया और कैनवास को सामने रख ब्रुश उठाया, तो फिर मैं एक दूसरी ही यात्रा पर निकल पड़ा।

प्रस्तुति : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

इनके बयां जुदा-जुदा

अच्छे ईसा हो मरीजों का खयाल अच्छा है
हम मरे जाते हैं तुम कहते हो हाल अच्छा है

— गालिब

सिर्फ इक कदम उठा था गलत राहे-शौक में
मंजिल तमाम उम्र हमें ढूंढती रही

— अदम

जब भी आता है मेरा नाम तेरे नाम के साथ
जाने क्यूं लोग मेरे नाम से जल जाते हैं

— कतील शफाई

परायी आग में जलते कभी न परवाने
जो अपनी आग में जलकर निखर गये होते

— नरेशकुमार शाद

हुक्मरानों से कहो होश में आयें कौसर
हम भी बैठे थे कभी ऐसे ही ऐवानों में

— कौसर नियाजी

याद बरबस आ गयी मां मैंने देखा जब कभी
मोमबत्ती को पिघलकर रोशनी देते हुए

— लक्ष्मीशंकर वाजपेयी

दिल जीतने के वास्ते दिल हारना है शर्त
इंसानियत को दिल में समोकर तो देखिये

— शम्स गाजियाबादी

वह टूटते हुए रिश्तों का हुस्ने आखिर था
कि चुप सी लग गयी दोनों को बात करते हुए

— बानी

मसाइल इतने पेचीदा नहीं हैं
सियासत-दां ही संजीदा नहीं हैं

— अशोक साहिल

खुदा को कौन सी सूरत से वह अपना बना लेगा
कि जिस इंसान से इंसान अपनाया नहीं जाता

— हकीम शबाब औरंगाबादी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

कहानी

जहरीली जीभ



● डॉ. किरण

आवाजें यात्रा करती हैं—अंतहीन यात्रा चौड़ी दीवारें, लंबे दालान और मोटे लीची के तने को चीरते हुए—मिसेज जागीरदा की आवाजें सुनायी देतीं रहतीं हैं—हमें रात-दिन । कई बार मैंने चाहा—कि भजनों के ऊंचे स्वर में मन को इतना रमा लूं कि दीवारों के आर-पार आनेवाली ये आवाजें मुझे न छू सकें—किंतु वे आवाजें तो अब कानों से परे, मेरे सीने को छलनी किये दे रहीं थीं ।

'बंदूक की गोली से ज्यादा असरदार हो सकती है—आवाज', अभी जाना मैंने यकीन करें, आप—मैं बाहर से साबुत थी—सदा की तरह सुंदर और सजी हुई—चमकते बेलबूटोंवाले सूट और टिक-टिक करती—'हील्स' में, किंतु भीतर से मर रही थी—निरंतर । किसी नन्हे सूराख से बूंद-बूंद गिरते पानी की तरह मेरा अंतः करण रस-विहीन होता जा रहा था । जप से मिलनेवाला संचित आनंद भी मेरा साथ छोड़ रहा था । मेरा मंत्र न जाने कब और कैसे उन आवाजों के अंधकार मे विलीन होने लगा—मुझे नहीं मालूम । किंतु उन धारदार आवाजों का एक-एक शब्द मेरा पीछा कर रहा है... सोचती हूं—अपने मितभाषी स्वभाव को दरकिनार करके—उन आवाजों को उल्टा कर आंगन की बजरी में उंडेल दूं—तो आती-जाती मिसेज जागीरदार के भारी-भरकम वजन से वे आवाजें पिस जाएं,

ायद-खतम हो जाएं—हमेशा के लिए...

और मैं खुली हवा में सांस ले सकूं फिर...
न आवाजों के घेरे से बाहर निकलकर...
जली सुबह है आज। छिटपुट बादल सूरज
ो ढंकने में असमर्थ हैं। ढेरों किरणें मुझे छू
हीं हैं और भीतर जलते ज्वार को तनिक बुझा
हीं हैं...

बजरी पर चिंगारियां नजर आ रहीं हैं... एक
ोने से इबारत पढ़नी शुरू करें आप—तो
हूलियत रहेगी।

दो बरस पहले की बात है—किसी ने पूछा
सेज जागीरदार से—'आपके पड़ोस में एक
ड़का रहता है—अपनी मां के साथ। कैसे हैं
लोग ?'

छोटी-छोटी आंखों को टेढ़ा करके—माथे
र त्यौरियां चढ़ाकर बोलीं वह—'अरे ! बस,
छो मत। हम ही हैं, जो निभा रहे हैं। ऐसे
ड़ोस के साथ।... क्यों क्या बात है, आप क्यों
छ रहीं हैं।'

एक कदम पीछे हटते सुनंदा ने
हा—'नहीं, यूं हीं।'

किंतु मिसेज जागीरदार ने तो थाम
लया—उसका हाथ और यह जानकर ही छोड़ा
क वह किसी के विवाह- संबंध के लिए पूछ
हीं थीं, यह सुननाभर था कि शुरू हो गयीं
ह—

'अरे, बाबा रे ! उसको कहें—बिलकुल
ल जाए वह, ये लोग तो बहुत लड़ाकू और
सैल हैं। मां-बेटा आपस में ही खुश
—बस। पहलेवाली लड़की को पागल
रके निकाल दिया। 'दे हैव पुश्ड हर इनटू
ग्स, यू नो'।' घृणा से मुंह सिकोड़ लिया,
उन्होंने।

फिर बोली—'छोटे बच्चे को भी 'पॉइज़न'
कर दिया है—उसके 'अगेंस्ट'।
'मनी-माइन्डिड' बना दिया है। कहते हैं—मां
के पास जाएगा, तो तुझे घर से निकाल देंगे।
'प्रॉपर्टी' में हिस्सा नहीं देंगे... बेचारा बच्चा'।
थोड़ा रुककर तनिक उचककर बोलीं—''मैं तो
आते-जाते उसे कोई टॉफी-लड्डू देती रहती
हूं। बगैर मां का है न ?...''

सुनंदा एक शब्द भी नहीं बोल सकी। वह
अपनी सहेली के लिए चिंतित हो उठी जो उस
बच्चे की नयी मां बनकर आना चाह रही
थी—उस घर में।

सीधे पहुंची वह मेरे घर में—और मिसेज
जागीरदार का एक-एक शब्द बता दिया मुझे,
बिना सांस लिए-जैसे।

आज मैं मिसेज जागीरदार का उस दिनवाला
रूप भी देख सकती हूं, क्योंकि उस समय बिना
हिचक मैंने सुनंदा के माध्यम से आयी आवाज
को झटक दिया था। यही सोचा मैंने—'तनिक
ईर्ष्या एवं बदले की भावना की बू आ रही है'
किंतु जब मैं उनके पड़ोस की बहू के रूप में
प्रतिदिन उनके पैर छूने लगी, तो उनकी जीभ का
जहर मेरी शिराओं में नित्य नये रूप में उतरने
लगा। पहले ही दिन उन्होंने कहा—'अच्छा ?
कुंदन का सैट तुम्हारे गले में ज्यादा जंच रहा है,
बबीता की गरदन इतनी लंबी नहीं थी न ?'

अगली टिप्पणी की उन्होंने—मेरे नये
मातृत्व पर... 'तुम तो आते ही अनुभव को
खाना खिलाने में लग गयी हो। अपने पति का
भी खयाल रखना भाई।'

अनुभवहीना मैं अनुभव के बालसुलभ

मेरे पति की कार से अक्सर मिसेज जागीरदार पहले उतरती हैं और हम दोनों की आवाजों को उनकी आवाज निगल जाती है।

स्वभाव को समझने की कोशिश कर रही थी। हम दोनों कभी 'स्टापु' खेलते, कभी पेड़-पौधों की देखभाल करते संग-संग, और कभी घंटों धूप में बैठकर बातें करते।

मिसेज जागीरदार कभी मेरा मजाक बनातीं, कभी अनुभव की दादी से शिकायतनुमा स्वर में मेरी तारीफ करतीं—'बच्चे को तो बहुत प्यार कर रही है। बहू अच्छी है बहुत, अनुभव अब खुश रहने लगा है।'

हर दिन के इस सिलसिले से सिकुड़ती दादीजी न जाने कब मुझसे ईर्ष्या करने लगीं और अनुभव को मेरे विरुद्ध भड़काने लगीं।

अब ये कटाक्ष, ये ताने मेरी समझ में आने लगे थे किंतु मैं मौन यह सोचती रही कि 'हर व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य करना चाहिए, फल ईश्वर देगा।'

मेरा यह विश्वास टूटा नहीं है आज तक। किंतु आवाजें मुझे डराने लगीं। दादीजी भी सुबह-शाम बाहर सुनी-सुनायी बातों की खीझ घर में उतारने लगीं। कभी गद्दियों में बरसों से बसी मिट्टी-धूल के लिए मैं एक महीने में ही दोषी हो गयी और कभी 'सोफा बैक' मुड़ जाने के लिए शिकायत की गयी—मेरे पति से।

अब मिसेज जागीरदार सुबह-शाम आतीं और नकली-सी हंसी के साथ मेरी खुशी तितर-बितर कर जातीं।

'अरे ! बेटा, तुझे मालूम नहीं—इस घर की इज्जत तो मैंने ही बचायी है। इनकी बेटी तो घर बैठ गयी थी आकर। मैंने ही दूसरी शादी करवायी उसकी—वह भी इतने अमीर घर में'। कभी कहतीं—'अरे ! इनकी बड़ी लड़की तो आयी थी एक दिन मेरे पास—यह कहने कि मेरी बिटिया को अपने पास रख लो। इसकी नानी तो इस पर बहुत अत्याचार करती है। मैंने ही कहा, 'न भाई ! ऐसा मैं नहीं कर सकती क्योंकि उनकी तो नाक कट जाएगी।'

और फिर वही ठहाका लगाती हुई वह वापस चली जातीं।

आत्म-श्लाघा में लीन वह कभी अनुभव के स्वर्गवासी दादाजी की बातें करतीं—"ही वास हार्ड ऑफ हियरिंग एंड नो वन वास काइंड इनफ टु लिस्सन टू हिम' मेरे से ही बातें करते थे वह घंटों।" मैं कभी उनको बहुत अच्छा मानती, कभी सोचती कि वह इतनी अच्छी हैं तो ऐसी बातें क्यों करतीं हैं। किंतु उनकी आवाजों के दायरे से बाहर निकलना—मेरे लिए संभव नहीं था।

धीमे-धीमे उन्होंने मुझे बहुत प्यार से बताना शुरू किया कि अनुभव की दादी अपनी सहेलियों से तुम्हारी बुराई करतीं हैं। मैं हैरान थी कि उन्हें हमारे घर की हरेक छोटी-बड़ी बात मालूम कैसे होती है। किस महीने नौ सौ रुपये का राशन आया है या किस दिन मेरे पति ने मां की गाड़ी में सिर्फ सौ रुपये का पैट्रोल



डलवाया—कैलेंडर—डायरी 'मेनटेन' कर रहीं हों शायद ।

छोटी-छोटी आवाजों से उलझता मेरा मन पूजा में उचटने लगा । तब वह अपनी ढाई घंटे की पूजा का बखान करतीं और मुझे अपनी ही नजरों में छोटा बना देतीं ।

अब उनकी आवाजों का अनुपात बढ़ने लगा । कुछ दिन बाद ज्ञात हुआ मुझे—उनकी लक्ष्य मैं नहीं—मेरा पति और उनकी मां है क्योंकि उन्होंने मुझे अपनी आवाजों से धकेलकर घर से बाहर करवा दिया और फिर उसी ठहाके से—मुझे समझाया —''इन लोगों के लिए मर भी जाओगी तो खुश नहीं होंगे ये लोग । अलग रहो तुम ।''

दूर आकर भी जहरभरी आवाजें हमारा पीछा कर रहीं हैं ।

मेरे पति की कार से अक्सर मिसेज जागीरदार पहले उतरतीं हैं और हम दोनों की आवाजों को उनकी आवाज निगल जाती है ।

''अरे ! मैं तो चौंतीस बरस की उम्र में विधवा हो गयी थी । तुम तो खुद कमाती हो, अकेले रह सकती हो ।''

अब वह मेरे और मेरे पति के बीच आवाज का हथौड़ा चला रहीं हैं, डरती हूं मैं—न जाने कब दरार आ जाए क्योंकि मैं तो जानती हूं—अपना दामन बचाना किंतु मेरे पति तो अभी भी उनके दामन में सुकूं तलाशने की भूल कर रहे हैं । ये दहकती बजरी—भेज रही हूं—उनके गुरुजी—भगवानजी कें पास । इस जीभ के जहर का शमन वह कर सकेंगी शायद...एक सुखद गृहस्थ उजड़ने से बच सकेगा जरूर । — पो.बॉ.-१६०, देहरादून

उड़ीसा : गरमियों में महासागर के किनारे

आनंद का मनुष्य के जीवन में विशेष स्थान है। अपने-अपने ढंग से मनुष्य आनंद की प्राप्ति करता है। भ्रमण भी आनंद प्राप्ति का साधन है। मई के महीने में जब बच्चों की परीक्षाएं खतम हो चुकी होती हैं, तब आप सपरिवार घूमने के लिए स्वतंत्र होते हैं। आप इन्हीं छुट्टियों में आप घूमने जाएं और कम खर्चे में अधिक आनंद उठाना चाहें तो



उड़ीसा जा सकते हैं । बंगाल की खाड़ी के निकट और भारत के पूर्वी तट पर स्थित उड़ीसा कभी कलिंग राज्य का हिस्सा था ।

लिंगराज मंदिर

अगर आप सैर-सपाटे के साथ-साथ तीर्थयात्रा का भी आनंद उठाना चाहते हैं तो भुवनेश्वर अवश्य जाएं । 'मंदिरों का शहर' नाम से विख्यात भुवनेश्वर उड़ीसा की राजधानी है । ग्यारहवीं शताब्दी में निर्मित प्रसिद्ध 'लिंगराज मंदिर' भुवनेश्वर का सबसे बड़ा मंदिर है । मंदिर में ग्रेनाइट पत्थर का बना ४४.८ मीटर लंबा विशाल शिवलिंग आकर्षण का मुख्य केंद्र है । मंदिर की अद्‌भुत शिल्पकला देखते ही बनती है ।

दसवीं शताब्दी में स्थापित मुक्तेश्वर मंदिर, राजारानी मंदिर, सातवीं शताब्दी का परशुरामेश्वर मंदिर, बेताल मंदिर, योगिनी मंदिर भी दर्शनीय तीर्थस्थल हैं । भुवनेश्वर में बौद्ध धर्म का विशेष प्रभाव है । शहर से आठ किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर धोली में 'अशोक रॉक एडिक्ट' है । चट्टान को काट कर बनाया यह मंदिर बौद्ध स्थापत्य कला का सुंदर उदाहरण है । धौलगिरि की पहाड़ियों पर स्थित और भारत-जापान के सहयोग से निर्मित 'विश्व शांति स्तूप' भी दर्शनीय स्थल है ।





भुवनेश्वर पर्यटन के दौरान आप यहां से मात्र साठ किलोमीटर दूर 'पुरी' जाने का कार्यक्रम भी बना सकते हैं । पुरी शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठों में से एक है ।

मंदिरों के अतिरिक्त उड़ीसा के समुद्र तट भी अद्‌भुत सौंदर्य के जीते-जागते उदाहरण हैं ।

बारहवीं शताब्दी में निर्मित 'जगन्नाथ मंदिर' और वार्षिक 'रथ यात्रा' के लिए यह विश्व भर में प्रसिद्ध है । मंदिर में स्थापित भगवान जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा की मूर्तियां चंदन की हैं ।

मुख्य मंदिर से दो किलोमीटर दूर गुंडिचा मंदिर, साक्षी गोपाल मंदिर, ब्रह्मगिरि में भगवान अलारनाथ का मंदिर विशेष दर्शनीय तीर्थस्थल हैं ।

कोणार्क मंदिर

भुवनेश्वर से चौंसठ किलोमीटर दूर 'कोणार्क' का अपना ही महत्त्व है । भुवनेश्वर के 'सुनहरे त्रिकोण' के रूप में विख्यांत 'कोणार्क' के मंदिर वास्तुकला के अद्‌भुत नमूने हैं । तेरहवीं शताब्दी में निर्मित 'सूर्य रथ मंदिर'



वास्तुकला की दृष्टि से आश्चर्यजनक है। मंदिर में स्थापित मूर्ति में सूर्य के सारथी द्वारा बारह पहियों के रथ को सात घोड़ों द्वारा खींचते हुए दिखाया गया है। 'खुशबाड़ा नदी' के किनारे स्थित 'रामचंडी मंदिर' भी यहां का प्रसिद्ध मंदिर है।

तैरना और घूमना पुरी में

मंदिरों के अतिरिक्त उड़ीसा के समुद्र तट भी अद्भुत सौंदर्य के जीते-जागते उदाहरण हैं। अपने सुनहरी तटों के लिए प्रसिद्ध 'पुरी' का सौंदर्य महासागर के कारण और बढ़ जाता है। तैरने और घूमने के लिए यह सुंदर जगह है। तट से सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत दृश्य देखा जा सकता है। सच कहा जाए तो पुरी एक समुद्री शहर है। 'चांदीपुर' का शांत समुद्र तट, ब्रह्मपुर के गंजम जिले का शांत गोपालपुर समुद्र तट सौंदर्य के अद्भुत केंद्र हैं।

'बालीगही' एक और दर्शनीय स्थान है, जो 'नूने नदी' के मुहाने पर पुरी से आठ किलोमीटर उत्तर में है। यह मनोरंजन स्थल सुंदर और रंग-बिरंगे पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है।

उड़ीसा में वन्य जीव अभयारण्य भी हैं। वे सब पशु विहार के साथ-साथ पर्यटकों के मनोरंजन स्थल भी हैं। विश्व प्रसिद्ध 'नंदन कानन पार्क' भुवनेश्वर से बीस किलोमीटर दूर है। प्राकृतिक झील से युक्त यह जगह दुर्लभ सफेद शेर और प्रवासी पक्षियों के लिए जानी जाती है। यह देश का सबसे बड़ा 'शेर अभयारण्य स्थल' भी है।

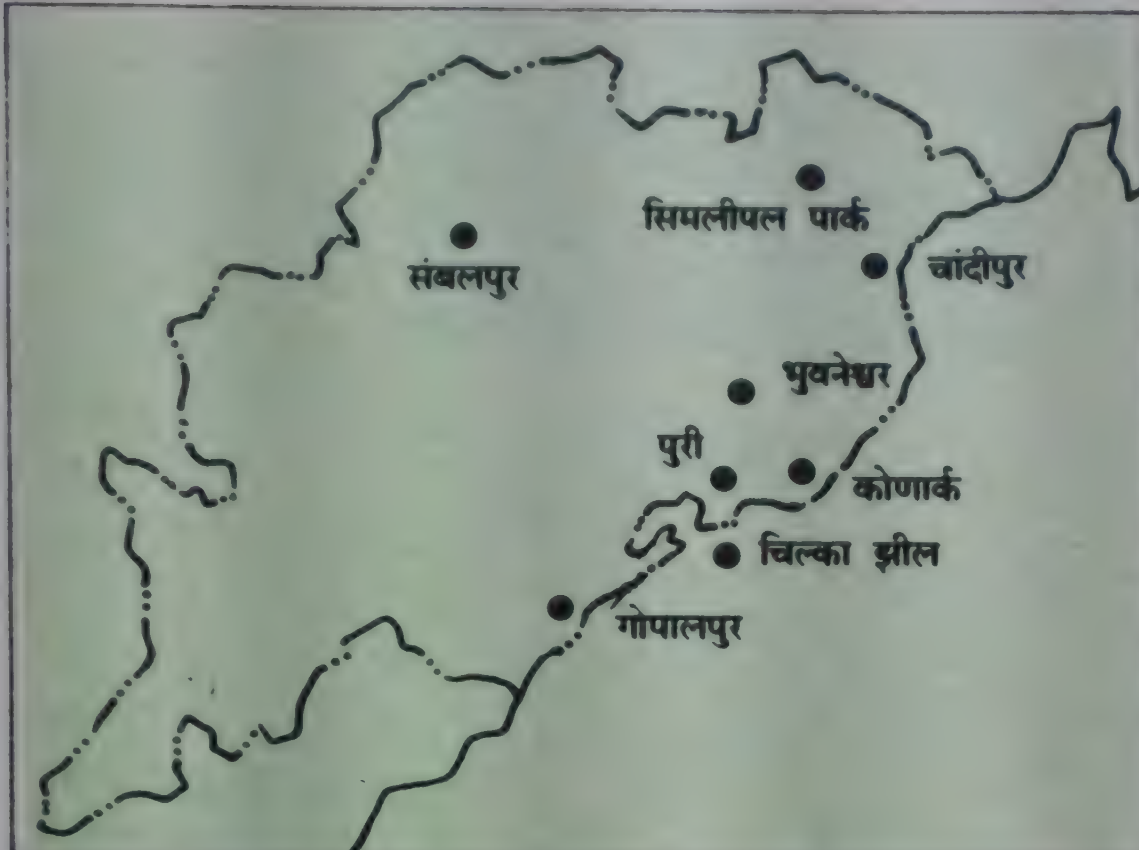
शेरों के साथ

मयूरभंज जिले में स्थित 'नेशनल पार्क बाघ संरक्षण परियोजना' के अंतर्गत बने नौ राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है। इस उद्यान में चीते, तेंदुआ, हाथी, मगरमच्छ जैसे जंगली जानवर हैं। पक्षियों की दो सौ इकत्तीस विभिन्न प्रजातियां भी हैं।

इसी तरह संबलपुर से अड़तालीस किलोमीटर 'पूर्व' में स्थित 'उषा कोठी वन्य जीव अभयारण्य' जंगली हाथी, चीता, बीसन, काला तेंदुआ, जानवरों और पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है।

उड़ीसा में जहां लुप्त होते जा रहे जानवरों के लिए 'संरक्षण स्थल' है, वहीं अतीत की भव्य सांस्कृतिक-ऐतिहासिक स्मृतियों की झलकी उड़ीसा के संग्रहालयों में देखी जा सकती है। भुवनेश्वर में स्थित 'राज्य संग्रहालय' में बड़ी

प्राकृतिक झील से युक्त यह जगह दुर्लभ सफेद शेर और प्रवासी पक्षियों के लिए जानी जाती है। यह देश का सबसे बड़ा 'शेर अभयारण्य स्थल' भी है।



ख्या में मूर्तियां, सिक्के, तांबे की प्लेटें, खुदे हुए त्थर, पाषाण और कांसे युगीन औजार, ताड़ के तों पर लिखी दुर्लभ पांडुलिपि और वाद्य यंत्र ।

भुवनेश्वर के ही सचिवालय मार्ग पर स्थित स्तशिल्प संग्रहालय' में पत्थर की मूर्तियां, ता चित्रकारी, पीतल की बनी वस्तुएं और चांदी ी महीन तारों से बनी वस्तुएं संग्रहित हैं ।

गरम पानी के झरने

उड़ीसा में गंधक के गरम पानी के झरने भी । भुवनेश्वर से बयालीस किलोमीटर दूर और सिद्ध 'हतकेश्वर मंदिर' के निकट 'अत्रि' गंधक गरम पानी का झरना है । स्वास्थ्य के लिए ाभप्रद होने के साथ-साथ इसकी सुंदरता भी द्भुत है । यहां नहाने की भी व्यवस्था है । सके अतिरिक्त ब्रह्मपुर से पचास किलोमीटर र 'तप्तपानी' गंधक के गरम पानी का झरना ी देखने योग्य स्थल है ।

दो सौ चवालीस मीटर ऊंचा 'खांडाधर वाटर फॉल' उड़ीसा का सबसे ऊंचा 'वाटर फॉल' है । इतनी ऊंचाई से गिरते झरने का सौंदर्य देखते ही बनता है ।

चिल्का झील का आनंद

स्नान करके तरोताजा होने के पश्चात उड़ीसा की विख्यात 'चिल्का झील' में सैर करने का तो आनंद ही कुछ और है । ग्यारह सौ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली 'चिल्का झील' भारत की महत्त्वपूर्ण झीलों में से है । झील में टापू भी हैं । तरह-तरह के जलचरों के समूह और सरदियों में आये प्रवासी पक्षियों को देखने का आनंद लिया जा सकता है ।

उड़ीसा की इस प्रसिद्ध झील में सैर करने के आनंद को हृदय में समेटे आप चाहें तो प्रस्थान की तैयारी कर सकते हैं । निसंदेह उड़ीसा की यह यात्रा आपके जीवन की यादगार यात्रा बन सकेगी ।

प्रस्तुति : अरुण

वैद्य की सलाह

सुरेंद्र, सहारनपुर

प्रश्न : उम्र २६ वर्ष । मेरी समस्या गंभीर है । मैं विस्तार से लिख रहा हूं, कृपया इलाज बताएं ?

उत्तर : केशोर गूगल एक वटी, चंद्रप्रभावटी एक वटी सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाद्यासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

अजय, उल्लासपुर

प्रश्न : दाहिने हाथ की अंगुलियों तथा पैर के टखनों में लेपरसी हो चुका था । दवा करने से लाभ हो गया । किंतु दो वर्ष से शरीर के किसी भी हिस्से में चोट लगने से तीव्र जलन महसूस होती है । दाहिने हाथ की अंगुलियों में संवेदनशीलता कम होती जा रही है । हाथ की दो अंगुलियों की नसें खराब बताते हैं । हर तरह से जांच करायी है । डॉक्टर कसरत करने के लिए सुझाव देते हैं ।

उत्तर : रसराजरस तीन ग्राम, केशोर गूगल तीस ग्राम, गिलोमसत्व दस ग्राम । सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-रात दूध से लें । सारिवाद्यारिष्ट दो चम्मच, अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय लें । दही, चावल, खट्टे व शीतलपेय का परहेज करें । तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

कृष्ण मुरारी गोयल, गढ़वा

प्रश्न : मेरे पुत्र की उम्र १३ वर्ष है । बचपन में निमोनिया का शिकार हो जाता था । एलोपैथिक दवा से क्षणिक लाभ मिलता रहा । अब चार-पांच वर्षों से काफी परेशान है । श्वास कष्ट होता है । सुबह रोग काफी बढ़ जाता है । बलगम नहीं निकलता, ठंड बिलकुल सहन नहीं होती । कमजोर होने के साथ-साथ शारीरिक विकास रुक गया है ?

उत्तर : सोम लता चूर्ण तीस ग्राम, नागार्जुनाभ्ररस दस ग्राम, तालीशादीचूर्ण तीस ग्राम, चंद्रामृत रस दस ग्राम, टंकण भस्म दस ग्राम, श्रृंगभस्म दस ग्राम, श्वास कुठाररस दस ग्राम । सभी औषधियों की नब्बे मात्रा बना लें । एक-एक मात्रा सुबह-दोपहर, शाम शहद से लें । च्यवनप्राशअवलेह एक-एक छोटा चम्मच सुबह-रात दूध से लें । दही, चावल, शीतलपेय, खटाई के परहेज के साथ ठंडी हवा से बचाव । एक वर्ष नियमित औषधियां सेवन करें ।

गोविंद मह, हल्द्वानी

प्रश्न : उम्र ४२ वर्ष । पिछले ६ साल से भयंकर जुकाम से पीड़ित हूं । आंखों में खुजली होना, पानी आना, दिन में ४०-५० बार छींकें आ जाती हैं । गला खराब रहता है । वर्षा-ऋतु शुरू होते ही परेशानी हो जाती है ।

उत्तर : चित्रकहरित्त की एक-एक चम्मच सुबह-रात गरम पानी से लें । लक्ष्मी विलास रस दो-दो गोली दिन में दो बार पानी से लें ।

शिव शंकर, जबलपुर

प्रश्न : उम्र ३५ वर्ष । वजन ४० किलोग्राम है । काफी प्रयत्न के बाद एक-दो किलो बढ़ता है । फिर वही स्थिति आ जाती है । जांच में सभी ठीक है । भूख कम लगती है । कब्ज प्रायः रहती है । पैरों में दर्द हो जाता है ।

उत्तर : च्यवनप्राश अवलेह एक-एक चम्मच सुबह-शाम दूध से लें । द्राक्षारिष्ट दो-दो चम्मच समभाग जल मिलाकर भोजन के बाद पीयें ।

. सुब्रमण्यम, हैदराबाद

प्रश्न : उम्र ४५ वर्ष । लगभग २० वर्ष से मुंह में छाले रहते हैं । कभी-कभी तो घाव बन जाते हैं । कुछ भी खाना मुश्किल हो जाता है । एलोपैथिक दवा से लाभ अस्थायी मिलता है ।

उत्तर : अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच भोजन के बाद पानी से लें । खदिरादिवटी दिन में आठ वटी चूसें । अमरुद के पत्ते उबालकर उससे दिन में दो बार कुल्ला करें । आहार-विहार का परहेज कर तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

सुधा, नासिक

प्रश्न : इक्कीस वर्ष की छात्रा हूं । देखने में स्वस्थ लगती हूं । एक साल से मासिक तीन महीने पश्चात होता है । दो दिन ही रहता है और सफेद स्राव आता है । दवा बताएं ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । खटाई का परहेज कर तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

घासी राम, श्रीमाधोपुर

प्रश्न : उम्र ४८ वर्ष । लगभग एक वर्ष से कमर-दर्द से परेशान हूं । बचपन में पेड़ से भी गिर गया था । डॉक्टरों ने बताया कि रीढ़ की हड्डी के जोड़ों की जगह कम ज्यादा हो गयी है । ऑपरेशन नहीं कराना चाहता ।

उत्तर : रास्ना गूगल दो वटी, चंद्रप्रभा वटी सुबह-शाम दूध से लें । समीर पन्नगरस दस ग्राम, रसराज रस पांच ग्राम, प्रवाल पिष्टी दस ग्राम । सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें । दोपहर-रात एक-एक मात्रा शहद से लें । अश्वगंधारिष्ट व दशमूलारिष्ट के दो चम्मच भोजन के बाद दोनों समय पीयें । दही, चावल व शीतल पेय का परहेज कर तीन माह नियमित औषधियां सेवन करें ।

जी. डी. गुप्ता, नागपुर

प्रश्न : पत्नी की उम्र ३० वर्ष है । उसे महिलाओं संबंधी कष्ट है । अकसर इससे भय बना रहता है । गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं है पत्र में सभी स्पष्ट लिखा है । उचित दवा लिखें ।

उत्तर : महिला चिकित्सक से परामर्श कर निदान करायें । स्वयं के शुक्र की भी जांच करायें, तभी औषधियों का सेवन उचित रहेगा ।

राम विलास, मुहम्मदपुर

प्रश्न : उम्र पचास वर्ष । पिंडलियों में बहुत दर्द रहता है । रात को कपड़ा बांधकर सोता हूं, तब भी परेशानी बनी रहती है । दर्द दूर करने की दवा ली, अब उससे भी लाभ नहीं मिलता । दर्द भी सहन नहीं हो पाता । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : चंद्रप्रभावटी एक, महायोगराज एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पीयें । महाविषगर्भ तेल की मालिश रात में यथास्थान करें ।

परेशान छात्रा, बिलासपुर

प्रश्न : उम्र बीस वर्ष । परिस्थितिवश परिवार में ऐसी घटना घटी जो कभी सोच नहीं सकती । तब से मानसिक रूप से बहुत परेशान हूं । मनोबल गिर गया । पढ़ती हूं, कुछ याद नहीं रहता । जीवन से निराश हूं । चिकित्सा से लाभ हो तो दवा सुझायें ।

उत्तर : आत्मविश्वास बढ़ायें । जीवन में परिस्थितियां आती-जाती हैं किंतु उनमें उलझें नहीं । विवेक से काम लेकर भविष्य को ठीक करें । शंखपुष्पी चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । बलारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पीयें ।

— कविराज वेदव्रत शर्मा

बी ५/७, कृष्ण नगर
दिल्ली-११००५१

धार-महानपुर : ३६० डिग्री का नजारा देता है

● सुरेश



क्या आप किसी स्थान पर खड़े होकर ३६० डिग्री के दृश्यों का आनंद ले सकते हैं ? है तो वैसे कठिन लेकिन यह धार-महानपुर जो एक पर्वतीय स्थल है और जिसकी खोज अभी पुरानी नहीं हुई, में संभव है । आप इसके शिखर पर चढ़कर ३६० डिग्री के दृश्यों का भरपूर आनंद ले सकते हैं । जिसके दक्षिण में थीन बांध, उत्तर में हिमालय की चोटियां तो पूर्व में प्रसिद्ध पर्यटनस्थल डल्हौजी और बखलों नजर आते हैं ।

ऐतिहासिक कस्बे बसोहली के निकट स्थित मनोहारी छटावाला धार-महानपुर पर्वतीय पर्यटनस्थल पर्यटन-विभाग की नयी खोज है, जिसे उसने राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने की अपनी नीति के तहत खोजा है और देवदार तथा चीड़ के घने जंगलों से घिरे इस स्थल की खुशकिस्मती ही कही जा सकती है कि यह इतनी जल्दी प्रसिद्धि के सोपान चढ़ गया, जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी ।

जम्मू-कश्मीर के प्रवेश द्वार लखनपुर से ६२ कि.मी. तथा ऐतिहासिक कस्बे बसोहली से २७ कि.मी. की दूरी पर स्थित इस नये पर्यटनस्थल ने जम्मू-कश्मीर के पर्यटन मानचित्र में अपना स्थान बना लिया है, एक बहुत ही छोटे अरसे में । यह सब इसलिए हुआ, क्योंकि अपने पर्वतीय वातावरण के कारण यह आज भी अन्य पर्यटनस्थलों से अपनी अलग पहचान दर्शाता है । इसके आसपास के गांव भी इसी



क्षेत्र की ही तरह खूबसूरती से लबालब हैं, और धार-महानपुर की खूबसूरती तथा मनोहारी छटा में चार चांद लगाते हैं ।

इस स्थल तक पहुंचना कोई कठिन नहीं है, बल्कि बहुत ही आसान है । जम्मू, कठुआ, पठानकोट, उधमपुर तथा यहां तक कि हिमाचल प्रदेश के कई भागों से यहां तक पहुंचने के लिए दो से चार घंटों का समय लगता है । इस स्थल तक आसानी से पहुंचने के लिए बसोहली में रावी दरिया पर नये पुल का निर्माण भी हो रहा है, जिसके कारण पठानकोट तथा गुरदासपुर से यहां पहुंचने के लिए ९० से १५० मिनट का समय लगेगा ।

कहा जाता है कि बसोहली के शासकों का धार-महानपुर एक आरामगाह हुआ करता था । जो बसोहली से हिमाचल प्रदेश तक जाने के लिए किये जानेवाले सफर के दौरान प्रयोग में लाते थे और अब लोगों के लिए यह सोने की खान हो रहा है, क्योंकि इसके लोग आर्थिक रूप से पिछड़े हुए थे, जो अब पर्यटकों के आने से समृद्ध होते जा रहे हैं । वैसे इसके विकास का कार्य भी जारी है, लेकिन इस तरह से विकास कार्य किया जा रहा है ताकि उसके पर्वतीय वातावरण पर कोई प्रभाव न पड़े ।

कुछ दिन पूर्व धार-महानपुर में एक दो दिवसीय मेले का आयोज़न भी हुआ, जिसमें सैकड़ों लोग आये थे तथा उत्सव के दौरान स्थानीय शिल्प और कला का प्रदर्शन भी किया गया, जिसने आनेवालों का मन मोह लिया ।

— ७२-एम, राजपुरा मंगोत्रियां
जम्मू-१८०००१
(जम्मू-कश्मीर)

यह महीना और आपका भविष्य

• पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : पारिवारिक दायित्व, धार्मिक और मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी। आजीविका संबंधी वांछित परिवर्तन होगा। अतिरिक्त आय के संसाधन होंगे। संपत्ति अथवा वाहन पर व्यय की अधिकता होगी। न्यायालयीन कार्यों में विलंब होगा। रचनात्मक कार्यों में रुझान बढ़ेगा। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी।

वृषभ : परिश्रम तथा पुरुषार्थ से लंबित कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से आजीविका संबंधी कार्यपूर्ति होगी। संपत्ति विवाद का समाधान होगा। मित्रों से पीड़ादायी स्थिति का उदय होगा। भावुकता की अपेक्षा विवेक पूर्ण निर्णय करें। प्रवास की अधिकता होगी। शारीरिक अस्वस्थता मास के मध्य में होगी।

मिथुन : नवीन योजनाओं की उपलब्धि होगी। पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी। निकटजनों के सहयोग से आर्थिक लाभ मिलेगा। आमोद-प्रमोद, भ्रमण पर व्यय की अधिकता होगी। प्रवास में पीड़ा होगी। उच्चाधिकारियों से संतुलित संभाषण करें।

कर्क : आर्थिक अस्थिरता में वृद्धि होगी। आकस्मिक व्ययों की चिंता होगी। भौतिकता के प्रति झुकाव बढ़ेगा। आर्थिक योजनाओं की पूर्ति होगी। राजकीय अधिकारियों का वांछित सहयोग मिलेगा। धर्म-आध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ेगा, प्रियजनों से भेंट होगी। उत्साह तथा उल्लास में वृद्धि होगी। मास मध्य में प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी।

सिंह : मास संघर्षपूर्ण होगा। शत्रुपक्ष की क्रियाशीलता पीड़ादायी होगी। उच्चाधिकारियों से विरोधाभास टालना हितकर होगा। आत्मविश्वास तथा साहसिक प्रयासों से प्रतिकूल परिस्थितियों का शमन होगा। निकटजनों के कार्य में विरोधाभास से उदासीनता बढ़ेगी। आध्यात्मिक सत्संग अथवा प्रवास का योग।

कन्या : आजीविका संबंधी दायित्वों में वृद्धि होगी। नवीन दायित्वों से कार्य की अधिकता होगी। स्वजनों अथवा रक्त संबंधियों से व्यर्थ विरोधाभास होगा। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु-पक्ष का दमन होगा। धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्ययों की अधिकता होगी। संपत्ति कार्यों में अकारण विलंब होगा।

तुला : भौतिक उपलब्धियों के प्रयास साकार होंगे। जोखिमपूर्ण कार्यों से धनलाभ होगा। आजीविका की दिशा में अनपेक्षित पदोन्नति होगी। उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से संपत्ति कार्य पूर्ण होगा। पारिवारिक वातावरण

ग्रह स्थिति : सूर्य १५ मई से वृषभ में, मंगल १० से सिंह में, बुध वृषभ में, गुरु वृश्चिक में, शुक्र ११ से मेष में, शनि कुंभ में, राहु तुला में, केतु मेष में, हर्षल तुला में, नेप्च्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक में परिभ्रमण करेंगे।

त्साहदायी होगा। लंबित समस्या का समाधान होगा। प्रवास की अधिकता होगी।

वृश्चिक : नवीन दायित्वों में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों से संबंधों में सुधार होगा। त्रु-पक्ष के षड्यंत्रों का भंडाफोड़ होगा। रोपकारी प्रयासों से पीड़ा होगी। रचनात्मक थवा सामाजिक कार्यों की अधिकता होगी। वीन पद अथवा पदोन्नति का योग होगा।

धनु : मास में भाग्यदायी सफलता लेगी। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से सन्नता होगी। आजीविका की दिशा में रिवर्तन होंगे। उदर तथा रक्त-विकार से पीड़ा गी। आध्यात्मिक आयोजनों में व्यस्तता गी। शत्रु-पक्ष व्यर्थ प्रलाप करेगा। भावुकता ी अपेक्षा विवेक से कार्य करें। प्रवास में ड़ादायी स्थिति का उदय होगा।

मकर : प्रवास की अधिकता होगी। स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी। नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी। आत्मविश्वास एवं साहसिक भावना में वृद्धि होगी। शत्रुपक्ष अंतर्घात का प्रयास करेगा। सामाजिक अथवा आध्यात्मिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा। रचनात्मक कार्यों से यश वृद्धि होगी। धनागम के अतिरिक्त संसाधन का उदय होगा।

कुंभ : कार्यों में धीमी उन्नति होगी। दिनचर्या अव्यवस्थित होगी। खान-पान में अस्वस्थता होगी। उच्चाधिकारियों के मध्य प्रभाव में वृद्धि होगी। शत्रु-पक्ष का शमन होगा। वांछित पद अथवा स्थान परिवर्तन होगा। पराक्रम तथा पुरुषार्थ से लंबित कार्य की पूर्ति होगी। निकटजन की अस्वस्थता चिंतनीय होगी। पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा। संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय होगा। सामाजिक अथवा मांगलिक कार्यों से सम्मान मिलेगा।

मीन : नवीन मित्रों का समागम धनदायी होगा। रचनात्मक कार्यों की अधिकता होगी। परोपकारी कार्यों में व्यय तथा प्रवास होगा। आर्थिक संसाधनों में अवरोध उपस्थित होंगे। पुराने मित्रों से समागम होगा। आमोद-प्रमोद में वृद्धि होगी। संपत्ति अथवा न्यायालयीन कार्य-पूर्ति से प्रसन्नता होगी। शत्रु-पक्ष से सुलह के अवसरों का उदय होगा।

— ज्योतिषधाम पत्रिका
१२/४, पुराना सुभाष नगर, भोपाल

पर्व और त्योहार

१ मई मजदूर दिवस, २ मई अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती, ३ मई वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, ५ मई आदिगुरु शंकराचार्य जयंती, ८ मई—बगलामुखी जयंती, ९ मई— सीता नवमी, ११ मई— मोहनी एकादशी, १२ मई— प्रदोष, १३ मई— नृसिंह जयंती, १४ मई— वैशाखी पूर्णिमा, १७ मई— संकष्टी, श्रीगणेश चतुर्थी, २५ मई— अचला एकादशी, २६ मई कवींद्र रवींद्र जयंती, २९ मई सोमवती अमावस्या, शनैश्चर जयंती, ३० मई— गंगा दशहरा व्रतारंभ।



गुरसौं बुग्याल : एक जन्नत

बुग्याल : धरती का स्वर्ग

● प्रकाश पुरोहित 'जयदीप'

पंचकेदार के आसपास के बुग्याल यानि मखमली घास की लहलहाती धरती, प्रकृति में स्वर्ग का एहसास कराती है। जम्मू-कश्मीर में जो 'मर्ग' के नाम से जाने जाते हैं, उन्हें गढ़वाल में 'बुग्याल' के नाम से जाना जाता है। 'बुग्याल' हिंदी के साथ-साथ अंगरेजी में भी प्रयुक्त होने लगा है।

ये बुग्याल गढ़वाल के मनमोहक मैदानों और ढलानों के रूप में है। ये किसी खास घाटी में न होकर पर्वतों की ऊंचाइयों में फैले हैं। गढ़वाल की यह धरती छह महीने तो बर्फ के आगोश में होती है पर बर्फ के छंटते ही यह 'बुग्याल' के रूप में लहलहा उठती है।

बुग्याल (हिमालय) में वृक्ष समाप्ति रेखा और शाश्वत हिम रेखा के बीच स्थित है। ग्लेशियर व ऊंचे पर्वतों से सटी यह धरती मई से अक्तूबर तक अतुलनीय हरियाली की ओढ़नी में समेटे रहती है। समुद्र तल से ३५०० की ऊंचाई पर होने के कारण यहां वृक्ष नहीं होते। दुर्लभ पुष्प प्रजातियों वाली वनस्पतियों से लदे होने के कारण यह क्षेत्र वनस्पति शास्त्रियों और खोजकर्ताओं के लिए अद्‌भुत विस्मय, रहस्य और कौतूहल का विषय बना रहा है। एक अनुमान के तौर पर अब तक अकेले बुग्यालों पर ही दुनियाभर में १५,००० शोधयंत्र प्रस्तुत किये जा चुके हैं।

माना जाता है कि बुग्याल भारत के अजिम जलवायुविक काष्ठा (क्लाइमेटिक क्लाइमेक्स)



सुविख्यात फूलों की घाटी : भ्यूंडार



बुग्याल में पाये जानेवाला विशेष किस्म का पुष्प : सफेद बुरांस

वाला क्षेत्र है । यानि यह क्षेत्र प्राकृतिक विकास (इवेल्यूशन) की यात्रा के अंतिम छोर पर विकसित हुआ । इसलिए यहां की वनस्पतियों की अनुमानतः ५०० किस्में प्रकृति के विकास की पराकाष्ठा के रूप में मानी जाती हैं । जैसे-जैसे ऊंचाई बढ़ती जाती है, रेशमी धागों की लंबाई कम होती होती जाती है। घासों में छोटे-छोटे रोयें पाये जाते हैं जो घास को अत्यधिक सरदी तथा गरमी से बचाते हैं ।

गढ़वाल के हिमालय में जितनी भी रमणीक घाटियां हैं, वे एक तरह से बुग्याल ही है । इनमें एक भ्यूंडार स्थित फूलों की घाटी तो विश्वविख्यात है । इस घाटी को खोज निकालने का श्रेय ब्रिटिश पर्वतारोही फ्रैंक स्मिथ को जाता है । कहा जाता है कि १९३१ में कामेट शिखर में सफल पर्वतारोहण के बाद लौटते वक्त वह रास्ता भटक गया और इस स्वपनिल फूलों भरी घाटी में पहुंच गया था । वह यहां इतना अभिभूत हुआ कि कई दिनों तक घाटी में ही डेरा डाले रहा । उसने पुष्पों की लगभग ३०० प्रजातियां ढूंढ़ निकाली । इसका जिक्र उसने अपनी पुस्तक 'वैली ऑफ फ्लावर्स' में किया । इसी पुस्तक ने घाटी को विश्वविख्यात कर दिया ।

इतना ही नहीं इस पुस्तक की प्रेरणा से १९३९ में लंदन से एक शोधछात्रा मारग्रेट लीग भी इस घाटी में आयी । पर दुर्भाग्यवश यहां घूमते हुए एक बड़ी चट्टान के नीचे दबने से उसकी मृत्यु हो गयी । मारग्रेट की कब्र घाटी में आज भी है ।

पंचकेदार का क्षेत्र जहां मदमहेश्वर तुंगनाथ, केदार, रुद्रनाथ और कल्पनाथ के धार्मिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है वहीं हरी-भरी वादियां, पहाड़ों और बुग्यालों के कारण यह सैलानियों के बीच भी आकर्षण का केंद्र हैं । अब यह स्थान क्रमशः ट्रैकिंग रूट के रूप में और लोकप्रिय होता जा रहा है ।

— द्वारा रूपसागर स्टूडियो
उत्तरकाशी-२४९१९३

वैवाहिक विलंब : कुछ अनुभूत मंत्र-प्रयोग

• मृदुला त्रिवेदी

ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर निर्विवाद रूप से पड़ता है । इस संदर्भ में आस्था अथवा अनास्था से कोई अंतर नहीं पड़ता ।

जीवन ऐसे ही अभावों का क्रूर साक्षात्कार है । जीवन के अभावों की प्रतिपूर्ति के लिए पुरुषार्थ की चतुर्मुखी शक्ति के साथ मानव ने तंत्र-मंत्र-यंत्र का भी सम्यक प्रयोग-उपयोग किया है । अनुभव से सिद्ध हो चुका है कि कन्या के विवाह में आनेवाली अनेकानेक बाधाओं की परिशांति भी मंत्र-शक्ति से सुनिश्चित है । यहां उन ज्योतिषीय कारणों का उल्लेख समीचीन रहेगा जो विवाह को उसके सटीक समय से परे कर देते हैं ।

जन्मांग में शनि की स्थिति, शनि द्वारा प्रचालित संस्थिति राशियां, नक्षत्र भाव दृष्टि एवं युति आदि का सतर्क अध्ययन करना चाहिए । यदि शनि शुक्र युक्त होकर सूर्य अथवा चंद्र में से किसी भी एक ग्रह पर दृष्टि निक्षेप करता हो तो विवाह में विलंब होता है । यदि सूर्य अथवा चंद्र या दोनों संयुक्त रूपेण शनि के नवांश में संस्थिति हो और शुक्र भी शनि से आक्षेपित हो तो विवाह में आशा से विपरीत विघ्न समुपस्थित होते हैं । सप्तम भाव अथवा लग्न के पाप ग्रहाक्रांत होने पर पापर्क्तरि योग की स्थापना होती है, जिसके परिणामस्वरूप दांपत्य अनेकानेक संकटों से घिर जाता है ।

लग्न सप्तम अथवा इनके अधिपति ग्रह यदि सूर्य और शनि, शनि और मंगल, शनि और राहु, राहु और सूर्य-जैसे अशुभ ग्रहों से आबद्ध होते हैं तो विवाह की दिशा में विलंब अथवा निषेध-जैसे संकेत प्राप्त होते हैं, विवाह में अप्रत्याशित विलंब तब भी होता है जब लग्नाधिपति, सप्तमाधिपति, चंद्रराशि-अधिपति और स्वयं चंद्र शनि से दृष्ट, युक्त अथवा द्वादशभावस्थ होते हैं । वक्री ग्रह की सप्तम भाव संस्थिति वक्री सप्तमेश, वक्री ग्रह की सप्तम भाव अथवा सप्तम भावेश पर दृष्टि और इन्हीं परिस्थितियों में द्वितीय भाव या शुक्र संरचित हो तो विवाह विलंबित होता है । पंचमेश और सप्तमेश के अधिपति में परस्पर विनिमय योग संस्थापित हो अथवा राहु और शुक्र सप्तम अथवा नवम भावस्थ हो तथा दुष्ट ग्रह दृष्टि का कुसंयोग हो तो विवाह में ज्योतिषीय दृष्टि से विलंब की घोषणा की जा सकती है । मंत्र शक्ति के व्यावहारिक प्रतिफलन से पूर्व उपरिलिखित तथ्यों का सटीक विश्लेषण अनिवार्य है । इसके पश्चात मंत्र साधना के पूर्व की कुछ आवश्यक सावधानियां उद्धृत हैं ।

अनुकूल मंत्र चयन

मंत्र द्वारा अभिलाषा पूर्ति के पूर्व अनुकूल मंत्र का चयन एक अपरिहार्य प्रारंभिक सावधानी हैं । मंत्र आपकी ज्योतिषीय संरचना के उपयुक्त होना चाहिए । प्रतिकूल मंत्र स्थिति में अपेक्षित सुधार के स्थान पर अनपेक्षित व्याघात उपस्थित कर सकता है । मंत्र प्रारंभ करनेवाले जातक और मंत्र के तत्व का समानधर्मा होना आवश्यक है । उदाहरणार्थ अग्नि तत्ववाले जातक को जलतत्वसंबद्ध मंत्र से पर्याप्त हानि हो सकती है । अनुकूल मंत्र चयन के लिए अनेकानेक शास्त्रीय/लोकसम्मत पद्धतियां प्रचलित हैं जिनमें कुलाकुल चक्र प्रमुख हैं । यहां संक्षेप में कुलाकुल चक्र के विषय में किंचित परिचय प्रस्तुत है ।

जातक जिस मंत्र की साधना करना चाहता हो उसका तथा साधना करनेवाले के नाम का पहला अक्षर दोनों यदि एक ही कुल के हों तो यह मंत्र निश्चित फल देनेवाला होता है । मंत्र और उसके उपासक की प्रवृत्ति में समानता होने से सफलता की संभावनाएं अधिक रहती हैं ।

यदि इन वर्गों में प्रकृति साम्यता न हो तो फिर प्रकृति मैत्री देखनी चाहिए । इसे जानने के लिए कुलाकुल-चक्र के अनुसार पृथ्वी आदि पांचों तत्वों में किन-किन तत्वों के साथ मित्रता है, यह देख लेना चाहिए । साधक और साध्य मंत्र के अक्षरों में प्रतिकूलतावाले मंत्रों की साधना फलदायी नहीं होती ।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—इन पांचों तत्वों में वर्णमाला के वर्णों को बांटकर कुलाकुल चक्र की रचना की गयी है जिसमें पृथ्वी, जल आदि तत्वों की आकाश-तत्व के साथ मैत्री है और वायु तत्व का पृथ्वी तत्व शत्रु है तथा अग्नि तत्व के जल तत्व और पृथ्वी तत्व शत्रु हैं ।

जिस प्रकार एक ही औषधि के अनेक विकल्प होते हैं उसी प्रकार एक ही साधना के लिए अनेक मंत्र हैं इसलिए मंत्रों के चयन में विशेष कठिनाई नहीं होती—

कुलाकुल चक्र

तत्व	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
वर्ण	उ ऊ औ ग ज ड न ब ल ह	ऋ ॠ ओ घ झ ढ ध भ व स	इ ई ऐ ख छ ठ थ फ र क्ष	अ आ ए च ट त क प य ष	ऌ ॡ अं ङ ञ न म श ह

तत्वमैत्रीचक्रम्

तत्व	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
मित्र	आकाश जल	आकाश पृथ्वि	आकाश वायु	आकाश अग्नि	अन्य चारों तत्व
शत्रु	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वि	×

कुलाकुल चक्र के अतिरिक्त राशि चक्र, अकड़म चक्र, नक्षत्र चक्र और अघटक चक्र द्वारा भी अनुकूल मंत्र का निश्चय किया जा सकता है ।

मंत्रोच्चारण में सावधानी

मंत्र का शुद्ध उच्चारण एवं उचित ध्वनि सहित बलाघात मंत्र के प्रभाव को प्रभविष्णुणता प्रदान करता है । आज तो ध्वनि विज्ञान के विषय में अनेकानेक क्रांतिकारी और आश्चर्यजनक शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं । मंत्रोच्चार के समय वाक्‌दोष, यतिदोष, विराम दोष आदि का पूर्ण विचार आवश्यक है । मंत्रोपासना की प्रारंभिक बातें विनियोग, न्यास और संकल्प आदि हैं, जिन्हें किसी अधिकारी, गुरु या आचार्य से पूछना उचित होगा । किंतु मंत्र द्वारा सम्यक् लाभ संप्राप्ति हेतु उसमें श्रद्धा और विश्वास आवश्यक है ।

पुराकाल से भारतीय जन जीवन वेद जननी गायत्री की अलौकिक शक्ति का श्रद्धालु रहा है । सभी वर्ग के मनुष्य इससे लाभान्वित होते हैं । सौभाग्य संप्राप्ति एवं मनोनुकूल वर के हेतु गायत्री-उपासना एक अमोघ उपाय है—

''ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

१. हे गौरि शंकरार्धाङ्गि । यथा त्वं शंकरप्रिया ।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम् ॥

आकाश तत्व का यह मंत्र समस्त कन्याओं के लिए करणीय है । मंत्र जप से पूर्व मां गौरी की श्रद्धापूर्वक अर्चना करनी चाहिए ।

२.ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन ।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासनीम् ॥

पृथ्वी तत्व प्रमुख यह मंत्र आकाश और जल तत्व प्रधान जातकों के लिए हितेय और वायु तत्व प्रधान जातकों के लिए वर्जित हैं । दुर्गा सप्तशति को संपुटित करके इस मंत्र का स्वयं पाठ करना चाहिए या किसी सुयोग्य पंडित से कराना चाहिए ।

३.कात्यायनि महामाये महायोगीन्यधीश्वरि ।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः ॥

देवी पार्वती की अर्चना करके उनके समक्ष एक माला के नैत्यिक जप द्वारा शीघ्र विवाह की स्थितियां उत्पन्न करने वाला यह मंत्र पृथ्वी तत्व प्रधान जातकों के लिए निषिद्ध है ।

इस संदर्भ में एक रोचक संस्मरण है । जिस समय मेरा पुत्र के. जी. में अध्ययन करता था उसकी चार अविवाहित शिक्षिकाएं मेरे पास आयीं । उन चारों के जन्मांग के निरीक्षणोपरांत मैंने उनको पृथक-पृथक मंत्र बताये और प्रतिदिन १०८ बार जप करने का निर्देश दिया । उनमें से एक शिक्षिका ने, जो उच्च शिक्षिता और संपन्न परिवार की थी, मात्र २८ बार जप संख्या स्वीकार की, परिणामस्वरूप छह महीने के भीतर उनको छोड़कर शेष तीन का विवाह संपन्न हो गया । जब वह विक्षुब्ध होकर मेरे पास आयी तो मैंने उनसे कहा कि उचित औषधि उचित मात्रा में लेने पर ही लाभ पहुंचाती है ।

इसके पश्चात उन्होंने गंभीरतापूर्वक १०८ बार उनके हेतु निर्दिष्ट मंत्र का प्रतिदिन जप आरंभ किया, फलतः शीघ्र ही उनका विवाह उच्च पदासीन व्यक्ति से हो गया । चारों शिक्षिकाओं को निर्दिष्ट मंत्र अधोलिखित हैं—

ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्र प्रियं भामिनि ।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्र लाभं च देहि मे ॥

इस मंत्र का जप करने से पूर्व तुलसी-पादप की १२ परिक्रमाएं तथा अनंतर दाहिने हाथ से दुग्ध और बायें हाथ से जल द्वारा श्री सूर्यनारायण को बारह बार समंत्र अर्घ्य दें । तदनंतर जप करें—

ऊं शंकराय सकल जन्मार्जित पापविध्वंसनाय ।
पुरुषार्थ चतुष्टय लाभाय च पतिं मे देहि कुरु कुरु स्वाहा ।।

अशुभ ग्रहों से पीड़ित एवं आर्थिक दुश्चिंताओं से ग्रस्त जातिका को शिव-पार्वती का सविधि अर्चन करना चाहिए । फिर केले के पौधे पर मौली की ११ आवृत्तियां लपेटकर इस मंत्र का जप करें, जप समाप्ति पर पौधे की परिक्रमा करें इसका शीघ्र एवं सुखद फल प्राप्त होता है ।

ऊं ह्रीं ह्रीं सूर्याय सहस्त्र किरणाय ।
मनोवांछितं देहि देहि स्वाहा ।।

यह अत्यंत सक्षम मंत्र है । प्रातःकाल नित्यक्रियाओं के उपरांत निराहार एवं निर्जल अवस्था में पूर्व दिशा की ओर अभिमुख होकर सूर्यदेव का विधिवत् समंत्र अर्चन करें एवं चार बार अर्घ्य करें । तदुपरांत गुड़ का नैवेद्य समर्पित करके एक पाद पर उत्तिष्ठ रहकर १०८ बार उपरलिखित मंत्र का जप करें । जपांत में मनोवांछित वर उपलब्धि के लिए सूर्यदेव से प्रार्थना करें । रविवार के दिन एक काल दूध, चावल एवं चीनी प्रयुक्त भोजन ग्रहण करें । सानुष्ठान इस मंत्र का प्रयोग अद्भुत चमत्कृत करनेवाला सिद्ध हुआ है ।

ऊं अयमायात्यर्यमा पुरस्ताद्वि विषितस्तु यः ।
अस्या इच्छन्नग्रुवै पतिमुत जायमजानये ।।
अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनंयती ।
अंगोन्वर्यमन्नसा अन्याः समनमायति ।।
धातादाधार पृथिवी धाता द्यामुत सूर्यम् ।
धातास्या अग्रुवै पतिं दधातु प्रतिकाम्यंम् ।।

अपने इष्टदेव के चित्र के अभिमुख होकर शुद्ध मन और तन से इस मंत्र का जाप करने से अभिलाषानुकूल उत्कृष्ट पति-प्राप्ति होती है ।

अनेकानेक मंत्र ऐसे हैं जो श्रद्धानुसार ५, ११ अथवा २१ की संख्या में जप करने पर अपना अपेक्षित फल प्रदान करते हैं, उनमें से कुछ अति विशिष्ट मंत्र उद्धृत हैं :—

स देवि नित्यं परितप्यमानः त्वामेवसीते[illegible]षमाणः ।
दृढ़व्रतो राजसुतो महात्मा तवैव लाभाय कृत प्रयत्नः ।।

× × × ×

महा महा इन्द्रेय ओजसापर्जन्योवृष्टिं टमारंडइव ।
उपयामगृहीतोसिमहेन्द्रायत्वेषतेयोनिम्महिन्द्रायत्वा ।।

× × × ×

अपांगम्मन्त्सीद मनत्वासूर्योमिताप्सीत्रभामिवैश्वानरः ।
अच्छिन्नपत्राः प्रजा अनुवीक्षस्वानुत्वादिव्यावृष्टिः ।।

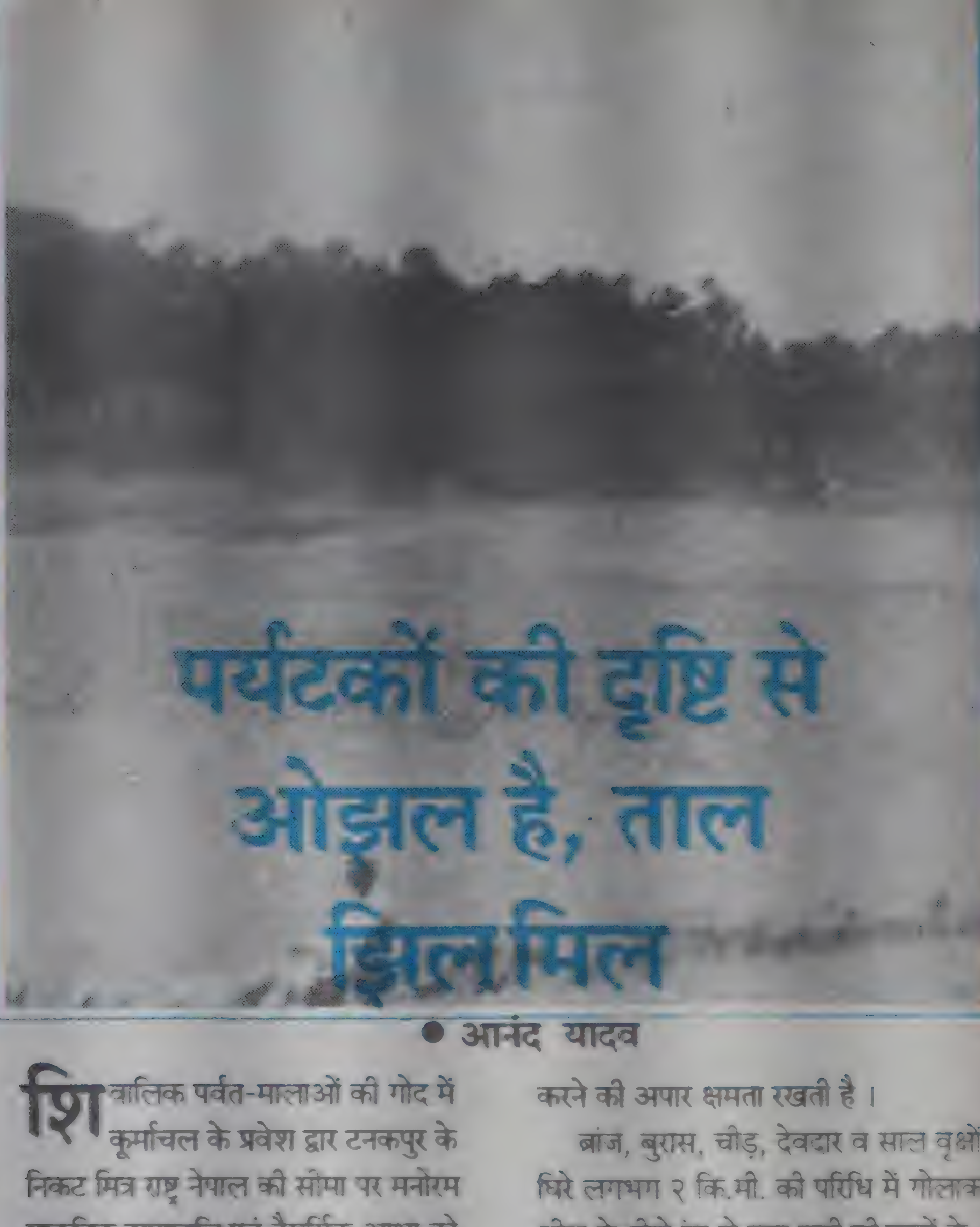
× × × ×

— २४, महानगर एक्सटेंशन
ई-४०, कॉरपोरेशन क्वार्टर्स के सामने
लखनऊ-२२६००६

बचपन में बुढ़ापा

इंगलैंड के स्टैफोर्ड में चार्ल्स वर्थ नाम का लड़का था । चार वर्ष की उम्र में उसके दाढ़ी-मूंछ निकल आयी और वह जवान हो गया । सात वर्ष की उम्र में उसके सभी बाल सफेद हो गये और पीठ झुक गयी, शरीर की चमड़ी लटक गयी । सातवें वर्ष के अंतिम दिनों में वह बुढ़ापे से जर्जर होकर मर गया । डॉक्टरों द्वारा मृत शरीर का परीक्षण करने पर उसके शरीर में कोई बिमारी नहीं पायी गयी । वह सात वर्ष की अवस्था में वृद्ध होकर मर गया ।

संजय परसाई 'सरल'



पर्यटकों की दृष्टि से ओझल है, ताल झिलमिल

• आनंद यादव

शिवालिक पर्वत-मालाओं की गोद में कूर्माचल के प्रवेश द्वार टनकपुर के निकट मित्र राष्ट्र नेपाल की सीमा पर मनोरम प्राकृतिक दृश्यावलि एवं नैसर्गिक आभा को अपने में समेटे प्रति पल लहरों के साथ झिलमिल करता निर्मल जलयुक्त झिलमिल ताल— पर्यटकों व प्रकृति प्रेमियों की दृष्टि से ओझल एक कोने में उपेक्षित-सा पड़ा है । बरमदेव स्थित सिद्धिनाथ बाबा की पवित्र स्थली से लगभग ५ कि.मी. दूर सिद्ध सरोवर या मानसरोवर की उपमा प्राप्त यह झील साधकों श्रद्धालुओं व पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार क्षमता रखती है ।

ब्रांज, बुरास, चीड़, देवदार व साल वृक्षों से घिरे लगभग २ कि.मी. की परिधि में गोलाकार झील के नीले रंग से युक्त पानी की लहरों के साथ झिलमिल करने से ही इस झील का नाम झिलमिल ताल पड़ा है ताल का मीठा व स्वादिष्ट जल पीते ही सारी थकान दूर हो जाती है व अपूर्व सुख तथा आत्मिक शांति का अनुभव होता है ।

दो भागों में विभक्त इस ताल का एक भाग दक्षिण में सूखा तथा दूसरा पानी से हर मौसम में ऊपर तक भरा रहता है । इस झील का पानी

बांज, बुरांस, चीड़, देवदार व साल वृक्षों से घिरे लगभग २ कि.मी. की परिधि में गोलाकार झील के नीले झील के नीले रंग से युक्त पानी की लहरों के साथ झिलमिल करने से ही इस झील का नाम झिलमिल ताल पड़ा है, ताल का मीठा व स्वादिष्ट जल पीते ही सारी थकान दूर हो जाती है व अपूर्व सुख तथा आत्मिक-शांति का अनुभव होता है ।

न तो कभी घटा हुआ और न ही कभी बढ़ा हुआ अनुभव होता है जल का उद्‌गम स्रोत या निकासी-मार्ग की थाह भी आज तक कोई न पा सका है ।

चारों ओर घने साल के वृक्षों से घिरा रहने पर भी साल में एक भी हरा या सूखा पत्ता गिरते नहीं देखा गया है । पत्ता गिरते ही चिड़िया उसे उठाकर ले जाती है । ऐसी जनश्रुति है । इस कारण ताल का जल साफ व निर्मल रहता है । स्वच्छता के ध्येय से ताल में नहाना-कपड़े धोना आदि की मनाही है । लोग बरतन में जल लेकर बाहर स्नान करते हैं ।

आस्थाओं व धार्मिक मान्यताओं से घिरे झिलमिल ताल की पूर्व दिशा में मलास पर्वत पर देवी का वास मानते हैं व शादी-विवाह, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों हेतु यहां पहुंचकर शिव-पुराण कथा व पूजा-अनुष्ठान कराते हैं । ताल के निकट स्थित मूर्तियों, त्रिशूलों पर पताका, घंटा, घंटी, डमरू व प्रसाद आदि चढ़ाकर मनौती मांगते हैं । नंगे पैरों ताल की परिक्रमा व जल से स्नान से पुण्य-लाभ प्राप्त होता है । चैत्र नवरात्र, वैसाख, ज्येष्ठ आदि पर्वों पर श्रद्धालुओं व भक्तों का प्रति वर्ष यहां आवागमन लगा ही रहता है । श्रावण व माघ माह में प्राकृतिक आरती की चर्चा तो ग्रामवासी अत्यंत श्रद्धा भाव से करते हैं ।

तालाब में लगभग ६" आकार की काले रंग की सींगोंवाली मछलियां, पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं, जो ताल के निकट मानव-छाया देखते ही किनारे पर आ जाती हैं । चावल आदि फेंकने पर सूखे में मुंह निकालकर चारा ग्रहण करती हैं । भक्तजन बड़े ही श्रद्धाभाव से उन्हें भोजन खिलाते हैं, इन मछलियों के शिकार आदि पर पूर्ण प्रतिबंध है । अर्जुन महर पुत्र मनीराम ने ताल के निकट आकर्षक प्रवेश द्वार बनाया है । पास ही यात्रियों के रात्रि-विश्राम हेतु दो कमरों का आवास गृह भी निर्मित है ।

घने जंगलों के बीच स्थित इस झील के निकट श्री तारानाथ योगी नामक नाथ-संप्रदाय के एक बाबा गत १८ वर्षों से निवास कर रहे हैं, जो ताल में पूजा-अर्चना के साथ ही यात्रियों के आतिथ्य-सत्कार को एक पुनीत कार्य समझते हैं । संपर्क-मार्ग के अभाव में श्रद्धालु भक्तों व पर्यटकों को यहां काफी असुविधा होती है । झील के जल से बरमृदेव व जमुआ, मटेला मलाड़ा, तिलचौड़, रोसाल आदि गांवों को पेय जल की आपूर्ति संभव है, ताल के जल का सिंचाई आदि कार्यों में भी उपयोग किया जा

सकता है, जल-विद्युत द्वारा ताल-क्षेत्र को ही नहीं निकटवर्ती गांवों की बहुसंख्यक आबादीवाले क्षेत्र को प्रकाश से आलोकित किया जाना संभव है। क्षेत्रवासियों द्वारा ताल झिलमिल को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की मांग तो वर्षों से की जा रही है, किंतु कोई भी ध्यान नहीं दिया गया है।

केवल यही नहीं इस क्षेत्र में काउबनी के घने जंगल में प्राचीन काल की एक प्राकृतिक गुफा भी है, जिसमें प्रातः व सायं प्राकृतिक आरती होती है। गुफा के ऊपर एक किलोमीटर की दूरी पर शिव-पार्वती की प्राचीन प्रस्तर की प्रतिमा एक पत्थर पर उत्कीर्ण आलिंगन मुद्रा में है। यह प्राचीन गुफा काफी रहस्यमय-सी है। कोई भी साधु-संत गुफा या मूर्ति के पास नहीं पहुंच सकता, गुफा के निकट हिंसक पशुओं, शेर आदि का भय सदा ही बना रहता है।

प्रकृति के अनमोल वरदानों व जनमानस की अटूट आस्थाओं को अपने में संजोये ताल झिलमिल एक अतीत काल से अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है। जन-सुविधाओं का विकास, किये जाने पर भी पूर्णागिरि के सच्चे दरबार के व सिद्ध नाथ बाबा की शरण में आनेवाले श्रद्धालु भक्त व पर्यटक मानसरोवर-सी महत्ता प्राप्त इस सदाबहार झील के भ्रमण व विश्राम का लोभ संवरण किये बिना न रहेंगे व एक सस्ते व सुलभ पर्यटक-स्थल के रूप में निश्चित ही यह क्षेत्र राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर सकने में समर्थ होगा।

— ४४, नेहरू मार्ग,
वार्ड नं.-२
टनकपुर, नैनीताल (उ.प्र.)

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क. 'फेमटो सेकंड'— एक सेकंड का महासंख हिस्सा (दस घात नकारात्मक पंद्रह), ख. रासायनिक क्रियाओं का बारीकी से अध्ययन, २. क. यूरेनस ख. अपनी धुरी पर १७ घंटे २० मिनट और सूर्य का चक्कर लगाने में ८४ वर्ष लगते हैं, ३. क. जसमें विभिन्न प्रकार की चीजें हों, ख. विक्रमादित्य की पत्नी, जो इंद्रजाल में पारंगत थी, ४. क. नानासाहब तथा लखनऊ की बेगम हजरत महल ने, ख. तॉत्या टोपे, ५. क. लुमियर बंधुओं द्वारा निर्मित मूक फिल्मों का प्रदर्शन पेरिस में १८९५ में हुआ, ख. १९१२-१३ में मूक फिल्में बनीं, १९३१ में सबसे पहली बोलती फिल्म बनी, ६. क. ३० जन. को मौनी अमावस्या पर प्रयाग में संगम पर सवा करोड़ श्रद्धालु एकत्र हुए थे, ७. क. अमरीका में रैनेवाली कल्पना चावला, ख. स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा, १९८४ में, ८. हंगरी की तीन बहिनें— सुजा, सोफिया तथा जूडिथ, ९. क. आस्ट्रेलिया ने, ख. भारतीय महिला टीम ने, ग. बंगाल ने, १०. लाइटर

तुम्हीं सो गये दास्तां कहते-कहते...

● प्रभा पाराशर



भारत के तीसरे राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन अब हमारे बीच नहीं हैं। उनसे जुड़ी यादें अब भी हम सब के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। श्रीमती प्रभा पाराशर, निजी सचिव के रूप में उनके तथा उनके परिवार के काफी करीब रही हैं। मौत के अंतिम क्षणों की पीड़ा को उन्होंने मर्मांतक ढंग से पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है।

जाकिर हुसैन, यानि उस जुबां का नाम जिस पर सदा उस खुदा का जिक्र रहता था, जो उसी को प्यारा हो गया। उसने बड़े प्यार से, बिना कोई तकलीफ दिये, चुपके से उन्हें अपनी गोद में ले लिया। कैसा आलम होगा वह, जब अपने इतने दूतों और यमदूतों के होते खुद अल्लाताला को उन्हें ले जाने के लिए नीचे उतरना पड़ा होगा। और वह अपने नाजुक, कोमल पांवों से चलते हुए धुरंधर डॉक्टरों की जुबां पर आकर बैठ गये होंगे। नहीं तो भला

सुबह ही जब उनका निजी डॉक्टर सारा चैक-अप कर संतोष कर चला गया, तो फिर साढ़े दस बजे के करीब विशेषज्ञ डॉक्टर के आने की खबर और उसके साथ अन्य डॉक्टरों का आना महज एक साधारण घटना ही तो थी। पर नहीं! यह तो एक बहाना था, जिसका दामन पकड़कर हिंदुस्तान का बादशाह, भारत का तीसरा राष्ट्रपति और अपनी प्यारी बेगम शाहजहां का शाहे-आलम चुपचाप चल दिया और सारी दुनिया देखती रह गयी।

३ मई : शनिवार

३ मई, १९६९, शनिवार का वह दिन आंखों के सामने घूमता-सा नजर आता है। सुबह के यही साढ़े दस बजे का समय था, जब वह अपने कमरे में बैठे खूब अच्छी तरह से बातें कर रहे थे, डॉक्टर साहब से। सभी को, चाहे वह ए.डी.सी. हो, निजी सचिव हों, या बड़े-से-बड़ा आफिसर या कोई साधारण कर्मचारी हो, उसे नाम या उसके पद के साथ साहब लगाकर ही वह बात करते। हैरानी होती थी कभी-कभी जब साधारण-से कर्मचारी को भी वह अपना कोई काम कराने के लिए बड़ी आजिजी से प्रार्थना के लहजे से बात करते। जबकि वह जानते थे कि उनका एक इशारा या माथे की भृकुटि ही बड़े-से-बड़ा काम करवाने के लिए काफी थी। कहने की भी जरूरत नहीं थी। फिर भी वह सबसे बड़े प्यार से, ताकि दूसरे का दिल न दुःखे, इस बात को ध्यान में रखकर बातें करते। इन पिछले कुछ महीनों से तो विशेषकर वह ऐसे हो गये थे कि किसी का भी दुख, तकलीफ जैसे देख ही नहीं सकते थे।

राष्ट्रपति भवन का ही एक माली जिसकी योग्यता के वह कायल थे, अचानक मर गया तो उस पीड़ा को वह बरदाश्त नहीं कर पा रहे थे। बेगम से बात करते हुए अचानक रो पड़े। बेगम हैरान होतीं, हमेशा दिलासा देतीं, फिर सोचती यह आदमी क्या सदा ऐसा ही रहेगा। वह जामिया मिलिया में पढ़ानेवाला एक ५० रुपये का मास्टर और अब जब आज हिंदुस्तान-जैसी जम्हूरियत का बादशाह है। वह आज भी वैसे ही रो सकता है यह याद कर कि जामिया मिलिया में पढ़ाते वक्त उस समय गुस्से में आकर उसने एक तालेबिलम को थप्पड़ मार दिया था। उन हाथों को देखते हुए और कल्पना में उस विद्यार्थी की सूरत को याद कर अपने इस कृत्य पर पश्चाताप करते हुए वह फूट-फूटकर बिलख पड़ते।

इतना नरम दिल आदमी। खुद कैसी-कैसी शख्तियां बरदाश्त करता। जिन्हें सहने में उसे कोई भी रंजोगम न होता। अच्छे काम के लिए, शिक्षा को शुरू करने के लिए और इसी जामिया को बनाने के लिए नंगे पांव घर-घर जाकर उनका चंदा इकट्ठा करना और देश की आजादी के संग्राम में हर तरह की कठिनाइयों को सहना, वह सब एक साथ कर लेते।

प्रकृति का आखिरी सलाम

फूल या कलियों से भी नरम और हीरे से लेकर सख्त-से-सख्त पत्थर से भी कठोर जाकिर साहब का व्यक्तित्व सब मिलाकर कुछ ऐसा था कि कोई भी उन्हें देखे और दो-चार मुलाकात कर ले, तो जिंदगीभर ऐसी शखि्सयत को भुला नहीं सकता था। उस दिन तो खासकर जैसे उनके अंग-अंग पर, उनके हर ढंग पर एक अजीब नूर-सा छाया हुआ था।

ॉक्टर से बातें करते आखिर उससे पूछ बैठे कि
ुझे काम शुरू करने की कब इजाजत होगी ?

डॉक्टर ने हंसकर बात को टालना चाहा, तो
ठकर विशाल राष्ट्रपति भवन के सुसज्जित
कमरे के झरोखे से जरा-सा सर नीचा कर अपने
हाथों से लगाये

तरह-तरह के देश-विदेश के फूलों और
विशेषकर गुलाबों को देखते रहे । उन्हें देख
ुसकराते रहे । शायद उनकी खुशी को बढ़ाने
क लिए धीमे-धीमे ठंडी बयार उठी और फूल
ूम-झूमकर अपने इस मतवाले आशिक को
और भी मतवाला बनाने लगे । तभी शौक से
ाले गये सफेद कबूतरों ने अपने में कुछ पाया
और गुटरगूं कर उनका अभिवादन करने लगे ।
ारी-बारी से मोरनियां, मोर, हंस आदि सभी ने
अपनी गरदन घुमा, नाच-नाचकर न जाने क्यों,
न्हें अपना सलाम भेजा, झट ही न जाने क्या
ोचकर, अपने को सचेत किया । अंदर मुंह
कर डॉक्टर के घर-परिवार की कुशलता पूछी,
से विदा किया और फिर अपनी प्यारी बेगम से
ातें करने लगे ।

बेगम ने भी समय देखकर अपने आंचल में
छपी चिट्ठी निकाली और मियां से उसका
जमून पढ़कर सुनाने की जिद करने लगीं ।
गम साहिबा का कहना था कि, वैसे ऐसा
हुत कम मौका मिलता जब वह जिद करतीं ।
लेकिन मियां उन्हें उस समय बड़े तरोताजा से
गे । वह सोच रही थीं कि कहीं उन्हें नजर न
ग जाए, पिछले कुछ दिनों से जब से असम के
रे से वह लौटे थे और डॉक्टरों ने उन्हें बीमार
ोषित कर आराम करने की सलाह दी थी, तब
से आज वह बहुत भिन्न नजर आ रहे थे । फिर
कल रात उन्होंने टेबल पर सारे परिवार के साथ
बैठकर थोड़ा-बहुत स्वादिष्ट भोजन किया था
और माह के अंत में होनेवाली अपनी धेवती की
शादी के बारे में बातें भी करते रहे । उनके
किसी अजीज दोस्त ने हैदराबाद से आम
भिजवाये थे । चूंकि आम उनका प्यारा फल था
इसलिए उसे काटकर सब में बांटा, बड़े प्यार से
खाया ।

बेगम निश्चिंत-सी होकर अंदर गयीं । दूध
का गिलास लाकर उन्हें देते हुए पास ही एक
मोढ़े पर बैठ गयीं । मियां बेगम को देखकर न
जाने कैसे हंसते-मुसकराते रहे और खत मजमून
सुनाते-सुनाते न जाने कितनी बार इस बीच
खास निगाहों से बेगम को देखा, बेगम कहती हैं
कि इस ६५ बरस की उम्र में भी उनसे मैं अपनी
निगाहें न मिला पा रही थी ।

शायद तब वह प्रेमी जाकिर, वह अल्हड़
शौहर, अपनी उस शरीके जिंदगी की अल्हड़
जवानी को याद कर सहम उठा होगा कि अपनी
१२ वर्ष की कमसिन उम्र से लेकर अब तक
उनके हर सुख, दुःख, गम, गरीबी, कठिनाइयों,
बीमारियों, परेशानियों और अब जीवन के
अंतिम कुछ दिनों तक की खुशी और प्रतिष्ठा को
जिसने झेला है, उसे कैसे अकेले छोड़ जाएंगे ।

बिना उसे कुछ कहे जाने से उनकी ऐसी
सीधी, सरल और केवल प्यार की पोथी पढ़ी
विदुषी जैसी अति साधारण पर असाधारण
व्यक्तित्ववाली, अपनी इस उम्र में भी गोल चांद
से गोरेमुख पर बड़ी-बड़ी कटोरों-सी मुग्ध
आंखोंवाली को भला छल सकेंगे ? इसीलिए
उसको समझाने के लिए कुछ बातें करना चाहते

राष्ट्रपति भवन का ही एक माली जिसकी योग्यता के वह कायल थे, अचानक मर गया तो उस पीड़ा को वह बरदाश्त नहीं कर पा रहे थे। बेगम से बात करते हुए अचानक रो पड़े। बेगम हैरान होतीं, हमेशा दिलासा देतीं, फिर सोचती यह आदमी क्या सदा ऐसा ही रहेगा। वह जामिया मिलिया में पढ़ानेवाला एक ५० रुपये का मास्टर और अब जब आज हिंदुस्तान-जैसी जम्हूरियतका बादशाह है। वह आज भी वैसे ही रो सकता है यह याद कर कि जामिया मिलिया में पढ़ाते वक्त उस समय गुस्से में आकर उसने एक तालेबिलम को थप्पड़ मार दिया था।

थे, पर कर नहीं पा रहे थे। तभी अचानक नजरें उठाते ही बेगम शरमाकर लाल पड़ती हुई अंदर जाने लगीं तो साहब उन्हें जाता देखकर फिर मुसकराते रहे।

इधर माया बेगम को जाते देख झट मृत्यु ने अपने हाथों से आकर उन्हें सहलाना शुरू कर दिया। मियां मुसकराते रहे, हंसते रहे और मन-ही-मन सोचते रहे कि लोग कहते हैं कि मैं बहुत बड़ा शिक्षाशास्त्री, प्रशासक और इस समय देश के सबसे ऊंचे पद पर आसीन महान व्यक्ति हूं, पर मुझे इतना बड़ा, महान और उदार, योग्य और कुशल लेखक और शिक्षक आदि बनाने में जिसका सबसे बड़ा हाथ रहा है, उसे कोई नहीं जानता और न ही जानना चाहेगा क्योंकि इस बेचारी परदा नशीन कुरानशरीफ और ऐसी ही धार्मिक पुस्तकों को पढ़नेवाली, अपने को अति साधारण नारी और एक सफल पत्नी तथा मां के अतिरिक्त कुछ न समझने और समझानेवाली औरत को कौन समझेगा ? यही शब्द अगर वह शरमीला शौहर अपनी उस शरीके जिंदगी से कभी कह सकता तो उसे सुनने और सहने की ताप किसमें थी ? ये तो उनके दिल की बात, उनकी मृत्यु के बाद रोती हुई बेगम को तसल्ली देते हुए, जब विजयलक्ष्मी पंडित ने सबके सामने कीं तो बड़ी-बड़ी मासूमियत से उनकी आंखें पूरे वेग से छलछला उठीं।

अंतिम क्षण

कितनी सच बात कह दी थी उन्होंने। उस दिन तो बस उन्हें जाता देखकर मियां मुसकराते रहे। अपने मालिक की छाया को अपने डॉक्टर के साथ आते विशेषज्ञ डॉक्टर में देखकर हंस दिये। अपने चारों ओर देखा और कहा कि सारा चैक-अप तो हो गया है। हठात किसी अनजानी आज्ञा से डॉक्टर के कहने पर उठकर बाथरूम की ओर बढ़ चले। ताकि डॉक्टर उनके मूत्र आदि का फिर से टैस्ट कर सके।

यह जानते हुए भी कि समय आ गया है और जिस मिलन के लिए सारी उम्र इबादत की,

ही स्वयं लेने आया है । जिसने उन्हें इस लायक समझा कि उन्हें अपने में लेने के लिए बुलाना नहीं बल्कि लेने जाना होगा । इससे बड़ी बात क्या हो सकती है ? पर फिर भी जिसने आयुभर कभी किसी क्षण अनजाने में भी किसी का दिल न दुखाया हो और इसी एक नियम का पालन करने में हर तरह की कटुता, कठिनाइयां और हर कठोर से कठोर विष को पीने के लिए स्वयं को ही चुना हो, वह अपने से बिछोह के इन लोगों के दुःख को कैसे देख सकेगा ।

तभी शायद उस सर्वज्ञ ने उनकी इस कठिनाई को जानकर चुपचाप उनके साथ उनके सेवक को अंदर बाथरूम तक पहुंचाने की आज्ञा दे दी । अंदर से जब मियां ने चिटखनी लगायी तो उसे लगा कि यह तो अनहोनी है, क्योंकि एक बार इसी तरह बेगम ने मियां को बाथरूम में ही बैठे खुदा के साथ जाने की तैयारी करते हुए सपने में देखा था— तब से उन्होंने कसम दे रखी थी कि वह कभी चिटखनी अंदर से बंद न किया करें । वह इस बात का पालन उस दिन तक बराबर करते रहे । पर शायद खुद उस परवरदिगार ने ही ऐसा किया होगा ।

थोड़ी देर हो जाने पर जब उनके प्रिय सेवक ने संदेह करते हुए दरवाजे पर दस्तक दी, तो कोई जवाब न पाया । दूसरी चाबी से दरवाजा खोलते ही वह एकबारगी चिल्ला उठा और क्षणभर में ही डॉक्टरों का सारा जत्था और घर-परिवार के सब लोग इकट्ठा होकर कुछ भी न समझ सकने की मुद्रा में खड़े हो गये । पलों में चिटखनी खोलते ढीले हुए नीचे गिरे शरीर में हर तरह से बनावटी सांस, ऑक्सीजन आदि सभी तरह से प्राण फूंकने के निष्फल प्रयत्न किये जाते रहे । पर सब व्यर्थ सिद्ध हुआ । जब दुनिया जहान के मालिक ने ही उन्हें अपनी गोद में ले लिया तो सारा संसार चकित-सा मुंह बाये देखता रहा । कोई विश्वास न कर सका । खुद उनकी अपनी प्यारी बेगम अपने मियां की इस आखिरी और सबसे बड़ी चोट को न सह सकीं और एक अति साधारण स्त्री की तरह बिलख रहीं थीं ।

— ५६, आनंद विहार
प्रीतमपुरा
नयी दिल्ली-३४

कब थे पृथ्वी पर डायनोसॉर

डायनोसॉर शब्द ग्रीक भाषा का है जिसका अर्थ है विशालकाय छिपकली । अब से करोड़ों वर्ष पहले इस पृथ्वी पर डायनोसॉर नामक भारी-भरकम शरीरवाले विशालकाय जीव विचरण करते थे । उन जीवों का जन्म करीब २२.५ करोड़ वर्ष पहले हुआ था । फिर वे करीब १२० मिलियन वर्षों तक, यानी ट्राइसिक काल से क्रेटेशियस काल तक इस पृथ्वी पर विचरण करते रहे ।

— लक्ष्मी सोनी


नंदन
नंदन
नंदन
नंदन

पाठ्य पुस्तकों के साथ खिलवाड़ हो रहा है !

इन दिनों स्कूलों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम किस तरह बनते हैं, यह लेख इसका एक उदाहरण है । गलत तथ्यों को प्रस्तुत कर समूची नयी पीढ़ी को बिगाड़ा जा रहा है । आखिर शिक्षा के बहाने हम किस इतिहास की रचना कर रहे हैं ! 'द एशियन एज' में प्रकाशित कमलिनी सेन गुप्ता का लेख चौंका देनेवाला है । प्रस्तुत हैं उसके कुछ अंश ।

अयोध्या में मंदिर का निर्माण राम के पुत्र कुश ने करवाया था... ?' 'कुतुबमीनार ा निर्माण समुद्रगुप्त ने कराया था...', 'पेशवा धवराव के नेतृत्व में भारत को आजादी ली...?', 'अल्लाह ने द्रविड़ों के हाथों से रत छीना और उसे आर्यों को सौंपा...?', हिंदू-धर्म की रक्षा के लिए जातिप्रथा शुरू की यी...?', 'आर्य भारत के मूल निवासी ...?', 'असम एक देश है...?', 'विजयनगर दू राष्ट्र की राजधानी थी...?'— जैसे अनेक क्तव्य हालांकि चौकानेवाले हैं, परंतु यह सच कि भारतवर्ष के अनेक राज्यों में इतिहास के न तथ्यों को अलग-अलग अपनी-अपनी तरह तोड़-मरोड़कर कक्षा एक से लेकर माध्यमिक क की कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाया जा रहा ।

अगर पुस्तकें आदमी को महान बनाती हैं तो पुस्तकों से वे बच्चे क्या बनेंगे, जिनके स्तिष्क में प्रारंभ से ही इतिहास को अलग-अलग ढंग से परोसा जा रहा है । बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव की जीवनी को बिहार के शिक्षण पाठ्यक्रम में जिस तरह से बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है, और उत्तर प्रदेश की सपा-बसपा सरकार ने पाठ्य पुस्तकों से जिस तरह से महात्मा गांधी के अध्याय को निकालकर उसकी जगह बी. आर. अंबेडकर, लोहिया और मौलाना आजाद के अध्यायों को जोड़ा है, उसने प्रारंभिक शिक्षा की पुस्तकों और छोटे बच्चों के भविष्य की आशाओं के सम्मुख एक गंभीर प्रश्न खड़ा कर दिया है । शिक्षा के गिरते स्तर से एक चुनौती पहले ही मुंह बाये खड़ी है ।

उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, असम, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल-जैसे राज्यों की प्रारंभिक शिक्षा की पाठ्य-पुस्तकों में इतिहास के तथ्यों को अपनी-अपनी तरह से शामिल किया गया है । कुछ राज्यों में यह काम

राजनीतिक कारणों से किया गया तो कुछ राज्यों में अपने दूसरे कारणों से, पर अलग-अलग इतिहास के तथ्यों को पढ़कर बच्चे क्या सीख लेंगे, क्या यह खुद चुनौतीभरा और गंभीर प्रश्न नहीं है ?

हिंदी और उर्दू की पुस्तकों में भेद है !

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा का प्रचार करनेवाले स्कूलों की पुस्तकों में जहां इतिहास को प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है, वहीं उर्दू मरकजी मकतबा ने जमायते इसलामी के विचारों को अपने मदरसों में पढ़ायी जानेवाली पुस्तकों में इसलामी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है । भारतीय जनता पार्टी के काल में पाठ्य पुस्तकों में जो परिवर्तन किये गये, उनमें अब उत्तर प्रदेश में उन पुस्तकों के आपत्तिजनक तथ्यों को पढ़ाने पर रोक लगा दी गयी है, मध्य प्रदेश में भी उन अंशों को उद्धृत न करने का दावा किया है, एवं राजस्थान ने उनकी समीक्षा और संशोधन का निर्णय किया है, पर हिमाचल प्रदेश ने कहा कि उसके यहां कोई आपत्तिजनक तथ्य नहीं है ।

यह तो हुई हिंदी पुस्तकों की बात, पर मजेदार बात यह है कि केंद्र और राज्य सरकारों ने उर्दू में पढ़ायी जानेवाली पुस्तकों के आपत्तिजनक तथ्यों पर रोक लगाने के प्रश्न पर चुप्पी साध रखी है । उत्तर प्रदेश में उर्दू की पाठ्य पुस्तकों में महमूद गजनवी की

हिंदू धर्म के लिए जाति-प्रथा !

उत्तर प्रदेश की पाठ्य-पुस्तकों में ही अलग-अलग तथ्य छात्रों के सम्मुख परोसे जाते हैं, जैसे हिंदू धर्म की रक्षा के लिए जाति-प्रथा शुरू की गयी, ताकि मुसलमानों के दुष्प्रचार को रोका जा सके... प्राचीन अवशेषों से यह पता चलता है कि सती-प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही थी और प्राचीनकाल में ही बाल-विवाह का प्रचलन हुआ... परदा-प्रथा मुसलिम शासकों और सरदारों की तानाशाही नीति का परिणाम है..., परिवारों को तोड़ने के लिए महिलाओं को अधिकार देनेवाला विधेयक ही मुख्य रूप से जिम्मेदार है । भारतीय जनता पार्टी ने हिंदी की पुस्तकों में जो तथ्य शामिल किये, वे हैं... आर्य भारत के मूल निवासी थे... भारतीय सभ्यता अन्य सभी सभ्यताओं से सर्वश्रेष्ठ है... प्राचीन भारतीय संस्कृति ही वास्तविक भारतीय संस्कृति है... राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक स्वतंत्रता आंदोलन के महान नेताओं में एक थे... इत्यादि । संघ परिवार से जुड़ा दीनदयाल संस्थान इस सिद्धांत का घोर विरोधी है कि आर्य बाहर से आये । संस्थान के एक इतिहासकार का मानना है कि यह सिद्धांत साम्राज्यवादी उद्देश्यों पर आधारित है । दिल्ली के सरस्वती बाल मंदिर स्कूल की इतिहास की एक शिक्षिका के अनुसार एन. सी. ई. आर. टी. की पुस्तकों में भी आर्यों के बारे में तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है । आर्य विदेशी थे या भारत के मूल निवासी थे, इस पर इतिहासकारों में मतभेद हैं तथा नये सिद्धांतों की खोज जारी है ।

ढ़-चढ़कर प्रशंसा की गयी है, जबकि हिंदी की पुस्तकों में पढ़ाया जाता है कि गजनवी भारत को तहस-नहस करना, लूटना तथा इसलाम को जबरन थोपना चाहता था। मरकजी मकतबा की एक पाठ्य पुस्तक में अकबर की निंदा की गयी है और औरंगजेब को 'आदर्श शासक' बताया गया है। पश्चिम बंगाल में उर्दू में ही पढ़ायी जानेवाली एक पाठ्य पुस्तक इसलाम के प्रति अकबर के रवैये की निंदा करती है। मध्य प्रदेश की पाठ्य पुस्तकों में औरंगजेब को एक दुष्ट और क्रूर शासक बताया गया है, तो अकबर की, मुसलमान होते हुए भी उसके हिंदू धर्म के प्रति सम्मान के कारण, प्रशंसा की गयी है, जो अपने माथे पर हमेशा तिलक लगाता था।

एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा गलत तथ्य प्रस्तुत

देश के अधिकांश भागों में पहुंचनेवाली

अन्य राज्यों की पुस्तकें

उत्तर भारत का दक्षिण भारत के प्रति रवैया— उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल की पाठ्य-पुस्तकों में दक्षिण भारत के साथ सौतेला बरताव किया गया है। मरकजी मकतबा की एक पुस्तक में तो दक्षिणँ भारत को पूरी तरह से गायब कर दिया गया है, जैसे भारत के इस क्षेत्र का कोई इतिहास ही नहीं रहा। यह भी आश्चर्य की बात है कि दक्षिण भारत की पाठ्य-पुस्तकों में द्रविड़ों की देश भक्ति का कहीं उल्लेख नहीं किया गया और द्रविड़ों को पूरी तरह से नकार दिया गया। उत्तर भारत की भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण भूमिका बतायी गयी है।

असम— मुसलमान असहिष्णु और कट्टरपंथी हैं..., भारतीय सभ्यता मुख्यतः आर्य सिद्धांत पर है... असम एक राज्य नहीं, बल्कि एक देश है... मंगोलियों की एक विशेष शारीरिक रचना है, जो मनुष्य जाति से अलग है..., बंगालियों ने हमेशा असमियों का दमन किया..., दक्षिण के सभी राज्यों के भारतीय मद्रासी हैं...।

आंध्र प्रदेशः द्रविड़ पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने धातुओं का सर्वप्रथम उपयोग किया..., जरमनी आर्यों का मूल निवास स्थान था..., मुसलमानों का तिरस्कार करो, क्योंकि वे भारतीय नहीं है।

तमिलनाडु : द्रविड़, आर्य ही नहीं भारत तथा ग्रीक भी जातियां हैं...

केरल : हिंदू राष्ट्र की 'विजयनगर' महान राजधानी थी...,

मध्य प्रदेश : मुसलमानों के खिलाफ तथ्यों को यहां तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है और कहीं-न-कहीं उनका गुणगान भी किया गया है..., म.प्र. की पुस्तकों में वही बातें ज्यादा है जो उत्तर प्रदेश की पुस्तकों में हैं। भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में जो पुस्तकें तैयार की गयीं, कांग्रेस के शासन में उन्हें 'डिस्कार्ड' कर दिया गया। हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में भी यही हुआ।

एन. सी. ई. आर. टी. की पुस्तकें भी इतिहास की तथ्यात्मक त्रुटियों से कम नहीं है। कक्षा १२ में पढ़ायी जानेवाली पुस्तक 'इंडियन सोसायटी' के प्रथम अध्याय में बताया गया है कि 'कश्मीर अपनी स्वर्गिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।' जबकि वहीं एक जगह लिखा है कि 'प्राचीन समय से ही कश्मीर हिंदू संस्कृति का एक प्रभावशाली केंद्र रहा। यह संस्कृत के छात्रों तथा कवियों का गढ़ था। इसने मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मदद की...।'

पाकिस्तान ने धज्जियां उड़ायीं : पं नेहरू डाकू थे !

पाकिस्तान में उर्दू में प्रकाशित पुस्तकों में अनेक मजेदार तथ्य हैं। कुछ उदाहरण देखिए : पंडित नेहरू डाकू थे और गांधी दुष्ट

हिंदी की पुस्तकें

विद्या भारती प्रकाशन संस्थान का दावा है कि उसके संस्थान से छपी पुस्तकें देशभर के ६००० स्कूलों में पढ़ायी जाती हैं। यानि विद्या भारती की पुस्तकें ४०,००० अध्यापकों के हाथों से होते हुए करीब १,२०,००० छात्रों तक पहुंचती हैं। विद्या भारती की इन पुस्तकों ने केवल राम और कृष्ण को इतिहास का एक महान अवतार बताया है। इन पुस्तकों में उल्लेख है कि कुतुब मीनार का निर्माण समुद्रगुप्त ने कराया था और उसे विष्णुथंबा के नाम से जाना जाता था..., माधवराव पेशवा ने अंगरेजी, फ्रांसीसी तथा पुर्तगाली खंडों का निर्माण किया..., दिल्ली के सम्राट उनकी कठपुतली थे और भारत उन्हीं के नेतृत्व में स्वतंत्र हुआ... आदि।

इतना ही नहीं, हाल ही में विद्या भारती ने कुछ और पुस्तकें छापी हैं, उनमें इस तरह के तथ्यों का उल्लेख है— जैसे, राम के पुत्र कुश ने अयोध्या में मंदिर का निर्माण किया..., ग्रीक का शासक मिनेंडर, पहला विदेशी आक्रमणकारी था जिसने १५० बी. सी. में इस मंदिर को तहस-नहस किया..., विक्रमादित्य (३८०-४१३ ए. डी.) ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया..., विदेशी आक्रमणकारियों ने रामजन्मभूमि पर ७७ बार हमला बोला... इन हमलों में सन १९१४ तक मंदिर की रक्षा करने में करीब ३,५०,००० रामभक्त मारे गये..., राम मंदिर को मुक्त कराने का संघर्ष ३० अक्तूबर, १९९० को शुरू किया गया, जो इस क्रम में यह ७८वां प्रयास है..., विद्या भारती की अन्य पुस्तकों में कहा गया है कि ईसाइयों के षड्यंत्र के कारण भारत का विभाजन हुआ..., मूर्तिपूजा के इसलाम विरोधी मुसलमान शिवलिंग की पूजा करने 'काबा' जाते हैं..., मोहम्मद ने 'खून की नदी' के मार्फत इसलाम का प्रचार किया..., एक अवतार की तरह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का उदय वर्तमान स्थिति को खतम करने तथा भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए हुआ...। 'भारत का इतिहास आर्यों के साथ शुरू होता है, जो निश्चित रूप से विदेशी नहीं थे। पुरू ने अलेकजेंडर पर विजय हासिल की...।'

दू..., भारत एक समय पाकिस्तान का ही एक ग था..., हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति भ्रष्ट रि गंदी है, मुसलमानों ने ही हिंदुओं पर ासन किया..., विभाजन (भारत-पाकिस्तान) फलस्वरूप हिंदुओं और सिखों ने सांप्रदायिक ो कराये..., हम सब को सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त रना चाहिए तथा दुश्मन (भारत) से लड़ने के ाए तैयार रहना चाहिए ।

पाकिस्तान ने इतिहास को सबसे ज्यादा ड़-मरोड़कर बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत किया । गांधी की हत्या पर प्रसन्नता व्यक्त करना रि हिंदुओं को काफिर कहे जाने की बातें कोई ी नहीं है । यहां कक्षा एक से लेकर कॉलेज क के पाठ्यक्रमों में इतिहास के चौकानेवाले थ्य शामिल किये गये हैं । पाकिस्तान तिहासकार खुर्शीद कमल अजीज की १९९३ शामिल की गयी पुस्तक 'द मर्डर ऑव हिस्ट्री पाकिस्तान,' के एक-एक अध्याय के तथ्य त्यंत खतरनाक और चौंकानेवाले हैं ।

हिंदुओं और सिखों ने दंगे कराये

उदाहरणार्थ, इनमें कहा गया है, ब्रितानियों जब क्षेत्र में हमला किया तो गैर-मुसलमानों मुसलमानों के विरुद्ध उनका साथ दिया, सलिए ब्रितानियों ने समूचे देश को जीतकर पने कब्जे में कर लिया... पंडित नेहरू ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद भारत में हिंदुओं की रकार बनेगी, १९६५ में आखिरकार किस्तानी सेना तथा पाकिस्तानी अवाम के भय भारत ने शांति के लिए मिन्नतें कीं..., १९७१ भारत ने अपने एजेंटों के द्वारा पूर्वी पाकिस्तान दंगे भड़काये और फिर चारों तरफ से उस पर ला बोला, इस प्रकार पाकिस्तान को बाध्य होकर भारत के साथ एक और युद्ध लड़ना पड़ा... । अरबी के बाद उर्दू ही एक ऐसी भाषा है, जिसकी विश्व में कोई भाषा बराबरी नहीं कर सकती— यहां तक कि उर्दू के सम्मुख अंगरेजी और फ्रेंच भी अपनी लोकप्रियता खोती जा रही हैं..., मुसलमानों ने हिंदुओं पर शासन किया ताकि वे हिंदूधर्म की सभी मान्यताओं एवं आस्थाओं को समाप्त कर सकें और इस प्रकार भारत से प्राचीन हिंदूधर्म का उन्मूलन किया गया..., विभाजन के बाद हिंदुओं और सिखों ने दंगे कराये और मुसलमानों के लिए कोई जगह नहीं बची । समय के आगे वे केवल असहाय बने और प्रभावित हुए... ।

स्वतंत्रता संग्राम या विद्रोह

पाकिस्तान में महमूद गज़नवी को काफी बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है और कहा गया है कि उसने इसलामी गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया । १८५७ के आंदोलन को पाकिस्तान में 'स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम तथा मुसलमानों का स्वतंत्रता का आखिरी संग्राम' बताया गया है ।

ज्ञातव्य है कि भारत के इतिहासकार प्रो. बिपिन चंद्रा, १८५७ के आंदोलन को 'विद्रोह' बताते हैं । यही बात कक्षा १२ में पढ़ायी जानेवाली अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा भी है । कुछ अन्य भारतीय इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में इसे 'स्वतंत्रता का संग्राम' बताया गया है, जैसा पाकिस्तान में पढ़ाया जाता है ।

पाकिस्तान की इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में आधुनिक भारत के इतिहास में बंगाल, दक्षिण भारत तथा उत्तर पूर्वी भारत को कोई स्थान तथा

उर्दू की पाठ्य पुस्तकें

मुसलिम छात्रों के लिए जमायते इसलामी द्वारा चलाये जानेवाले मदरसों में पढ़ायी जानेवाली पुस्तकों को दिल्ली के एक प्रकाशन मरकजी मकताबा इसलामी ने छापी है। रामपुर के मरकजी दरगाह द्वारा स्थापित तथा संचालित इन मदरसों का उद्देश्य इसलाम का प्रचार-प्रसार है। वे इसलामं के आविष्कार से उस भारत को सुधारना चाहते हैं जिसकी स्थिति खराब हो गयी है। पुस्तकों ने द्रविड़ों को कृतघ्न बताया है तथा कहा है, 'अल्लाह ने द्रविड़ों के हाथों से देश को छीन लिया तथा इसे आर्यों को सौंप दिया..., बुद्ध का सुधार प्रयास विफल रहा और देश का शासन गंदे और बुरे लोगों के हाथों में चला गया..., भारत को इसलाम के संदेश से ही बचाया जा सकता है..., के. जी. की कक्षा के लिए निर्धारित पुस्तक 'कैदा' में दो वाक्यों का उल्लेख है, 'मूरत मत पूज..., और इक खुदा को पूज। 'हमारी किताब' में मूर्ति पूजा की विस्तृत और घोर निंदा की गयी है। के. जी. से लेकर प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ायी जानेवाली इन पुस्तकों में सिर्फ खुदा, जन्नत और कब्र के बारे में लिखा गया है। इन पुस्तकों में भारतीय पृष्ठभूमि का नामोनिशान तक नहीं है। मदरसा में पढ़ायी जानेवाली पुस्तकों का कभी मूल्यांकन नहीं किया गया जबकि देश के अधिकांश मुसलिम बच्चे इन्हीं मदरसों में प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करते हैं। यद्यपि मदरसों में सुधार तथा उसके आधुनिकीकरण के प्रयास शुरू किये गये हैं तथा कुछ मदरसों ने एन. सी. ई. आर. टी. की पुस्तकों का भी उपयोग करना शुरू कर दिया है, लेकिन उन मदरसों का पाठ्यक्रम उर्दू की १८वीं सदी की मजहबी भावना की सीमा से बाहर नहीं गया और न जा पायेगा।

महत्त्व नहीं दिया गया है। पाकिस्तान की इन पुस्तकों में बंगाली मुसलमानों को भी कोई स्थान नहीं दिया गया है। कुल मिलाकर पाठ्यक्रमों में बच्चों के दिमागों में यह भरने की चेष्टा की गयी है कि वे सरकार की नीतियों का समर्थन करें, युद्ध को महान समझें और उसमें भागीदारी पर गर्व करें, भारत से घृणा करें, पाकिस्तान में एक नयी संस्कृति लागू करें तथा झूठ बोलें...।

आत्महत्या के लिए प्रेरित

क्या मूर्ति भी आत्महत्या के लिए प्रेरित कर सकती है? सहज विश्वास नहीं होता किंतु यह सच है। इटली में ला स्पाजिया के नौसैनिक म्यूजियम में स्त्री की 'अटलांटा' नामक काष्ठ मूर्ति रखी हुई है। मूर्ति के चेहरे पर मध्यम मुस्कान है व कंधे से उसका वस्त्र हल्का सा नीचे खिसका है और दायें हाथ से उसने घुटने के पास की धोती पकड़ रखी है। इस प्रतिमा को देख-देख कर कई पुरुषों ने आत्महत्या कर ली।

—सुबोध सहर

तनाव से मुक्ति

—डॉ. सतीश मलिक

महत्त्वाकांक्षा की शिकार

...ढ़वाल : आयु बीस वर्ष । छोटी-छोटी बात ...स्सा आता है । मित्रों से उम्मीद करती हूं, औरों ...धिक महत्त्व दें तथा नाराजगी जताने और ... पर मुझे मनायें । कोई नजरअंदाज करे, तो ...हुंचती है । जान-पहचान बनाने से डरती हूं, ... बिठाऊंगी, घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं ...चि साहित्य-संगीत में थी, घरवालों के जोर ...र विज्ञान लिया, फेल हो गयी । लोगों से ...ती हूं । जी करता है घर से दूर भाग जाऊं, ...कोई जानता न हो ।

...चपन से शौक है कि रेडियो या टी.वी. ...ल में भूमिका मिले परंतु गांव में रहने के ... तथा घरवालों का सहयोग न मिलने पर ...संभव नहीं । मुझे दौलत तथा शोहरत दोनों ...ए । क्या यह इच्छाएं गलत हैं ? कविता, गीत ... लिखती हूं, परंतु प्रकाशित नहीं हुए । मेरे ...फिल्मों में स्थान पा जाएं, ऐसी सभी बातें ...ा में घूमती रहती हैं । घरवाले एक-दो साल में ...कर देंगे, परंतु मैं ऐसा नहीं चाहती । मैं चाहती ... दिन कुछ नया लेकर आये । कुछ ...त्मक, कलात्मक । यदि ऐसा न हुआ तो ...नक विकलांग बन जाऊंगी ।

... स्तर से ऊपर उठने की इच्छा करना बहुत ...नीय है । परंतु आकांक्षाओं को साकार तो ...को ही करना होता है । इसे ही हम कार्य ... हैं । उच्च आकांक्षा के साथ धैर्यपूर्वक ...करना तथा धीरे-धीरे अपने कार्य द्वारा ... को साकार करना होता है । आपके साथ ...समस्या है कि आप एक-एक पग भरकर सीढ़ी चढ़ने के बजाय व कार्य पर ध्यान केंद्रित किये बिना ऊंची उड़ान लेना चाहती हैं । इसीलिए वास्तविकता से दूर हो, असफलता का द्वार देखना पड़ रहा है । तभी छोटी-छोटी बात पर गुस्सा आता है तथा ठेस पहुंचती है । आशा है आप जमीन पर चलना सीखेंगी तथा धैर्यपूर्वक कार्य करेंगी । तब सफलता आपके कदम चूमेगी ।

घबराहट

रुचि, कानपुर : २१ वर्ष की युवती हूं । २-३ वर्ष से परेशान हूं । परेशानी का आरंभ ऐसे हुआ कि एक दिन मेरी दूर की रिश्तेदार अचानक उल्टा-सीधा बोलने लगी । इलाज द्वारा वह तो ठीक हो गयी, किंतु मेरे मन में भय समा गया कि मैं कोई हरकत न करने लगूं । बोलने में झिझकती हूं कि कहीं गलत न बोल उठूं । किसी भी विक्षिप्त व्यक्ति को देखकर या उसके बारे में पढ़कर घबराहट होने लगती है । दिनभर नींद आती रहती है । हालांकि नींद केवल रात में ही समय पर आती है । समस्या का समाधान करें ।

मानसिक रोग कोई छूत का रोग नहीं, न ही कोई इसे स्वतः पा सकता है । वास्तव में मानसिक रोग का कारण उस व्यक्ति के दिमाग के भीतर कुछ द्रव्य पदार्थों की प्रतिक्रिया के कारण या फिर जींस का भी योगदान हो सकता है । वास्तव में आप स्वयं को एक रोगी समझती हैं, इससे रोग का डर पैदा हो जाता है । यह केवल चिंता व रोग का डर (फोबिया) ही है । आप वास्तव में रोग से ग्रसित नहीं हैं, न आप कभी होंगी । आशा है आप मेरा सुझाव मानेंगीं । इससे आपके भीतर का डर निकल जाएगा और आप सामान्य जीवन जी सकेंगी ।

बढ़ती अवस्था के कारण ?

क.ख.ग., पटना : मेरे पति ४९ वर्ष के हैं और मैं

४२ वर्ष की । हमारे २२ वर्ष के वैवाहिक संबंध बहुत संतोषजनक व प्यारभरे हैं । परंतु इधर दो माह से संबंधों में शारीरिक शिथिलता आ गयी है । यदि इस अवस्था में 'सेक्स' खत्म हो जाता है तो हम तसल्ली कर लेंगे, परंतु कहीं किसी रोग द्वारा ऐसा संभव है क्या ? न मैं इनसे खुलकर पूछ सकती हूं । उन्हें लज्जा और दुःख दोनों हैं । आपस में कोई तनाव या मनमुटाव नहीं है । हां, उच्च रक्तचाप की गोली लेते हैं । इनका दुःख देखा नहीं जाता । कृपया सलाह सुझाएं ।

इस आयु में सेक्स खत्म नहीं होता । इसलिए जांच आवश्यक है । खासतौर पर मधुमेह की । खून और मूत्र की जांच द्वारा इस रोग का पता चल सकता है । रक्तचाप की गोली भी इसका कारण हो सकती है । कुछ दवाएं ऐसी होती हैं जिनका असर सेक्स पर पड़ता है । डॉक्टर को बताने से, वह गोली बदलकर देंगे तो सही हो जाएगा । मन के भीतर बात रखना, आध्यधिक सोच, चिंता अच्छी नहीं, लज्जा त्यागकर डॉक्टरी जांच करायें । इस आयु में कई बार तनाव भी हो जाता है, जिसका यह लक्षण हो सकता है । स्नायु जांच भी करानी चाहिए । आशा है समस्या से घबराने की बजाय, सकारात्मक रूप से सोचें और जांच कराकर, सही निदान पाकर उपचार करवायें ।

कानों में सीटी बजती है !

म.श., भवानी मंडी : ४७ वर्ष का युवक हूं । अठारह वर्षों से उदासी, चिंता, नींद में घबराहट, काम में मन न लगना की स्थिति में रहता हूं । रात को नींद में मुंह की लार या थूक आना, सोते समय कान में सीटी बजती है । दायें कान के पीछे कोई नस खिंचती है । ब्रेन ट्यूमर, पेट में अलसर-जैसी बीमारियों की शंका रहती है । बीमारी का आरंभ २१ वर्ष पूर्व अधिकारी से झगड़ा, तत्पश्चात नौकरी

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें ।

—संपादक

के छूटने के डर से अत्यधिक काम डाल देने पर हुई । अवसाद से मुक्ति देनेवाली दवा से ठीक तो होता हूं, परंतु छोड़ते ही फिर बीमार हो जाता हूं । क्या आसन, प्राणायाम, जप, व्यायाम आदि से लाभ होगा या सारी आयु दवा खानी पड़ेगी ।

आपकी समस्या अवसाद की बीमारी अवश्य है क्योंकि जिन लक्षणों का आपने उल्लेख किया है, वह इसी रोग के हैं । दवा उन्हें सही तो करती है, परंतु जिंदगी की समस्याओं से तो आपको ही जूझना होगा । ऐसा लगता है मन में असुरक्षा की भावना, डर आदि घर कर गये हैं, जो कि आपके खुलकर जीने में बाधक बन जाते हैं । हर समय अपने शरीर के कार्य के बारे में सोचना व वहम करने की आपकी एक आदत-सी बन गयी है, इससे भी आपको छुटकारा पाना आवश्यक है । योग, व्यायाम अवश्य ही लाभदायक होंगे । हर समय अपने शरीर के अंदर झांकने के बजाय, बाहर की दुनिया में रुचि लें तथा अपने छिपे डर, असुरक्षा आदि भावनाओं पर विजय पायें । तब देखेंगे कि आप दवा के बिना भी सही रह सकेंगे ।

विचार परेशान करता है

सीमा, मुरादाबाद : २१ साल की बी.ए. की छात्रा हूं । दो वर्ष पूर्व पिता की मृत्यु के पश्चात काफी दुखद स्थिति में अपने को पाया । सोचते-सोचते बेहोशी-सी आने लगती थी । बाद में लगने लगा कि मैं दूसरी दुनिया में हूं । आसमान को देखकर अजीब-सा प्रतीत होता है । कितना ऊंचा है यह,

सब कुछ नया-नया-सा लगता है । कोई विचार दिमाग में आता है तो कौंधता ही रहता है । परेशान कर जाता है— जैसे सांस क्यों चलती है । पढ़ने में मन नहीं लगता, मन एकाग्रचित्त नहीं होता । ऐसे विचार आने का भय, फिर आएंगे कि नहीं, रोना-सा आना । यह सब लगा रहता है । एक बहन मंदबुद्धि है । होम्योपैथिक इलाज कराया, लाभ नहीं हुआ । समस्या का हल उत्सुकता से पत्रिका में देखने की इच्छुक हूं ।

आपके पिता की मृत्यु एक तनावपूर्ण घटना है । उसके दुःख व गम के साथ-साथ आपके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण भी रही । शायद इस घटना का आपके जीवन में कुछ खास मतलब रहा हो, जिनका आपके निजी सपनों को, आपकी आकांक्षाओं को साकार करने में असमर्थता से संबंध हो । आपको इस पर मनन कर अपने मन का हाल खुलकर किसी ऐसे व्यक्ति को कहना चाहिए जो कि आपकी व्यथा को समझ सके तथा उसका परिपक्व व्यक्तित्व हो । आपमें दुःख के आघात के साथ-साथ अवसाद के लक्षण हैं । इसमें बाहर की चीजें, लोग आदि अजीब लगते हैं । ऐसी मनोस्थिति अत्यधिक तनाव, निराशा, उदासी में उत्पन्न हो सकती है । तनाव व चिंता आदि के ठीक होते ही, फिर सही भी होने लगती है । अपने को समझाकर जिंदगी में रुचि लेने का प्रयत्न करें, तब आप देखेंगे कि समस्याएं सुलझने लगी हैं ।

क्यों देखती हूं ?

प्रीति शर्मा , चंडीगढ़ : १७ वर्षीय छात्रा हूं । बहुत ही दुःखी होकर लिख रही हूं । समस्या ३-४ वर्ष से है । किसी भी व्यक्ति या औरत को एक बार देखती हूं तो नजर से नजर मिल जाती है । फिर मैं घबराकर बार-बार देखने लग जाती हूं । जिससे मुझे शर्मिंदगी उठानी पड़ती है । मैं जिनकी भी तरफ देखती हूं, वह भी मेरे बारे में क्या सोचता होगा । मैं क्यों देखती हूं— मुझे खुद पता नहीं । समाधान दें ।

आपकी समस्या तब शुरू हुई जब आप १३-१४ वर्ष की थीं तथा आप जवानी की दहलीज पर थीं । इस आयु के आने पर लड़कियां अपने बारे में बहुत भावुक हो जाती हैं । उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । जैसे वे सुंदर व आकर्षक हैं कि नहीं— यह केवल एक पहलू है । आपकी समस्या सामाजिकता को लेकर है । जिनको अपने बारे में इस क्षेत्र में आत्मविश्वास की कमी महसूस होती है, उन्हें इस प्रकार की समस्या आ घेरती है । इसका हल भी यही है कि आप अपने मन में झांकें तथा साथ ही अपनी झिझक हटाकर सामाजिक बनें । आपकी घबराहट हट जाएगी । घबराहट में जब आप बार-बार नहीं देखना चाहतीं, फिर भी देखती जाती हैं— इन सब पर आप काबू पा सकेंगे । ●

सांड को सिर तक उठाने वाला

वह शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए एक छोटे बछड़े को प्रतिदिन अपने सिर तक ऊपर उठाता था । उसकी यह कसरत तब भी जारी रही जब वह बछड़ा बड़ा हो गया यानी भारी भरकम सांड बन गया । सांड को सिर तक ऊपर उठाने वाले इस व्यक्ति का नाम 'मिलो' था ।

छह सौ वर्ष ईसा पूर्व का सबसे महान खिलाड़ी 'मिलो' अपने चौबीस वर्षों के खेल जीवन में कभी भी पराजित नहीं हुआ । दक्षिण इटली के क्रोटॉन नगर का यह खिलाड़ी प्राचीन ओलंपिक खेलों में छह बार चैंपियन रहा ।

—सुभाष लखेड़ा

अयोध्या एक सच है !

• बद्री नारायण तिवारी

संसार में चर्चित 'अयोध्या' नगरी भारतीय संस्कृति की अस्मिता के प्रतीक श्रीराम की जन्मभूमि को प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं के रचनाकारों ने अपने-अपने शब्दों में ढाला है । भारत की प्राचीन पावन नगरी के वर्णन में अयोध्या को सप्तनगरों में शीर्षस्थ स्थान प्रदान किया गया है—

''अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची अवंतिका पुरीईरावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका''

धार्मिक मान्यता के अनुसार मनु ने वैकुंठनाथ श्री विष्णु से अयोध्या को मांगा था, तत्पश्चात सूर्यवंशी इक्ष्वाकु मनु ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को प्रदान किया जिसका वर्णन 'रामानुज दिग्विजय' में लिखा है—

या अयोध्या जगतीतले तु मनुना वैकुण्ठतोहानिता याचित्वा निज सृष्टि पालन परं वैकुण्नाथ प्रभुम

पद्मपुराण के अनुसार यह दिव्यपुरी (अयोध्या) वैकुंठ के मध्य में स्थित है । किंतु 'वृहत ब्रह्म-संहिता' के अनुसार दिव्य-धाम अयोध्या पर ब्रह्म राम और आदिशक्ति सीता की विहार स्थली है—

तत्रायोध्यापुरी रम्या यत्र नारायणो हरिः ।
रामरूपेण रमते सीतया परया सह ।

महाभारत में 'अयोध्या' 'पुण्य-लक्षणा' कही गयी है । जबकि 'शिव-संहिता' तथा 'वशिष्ठ-संहिता' में अयोध्या को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है— जैसे, अवधपुरी, कोशलपुरी, अयोध्या, साकेत, सत्या, नंदिनी, अपराजिता, ब्रह्मपुर, परवैकुंठ आदि । 'अथर्ववेद' में अयोध्या को परब्रह्म राम एवं पराशक्ति सीता का निवास स्थान मानकर इसे वैकुंठलोक स्थित माना गया है—

सा अयोध्या पूः स सर्व वैकुण्ठा न मेव मूलाधारा मूल प्रकृते :

'सत्योपाख्यान' में भी पवित्र सरयूतट स्थित नगरी को अयोध्या नाम से ही उद्धृत किया गया है—

अयोध्या, परितोभूमि तीर्थानि सकलानि च ।

अयोध्या की भांति पावन सरिता, ब्रह्मसर से प्रादुर्भुत होने से 'सरयू' का भी कई नामों से उल्लेख किया गया है । विष्णु अश्रु से निःसृत यह 'नेत्रजा' कहलायी । ब्रह्मांड पुराण में सरयू का उद्‌गम वैद्युत गिरिचरण में स्थित मानसरोवर कहा गया है । स्कंद पुराण के अनुसार चतुरानन के दायें अंगूठे से सरयू निकली है । वायु पुराण में इस आपगा को 'नेत्रजा' कहा गया, जबकि बौद्ध ग्रंथों में इसको 'सरयू' नाम से उल्लेख किया गया है ।

आदिकवि महर्षि बाल्मीकि ने अयोध्या का इंद्रधनुषी चित्रांकन किया है । वहां के सुंदर सुदृढ़ परकोटों, नगरसीमा अभेद्य होने से वहां युद्ध हो पाना असंभव होने से 'अयोध्या' नाम सार्थक ही था । राजमार्ग वृक्षावलियों से विभक्त थे । इसी अवधपुरी की ओर संकेत करते हुए आदिकवि का यह वाक्य—

बुंदेलखंड के दतिया निवासी सुविख्यात कवि बनी बख्श 'पलक' ने जो मार्मिक वर्णन अयोध्यावासियों के मुख से श्री राम वन-गमन को रोकते हुए अपनी कथा-व्यथा के साथ समझाने का प्रयास करते हुए किया—

ननी जन्म भूमिश्चस्वर्गादपि गरीयसी

र्वत्र जन्मभूमि वंदना में सूक्ति रूप में प्रयोग ोने लगा।

संसार में ऐसी मान्यता है कि मानव संस्कृति ा अभ्युदय सर्वप्रथम भारत में हुआ और नपराजेय 'अयोध्या' उसका जाज्वल्यमान केंद्र ंदु रही। विश्वकवि गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस' की रचना का अयोध्या गरी में शुभारंभ करते हुए लिखा—

वत सोरह सौ एकतीसा।
रउ कथा हरिपद धरि सीसा॥
मी भौमवार मधुमासा।
वधपुरी यह चरित प्रकासा॥

इसके पश्चात महाकवि तुलसी ने अपनी वपूर्ण रचनाओं में अयोध्या को 'अवधपुरी' मधामदापुरी', 'ममधाम', निजधाम तथा मधामं नामों से प्रस्तुत पंक्तियों में रेखांकित या है—

दउं अवधपुरी अति पावनि।
रयू सरि कलि कलुष नसावनि॥
मधाम्पुरी सुहावनि।
क समस्त विदित अति पावनि॥
द्यपि सब बैकुंठ बखाना।
द पुरान विदित जग जाना॥
वधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।
प्रसंग जाने कोऊ-कोऊ॥
न्म भूमि मम पुरी सुहावनि।
उत्तर दिसि सरजू बह पावनि॥
अति प्रिय मोहि इहां के वासी।
ममधामदा पुरी सुखरासी॥

इससे भी अधिक बंगला रामायण 'कृतिवास' के आदिकांड में अयोध्या का वर्णन किया गया—

अयोध्यार ये शोभा ता वर्णिते ना पारि।
आनंद सागरे मग्न बाल-वृद्ध-नारि॥

हरियाणा के रसखान कहे जानेवाले कवि अहमद बख्श ने सांग के शुद्ध रूप १६७३ चंबोलों में स्वरचित रामायण छह कांडो में विभाजित की है। एक शताब्दी पूर्व कुरुक्षेत्र (थानेश्वर) में प्रसिद्ध जनप्रिय लोककवि अहमद बख्श ने रामायण की रचना की जो 'अहमद बख्श थानेश्वरी कृत रामायण' नाम से प्रसिद्ध हुई। इस ग्रंथ का प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़ ने किया है। हरियाणा की लोक नाट्य शैली सांगों को शेष हरियाणा की अपेक्षा थानेश्वर नगर को समृद्ध सांग परंपरा की अग्रिम पंक्ति में मान्यता प्राप्त है। कवि अहमद ने लिखा—

नृप दशरथ त्रेता भये अवधपुरी जहां धाम
तीन नृप की रानियां बसें भरत खंड तमाम
हजारों नार अयुध्या वासी है
जैसे कृपण द्रव्य को हो प्यासा
हम राजतिलक की प्यासी हैं
जैसे बादल का प्यासा दादुर

संसार में ऐसी मान्यता है कि मानव संस्कृति का अभ्युदय सर्वप्रथम भारत में हुआ और अपराजेय 'अयोध्या' उसका जाज्वल्यमान केंद्र बिंदु रही । विश्वकवि गोस्वामी तुलसीदास ने 'श्रीरामचरितमानस' की रचना का अयोध्या नगरी में शुभारंभ करते हुए लिखा—

हम प्यासी प्रेम निवासी हैं
हे भगवत कर सुख से तड़का
हम सर्व आपकी दासी हैं

मराठी के सुप्रसिद्ध कवि माडगूलकर द्वारा रचित मराठी 'गीत रामायण' पर आधारित कविवर पं. प्रयाग नारायण मिश्र ने इस शताब्दी के प्रारंभ में 'राघवगीत' लिखा । इसकी तत्कालीन प्रमुख पत्रों ने बहुत प्रशंसा की थी । सुविख्यात कथाकार श्री अमृतलाल नागर की मान्यता थी कि 'राघवगीत' को रंगमंच पर प्रतिभाशाली निर्देशक के हाथों सफलता प्राप्त होगी । उसकी पंक्तियों में अयोध्या के अनेक क्षणों की अद्भुत झांकी देखने को मिलती है—

अवधपुर होत कोलाहल भारी ।
भौमवार मधुमास दुपहरी, तिथि नवमी उजियारी ।
राजन महलन चार ललन भये,
पुरजन मगन सुखारी ।।

(राघवगीत पृष्ठ २)

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अयोध्या विषयक एक अलग काव्यकृति 'साकेत' की ही रचना की । 'साकेत' की गरिमा का बखान यह चर्चित पंक्तियां स्पष्ट करती हैं—

देख लो साकेत नगरी है यही,
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही ।

उसी स्वर्ग से मिलने जा रही अयोध्या नगरी के उथल-पुथलवाले क्षणों को कविवर आचार्य करुणेशजी की रेखांकित पंक्तियां व्यक्त करती हैं—

सजता अवध देख, बजती बधाई सुनी,
ऐसी अकुलाई, उठी दाह देह भर

आधुनिक रचनाकारों ने भी अयोध्या को अपनी-अपनी दृष्टि से देखा है । श्री नरेश मेहता ने अपनी चर्चित कृति 'प्रवाद पर्व' में अयोध्या को सीता की अग्नि परीक्षा तथा भरत के आत्म-निर्वासन के आधार पर रेखांकित किया—

...आत्मनिर्वासित भरत के संयम से बड़ी/
अनुशासन की/ कौन-सी परीक्षा संभव है ?/
तीनों माताओं/उर्मिला, मांडवी/
सारे के सारे रघुकुल सदस्यों को/
अयोध्या की जनता को/कौन-सी परीक्षाएं नहीं देनी पड़ीं !

(प्रवाद पर्व पृष्ठ ९९-१००)

लोकभाषाओं के रचनाकारों ने भी राम की जन्मभूमि अयोध्या का वर्णन अंगक्षेत्र की (बिहार का एक क्षेत्र विशेष) अंगिका और रामकथा में अनेक स्थानों पर किया जिससे झलकता है कि श्रीराम अपनी नगरी अयोध्या में सोने की निर्मित पिचकारी से होली खेलते हैं ।

होली खेले राम रन धीरा
नदिया सरजू के तीरा

इसी प्रकार अंगिका लोकगीतों में तथा चैती गीतों में अयोध्या का वर्णन है—

ए राम आवैत अजोध्या राम जनम लैं हो रामा
घरे-घरे बाजे हैं अनध बधैया राम घरे-घरे

बुंदेलखंड के दतिया निवासी सुविख्यात कवि नबी बख्श 'पलक' ने जो मार्मिक वर्णन अयोध्यावासियों के मुख से श्रीराम के वनगमन को रोकते हुए अपनी कथा-व्यथा के साथ समझाने का प्रयास करते हुए किया, वह दृष्टव्य है—

अवधपुरी की दशा नेक तो विचार कर्‌यौ,
आप बन रैहौ यहां दुःख बढ़ि जैहै नाथ ।

हलवी भाषा के आदिवासी कवि रामसिंह के शब्दों में—

राम चो एतोर के जामुन अवध, सोभा चो भंडार होली ।
सफा पानी सरजू ने होली सुंदर, तीनों लेहरा बोहली ।।

वस्तुतः श्रीराम और उनकी पावन भूमि अयोध्या का वर्णन करते हुए अभी तक रचनाकारों की लेखनी अविकल रूप से चल रही है । अयोध्या और सरयू एक-दूसरे के पर्याय हैं । सरयू तट पर स्थित अयोध्या को एक संस्कृति का नाम देते हुए हिंदी के कवि डॉ. शैलेश जैदी ने हृदयस्पर्शी रूप में रेखांकित किया है—

दमक-दमक उठती हैं/
सरयू के तट की तहों में दबी संस्कृति की/
दीप्यमान छवियां
कि सरयू तट की तहों में दबी संस्कृति
आज भी आधुनिक है
और यह आधुनिकतता स्वदेशी है

एक अन्य कवि सत्यनारायण ने अयोध्या के अतीत और वर्तमान का सुंदर चित्रण किया है—

अयोध्या एक सच है
सच अयोध्या में नहीं है

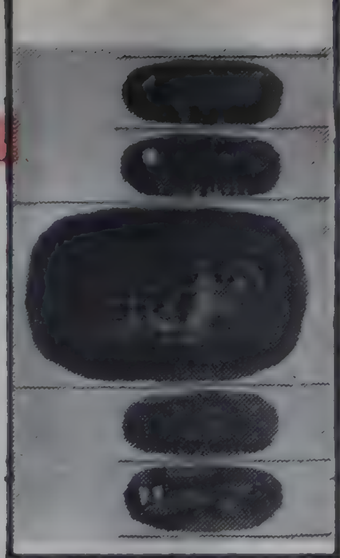
— मानस संगम
महाराज प्रयाग नारायण मंदिर,
(शिवाला) कानपुर-२०८००१

कुंभकरण का रिकार्ड टूटा

दक्षिण अफरीका के सिचेन वर्ग नामक शहर में 'ओणा सोणपाल' नाम की एक लड़की ने लगातार इकत्तीस वर्ष तक सोकर रावण के भाई कुंभकरण का रेकार्ड तोड़ दिया ।

एक दिन सत्रह वर्षीय ओणा रात्रि का भोजन करके पलंग पर जाकर सो गयी । अगली सुबह वह नहीं उठी । उसके माता-पिता उसे अस्पताल ले गये । डॉक्टर ने देखा उसकी सांस चल रही है । वह बोला इसे इसी प्रकार सोने दें और तब से 'ओणा' लगातार इकत्तीस वर्ष तक सोती रही । जब वह उठी तब उसकी उम्र लगभग पचास वर्ष थी । लेकिन उसके शरीर पर बुढ़ापे के कोई लक्षण नहीं थे । वह तब भी सत्रह वर्षीय युवती की तरह सुंदर दिख रही थी ।

— संजय परसाई 'सरल'



नयी कृतियां : 'भारत और हमारा समय'

हमारे समय का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज

प्रत्येक लेखक अपने समय का साक्षी होता है और उसके साक्ष्य कभी-कभी न केवल दिशा निर्देशन करते हैं वरन, साहित्य और समाज की अमूल्य धरोहर भी बन जाते हैं । डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी कृत 'भारत और हमारा समय' को ऐसी ही एक कृति कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें संसद, संविधान, लोकतंत्र और विधि-विधान को लेकर कुछ ऐसे निष्कर्ष दिये गये हैं, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक और सार्थक हैं जितने वे दस -पंद्रह वर्ष पूर्व थे । दूसरे शब्दों में उनके व्यावहारिक चिंतन से उद्भूत निष्कर्षों पर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया । यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा ।

डॉ. सिंघवी एक जाने-माने विधिवेत्ता और अधिवक्ता तो हैं ही साथ ही वे कला-मर्मज्ञ भी हैं । वे बहुत अच्छे लेखक और कवि भी हैं । भारतीय संसद और संविधान से उनका गहरा संबंध रहा है । दूसरी लोकसभा अर्थात १९६२-६७ के वे एक 'श्रेष्ठ सांसद' माने गये थे । पंचायत संविधान संशोधन डॉ. सिंघवी ने ही प्रस्तुत किया था और 'लोकायुक्त' शब्द भी उन्हीं की देन है ।

'भारत और हमारा समय' लोकतंत्र, संसद, संविधान, विधि-साहित्य और संस्कृति पर लिखे गये अनेक सारगर्भित लेखों का संकलन है । इस पुस्तक के आमुख में राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा के लोकतंत्र एवं संसद संबंधी उद्गार भी उल्लेखनीय हैं । डॉ शर्मा लिखते हैं :

'अब तो यह बात सर्वमान्य हो गयी है कि लोकतंत्रीय शासन-व्यवस्था विश्व की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था है । इसके द्वारा व्यक्ति की गरिमा तथा समूह के हितों की रक्षा हो सकती है । 'निजता' व्यक्ति की जन्मगत चाहत है और 'सामूहिकता' उसकी उदात चेतना है । लोकतांत्रिक व्यवस्था का वैशिष्ट्य इन दोनों के संतुलन में निहित है । इसलिए यह मात्र एक राजनीतिक व्यवस्था न रहकर एक संस्कृति, एक चेतना भी हो जाती है । यह ऐसा व्यवहार हो जाती है, जहां व्यक्ति अपना हित तो साधता ही है, लेकिन समूह के लिए अपने हितों का त्याग भी करता है ।

'संसद और चौपाल एवं लोकतंत्रीय संस्थाएं— इन दोनों की सीमा-रेखा निर्धारित करती हैं । ये टकरायें नहीं, इसके लिए वे पुराने कायदों को बदलती हैं और समयानुकूल नये कानून बनाती हैं । हल्के ढलान पर बहते हुए पानी की तरह प्रवाहित होती यह प्रक्रिया इस व्यवस्था को हमेशा स्वच्छ, निर्मल और वातावरण के अनुकूल बनाये रखती है ।'

यद्यपि इस कृति में संकलित डॉ. सिंघवी के अधिकांश लेख वर्षों पूर्व लिखे गये थे लेकिन वे आज भी प्रासंगिक और सार्थक हैं और इसीलिए यह कृति महत्त्वपूर्ण भी है ।

उदाहरण के लिए १९६१ में लिखे गये

अपने एक लेख में उन्होंने सुझाव दिया था कि *'हमारे देश में संसदीय संस्थाओं और प्रक्रियाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए, उनके मूल्यांकन और सुधार के लिए और उन्हें लोकतांत्रिक जीवन शैली के अनुरूप बनाने के लिए एक संसदीय सुधार आयोग का निर्माण करना चाहिए ।'* आज चौबीस वर्षों बाद भी यह सुझाव उतना ही प्रासंगिक और व्यावहारिक है, जितना सन १९७१ में था ।

यह विचारोत्तेजक कृति चार खंडों में बंटी है । 'संसद और संविधान' शीर्षक प्रथम खंड में बीस लेख संकलित हैं, जिनमें विद्वान लेखक ने संसद, संविधान, न्यायपालिका, संविधान में होनेवाले संशोधनों, राष्ट्रपति और मंत्रिपरिषद की कार्य-शैली, राज्यपाल के अधिकारों के अलावा 'राजीव गांधी की नियुक्ति : संविधानिकता का प्रश्न' पर भी अपने विचार व्यक्त किये हैं । ।

'लोकतंत्र की राजनीति' शीर्षक के द्वितीय खंड के लेखों में ल
लोकतंत्र के विभिन्न पक्षों पर सम्यक रूप से विचार किया गया है । इसके अतिरिक्त संघीय प्रणाली के गुण-दोषों की विवेचना, प्रादेशिकता की भावना, कानून और चुनाव के विषय में भी लेखक ने अपना मत प्रस्तुत किया है । इस खंड का 'भारतीय इहलोकवाद' शीर्षक से लेख विशेष रूप से पठनीय है । इसमें डॉ. सिंघवी ने धर्म के विषय में विभिन्न न्यायालयों के मतों और इस प्रश्न को प्रभावित करनेवाले मुकदमों की चर्चा की है ।

'विधि और विधान' शीर्षक खंड में संकलित निबंधों में डॉ. सिंघवी ने लोकायुक्त, पारिवारिक न्यायालय, मृत्यु-दंड, हिंदू विवाह के अतिरिक्त न्यायपालिका की स्वतंत्रता— जैसे विषयों पर चिंतनपूर्ण निष्कर्ष दिये हैं । इस खंड में एक महत्त्वपूर्ण लेख है— 'इलाहाबाद हाईकोर्ट का ऐतिहासिक फैसला और एक राजनीति भूकंप ।'

श्रीमती इंदिरा गांधी के चुनाव के संबंध में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जगमोहन लाल सिन्हा का फैसला अनेक अर्थों में दूरगामी परिणामवाला सिद्ध हुआ । लेखक के शब्दों में ***यह फैसला श्रीमती गांधी के राजनीतिक जीवन और भारतीय सांविधानिक आकाश का धूमकेतु सिद्ध हुआ ।*** सभी जानते हैं, इसी फैसले के फलस्वरूप देश में आपातकालीन स्थिति लागू हुई, नागरिक अधिकारों का हनन हुआ और अंततः जनता ने श्रीमती गांधी को सत्ताच्युत कर अपने रोष, अपनी असहमति को अभिव्यक्ति दी । अपने इस लेख में डॉ. सिंघवी ने इस मुकदमे से संबंधित सभी विषयों का विवेचन किया है और अपनी निष्पक्ष राय दी है । एक स्थान पर उन्होंने एक चेतावनी भी दी है कि—

'देश के चरित्र और संस्कार की भांति राजनीति देश के विकास या विनाश का कारण बन सकती है । राजनीति केवल वैयक्तिक स्वार्थों की आपाधापी का पर्याय नहीं, बल्कि आदर्शों और निष्ठाओं की कर्मभूमि भी है । यह सर्वदा सत्ता की अनुचरी ही नहीं है, बल्कि सामाजिक सेवा और सामथर्य की सहचरी भी है । जिस देश में नागरिक राजनीति को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, राजनीतिक प्रक्रियाओं की शुद्धता के बारे में जनमत उदासीन और निष्क्रिय रहता है वहां लोकतंत्र की जड़ें गहरी नहीं जम सकतीं और राजनीतिक सत्ता के निरंकुश होने की आशंका सदैव बनी रहती है ।'

डॉ. सिंघवी ने सन ७७ में यह सब लिखा था और आज सन १९९५ में भी स्थिति बिलकुल नहीं बदली है, बल्कि बदतर ही हुई है ।

चतुर्थ खंड का शीर्षक है 'संस्मृति, संस्कृति, भाषा और साहित्य' प्रथम तीन खंडों में हमें एक विद्वान विधि-वेत्ता के गंभीर चिंतन की प्रखरता दिखायी पड़ती है, तो इस खंड में संकलित निबंधों में डॉ. सिंघवी का साहित्यकार का रूप दिखायी देता है । इस खंड के कुछ लेख व्यक्तिपरक हैं और कुछ में हिंदी समस्याओं की चर्चा है । 'मेघदूत की काव्य महिमा,' 'इक्कीसवीं सदी का मर्म,' 'तीन नगरों की एक कथा' इस खंड के उल्लेखनीय लेख है । अंतिम लेख कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के सीनेट में दिया गया 'रीड व्याख्यान १९९३' है । **ये निबंध उनके विशद अध्ययन, सूक्ष्म दृष्टि— और साहित्य, संस्कृति तथा कला के प्रति उनके गहन अनुराग के भी परिचायक हैं ।**

इन लेखों में जहां एक विद्वान अधिवक्ता के अकाट्य तर्क है तो वहीं एक न्यायाधीश के निष्पक्ष निष्कर्ष भी । डॉ. सिंघवी मात्र विधि-वेत्ता ही नहीं, एक कवि भी हैं । उनकी भाषा प्रांजल, काव्यमयी और प्रवाहपूर्ण है । उनकी यह कृति सचमुच हमारे समय का दस्तावेज है ।

भारत और हमारा समय
लेखक : डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी, प्रकाशक: नटराज प्रकाशन, ए-७८, अशोक विहार, दिल्ली, मूल्य : तीन सौ अस्सी रुपये

— राजेन्द्र अवस्थी

चिकित्सा

जीव-जंतुओं से भी मिलती हैं दवाएं

• कृष्ण प्रकाश त्रिपाठी

पौधों और खनिजों की तरह जीव-जंतु भी दवाओं के स्रोत हैं। प्राचीन समय से ही प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में इनसे विविध प्रकार की दवाएं मिलती रहीं हैं। प्रत्यक्ष रूप में कुछ जंतुओं का संपूर्ण शरीर अथवा कुछ अंग दवाओं के रूप में काम आते हैं और अप्रत्यक्ष रूप में उनके जीवन चक्र अथवा शारीरिक गतिविधि से कुछ ऐसे पदार्थ मिल जाते हैं जिनका उपयोग दवाओं के रूप में होता है, जीव-जंतुओं से प्राप्त औषधियों में प्रोटीन, कैल्शियम और अन्य पोषक तत्व पाये जाते हैं।

शहद का उपयोग बहुत समय से पोषण के अलावा उपचार में होता रहा है। यह यकृत व पेट की बीमारियों, बुखार, मधुमेह, लकवा, एलर्जी से उत्पन्न चकत्तों, त्वचा की बीमारियों, जलने से उत्पन्न फफोलों तथा मांस सड़ने के उपचार में लाभदायक है। यह प्राकृतिक घावनाशक है, प्राचीन मिस्रवासी शहद का उपयोग शल्यक्रिया में पट्टी के रूप में करते थे। मध्यकाल में इसका प्रयोग मलहम और फफोलों, घावों, अल्सर आदि के लिए प्लास्टर के रूप में होने लगा। शहद और विटामिन सी युक्त नींबू मिलाकर पीने से जुकाम और खांसी में आराम मिलता है।

मोम एक प्राकृतिक पदार्थ है जो काम करनेवाली मधुमक्खियों के शरीर से प्राकृतिक-रूप से स्रावित होता है। यूनानी चिकित्सा पद्धति में इसके साथ अन्य पदार्थ मिलाकर मलहम बनाया जाता है। जाड़े के मौसम में शारीरिक दर्द वाले अंगों में मोम को मलने से आराम मिलता है।

रेशम के कोकून (कोया) का उपयोग दवा के रूप में होता है, इससे खमीर बनाया जाता है। रासायनिक विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि इसमें (कोया में) एमिनो अम्ल, विटामिन बी कांप्लेक्स, न्यूक्लिओ प्रोटीन, न्यूक्लीय अम्ल आदि पाये जाते हैं। उच्च रक्त चाप, हृदय रोग और ऐसी ही अन्य बीमारियों के उपचार में यह काम आता है।

लाख अपने देश तथा बर्मा के जंगलों में पाये जानेवाले बहुत छोटे से कीड़े से प्राप्त होता है, यह शत्रुओं तथा प्रतिकूल परिस्थितियों से कीड़ों की रक्षा करता है। कीड़ों से निकलनेवाला रेजिन जैसा स्राव वायु के संपर्क में आने पर कठोर हो जाता है। वार्निश, पॉलिश, ग्रामोफोन रेकार्ड आदि बनाने में इसका व्यापक उपयोग होता है। दवा के रूप में इसका उपयोग पीलिया, खांसी, अस्थमा, यकृत आदि



की बीमारियों में किया जाता है ।

कस्तूरी का उपयोग इत्र, रंजक तथा कामोद्दीपक बनाने में व्यापारिक स्तर पर होता है । दवा के रूप में इसका उपयोग हृदय रोग, हिस्टीरिया, खांसी, लकवा, भूल जाने की बीमारी के उपचार में किया जाता है । शक्ति और जीवन शक्ति प्राप्त करने के लिए यह लाभकारी है । कस्तूरी की थैली नर मृग के पेट की त्वचा के नीचे नाभि तथा जननेंद्रिय के बीच में लटकती रहती है । थैली के भीतर कस्तूरी में कई परिवर्तन होते हैं । आरंभिक अवस्था में यह दूध जैसा होता है, जो धीरे-धीरे कठोर हो जाता है और सूखने पर दानेदार अथवा सेम के बीज जैसा हो जाता है । आजकल इसे दुहने जैसी तकनीक से निकाल लिया जाता है और मृग जीवित बना रहता है । इस विधि में थैली के बाहरी छिद्र में चांदी की कूंची प्रविष्ट कर और उसे धीरे-धीरे चलाकर कस्तूरी को निकाल लेते हैं ।

मोती का उपयोग आभूषणों के अतिरिक्त दवा के रूप में भी होता है । मोती सीप के कवच में जब कोई बाहरी वस्तु प्रवेश करती है तो जंतु को उत्तेजना होती है और वह अपनी रक्षा के लिए बाहरी वस्तु के चारों ओर मुक्ताभ की संकेंद्रीय परतें स्रवित करता है । कठोर होने पर ये परतें मोती बन जाती हैं । प्राकृतिक मोती के अलावा अब कृत्रिम विधियों द्वारा भी मोती बनाये जाने लगे हैं । मोती के घटक मुक्ताभ का मुख्य अवयव एरागोनाइट होता है जो कैलिशयम कार्बोनेट का एक रूप होता है । एरागोनाइट क्रिस्टल एक जैविक पदार्थ कांचियोलिन द्वारा आपस में चिपके रहते हैं । मोती के रासायनिक विश्लेषण से पता चला है कि इसमें कैलि्शयम कार्बोनेट, कुछ जैविक पदार्थ तथा पानी पाया जाता है । यह कैलिशयम का प्रचुर स्रोत है । हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को इसके सेवन से लाभ होता है । इससे पाचन शक्ति बढ़ जाती है । हिस्टीरिया के उपचार में भी यह उपयोगी है । आम तौर पर इसका उपयोग खमीर के रूप में होता है ।

मूंगों में कैलि्शयम बहुत अधिक मात्रा में

पाया जाता है । ये ऐसे जंतु हैं जो अपने द्वारा स्रवित खोल में रहते हैं । कुछ मूंगे मुलायम होते हैं, कुछ सींगदार, कुछ कांटेदार और कुछ पत्थरों की तरह । इनसे बनी दवाएं शारीरिक कमजोरी को दूर करती हैं, पाचन क्षमता बढ़ाती हैं और रक्त शोधन करती हैं ।

आइज़िंगलास (मछली का सरेस) मुख्यतः जिलेटिन होता है जिसे स्टर्जिअन मछली के वायु आशय तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त किया जाता है । स्टर्जिअन मछलियां उत्तरी गोलार्द्ध के अधिकांश ठंडे तथा जलक्षेत्रों में पायी जाती हैं, आइज़िंगलास का उपयोग मलहम के रूप में किया जाता है, यह घावों तथा श्वेत कुष्ठ के उपचार में भी लाभकारी है ।

स्पर्म् व्हेल की आंतों में पाया जानेवाला एंम्बरग्रिस तेजसुगंध का भूरा पदार्थ होता है, पूर्वी देशों में इसका उपयोग मसाले के रूप में किया जाता है तथा पश्चिमी देशों में अच्छे इत्रों की सुगंध को दृढ़ करने में । यह शरीर की जीवनीशक्ति को बढ़ाता है, लकवा के उपचार में लाभकारी है । स्मरण शक्ति और पाचन शक्ति बढ़ाता है ।

केंचुओं का उपयोग पित्ताशय में मथुरी, पीलिया, गठिया, अतिसार, बवासीर तथा नपुंसकता के उपचार में किया जाता है । इसके अतिरिक्त अन्य कई जीव-जंतु जैसे केकड़े, शंख, सर्प विष, बारहसिंगा मृग का सींग, गैंडों के सींग, कटलफिश की हड्डी आदि दवाओं और सुगंधित वस्तुओं के महत्वपूर्ण स्रोत हैं ।

दुर्भाग्यवश दवाओं के लिए जंतुओं का लगातार शिकार हो जाने से वे लुप्त होने के कगार पर हैं । आजकल वैज्ञानिक प्राकृतिक पदार्थों का रासायनिक विश्लेषण कर उन्हें संश्लेषित करने का प्रयास कर रहे हैं ताकि लुप्त हो रहे जीव-जंतुओं को बचाया जा सके ।

— ३०२/१५७, बाघम्बरी योजना
इलाहाबाद २११००६

एक बार आइंस्टाइन को किसी कार्यवश न्यूयॉर्क जाना था । उन्होंने अपने मित्र गणितज्ञ वॉन न्यूमैन से आग्रह किया कि वे उन्हें रेलवे स्टेशन पहुंचाकर नयूयॉर्क जानेवाली ट्रेन में बिठा दें ।

वॉन न्यूमैन बहुत अधिक शरारती थे । वे आइंस्टाइन को अपनी गाड़ी में प्रिंस्टन रेलवे स्टेशन ले गये और फिर उन्होंने आइंस्टाइन को बहुत आराम से एक ट्रेन में बिठा दिया । जब वह ट्रेन चलने लगी तो न्यूमैन प्लेटफॉर्म पर खड़े एक परिचित व्यक्ति से बोले, "है न मजे की बात ! मैंने आइंस्टाइन को जिस ट्रेन में बिठाया है, वह न्यूयॉर्क तो जाती ही नहीं ।"

— सुभाष लखेड़ा

प्रवेश

आंसू

न जाने क्यों चले आते हैं
आंखों के कपाटों को खोलकर
अनचाहे-अनजाने-बिन बुलाये मेहमान
ये आंसू
पथरीले मन के भीषण दावानल में
तपते-खौलते भावों की अभिव्यक्ति
ये तुच्छ तरल आंसू
क्यों दर्शा देते हैं मुझे,
इतना असहाय ।

—सीमा श्रीवास्तव

शिक्षा : बी. एस. सी. (ऑनर्स)
पता : द्वारा श्री बी. के. श्रीवास्तव
बी-।।। ४८१ (टी) रांची,
पिन-८३४००४

आत्मकथ्य : कभी-कभी अपनी संवेदनशीलता अभिशाप-सी लगने लगती है, वैसे ही क्षणों में भाव कागज पर उतर आते हैं । और इस प्रक्रिया में न जाने कितने सत्य उद्‌घाटित होते हैं और कितने ही नये और अनूठे अर्थ खुलते हैं । बस लिखना अच्छा लगता है ।



क्यों ?

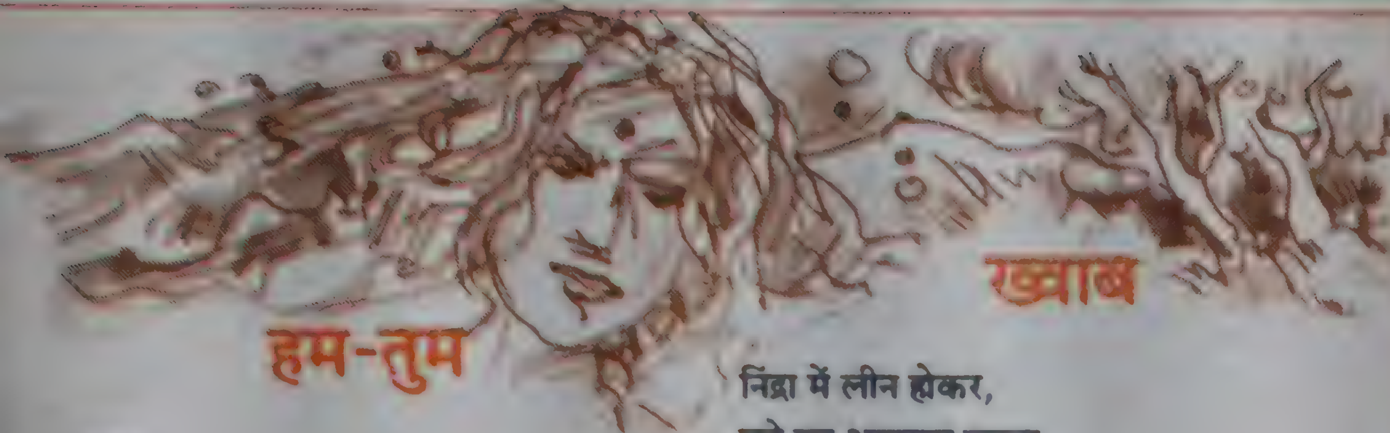
ऐ जिंदगी !
बार-बार
तुम क्यों रुला जाती हो
मुझे ?
कभी लगता है
सुलझ गया सब
कुछ ही देर में
फिर क्यों
उलझा जाती हो
मुझे ?
दूर तक
तुम्हारा साथ मैं
निभाकर
थक-सी जाती हूं
कभी-कभी
तुम तो रह-रहकर
न जाने क्यों
बेगाना बना जाती हो
मुझे ?
ये जो उतरते हैं
आंखों में
दर्द की रेखाओं के सहारे
लुढ़कते हुए,
चुपचाप उन्हें
वापस क्यों पिला जाती हो
मुझे ?
जानती हूं मैं
जानती हूं,
इस तरह ही
सच से मिलाती हो
मुझे
और
मेरी टूटन को
जोड़-जोड़
बना जाती हो
मुझे

—अमृता मौर्य

आत्मकथ्य :
जीवन की विसंगतियों को देखती हूं तो मन भावुक हो उठता है । तमाम विचार हलचल मचाने लगते हैं, तब किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए कागज-कलम उठा लेती हूं

पता : द्वारा/डॉ. मंशाराम, भा. कृ. अ. सं. पूसा
समस्तीपुर, बिहार-८४८१२५





हम-तुम

हम-तुम

कभी निकलें एक सड़क से
तुम हमें देखो/हम तुम्हें देखें
पर मुंह से कुछ कहें नहीं ।

हम-तुम

मुंह पर लगा हुवा है
शराफत का ताला
धर्म-जाति की बेड़ियों
में जकड़े हैं

हम-तुम

—शीतला प्रसाद गुप्ता 'आशू'

शिक्षा : एम. ए. (हिंदी साहित्य)
पता : बैंक ऑव बड़ौदा
पेटलावाद शाखा
पेटलावाद, जि. झाबुआ (म. प्र.)
आत्मकथ्य : हृदय के उद्‌गारों को व्यक्त करने का माध्यम, निराकार को साकार करने का प्रयत्न, आत्मा का परमात्मा से साक्षात्कार हैं मेरी कविताएं



ख्वाब

निंद्रा में लीन होकर,
छूने का अहसास करना
सागर की गहराइयों को ;
आकाश की ऊंचाइयों को ;
जी करता है खोये रहें,
सुनहरे सपनों में बस्स !
वास्तविक जीवन में—
होता है तब,
उपमूल्य क्षणों का हश्र !

—सुरेश करमानी

जन्मतिथि : २४ जून १९७०
शिक्षा : मैट्रिक पास
पता : द्वारा श्री ईश्वर लाल
१०७/१२७ जवाहर नगर
कानपुर-१२ (उ. प्र.)
आत्मकथ्य : स्वतंत्र भारत में अपनी-अपनी बात कहने का हक हर एक को है । अपनी कला को सृजन के माध्यम से अभिव्यक्त करने की क्षमता को विकसित करने का हक प्रत्येक को है । तो क्यों न मैं भी इन अवसरों का समुचित लाभ उठाऊं ? कौन रोक सकता है मुझे, साहित्य-जगत में 'प्रवेश' पाने से ।

जीवन की विभीषिकाओं, संत्रास, त्रासदियों, विसंगतियों के बीच जो सदैव हमसफर बनकर साथ चलती रहेंगी, वे हैं मेरी रचनाएं, कविताएं !





राजस्थान : गरमियों की मधुर शामें

● अनन्त राम

महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा १८वीं शताब्दी में निर्मित जयपुर को केंद्र बनाकर आप अपनी यात्रा शुरू कर सकते हैं। राजस्थान का यह विश्वविख्यात गुलाबी नगर वायु मार्ग द्वारा देश के समस्त बड़े हवाई अड्डों से जुड़ा हुआ है। रेल की छोटी लाइन के बड़ी में परिवर्तित हो जाने के बाद दिल्ली, कलकत्ता और बंबई से जयपुर पहुंचना सरल हो गया है। राजस्थान राज्य परिवहन की आरामदायक बसें भी दिल्ली से उपलब्ध हैं। इसके बाद सड़क मार्ग से राजस्थान के अन्य नगरों तक पहुंचना भी उतना ही सरल है।

हवा महल, लेकिन हवा नहीं आती

सिटी पैलेस के दीवान-ए-आम तथा दीवान-ए-खास के साथ ही शहर के मध्य में स्थित हवा महल प्राचीन स्थापत्य कला का बेजोड़ नमुना है। बलुआ पत्थर के इस महल का निर्माण महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने १७९९ में कराया था। रनिवास की महिलाएं इसी से शोभा यात्राएं देखा करती थीं। सवाई जय सिंह ने १७२६ में पांच खगोलीय वेधशालाएं देशभर में निर्मित करायी थीं, जिनमें से एक जयपुर में है। सिटी पैलेस परिसर में गोविंद देवजी का मंदिर है, जो इस तरह बनवाया गया था कि महाराजा अपने चंद्रमहल से ही भगवान कृष्ण की मूर्ति के दर्शन कर सकें।

जयपुर से ११ किलोमीटर पर आमेर का किला और महल है। इसमें राजपूत और मुगल निर्माण शैली का मिश्रण स्पष्ट झलकता है।

इसी पहाड़ी पर जयगढ़ और नाहरगढ़ दुर्ग हैं। रात में यहां से जयपुर की झिलमिलाती नयनाभिराम छवि दृष्टिगोचर होती है। जयपुर के अन्य दर्शनीय स्थल जल महल, कनक वृंदावन, गलता, विद्याधर और सांगानेर हैं। जयपुर में हाथ के बुने जैसलमेरी कंबल, बंधेजी कला के वस्त्र, नीली पॉटरी (मिट्टी के बरतन), नन्हे-नन्हें शीशों से जड़ी लाख की वस्तुएं खरीदने योग्य हैं। गांठ में यदि पैसे हों तो हीरा, पन्ना, पुखराज भी जौहरियों के पास मिल जाएंगे।

जयपुर से १३८ किलोमीटर दक्षिण में स्थित अजमेर दो संस्कृतियों का मिलन स्थल है। यहां ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह तथा ११ किलोमीटर दूर पुष्कर में हिंदुओं का तीर्थ स्थान मुक्तिदाता पवित्र सरोवर है। पुलस्त्य ऋषि ने भीष्म पितामह को बताया था कि सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा का यहां सदा निवास रहता है। अतएव पुष्कर में ब्रह्माजी के मंदिर के अतिरिक्त वैष्णव संप्रदाय की रामानुज शाखा का मंदिर भी है।

अरावली की हरियाली में बसा उदयपुर

अब आइए अजमेर से आगे दक्षिण में ही झीलों, बावड़ियों, महलों तथा फव्वारों के सुंदर नगर उदयपुर चलें। उदयपुर तक अभी रेल की बड़ी लाइन उपलब्ध नहीं है, अतएव छोटी लाइन पर चेतक जाती है। बसें भी प्रत्येक आधा घंटे बाद मिल जाती हैं। उदयपुर के बिना राजस्थान की यात्रा अधूरी रहती हैं। अपनी रणनीति के अधीन मुगलों से बचने के लिए महाराजा उदय सिंह ने यहीं शरण ली थी। पिछोला, फतेहसागर और उदयसागर नामक झीलों के किनारे बने उदयपुर के महलों की छटा निराली लगती है। पिछोला के बीच एक चट्टान पर निर्मित 'जल महल' अब होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। उदयपुर से ५१ किलोमीटर पर एशिया की विशालतम कृत्रिम झील 'जयसमंद' है।

। शहर से कुछ ही दूर पर अद्भुत शौर्य की पुण्यभूमि हल्दी घाटी है— **'यही धरा राणा प्रताप ने अरि मुंडों से थी पाटी, उनके ही अनुपम साहस की स्मारक हल्दी घाटी।'** उदयपुर से २२ किलोमीटर पर मेवाड़ के राजाओं के आराध्य देव एकलिंग जी (भगवान शंकर) का मंदिर है और पांच किलोमीटर आगे नाथद्वारा में भारत के धनाढ्यतम मंदिरों में से एक में श्रीनाथजी का निवास है। भगवान कृष्ण की काले पत्थर की यह मूर्ति कोई ६०० वर्ष पुरानी है। इसके अतिरिक्त उदयपुर में सास-बहू मंदिर, सहेलियों की बाड़ी आदि देखने योग्य हैं।

गढ़न में चित्तौड़गढ़

सातवीं से मध्य १७वीं शताब्दी तक मेवाड़ के राजाओं की राजधानी चित्तौड़ में थी, अलाउद्दीन खिलजी ने १३०३ में मेवाड़ की अनुपम सुंदरी रानी पद्मिनी का अपहरण करने के लिए इस पर आक्रमण किया था, किंतु जब वह दुर्ग में प्रविष्ट हुआ तब रानी तथा अन्य राजनारियों की राख ही उसे मिल पायी थी। मालवा और गुजरात के मुसलिम शासकों पर १४४० में राणा कुंभा ने विजय प्राप्त करके उसी की स्मृति में एक विजय स्तंभ बनवाया था। कोई ३७ मीटर ऊंचा यह स्तंभ पर्यटकों के विशेष आकर्षण का केंद्र है। बारहवीं शताब्दी में एक जैन सेठ द्वारा यहां निर्मित कीर्ति स्तंभ

राजस्थान भूमि है दुर्गों, दुर्गपतियों, सुंदरियों, सूरमाओं, पहाड़ियों, घाटियों, रेगिस्तानों की । इसके कण-कण में शौर्य और निष्ठा, रोमांस और रोमांच की गाथाएं समायी हुई हैं । इसका अतीत गौरवशाली तथा वर्तमान गतिशील है । राजस्थान के नैसर्गिक दृश्य जहां दर्शनीय है, वहीं इसके कारीगरों की कला भी बेजोड़ है । 'पधारों म्हारे देस' यह राजस्थान के लोगों का आग्रहपूर्ण निमंत्रण है । आइए, अपने ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग जौहर और जौहरियों की इस भूमि के दर्शन से करें । रेगिस्तान के इस रत्न में गरमियों की शामें मधुर होती हैं ।

आदिनाथ को समर्पित है । चित्तौड़ के 'फतेह प्रकाश महल' में अद्भुत मूर्तियों का संग्रह भी देखने योग्य है । पर्यटकों के ठहरने के लिए होटल और लॉज हैं ।

पहाड़ियां समतल मैदान बनीं

जयपुर से ३४३ किलोमीटर पश्चिम में थार रेगिस्तान के पूर्वी किनारे पर जोधपुर स्थित है । रेतीले टीलों किंतु झाड़ियों, पथरीले भूभाग तथा कंटीले झाड़ोंवाले अद्भुत क्षेत्र का यह स्वागत द्वार है । बसों और टैक्सियों के अतिरिक्त जयपुर से मंडौर एक्सप्रेस ट्रेन रात में चलती है, जो लगभग पांच घंटे में प्रातः जोधपुर पहुंचा देती है । रेल की बड़ी लाइन हो जाने से यात्रा का समय बहुत कम हो गया है । जोधपुर की स्थापना राव जोधा ने की थी । इस ऐतिहासिक नगर के प्रमुख आकर्षण मेहरन गढ़ किला और उम्मेद भवन हैं जिनमें से प्रथम १५वीं शताब्दी और दूसरा २०वीं शताब्दी की स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करता है । सफेद पत्थर से निर्मित जसवंत थड़ा अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है । यह महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय का स्मारक है । मोती महल, फूल महल, सिलेह खाना, दौलत खाना, आदि पर्यटकों के आकर्षण केंद्र हैं । मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मंडौर यहां से ९ किलोमीटर पर है । मंडौर के उद्यान में अनेक प्रकार के पुष्प देखने को मिल जाते हैं । पर्यटकों की सुविधा के लिए उम्मेद महल होटल से लेकर कम किराये के भी अनेक होटल हैं । यहां हाथी दांत और लाख की वस्तुएं पर्यटक खरीदते हैं । इसके अतिरिक्त राजस्थान की जूतियां लोगों को अधिक लुभाती हैं ।

आपकी राजस्थान यात्रा अभी समाप्त नहीं होती । यहां से आगे पश्चिम की ओर ३३० किलोमीटर दूर जैसलमेर है । रावल जैसल ने ११५६ में अपनी राजधानी लोडरवा से जैसलमेर में स्थापित की थी । भूतपूर्व राजाओं द्वारा निर्मित किलों, महलों और मंदिरों से यह नगर भरा पड़ा है । पीले पत्थरों से निर्मित भगवान की सूर्य प्रकाश में स्वर्णिम आभा देखने के लिए विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में यहां आते हैं । यद्यपि यह पूरा क्षेत्र रेगिस्तानी है किंतु यहां की रातें बड़ी ठंडी होती हैं । जैसलमेर किले का ज्ञान भंडार दुर्लभ पांडुलिपियों का घर है । यहां के जैन मंदिरों के अतिरिक्त सलीम सिंह की हवेली, पटवों की हवेली, नथमलजी की हवेली, बड़ा बाग आदि पर्यटकों की रुचि के

अन्य केंद्र हैं । सरदियों में जैसलमेर में आयोजित मरु-उत्सव के अवसर पर संगीत तथा नृत्य के आयोजनों में विदेशियों की बहुत रुचि रहती है । जैसलमेर में अपेक्षा से अधिक सुंदर और आरामदेय होटल है । इस नगर में भी हस्तशिल्प की अद्वितीय वस्तुएं बाजारों से खरीदी जा सकती हैं । हां, मोल-भाव जरूर करना पड़ता है ।

जहां रेत के टीबे बनते हैं

सरकती रेत और चिलचिलाती धूप का नगर बीकानेर पांच द्वारों का नगर है । जैसलमेर से लगभग ३२५ किलोमीटर उत्तर में स्थित बीकानेर देखे बिना आप लौटना पसंद ही नहीं करेंगे । राव बीकाजी द्वारा १४८८ में स्थापित यह नगर संसार में सर्वोत्तम ऊंटों के लिए प्रसिद्ध है । पीले और लाल पत्थरों से बने इसके महल और स्मारक राजपूत सभ्यता के अद्भुत नमूने हैं । विशाल और भव्य जूनागढ़ महल, अनूप महल, करण महल तथा रंग महल देखकर पर्यटक अपनी यात्रा सफल मानते हैं । महाराजा गंगा सिंह द्वारा १९वीं शताब्दी में निर्मित लालगढ़ महल की सुंदरता निराली है । बीकानेर से ३० किलोमीटर पर प्रसिद्ध करणीमाता मंदिर है जिसमें हजारों चूहें स्वच्छंद विचरते हैं । यदि कोई चूहा किसी दर्शनार्थी के पैर पर आ जाए तो इसे उसका सौभाग्य-सूचक माना जाता है ।
बीकानेर दूध और उससे बनी वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है ।

अरावली पहाड़ियों को काटकर बनवाया गया अलवर अपने सरिस्का अभयारण्य के लिए प्रसिद्ध है । जयपुर से दिल्ली की ओर जाते हुए मात्र १५० किलोमीटर पर अलवर स्थित है । बाबर ने हुमायूं के लिए अपना खजाना यहीं के किले में छिपाया था । जाट राजा सूरजमल द्वारा स्थापित भरतपुर का घाना पक्षी विहार सरदियों में साइबेरिया और मध्य एशिया के पक्षियों को शरण देता है । यह भी अब संरक्षित वन है

सुरम्य ग्रीष्म शरणस्थली

राजस्थान की गरमी से यदि आप विचलित हो गये हैं, तो आइए अब आपको आबू पर्वत ले चलते हैं । जयपुर से मारवाड़-अहमदाबाद रेल मार्ग पर आबू रोड स्टेशन है । यहां से बसें और टैक्सियां पर्यटकों को आबू पर्वत ले जाती हैं । आबू स्थित नक्की झील एक विशाल जलाशय है जिसमें पर्यटकों के विहार के लिए समुचित व्यवस्था है । इस झील से आबू पर्वत की सुंदरता में निखार आ गया है । किंवदंती है कि देवताओं ने इसे नखों से खोदा था । विमल शाह द्वारा १०३१ में निर्मित दिलवाड़ा का मंदिर जैन तीर्थंकरों में से प्रथम को समर्पित है । इन मंदिरों के संगमरमर पर की गयी पच्चीकारी अत्यंत सुंदर और बेजोड़ है ।

रनकपुर के जैन मंदिर में १४४४ स्तंभ हैं । जिनमें सबकी स्थापत्य कला तथा आकृति भिन्न है । नदी झील के निकट १४वीं शताब्दी का रघुनाथजी का मंदिर पर्यटकों के आकर्षण का महत्त्वपूर्ण केंद्र है । पर्यटकों के ठहरने के लिए अनेक होटल हैं, किंतु सीजन में भीड़ तो रहती ही है इसलिए पूर्वारक्षण करा लेना उत्तम होगा । राजस्थान का प्रिय भोजन दाल-बाटी और चूरमा सर्वत्र उपलब्ध है ।

— सीरबी/११२सी, जनकपुरी
नयी दिल्ली-५८



● अजय भाम्बी

चन्द्रकांता, बीकानेर
प्रश्न : मैं एक भावी सुपर स्टार से विवाह करना चाहती हूं । क्या होगा ?
उत्तर : पूर्ण वैवाहिक सुख मिलने में कठिनाई है । ऐसा नहीं लगता कि भावी सुपर स्टार से विवाह होगा ।

दिनेश, सिरसा
प्रश्न : बतौर चित्रकार कब तक स्थिति सुदृढ़ ? नौकरी की संभावना ?
उत्तर : प्रयत्न जारी रखें, सफलता तो मिलेगी, थोड़ा इंतजार करें ।

श्याम गुप्ता, दतिया
प्रश्न : मेरी बीमारी कब तक ठीक होगी ?
उत्तर : योग्य चिकित्सक को दिखायें, जून से लाभ होगा ।

नूतन, धामपुर (बिजनौर)
प्रश्न : रुके हुए कार्य कब पूर्ण होंगे ? अच्छा समय कब आयेगा ? कृपया रत्न बतायें ?
उत्तर : अच्छा समय अगले वर्ष से आयेगा । नीलम धारण करें ।

प्रदीप कुमार द्विवेदी, कानपुर
प्रश्न : एअर फोर्स में नौकरी कब तक मिलेगी ?
उत्तर : अगली बार सही कुंडली भेजें ।

नंदा खानचंदानी, अहमदाबाद
प्रश्न : विवाह कब ?
उत्तर : इस वर्ष संपन्न हो जाएगा ।

आशुतोष शर्मा, नादौन (हमीरपुर)
प्रश्न : प्रचुर धन कब से आयेगा ?
उत्तर : ३६ वर्ष की आयु के बाद ।

दिलीप कुमार दीपक, दिल्ली
प्रश्न : इस वर्ष सिविल सेवा परीक्षा का क्या योग है ?
उत्तर : संभावना है ।

गोवर्धन मेहता, रांची
प्रश्न : जीवन के किस क्षेत्र में विशेष सफलता ? रत्न सुझायें ?
उत्तर : व्यवसाय अधिक उत्तम रहेगा । पुखराज पहनें ।

कंचनलता सिन्हा, धनबाद
प्रश्न : जीवन में स्थिरता, मानसिक शांति, उन्नति कब तक ? उपाय बतायें ?
उत्तर : अगस्त से आपका अच्छा समय प्रारंभ होगा ।

नैनीश शर्मा, ऋषिकेश
प्रश्न : आर्थिक स्थिति कब सुदृढ़ होगी ?
उत्तर : अगले वर्ष से ।

नीरज तिवारी, नैनीताल
प्रश्न : क्या बैंक में अधिकारी बनने का योग है ? कब तक ?
उत्तर : जल्द ही इच्छानुसार नौकरी, पद प्राप्त होगा ।

सत्यपाल अरोड़ा, फरीदाबाद
प्रश्न : व्यापार परिवर्तन एवं विदेश यात्रा योग ?
उत्तर : नवंबर से उत्तम समय प्रारंभ हो रहा है ।

विनय कुमार, हजारीबाग
प्रश्न : हजारीबाग में स्थानांतरण कब तक ?
उत्तर : प्रयास करें, कार्य बनेगा ।

टीकमचंद डोडरिया, छबड़ा (राज.)
प्रश्न : स्वास्थ्य में पूर्ण सुधार कब तक ?
उत्तर : जुलाई से स्वास्थ्य लाभ होगा ।

रामशंकर त्रिपाठी, मनकापुर (गोंडा)
प्रश्न : ७, ८ जनवरी को जज की परीक्षा में बैठा हूं, क्या सफल हो सकूंगा ?
उत्तर : संभावना कम है ।

अनिल कुमार, मुजफ्फरनगर
ग्न : दो पुत्रियां, पुत्र किस सन में ?
उत्तर : पुत्र अवश्य प्राप्त होगा ।

शालिनी जैन, शाहदरा (दिल्ली)
ग्न : अपना मकान कब तक ?
उत्तर : अगले तीन वर्ष के भीतर ।

रक्षा जैन, जयपुर
ग्न : क्या इस वर्ष आर. पी. एम. टी. में सफलता मिलेगी ?
उत्तर : मिल सकती है, प्रयासों में कमी न आने दें ।

अशोक, नरवाना
ग्न : कनाडा में स्थायी प्रवास होगा कि नहीं ?
उत्तर : संभव हो सकेगा ।

किशोर तारे, भोपाल
प्रश्न : लेखन क्षेत्र में सफलता कब तक ?
उत्तर : अगले वर्ष ।

संध्या शर्मा, मेरठ
प्रश्न : क्या शादी का योग है ?
उत्तर : बराबर योग है । डेढ़ वर्ष में विवाह हो जाएगा ।

—'नक्षत्र निकेत'
४०६, ढाका चेंबर-१
२०६८/३८, नाईवाला,
करोलबाग, नयी दिल्ली-५

१५८



नाम..
जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ....महीना...............सन................
जन्म-स्थान..
जन्म -समय ....
वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण...
पता...
आपका एक प्रश्न ....
इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें.....................................

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि १५८, 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन,
१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
अंतिम तिथि : २० मई, १९९५

कादम्बिनी क्लब समाचार

विचार गोष्ठी

सीतामढ़ी : साहित्यिक संस्था कादम्बिनी-क्लब के सदस्यों तथा आगत रचनाकारों की एक बैठक क्लब की संयोजिका आशा प्रभात के निवास पर श्री कुंज बिहारी जालान की अध्यक्षता में हुई। बैठक में 'मीडिया का दायित्व सामायिक संदर्भ में' विषय पर एक परिचर्या भी आयोजित की गयी।

परिचर्या में श्रीमती अजय विद्रोही, रीता झा, कुंजबिहारी जालान, नीरज कुमार गोयनका, रामस्वार्थ राय दार्शनिक, खालिद अहमद सागर, श्याम नंदन प्रसाद, अवधबिहारी शरण 'हितेंद्र', एम. के. आलम परोहवी, मुहम्मद शाहिद तथा राम स्वरूप 'स्वर्णकार' ने अपने-अपने विचार रखे। सुश्री वंदना ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

महिला दिवस पर गोष्ठी

बीकानेर कादम्बिनी क्लब द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पत्रकार सुश्री दर्शना 'उत्सुक' एडवोकेट सुश्री चन्द्रकला जैन विशेष आमंत्रित सुप्रसिद्ध रंगकर्मी श्री सी. पी. माथुर, श्रीमती यामिनी जोशी व श्री शिवशंकर छंगाणी ने महिलाओं से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर अपने विचार रखे।

गोष्ठी का संयोजन करते हुए क्लब के संयोजक डॉ. अजय जोशी ने कहा कि महिला हितों की सुरक्षा के लिए बहुत-से कार्यक्रम चलाये जाते हैं परंतु उसका पूरा लाभ महिलाओं को नहीं मिल पाता।

विदिशा में कादम्बिनी क्लब का गठन

स्थानीय बड़जात्या शिशु मंदिर में साहित्यकारों की एक बैठक में अवध श्रीवास्तव के निर्देशन में कादम्बिनी क्लब का गठन किया गया। बैठक में विजय भंडारी एडवोकेट क्लब के अध्यक्ष चुने गये तथा दिनेश मिश्र उपाध्यक्ष व पत्रकार भूपेंद्र मालवीय सचिव चुने गये।

जून माह में एक साहित्यिक परिसंवाद आयोजित करने का निश्चय किया गया। इसमें कादम्बिनी के संपादक एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. राजेन्द्र अवस्थी को आमंत्रित करने का निश्चय किया गया। श्री अवध श्रीवास्तव के काव्य संकलन 'अभी तक अभी भी' का लोकार्पण भी इस बैठक में किया गया।

कादम्बिनी क्लब बैठक

हैदराबाद : कादम्बिनी क्लब की आठवीं साहित्य गोष्ठी हिंदी प्रचार सभा, नामपल्ली में संपन्न हुई। श्री श्याम सुंदर पसारी ने अध्यक्षता की और श्री नेहपाल सिंह वर्मा ने संचालन किया।

क्लब की संयोजिका श्रीमती डॉ. अहिल्या मिश्रा ने स्वागत भाषण रखा। गोष्ठी में मध्यांतर के संपादक श्री पुरुषोत्तम 'प्रशांत' ने कविताएं प्रस्तुत कीं। सर्वश्री विनोद अग्रवाल, डॉ. अहिल्या मिश्रा, अजीत गुप्ता, राम अवतार शर्मा, दुर्गादत्त पांडेय, पुरुषोत्तम प्रशांत, जी. राजेन्द्र कुमार, मुनीन्द्र मिश्र, एम. उपेन्द्र, श्रीमती एलिजाबेथ, कूरियन मोना, श्रीमती पुष्पा वर्मा, नरेन्द्र राय, नेहपाल सिंह वर्मा और दुलीचंद 'शशि' ने काव्य पाठ किया।

कानपुर में सफल आयोजन

कानपुर : राष्ट्रभाषा संस्थान प्रांगण में कादम्बिनी क्लब के प्रथम आयोजन की अध्यक्षता गीतकार प्रो. रामस्वरूप सिंदूर ने की। इस कार्यक्रम में उन्नाव से आये नवगीतकार डॉ. महेशचंद्र विधु, वीरेंद्र मिश्र, शिवपूजन यायावर, विपिन अनुरागी, श्याम सुंदर निगम, विनोद दीक्षित, रामकृष्ण प्रेमी, डॉ. रामस्वरूप दुबे, रमाशंकर त्रिपाठी, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी तथा महेशचंद्र शुक्ल ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से काव्य प्रेमियों को रसबोर किया।

समस्या-पूर्ति-१९०

यहां दिये गये शीर्षक को लेकर आपको कविता लिखनी है । समस्या-पूर्ति के नियमों के अनुसार इस शीर्षक का कविता के अंत में होना आवश्यक है । लेकिन आपको अतुकांत कविता ही लिखनी है । कविता अधिक से अधिक छह पंक्तियों की हो ।

प्रथम पुरस्कार : १२५ रु.
द्वितीय—१०० रु.
तृतीय—७५ रु.

अंतिम तिथि : २० मई १९९५



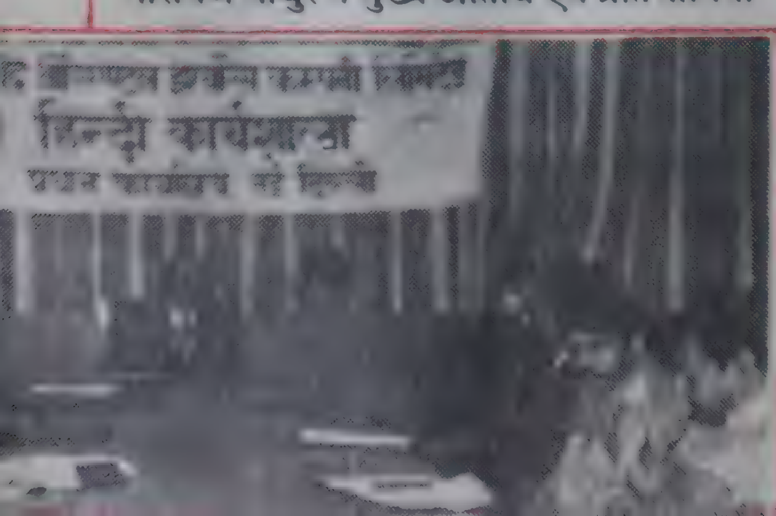
शहर में भी

छाया : विजय अमन

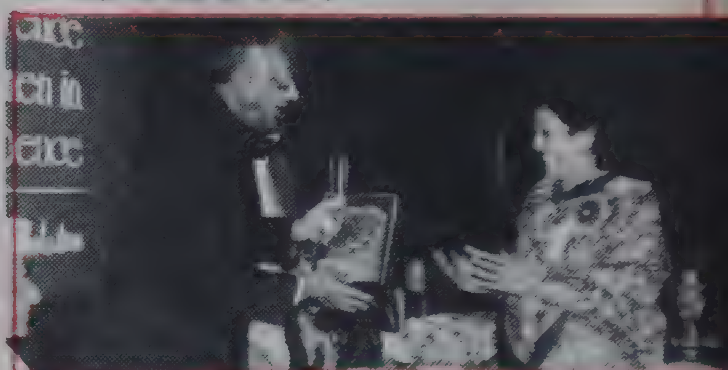
सांस्कृतिक समाचार

राजभाषा के लिए उत्तरदायित्व

दिल्ली : दि ओरियंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के प्रधान कार्यालय ने अधिकारी संवर्ग तथा कर्मचारी संवर्ग के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया । कार्यशाला का उद्घाटन हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं कादम्बिनी के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने किया । इस अवसर पर श्री अवस्थी ने कहा कि हिंदी भारत की एकता और अखंडता की प्रतीक है । भारत में अधिसंख्यक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है । उन्होंने कहा कि हम वर्तमान में पल-पल में जियें क्योंकि वर्तमान एक ही क्षण में अतीत बन जाता है और भविष्य के बारे में कोई कुछ नहीं जानता । उन्होंने यह भी कहा कि बीमा कंपनियां व्यवसाय से जुड़ी हैं । अतः उन्हें उन्हीं लोगों की भाषा से जुड़ने का प्रयास करना चाहिए जिनके साथ वे बीमा व्यवसाय करते हैं । उन्होंने अपने अनेक देशों की यात्राओं का उल्लेख करते हुए कहा कि मैंने यह अनुभव किया कि अधिकांश देशों में अंगरेजी भाषा का इस तरह से प्रचलन नहीं है जिस तरह का हमारे हिंदुस्तान में है । हमें अपने देश की भाषा और राष्ट्र की अस्मिता को बनाये रखने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए । इस कार्य में हिंदी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है । इस अवसर पर कंपनी के महाप्रबंधक श्री स्वरूप नारायण माथुर ने मुख्य अतिथि एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और हमारा उसकी प्रगति के लिए एक अहम उत्तरदायित्व बनता है । हमें अपने इस उत्तरदायित्व के प्रति सजग रहना चाहिए ।



कार्यशाला में प्रतिभागियों को संघ की राजभाषा नीति, हिंदी कार्यन्वयन से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम, पारिभाषिक शब्दावली, बीमा शब्दावली आदि के बारे में बताया गया । सामान्य हिंदी पत्राचार एवं तकनीकी विभागों में हिंदी में कार्य करने के बारे में प्रतिभागियों को बताया गया तथा हिंदी पत्रलेखन एवं टिप्पण लेखन का अभ्यास करवाया गया ।



डॉ. प्रीतम पुरस्कृत

'ऑल इंडिया नेशनल यूनिटी कांफ्रेंस' ने डॉक्टर सरोजनी प्रीतम को सन '९४ के इंदिरा गांधी पुरस्कार से सम्मानित किया ।

'फुहार' — ९५

अलवर : 'महाराजा सूरजमल सांस्कृतिक संस्थान' के तत्वावधान में 'फुहार-'९५' कार्यक्रम ने 'हास्य रस' बिखेरा ।

कार्यक्रम में बाल नृत्यांगना कंगना गुप्ता एवं आस्था फौजदार की नृत्य प्रस्तुतियां थीं । सीमा विजयवर्गीय, सरिता एवं गीता के संगीत की मधुर लहरियों ने कार्यक्रम को रंगीला बना दिया ।

समारोह में संस्था के अध्यक्ष विजयसिंह पूनिया ने संस्था की गतिविधियों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की । संरक्षक बृजबिहारी एडवोकेट ने धन्यवाद ज्ञापित किया । मंच-संचालन युवा कवि विनीत चौहान ने किया ।



राष्ट्रपति भवन में आयोजित कवि-सम्मेलन में काव्य-पाठ करते हुए श्री अक्षय कुमार । बायें से सर्वश्री सुरेश नीरव, सागर आजमी, डॉ. मधुप पांडे एवं काजी तनवीर ।

राष्ट्रपति भवन में कवि सम्मेलन

नयी दिल्ली : अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में सद्भावना कवि-सम्मेलन का राष्ट्रपति भवन में आयोजन हुआ । महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर कवि-सम्मेलन का उद्घाटन किया । इस गंगा-जमुनी कवि-सम्मेलन में हिंदी एवं उर्दू के प्रमुख कवि एवं शायरों ने रचना पाठ किया । जिनमें प्रमुख थे सर्वश्री मधुप पांडेय, हुल्लड़ मुरादाबादी, सुरेश नीरव, डॉ. सागर आजमी, वेदप्रकाश सुमन, काजी तनवीर, जगदीश सोलंकी, सतीश चतुर्वेदी, अक्षय कुमार, दिनेश रघुवंशी एवं डॉ. मंजू दीक्षित । संचालन सुरेश नीरव ने किया । राष्ट्रपतिजी ने इस अवसर पर शॉल पहनाकर कवियों को सम्मानित भी किया । इस अवसर पर श्री वसंत साठे, डॉ. शंकर दयाल शर्मा तथा 'कादम्बिनी' संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी के अतिरिक्त अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

अखिल भारतीय वाल्मीकि कवि-सम्मेलन

विगत दिनों अखिल भारतीय वाल्मीकि समाज विकास परिषद एवं हिंदी अकादमी दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में अखिल भारतीय वाल्मीकि कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया । उद्घाटन सांसद विजयकुमार मल्होत्रा ने तथा अध्यक्षता रामजीवन ने की । इस कवि-सम्मेलन में सर्वश्री रमानाथ अवस्थी, डॉ. सरोजनी प्रीतम, सुरेन्द्र शर्मा, सुरेश नीरव, हुल्लड़ मुरादाबादी, असीम शुक्ल, सत्यम, सत्यदेव शास्त्री भोंपू, डॉ.



शशि तिवारी के अतिरिक्त अन्य अनेक कवियों ने रचना पाठ किया । संचालन श्री सुरेश नीरव ने किया ।

इसमाईल की चित्रकला प्रदर्शनी

जबलपुर : युवा चित्रकार मोहम्मद इसमाईल की 'धार्मिक एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव' विषय पर आधारित ४२ कलाकृतियों की तीन दिवसीय प्रदर्शनी दिनांक २३ मार्च से २५ मार्च तक रानी दुर्गावती संग्रहालय में भारतीय कला संगम ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित की गयी । इस अवसर पर मुख्य अतिथि जबलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ जे. पी. शुक्ला थे ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता दैनिक भास्कर समाचार पत्र के संचालक श्री कैलाश अग्रवाल ने की । चित्रकार मोहम्मद इसमाईल का सम्मान करते हुए भारतीय कला संगम ट्रस्ट के चेयरमैन श्री राजेश माहेश्वरी ने ट्रस्ट द्वारा युवा प्रतिभाओं के उत्थान हेतु किये गये प्रयासों का विवरण दिया । इस अवसर पर मोहम्मद इसमाईल के सम्मान में उन्हें शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र एवं २००१ रुपये की नकद राशि भारतीय कला संगम ट्रस्ट द्वारा प्रदत्त की गयी । इस चित्रकला प्रदर्शनी के संयोजक सुप्रसिद्ध चित्रकार डॉ. हरि भटनागर एवं डॉ. विष्णु अग्निहोत्री थे । कार्यक्रम का संचालन के. कुमार द्वारा किया गया ।

समस्या-पूर्ति—१८८

मौसमी बुखार



प्रथम पुरस्कार

जहर हवा में घोलता, आया नर-संहार
मरघट जल बुझता रहे, शून्य हुए घर-द्वार
अफरा-तफरी मच गयी, भागे-भागे लोग
रह-रह मत्थे ठोकते, किन पुण्यों का भोग
कांपा थर-थर नाम सुन यह सारा संसार
आज दरिंदे-सा हुआ यह मौसमी बुखार

— अनामिका पाठक
क्वार्टर नं.-११
शिक्षक आवास
आसानंदपुर
भागलपुर-८१२००२

द्वितीय पुरस्कार

आधुनिकता के शाप से ग्रसित,
नशा है यह ।
नहीं स्थायी प्रतिबिंब समाज का ।
अरे ! रोको इसे,
कहीं लाइलाज न हो जाए
यह मौसमी बुखार ।

— सुनीता जोशी
बी-२०, आरबीआई फ्लैट्स
चार इमली
भोपाल : ४६२०१६ (म.प्र.)

तृतीय पुरस्कार

जब से परोसी गयी पश्चिम की थाली
युवाओं के समक्ष
लड़खड़ाये हैं उनके कदम
भटकी हैं भावनाएं, आहत हुई है संस्कृति
आओ निभाएं दायित्व, ढूंढें संजीवनी
और उतारें इनका मौसमी बुखार

— योगेन्द्र
क्वार्टर नं. ३३२६
सेक्टर-ई चंडी मंदिर-१३४१०७

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित


LIBERTY
हर पार्टी का बहुचर्चित मामला
मिसिज़ जुनेजा के खूबसूरत सैण्डिल
दिलकश डिज़ाइन, मज़बूत, टिकाऊ और भरोसेमन्द ! असली चमड़े से बने, पी.यू. सोल वाले शानदार व लेटेस्ट सैण्डिल. आरामदायक और बढ़िया फिटिंग.
TIPTOPP™
FROM LIBERTY
अनोखी शान
भरपूर आराम
Montage LT 27 94

कादम्बिनी KADAMBINI NEW DELHI Regd. No. DL 27004/95 R.NI. No. 498/Ve